DILCHASP MALOOMAT (HINDI)

92 मौज़ूआत पर मुश्तमिल मदनी चैनल के सिलसिले
ज़ेहनी आज़माइश का तहरीरी मदनी गुलदस्ता

हिस्सा 1

दिलचस्प मा'लूमात

(सुवालन जवाबन)

इश्क़ के बोल

इल्म नूर है

कुरआनी मा'लूमात

जोश के साथ मगर होश से

ZEHNI AZMAISH

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस ***"अल मदीनतुल इल्मिय्या"*** ने येह किताब ***"दिलचस्प मा'लूमात"*** *उर्दू* ज़बान में पेश की है और ***मजलिसे तराजिम*** ने इस किताब का ***हिन्दी रस्मुल ख़त़*** करने की सआ़दत ह़ासिल की है [***भाषांतर*** (***Translation***) नहीं बल्कि सिर्फ़ ***लीपियांतर*** (***Transliteration***) या'नी बोली तो ***उर्दू*** ही है जब कि लीपि ***हिन्दी*** की गई है] और ***मक्तबतुल मदीना*** से ***शाएअ़*** करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह ***ग़लती़*** पाएं तो ***मजलिसे तराजिम*** को (ब ज़रीअ़ए ***Sms***, ***E-mail*** या ***Whats App*** ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़र नम्बर) ***मुत्तलअ़*** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ृ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

A-3

दिलचस्प मा'लूमात

हिस्सा 1

(सुवालन जवाबन)

पेशकश

मजलिसे मदनी चैनल

व

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नाशिर मक्तबतुल मदीना, देहली-6

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ الله

नाम किताब : दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) हि़स्सा 1

पहली बार : ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम, सिने 1438 हिजरी

ता'दाद : 3100

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 26 रबीउ़स्सानी, सिने 1438 हि. **ह़वाला नम्बर :** 210

الحمد للّٰه رب العٰلمين و الصلٰوة و السلام علٰى سيد المرسلين وعلى اٰله و اصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"दिलचस्प मा'लूमात (सुवालन जवाबन) हि़स्सा 1" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
26-12-2016

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

फ़ेहरिस्त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"ज़ेह्नी आज़माइश" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "10 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।

(معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) (2) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। (3) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। (4) कुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (5) जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पढ़ूंगा। (6) रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्म ह़ासिल करूंगा। (7) अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमा से पूछ लूंगा। (8) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (9) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (10) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰه تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब[1]

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

1.....ता दमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने क़ुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अह्ले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अह्ले सुन्नत مدظله (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

कौन कब और कहां मरेगा ?

.....जंगे बद्र के मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द जां निसारों के साथ रात में मैदाने जंग का मुआ़इना फ़रमाया, उस वक़्त दस्ते अन्वर में एक छड़ी थी। आप उस छड़ी से ज़मीन पर लकीर बनाते हुवे फ़रमा रहे थे कि फ़ुलां काफ़िर के क़त्ल होने की जगह है और कल यहां फ़ुलां काफ़िर की लाश पड़ी हुई मिलेगी। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि आप ने जिस जगह जिस काफ़िर की क़त्ल गाह बताई थी उस काफ़िर की लाश ठीक उसी जगह पाई गई उन में से किसी एक ने लकीर से बाल बराबर भी तजावुज़ नहीं किया।

(مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب غزوۃ بدر، ص۹۸۱، حدیث:۱۷۷۸۔شرح الزرقانی علی المواهب، باب غزوۃ بدر الکبری، ۲/۲۶۹)

पेशे लफ़्ज़

इल्मे दीन के दीनी और दुन्यावी बेशुमार फ़वाइद हैं। इल्म की तलाश इबादत....इस की जुस्त्जू जिहाद...बे इल्म को सिखाना सदक़ा, और अह्ल को पढ़ाना नेकी है...येह ह़लाल व ह़राम की पहचान....जन्नतियों के रास्ते का निशान है....फ़िरिश्ते इल्म वालों की दोस्ती में रग़बत करते और उन्हें अपने परों से छूते हैं... इन के लिये हर ख़ुश्को तर शै, समन्दर की मछलियां और ख़ुश्की के दरिन्दे व चौपाए इस्तिग़्फ़ार करते हैं...बन्दा इल्म के सबब औलिया की मन्ज़िलें पा लेता है और दुन्या व आख़िरत में बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ हो जाता है।

इल्म वह़्शत में तस्कीन....सफ़र में हम नशीन....तन्हाई का साथी...तंगी व ख़ुशह़ाली में राहनुमा....दुश्मन के मुक़ाबले में हथयार और दोस्तों के ह़क़ में ज़ीनत है....इस के ज़रीए क़ौमों को बुलन्दी व बरतरी दे कर पेश्वा बना दिया जाता है....इल्म जहालत के मुक़ाबले में दिलों की ज़िन्दगी और तारीकियों के मुक़ाबले में आंखों का नूर है....इल्म अ़मल का इमाम है और अ़मल इस के ताबेअ़ है....ख़ुश बख़्तों को इल्म का इल्हाम किया जाता है जब कि बद बख़्तों को इस से मह़रूम कर दिया जाता है।

"दा'वते इस्लामी" के बुन्यादी मक़ासिद में से एक अ़ज़ीम मक़्सद इल्मे दीन की रौशनी फैलाना और दुन्या भर के लोगों को नूरे इल्म से मुनव्वर करना है और इस अहम काम के लिये तह़रीरी, तक़रीरी और इल्मी कोशिशें मुसलसल जारी हैं। दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत हो या जामिअ़तुल मदीना, अल मदीनतुल इल्मिय्या हो या मक्तबतुल मदीना, दारुल मदीना हो या मुख़्तलिफ़ तरबिय्यती कोर्सिज़ सब का एक ही मक़्सद है कि **"प्यारे आक़ा** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की प्यारी उम्मत को ज़ेवरे इल्म से आरास्ता किया जाए ताकि वोह अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करे।"**

''मदनी चैनल'' के मुख़्तलिफ़ सिलसिले (प्रोग्राम्ज़) भी इसी मक़्सद की मुख़्तलिफ़ कड़ियां हैं, हर सिलसिला अपनी जगह अहम मगर बा'ज़ सिलसिले अ़वामो ख़्वास में बेहद मक़्बूल हैं जिन में **''मदनी मुज़ाकरा''** सरे फ़ेहरिस्त है जिस में क़िब्ला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتهم العالیه शरई, रूहानी, तिब्बी और समाजी सुवालात के इल्मो ह़िक्मत से भरपूर जवाबात इरशाद फ़रमाते हैं। यूं ही ह़िक्मत भरे अन्दाज़ में मुसलमानों को इल्मे दीन सिखाने के लिये **मदनी चैनल** का सिलसिला **''ज़ेह्नी आज़माइश''** भी मक़्बूल तरीन सिलसिलों में से एक है, इस मक़्बूले आ़म सिलसिले में पूछे जाने वाले सुवालात के जवाबात क़ुरआनो ह़दीस और मुस्तनद दीनी कुतुब से अख़्ज़ शुदा मा'लूमात और मदनी फूलों पर मुश्तमिल होते हैं।

दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** ने इन सुवालात व जवाबात को कांट छांट, तन्क़ीह़ व तह़क़ीक़, तक़्दीम व ताख़ीर और तस्ह़ीह़ व तख़रीज के मराह़िल से गुज़ार कर तह़रीरी शक्ल में ब नाम **''दिलचस्प मा'लूमात''** पेश कर दिया है ताकि मा'लूमात का येह ख़ज़ाना किताबी शक्ल में मह़फ़ूज़ हो जाए। फ़िलह़ाल ह़ुज़ूर ताजदारे अम्बिया व ख़ातमुर्रुसुल صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم के मुक़द्दस नाम **''मुह़म्मद''** के अ़दद 92 की निस्बत से 92 मौज़ूआ़त रखे गए हैं, हर मौज़ूअ़ के तह़त बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 सुवालात रखे गए हैं और इन को जन्नत के 8 दरवाज़ों की निस्बत से इन 8 उ़नवानात के तह़त लाया गया है :

(1) ईमान व अ़क़ाइद (2) मसाइल व अह़काम (3) सुन्नतें और आदाब (4) क़ुरआने करीम (5) अच्छी ख़स्लतें (6) बुरी ख़स्लतें (7) सीरत व ह़ालात (8) मुतफ़र्रिक़ात।

पेशे नज़र किताब में इल्मे दीन का बहुत बड़ा ख़ज़ाना दिलचस्प सुवालात जवाबात की शक्ल में मौजूद है, किताब मुख़्तलिफ़ शो'बहाए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाली इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये यक्सां मुफ़ीद है, सुवालात का अन्दाज़ आसान होने की वज्ह से बच्चे भी इन्तिहाई ज़ौक़ के साथ इस का मुत़ालआ़ कर सकते हैं। फ़र्ज़ उ़लूम के मौज़ूआ़त भी शामिल हैं जो हर मुसलमान के लिये निहायत अहम हैं, साथ ही साथ कसीर सुन्नतें, आदाब और सीरत के ख़ूब सूरत पहलू भी इस किताब में मौजूद हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें इस किताब को पढ़ने, इस पर अ़मल करने और दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

तफ़्सीर की अहम्मिय्यत

हज़रते इयास बिन मुआ़विया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो लोग कुरआने मजीद पढ़ते हैं और वोह उस की तफ़्सीर नहीं जानते उन की मिसाल उन लोगों की त़रह़ है जिन के पास रात के वक़्त उन के बादशाह का ख़त़ आया और उन के पास चराग़ नहीं जिस की रौशनी में वोह उस ख़त़ को पढ़ सकें तो उन के दिल डर गए और उन्हें मा'लूम नहीं कि उस ख़त़ में क्या लिखा है ? और वोह शख़्स जो कुरआन पढ़ता है और उस की तफ़्सीर जानता है उस की मिसाल उस क़ौम की त़रह़ है जिन के पास क़ासिद चराग़ ले कर आया तो उन्हों ने चराग़ की रौशनी से ख़त़ में लिखा हुवा पढ़ लिया और उन्हें मा'लूम हो गया कि ख़त़ में क्या लिखा है ?

(تفسیر قرطبی، باب ماجاء فی فضل تفسیر القرآن واھلہ، ۱/۱۴، الجزء الاول ملخصاً)

अल्लाह तआ़ला

सुवाल: वाजिबुल वुजूद किस को कहते हैं और इस से क्या मुराद है ?

जवाब: ज़ाते बारी तआ़ला को वाजिबुल वुजूद कहते हैं और इस से मुराद वोह ज़ात है जिस का वुजूद ज़रूरी हो ।(1)

सुवाल: अल्लाह तआ़ला के क़दीम और अज़ली होने का क्या मत़लब है ?

जवाब: अल्लाह तआ़ला के क़दीम और अज़ली होने का मत़लब येह है कि वोह हमेशा से है ।(2)

सुवाल: अल्लाह तआ़ला के अबदी होने से क्या मुराद है ?

जवाब: अल्लाह तआ़ला के अबदी होने से मुराद येह है कि वोह हमेशा रहेगा ।(3)

सुवाल: इल्मे ज़ाती का क्या मा'ना है ?

जवाब: इल्मे ज़ाती का येह मा'ना है कि बे ख़ुदा के दिये ख़ुद ह़ासिल हो ।(4)

सुवाल: इल्मे ज़ाती किस का ख़ास्सा है ?

जवाब: इल्मे ज़ाती अल्लाह तआ़ला का ख़ास्सा है ।(5)

सुवाल: अल्लाह तआ़ला की ज़ाती सिफ़ात कौन कौन सी हैं ?

जवाब: (1) ह़यात (2) क़ुदरत (3) सुनना (4) देखना (5) कलाम (6) इल्म और (7) इरादा । येह अल्लाह तआ़ला की ज़ाती सिफ़ात हैं ।(6)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 2 ।
2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 3-2 ।
3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 3 ।
4.....بहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 11 ।
5... الدولة المكية بالمادة الغيبية، ص ۳۹۔
6... مسامرة شرح مسايرة، ص ۱ ۳۹۔حديقة ندية، ۱/ ۲۵۳۔

सुवाल अल्लाह तआला के क़ादिर होने से क्या मुराद है ?

जवाब मुराद येह है कि वोह हर मुमकिन पर क़ादिर है कोई मुमकिन उस की कुदरत से बाहर नहीं ।(1)

सुवाल दुन्या की ज़िन्दगी में जागती आंखों से अल्लाह तआला का दीदार किस के लिये ख़ास है ?

जवाब दुन्या की ज़िन्दगी में अल्लाह तआला का दीदार इमामुल अम्बिया हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़ास है ।(2)

सुवाल आख़िरत में किसे अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा ?

जवाब आख़िरत में हर सुन्नी मुसलमान को अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा ।(3)

सुवाल क्या अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात के सिवा कोई चीज़ क़दीम है ?

जवाब जी नहीं बल्कि अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात के सिवा सब चीज़ें हादिस हैं या'नी पहले न थीं फिर मौजूद हुईं ।(4)

सुवाल तक़्दीर का मतलब क्या है ?

जवाब हर भलाई, बुराई उस ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था अपने इल्म से जाना और वोही लिख लिया । तो येह नहीं कि जैसा उस ने

---

1 ... تفسیر کبیر، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ:۲۵، ۷/۴۵۴۔ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 6

2 ... فتاوی حدیثیۃ، ص۲۰۰۔ المعتقد المنتقد، ص۵۶۔

3 ... بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی: وجوہ یومئذ ناضرۃ، ۴/۵۵۱، حدیث:۷۴۳۷۔ الفقہ الاکبر، ص۸۳۔ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 21 मुल्तक़त़न ।

4 ... شرح عقائد نسفیۃ، ص۹۸۔

लिख दिया वैसा हम को करना पड़ता है बल्कि जैसा हम करने वाले थे वैसा उस ने लिख दिया। ज़ैद के ज़िम्मे बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता वोह उस के लिये भलाई लिखता तो उस के इल्म या उस के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया।(1)

सुवाल कोई बुराई सरज़द हो जाने पर इसे तक़्दीर की त़रफ़ मन्सूब करना कैसा है ?

जवाब बुरा काम कर के तक़्दीर की त़रफ़ निस्बत करना और मशिय्यते इलाही के ह़वाले करना बहुत बुरी बात है बल्कि हुक्म येह है कि जो अच्छा काम करे उसे मिन जानिबिल्लाह कहे और जो बुराई सरज़द हो उस को शामते नफ़्स तसव्वुर करे।(2)

नुबुव्वत व रिसालत

सुवाल नबी किसे कहते हैं ?

जवाब जिस इन्सान को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत के लिये वह़्य भेजी हो उसे नबी कहते हैं।(3)

सुवाल रसूल किसे कहते हैं ?

जवाब अम्बियाए किराम में से जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कोई नई आस्मानी किताब और नई शरीअ़त ले कर आएं वोह रसूल कहलाते हैं।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 11-12।
2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 19।
3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 28, मुलख़्ख़सन।
4... شرح عقائد نسفیة، النوع الثانی خبر الرسول... الخ، ص ۸۲-۸۳۔

सुवाल : वह्य किसे कहते हैं ?

जवाब : वह्य उस कलाम को कहते हैं जो किसी नबी पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल हुवा हो।[1]

सुवाल : वह्य की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब : अम्बिया के ह़क़ में वह्य तीन क़िस्म पर है :

(1) **बिल वासित़ा :** फ़िरिश्ते की वसात़त से कलामे रब्बानी नबी के पास आए जैसे जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام का वह्य लाना।

(2) **बिला वासित़ा :** फ़िरिश्ते की वसात़त के बिग़ैर ब नफ़्से नफ़ीस कलामे रब्बानी को सुनना जैसे मे'राज की रात हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुना और कोहे तूर पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सुना।

(3) अम्बियाए किराम के क़ुलूब में मआ़नी का इल्क़ा किया जाए (दिलों में बात डाल दी जाए)।[2]

सुवाल : क्या ग़ैरे नबी के पास वह्य आ सकती है ?

जवाब : वह्ये नुबुव्वत ग़ैरे नबी के पास नहीं आती, जो इस का क़ाइल हो वोह काफ़िर है।[3]

सुवाल : क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से गुनाह मुमकिन हैं ?

जवाब : जी नहीं, वोह मा'सूम होते हैं उन से किसी भी त़रह़ का कोई भी गुनाह मुमकिन नहीं।[4]

सुवाल : क्या सब अम्बिया पर ईमान लाना ज़रूरी है या किसी एक पर ईमान लाना काफ़ी है ?

1.....नुज़हतुल क़ारी, 1 / 234।

2.....नुज़हतुल क़ारी, 1 / 234, मुलख़्ख़सन।

3... المعتقد المنتقد، ص۱۰۵ ۔شفا، فصل فی بیان ماھو من المقالات کفر، جزء۲، ص۲۸۵۔

4... حدیقہ ندیہ، ۱/۲۸۸۔

जवाब जी हां तमाम अम्बिया पर ईमान लाना ज़रूरी है इन में से किसी एक का इन्कार करना सब का इन्कार करना है।(1)

सुवाल सब से पहले और आख़िरी पैग़म्बर का नाम बताएं ?

जवाब सब से पहले पैग़म्बर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं और सब से आख़िरी पैग़म्बर हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।(2)

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ग़ैब का इल्म होने के बारे में हमारा क्या अक़ीदा है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाया, ज़मीनो आस्मान का हर ज़र्रा हर नबी के पेशे नज़र है मगर इन को येह इल्मे ग़ैब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये से है, लिहाज़ा इन का इल्म अ़ताई हुवा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इल्म ज़ाती।(3)

सुवाल अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत से क्या मुराद है ?

जवाब अक़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत से मुराद येह मानना है कि हमारे आक़ा व मौला हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं। या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर सिलसिलए नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमा दिया। हुज़ूर के ज़माने में या इस के बा'द क़ियामत तक कोई नया नबी नहीं हो सकता।(4)

सुवाल जो शख़्स ख़त्मे नुबुव्वत को न माने उस के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म है ?

1 . . . تفسیر مدارک، پ ۱۹، الشعراء، تحت الآیۃ: ۱۰۵، ص ۸۲۵۔

2 . . . شرح عقائد نسفیہ، اول الانبیاء آدم . . . الخ، ص ۳۰۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 41-45, मुलख़्ख़सन।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 63।

जवाब जो शख़्स सरवरे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नुबुव्वत मिलने का अ़क़ीदा रखे या किसी नए नबी के आने को मुमकिन माने वोह काफ़िर है।(1)

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा क्या है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़याते त़य्यिबा के मुतअ़ल्लिक़ हमारा अ़क़ीदा येह है कि वोह अपनी अपनी क़ब्रों में उसी त़रह़ ब ह़याते ह़क़ीक़ी ज़िन्दा हैं जैसे दुन्या में थे, खाते पीते हैं और जहां चाहें आते जाते हैं।(2)

फ़िरिश्ते

सुवाल फ़िरिश्ते कौन सी मख़्लूक़ हैं ?

जवाब फ़िरिश्ते एक नूरी मख़्लूक़ हैं, वोह मर्द हैं न औ़रत, अलबत्ता वोह मुख़्तलिफ़ शक्लें इख़्तियार कर सकते हैं।(3)

सुवाल फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या उन्हें नेकी की क़ुव्वत कहना कैसा ?

जवाब फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या येह कहना कि फ़िरिश्ता नेकी की क़ुव्वत को कहते हैं, इस के सिवा कुछ नहीं। येह दोनों बातें कुफ़्र हैं।(4)

सुवाल इब्लीस ज़लीलो रुस्वा होने से पहले किस मक़ाम पर फ़ाइज़ था ?

---

1 ...المعتقدالمنتقد، ص ۱۲۰۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 58।

3 ...منح الروض الازھر، ص ۱۲۔مسلم، کتاب الزھد، باب فی احادیث متفرقۃ، ص ۱۵۹۷، حدیث:۲۹۹۶۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 95।

जवाब इब्लीस जिन्नात में से था मगर बहुत बड़ा आ़बिदो ज़ाहिद था यहां तक कि गुरौहे मलाइका में उस का शुमार था।(1)

सुवाल उन फ़िरिश्तों के नाम बताएं जो तमाम मलाइका पर फ़ज़ीलत रखते हैं ?

जवाब ह़ज़रते जिब्राईल, ह़ज़रते मीकाईल, ह़ज़रते इस्राफ़ील और ह़ज़रते इज़राईल (عَلَیۡهِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام)(2)

सुवाल इन्सान के साथ हर वक़्त रहने वाले दो फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं ?

जवाब किरामन कातिबीन (या'नी आ'माल लिखने वाले मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ते)।(3)

सुवाल क़ब्र में सुवाल करने वाले फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं ?

जवाब उन फ़िरिश्तों को "मुन्कर नकीर" कहते हैं।(4)

सुवाल सब से आख़िर में किस को मौत आएगी ?

जवाब सब से आख़िर में ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیۡهِ السَّلَام को मौत आएगी।(5)

सुवाल ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَیۡهِ السَّلَام के ज़िम्मे क्या काम है ?

जवाब ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَیۡهِ السَّلَام के ज़िम्मे क़ियामत के दिन सूर फूंकना है।(6)

सुवाल फ़िरिश्तों की कुल ता'दाद कितनी है ?

1.....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 1,1 / 50 ـ پ ۲۹، المدثر: ۳۱

2... تفسیر کبیر، البقرۃ: تحت الآیۃ: ۳۰، ۱/۳۸۶، ملتقطاً۔

3... پ۳۰، الانفطار: ۱۱۔

4... ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۲/۳۳۷، حدیث: ۱۰۷۳۔

5... شرح اصول اعتقاد اھل السنۃ والجماعۃ، ماورد فی کتاب اللہ... الخ، ۱/۲۰۲۔ الحبائک فی اخبار الملائک، ص ۲۷۲-۲۷۳۔

6... الحبائک فی اخبار الملائک، ص ۳۱۔

जवाब इन की ता'दाद वोही जाने जिस ने इन को पैदा किया और उस के बताए से उस का रसूल।[1]

सुवाल वोह कौन सा फ़िरिश्ता है जिसे पानी बरसाना और रिज़्क़ देना वग़ैरा ज़िम्मेदारियां सिपुर्द हैं ?

जवाब हज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام ।[2]

सुवाल तमाम फ़िरिश्तों के सरदार कौन हैं ?

जवाब हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ।[3]

सुवाल अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले फ़िरिश्तों को क्या कहते हैं ?

जवाब जो मलाइका अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले हैं उन्हें "करूबी" (کَرُوبِی) कहते हैं और येह मलाइका में साहि़बे सियादत हैं।[4]

जिन्नात

सुवाल जिन्नात कौन हैं ?

जवाब जिन्नात एक मख़्लूक़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें आग के शो'ले से पैदा फ़रमाया है, इन में नेक भी हैं और बद भी, येह ऐसे अ़जीबो ग़रीब और मुश्किल काम करने की त़ाक़त रखते हैं जिन्हें करना आ़म इन्सान के बस की बात नहीं।[5]

सुवाल जिन्न को जिन्न क्यूं कहते हैं ?

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 1,1 / 94 ।

2 ...تفسیر بغوی، النازعات، تحت الآیۃ: ۵، ۴/۴۱۱۔

3 ...الحبائک فی اخبار الملائک، ص ۱۹۔

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पारह 24, अल मोमिन, तह़्तुल आयत, स. 864।

5 ...پ ۲۷، الرحمن: ۱۵۔ تفسیر قرطبی، پ ۲۹، الجن، تحت الآیۃ: ۱، ۱۰/۱۲۔ حدیقۃ ندیۃ، ۲/۱۷۔

जवाब लुग़त में जिन्न का मा'ना है "सत्र और ख़फ़ा" और जिन्न को इसी लिये जिन्न कहते हैं कि वोह आ़म लोगों की निगाहों से पोशीदा होता है।[1]

सुवाल जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना कैसा ?

जवाब जिन्नात के वुजूद का इन्कार या बदी की कुव्वत का नाम जिन्न या शैत़ान रखना कुफ़्र है।[2]

सुवाल **अल्लाह** तआ़ला ने इन्सानों और जिन्नात में से पहले किस को पैदा फ़रमाया ?

जवाब जिन्नों को इन्सानों से पहले पैदा फ़रमाया, हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ से दो हज़ार साल पहले ज़मीन पर जिन्नात रहते थे।[3]

सुवाल जिन्नात कितनी ता'दाद में हैं ?

जवाब इन्सानों के मुक़ाबले में जिन्नात की ता'दाद 9 गुना है।[4]

सुवाल बुरे जिन्नात को क्या कहा जाता है ?

जवाब बुरे जिन्नात को शयात़ीन कहा जाता है।[5]

सुवाल जिन्नात से हिफ़ाज़त के लिये क़ुरआने पाक की किन सूरतों और आयात की तिलावत की जाए ?

जवाब (1) आयतुल कुरसी (2) यासीन शरीफ़ (3) सूरए मोमिनून की

---

1 ...عمدۃ القاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الجن وثوابھم وعقابھم، ۱۰/۶۴۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 97।

3 ...درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۰، ۱/۱۱۱۔ کتاب العظمۃ، صفۃ ابتداء الخلق، ص ۲۹۹، حدیث: ۸۹۱۔

4 ...تفسیر طبری، پ ۱۷، الانبیاء، تحت الآیۃ: ۹۶، ۹/۸۵، ماخوذاً۔

5 ...تفسیر کبیر، الکتاب الاول فی العلوم المستنبطۃ من قولہ: اعوذ باللّٰہ... الخ، الباب الثانی... الخ، ۱/۸۵۔

आख़िरी आयात (4) सूरए मोमिन की इब्तिदाई आयत (5) सूरतुल बक़रह (6) सूरए आले इमरान (7) सूरतुल आ'राफ़ (8) सूरए हश्र की आख़िरी आयात (9) सूरए इख़्लास (10) सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास।(1)

सुवाल क्या इन्सानों की त़रह़ जिन्नात पर शरई अह़काम लागू होते हैं ?

जवाब जी हां ! जिन्नात भी शरीअ़ते मुत़ह्हरा के पाबन्द हैं। मुसलमान जिन्नात नमाज़ पढ़ते, रोज़ा रखते, ह़ज करते, तिलावते क़ुरआन करते और इन्सानों से दीनी उ़लूम और रिवायते ह़दीस ह़ासिल करते हैं अगर्चे इन्सानों को पता न चले।(2)

सुवाल इमामुल अइम्मा, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के विसाल पर जिन्नात क्या कह रहे थे ?

जवाब जिन्नात एक दूसरे से कह रहे थे : फ़क़ीह (क़ुरआनो सुन्नत से अह़काम निकालने और उन्हें वाज़ेह़ करने वाला आ़लिम) चला गया तो अब तुम्हारे लिये कोई फ़क़ीह न रहा लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और इन के पैरूकार और जा नशीन बनो।(3)

सुवाल क्या जिन्नात ने भी सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़ुशी मनाई थी ?

जवाब जी हां ! जब ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई तो जबले अबी क़ुबैस और ह़जून के पहाड़ पर जिन्न ने क़सम खा कर येह निदा की : "इन्सानों में से किसी

---

1 .....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अह्ले सुन्नत, स. 159।

2 ...فتاوی حدیثیۃ،مطلب الاصح ان الجن لیس فیھم نبی ولا رسول،ص۹۹،ملتقطاً۔

3 ...لقط المرجان فی احکام الجان،فی بکاء الجن،ص۲۰۰۔

औ़रत ने ऐसा बच्चा नहीं जना जैसा फ़ख़्र व सिफ़ात वाला बच्चा ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जना है ।(1)

सुवाल मदीनए मुनव्वरा में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ख़बर सब से पहले किस ने दी थी ?

जवाब येह ख़बर मदीनए मुनव्वरा में सब से पहले एक जिन्न ने दी थी ।(2)

सुवाल वोह कौन सी मस्जिद है जिस की ता'मीर जिन्नात से करवाई गई ?

जवाब बैतुल मुक़द्दस ।(3)

जन्नत

सुवाल जन्नत क्या है और येह **अल्लाह** तआ़ला ने किस के लिये बनाई है ?

जवाब जन्नत एक मकान है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान वालों के लिये बनाया है, इस में वोह ने'मतें मुहय्या की हैं जिन को न आंखों ने देखा, न कानों ने सुना, न किसी आदमी के दिल पर इन का ख़त़रा गुज़रा ।(4)

सुवाल जन्नत कितनी वसीअ़ है ?

जवाब जन्नत की वुस्अ़त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के बताए से रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जानें, मुख़्तसर येह कि इस में सौ (100) दरजे हैं ।(5)

---

1 ...لقط المرجان فی احکام الجان، نداء الجن...الخ، ص ۱۷۶۔

2 ...معجم اوسط، من اسمه احمد، ۱/۲۲۴، حدیث: ۷۶۵۔

3 ...تفسیر بغوی، پ ۲۲، سبا، تحت الآیة: ۳، ۱۳/۳۷۶۔

4 ...مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، ص ۱۵۱۶، حدیث: ۲۸۲۴- बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 152

5 ...ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة درجات الجنة، ۲۳۸/۴، حدیث: ۲۵۳۹۔

सुवाल जन्नत के दो दरजों के दरमियान कितनी मुसाफ़त है ?

जवाब जन्नत के हर दो दरजों के दरमियान की मुसाफ़त ज़मीनो आस्मान के दरमियान के फ़ासिले के बराबर है।(1)

सुवाल जन्नत का एक दरजा अपने अन्दर कितनी वुस्अ़त रखता है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि अगर तमाम आ़लम एक दरजे में जम्अ़ हों तो वोह सब के लिये वसीअ़ है।(2)

सुवाल जन्नतों की ता'दाद और नाम बताएं ?

जवाब जन्नतें आठ (8) हैं : (1) दारुल जलाल (2) दारुल क़रार (3) दारुस्सलाम (4) जन्नते अ़द्न (5) जन्नतुल मावा (6) जन्नतुल ख़ुल्द (7) जन्नतुल फ़िरदौस (8) जन्नतुन्नईम।(3)

सुवाल जन्नत के कितने दरवाज़े हैं ?

जवाब जन्नत के त़बक़े बहुत हैं हर त़बक़े का अ़लाह़िदा दरवाज़ा है, ख़ुद जन्नत ही के बहुत दरवाज़े हैं।(4)

सुवाल दारोग़ए जन्नत का नाम बताएं ?

जवाब ह़ज़रते रिज़वान عَلَيْهِ السَّلَام ।(5)

सुवाल **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से जन्नतियों पर सब से आ'ला इन्आ़म क्या होगा ?

---

1 ...ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة درجات الجنة، ۲۳۸/۴، حدیث:۲۵۳۹۔

2 ...ترمذی، کتاب صفة الجنة، باب ماجاء فی صفة درجات الجنة، ۲۳۹/۴، حدیث:۲۵۴۰۔

3 ...روح البیان، پ۱، البقرة، تحت الآیة:۲۵، ۸۲/۱۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 608 ।

5 ...مسند شهاب، باب ان لکل شیئ قلبا...الخ، ۱۳۰/۲، حدیث:۱۰۳۶۔

जवाब जन्नतियों के लिये सब से बड़ा इन्आम येह है कि उन्हें दीदारे इलाही नसीब होगा।[1]

सुवाल जन्नत में किस किस क़िस्म की नहरें बहती हैं ?

जवाब पानी, शहद, दूध और शराबे तहूर की।[2]

सुवाल जन्नत के दरवाज़े कितने वसीअ होंगे ?

जवाब जन्नत के दरवाज़े इतने वसीअ होंगे कि एक बाज़ू से दूसरे तक तेज़ घोड़े की सत्तर बरस की राह होगी।[3]

सुवाल हौज़े कौसर क्या है ?

जवाब येह हुज़ूर साक़िये कौसर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह हौज़ है जिस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैदाने महशर में अपनी उम्मत को सैराब फ़रमाएंगे।[4]

सुवाल जन्नती जन्नत में कितनी उम्र के दिखाई देंगे ?

जवाब तीस (30) या तैंतीस (33) साल के।[5]

दोज़ख़

सुवाल दोज़ख़ क्या है ?

जवाब दोज़ख़ एक मकान है जो **अल्लाह** क़हहारो जब्बार के जलाल व क़हर का मज़हर है।

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب اثبات رؤیۃ المومنین فی الآخرۃ...الخ، ص ۱۱۰، حدیث: ۱۸۱۔

2 ...ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی صفۃ انہار الجنۃ، ۲۵۷/۳، حدیث: ۲۵۸۰۔

3 ...مسند احمد، حدیث ابی رزین العقیلی، ۴۷۵/۵، حدیث: ۱۶۲۰۶۔

4 ...روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۵، ۸۳/۱۔

5 ...ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی سن اہل الجنۃ، ۲۴۴/۴، حدیث: ۲۵۵۴۔

सुवाल दोज़ख़ के बारे में हमारा क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब दोज़ख़ ह़क़ है[1] इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है[2] और येह पैदा हो चुकी है।[3]

सुवाल दोज़ख़ की गहराई कितनी है ?

जवाब दोज़ख़ की गहराई को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है, ह़दीस शरीफ़ में है : अगर एक बहुत बड़ा पथ्थर जहन्नम के किनारे से फेंका जाए और वोह उस में 70 साल तक गिरता रहे तब भी उस की तेह तक न पहुंचेगा।[4]

सुवाल दोज़ख़ पर मुक़र्रर निगरान फ़िरिश्तों की ता'दाद बताएं ?

जवाब उन की ता'दाद उन्नीस (19) है, एक ह़ज़रते मालिक عَلَيْهِ السَّلَام और अठ्ठारह (18) उन के साथी।[5]

सुवाल क़ियामत के रोज़ जहन्नम को किस ह़ाल में लाया जाएगा ?

जवाब क़ियामत के रोज़ जहन्नम को इस ह़ाल में लाया जाएगा कि उस की सत्तर (70) लगामें होंगी और हर लगाम को 70 हज़ार फ़िरिश्ते खींच रहे होंगे।[6]

सुवाल जहन्नम की सख़्तियां कैसी हैं ?

---

1 . . . شرح عقائد نسفیة، ص ۲۴۹۔

2 . . . شفاء، القسم الرابع، الباب الاول، فصل فی بیان ماھو من المقالات . . . الخ، الجزء الثانی، ص ۲۹۰۔

3 . . . تفسیر خازن، ال عمران، تحت الآیة: ۱۳۳، ۱/۳۰۱۔

4 . . . ترمذی، کتاب صفة جھنم، باب ماجاء فی صفة قعر جھنم، ۴/۲۶۰، حدیث: ۲۵۸۴۔

5 . . . تفسیر خازن، پ ۳۰، المدثر، تحت الآیة: ۳۰، ۴/۳۲۹۔

6 . . . ترمذی، کتاب صفة جھنم، باب ماجاء فی صفة النار، ۴/۲۵۹، حدیث: ۲۵۸۲۔

जवाब हदीसे पाक में है : अगर जहन्नम को सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले इस की गर्मी से मर जाएं, येह दुन्या की आग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ करती है कि इसे जहन्नम में फिर न ले जाए।(1)

सुवाल जहन्नम का सब से कम दरजे का अज़ाब क्या होगा ?

जवाब जिस को सब से कम दरजे का अज़ाब होगा, उसे आग की जूतियां पहना दी जाएंगी, जिस से उस का दिमाग़ ऐसा खोलेगा जैसे तांबे की पतेली खोलती है, वोह समझेगा कि सब से ज़ियादा अज़ाब उस पर हो रहा है हालांकि येह सब से हल्का होगा।(2)

सुवाल जहन्नम की वोह कौन सी वादी है जिस से खुद जहन्नम भी पनाह मांगता है ?

जवाब उस वादी का नाम "वैल" है और जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वाले उस के मुस्तहिक़ हैं।(3)

सुवाल दोज़ख़ में कितनी वादियां हैं ?

जवाब हदीस शरीफ़ में है : दोज़ख़ में 70 हज़ार वादियां हैं, हर वादी में 70 हज़ार घाटियां, हर घाटी में 70 हज़ार बिल हैं और हर बिल में सांप है जो जहन्नमियों के चेहरों को खाता है।(4)

सुवाल दोज़ख़ की आग किस रंग की है ?

---

1 ...معجم اوسط، ۲/۷۸، حدیث: ۲۵۸۳۔

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب اھون اھل النار عذاباً، ص ۱۳۴، حدیث: ۲۱۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 434।

4 ...الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، الترہیب من النار، فصل فی اودیتھا وجبالھا، ۴/۲۵۴، حدیث: ۴۰۔

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दोज़ख़ की आग को हज़ार साल जलाया गया यहां तक कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया तो सुर्ख़ हो गई, फिर हज़ार साल जलाया गया हत्ता कि सियाह हो गई, अब येह तारीक रात की तरह सियाह (काली) है।[1]

सुवाल कौन सी चीज़ सब से ज़ियादा लोगों को दोज़ख़ में दाख़िल करेगी ?

जवाब (1) मुंह और (2) शर्मगाह।[2]

सुवाल जहन्नम की आग दुन्या की आग से कितनी ज़ियादा शदीद है ?

जवाब दुन्या की आग जहन्नम की आग के सत्तर जुज़ों में से एक है।[3]

आ़लमे बरज़ख़

सुवाल बरज़ख़ किसे कहते हैं ?

जवाब दुन्या और आख़िरत के दरमियान एक और आ़लम है जिसे आ़लमे बरज़ख़ कहते हैं।[4]

सुवाल आ़लमे बरज़ख़ में कब तक रहना होगा ?

जवाब मरने के बा'द और क़ियामत से पहले तमाम इन्सो जिन्न को हस्बे मरातिब उस में रहना होता है।[5]

सुवाल क्या रूह़ व जिस्म दोनों मर जाते हैं ?

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ النار، ۴/۵۲۹، الحدیث: ۴۳۲۰۔

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی حسن الخلق، ۳/۴۰۴، حدیث: ۲۰۱۱۔

3 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ النار، ۴/۵۲۸، حدیث: ۴۳۱۸۔

4 ...تفسیر طبری، پ ۱۸، المؤمنون، تحت الآیۃ: ۱۰۰، ۹/۲۴۴۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1/98।

जवाब मौत के मा'ना सिर्फ़ रूह़ का जिस्म से जुदा हो जाना हैं, येह मुराद नहीं कि रूह़ मर जाती है, रूह़ हमेशा ज़िन्दा रहती है।(1)

सुवाल बरज़ख़ी ज़िन्दगी की कैफ़िय्यत कैसी होती है ?

जवाब बरज़ख़ में किसी को आराम है और किसी को तक्लीफ़। राह़त व लज़्ज़त, कुल्फ़त व अज़िय्यत (दुख व मुसीबत), सुरूर व ग़म सब ह़ालतें बरज़ख़ में हैं।(2)

सुवाल क़ब्र के अ़ज़ाब व इन्आ़म का इन्कार करने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब ऐसा शख़्स गुमराह है।(3)

सुवाल क्या मरने के बा'द भी रूह़ का तअ़ल्लुक़ इन्सान के बदन के साथ बाक़ी रहता है ?

जवाब जी हां ! अगर्चे रूह़ बदन से जुदा हो गई मगर बदन पर जो गुज़रेगी रूह़ ज़रूर उस से आगाह होगी।(4)

सुवाल बरज़ख़ में मुसलमान की रूह़ कहां रहती है ?

जवाब मुसलमान की रूह़ ह़स्बे मर्तबा मुख़्तलिफ़ मक़ामों में रहती है।(5)

सुवाल बरज़ख़ में काफ़िर की रूह़ कहां रहती है ?

जवाब काफ़िरों की ख़बीस रूहें बा'ज़ की उन के मरघट या क़ब्र पर रहती हैं, बा'ज़ की चाहे बरहूत में कि यमन में एक नाला है, बा'ज़ की पहली, दूसरी, सातवीं ज़मीन तक, बा'ज़ की उस के भी नीचे

---

1 ...شرح الصدور، باب فضل الموت، ص ۱۲، باب مقر الارواح، ص ۲۳۴- फ़तावा रज़विय्या, 9 / 657

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 100 मुलख़्ख़सन।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 113।

4 ...منح الروض الازهر، ص ۱۰۰ - شرح عقائد نسفیة، ص ۱۰۴-

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 101।

सिज्जीन में, और वोह कहीं भी हो, जो उस की क़ब्र या मरघट पर गुज़रे उसे देखते, पहचानते, बात सुनते हैं मगर कहीं जाने आने का इख़्तियार नहीं कि क़ैद हैं।(1)

सुवाल क्या मरने के बा'द रूह किसी और बदन में मुन्तक़िल हो सकती है?

जवाब येह ख़याल कि रूह किसी दूसरे बदन में चली जाती है ख़्वाह वोह आदमी का बदन हो या किसी और जानवर का जिस को **तनासुख़** और **आवागोन** कहते हैं महूज़ बातिल और इस का मानना कुफ़्र है।(2)

सुवाल "अ़ज बुज़्ज़म्ब" किसे कहते हैं?

जवाब रीढ़ की हड्डी के वोह बारीक अज्ज़ा जिन को न किसी ख़ुर्दबीन से देखा जाता है, न आग उन्हें जला सकती, न ज़मीन उन्हें गला सकती है, येही तुख़्मे जिस्म हैं, लिहाज़ा रोज़े क़ियामत रूहों का इआ़दा (या'नी लौटाना) इसी जिस्म में होगा।(3)

सुवाल वोह कौन हैं जिन के जिस्मों को क़ब्र की मिट्टी नहीं खा सकती?

जवाब अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, औलियाए किराम, उ़लमाए दीन, शुहदा, कुरआने मजीद पर अ़मल करने वाले हुफ़्फ़ाज़, कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी न करने वालों और अपने औक़ात को दुरूद शरीफ़ में मुस्तग़्रक़ रखने वालों के अज्साम को क़ब्र की मिट्टी नहीं खा सकती।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 103।

2...نبراس، والبعث حق، ص ۲۱۳۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 112।

4...روح البیان، پ ۱۰، التوبة، تحت الآیة: ۴۱، ۳/ ۴۳۹۔
شرح الصدور، باب نتن المیت۔۔۔الخ، ص ۳۱۷-۳۱۸۔ جامع کرامات الاولیاء، ۱/ ۲۷۲۔

सुवाल क्या क़ब्र हर मुर्दे को दबाती है ?

जवाब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इलावा हर एक को क़ब्र दबाती है मगर मुसलमान को दबाना शफ़्क़त के साथ होता है जैसे मां बच्चे को सीने से लगा कर चिमटाए और काफ़िर को सख़्ती से हृत्ता कि उस की पस्लियां इधर से उधर हो जाती हैं ।(1)

क़ियामत की निशानियां

सुवाल क़ियामत की निशानियों से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद दुन्या के फ़ना होने से पहले ज़ाहिर होने वाली छोटी बड़ी निशानियां हैं जिन में से बा'ज़ वाक़ेअ़ हो चुकीं और कुछ बाक़ी हैं ।(2)

सुवाल क़ियामत की बा'ज़ छोटी बड़ी निशानियां बयान कीजिये ?

जवाब उ़लमा को उठा कर इ़ल्म उठा लिया जाएगा, जहालत ज़ियादा हो जाएगी, ज़िना, गाने बाजे, शराब ख़ोरी और माल की कसरत होगी, मर्द कम होंगे, औ़रतें ज़ियादा होंगी, वक़्त में बरकत न होगी, बड़े दज्जाल के इलावा नुबुव्वत के झूटे दा'वेदार 30 दज्जाल और होंगे, ज़कात देना भारी होगा, मर्द बीवी की पैरवी करेगा और मां बाप की नाफ़रमानी, लोग अगलों पर ला'नत करेंगे, दरिन्दे और जानवर आदमी से बात करेंगे, लिबास व जूतों से मह़रूम ज़लील लोग मह़ल्लात में फ़ख़्र करेंगे, लोग मस्जिद में चिल्लाएंगे, दज्जाल का

---

(1) ...فیض القدیر، ۵/۳۲۴، تحت الحدیث: ۷۴۹۳ - منح الروض الازھر، ص ۱۰۱-
ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۴/۲۰۸، حدیث: ۲۴۶۸، ملتقطاً-

(2).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 116 मुलख़्ख़सन ।

ज़ुहूर होगा, हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام आस्मान से उतरेंगे, हज़रते इमाम महदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ज़ाहिर होंगे, याजूज माजूज निकलेंगे, एक जानवर दाब्बतुल अर्ज़ ज़ाहिर होगा और सूरज मग़रिब से निकलेगा।[1]

सुवाल तमाम दुन्या में फ़क़त् एक ही दीन, दीने इस्लाम कब होगा ?

जवाब जब हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे।[2]

सुवाल हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام किस वक़्त और कहां नुज़ूल फ़रमाएंगे ?

जवाब हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام आस्मान से जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ के शरक़ी मीनारे पर सुब्ह़ के वक़्त नुज़ूल फ़रमाएंगे जब कि नमाज़े फ़ज्र की इक़ामत हो चुकी होगी।[3]

सुवाल हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام कितने साल दुन्या में क़ियाम फ़रमाएंगे ?

जवाब आप عَلَیْہِ السَّلَام के ज़मीन पर क़ियाम का मजमूई अ़र्सा 40 साल है, आस्मान पर तशरीफ़ ले जाते वक़्त आप عَلَیْہِ السَّلَام की उ़म्र मुबारक 33 साल थी, अब जो कुर्बे क़ियामत में तशरीफ़ लाएंगे तो 7 बरस क़ियाम फ़रमाएंगे।[4]

सुवाल दज्जाल की ख़ास निशानियां बताएं ?

जवाब दज्जाल की एक आंख होगी, वोह काना होगा और उस की पेशानी पर "काफ़िर" लिखा होगा।[5]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 116-127 मुलख़्ख़सन।

2... بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب نزول عیسی۔۔۔الخ، ۲/۴۵۹، حدیث:۳۴۴۸۔
تفسیر طبری، پ۶، النساء، تحت الآیۃ:۱۵۹، ۴/۳۵۶۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 122 मुलख़्ख़सन।

4... فتاوی حدیثیۃ، مطلب فی کم یقیم عیسی علیہ السلام بعد نزولہ؟، ص۲۵۱، ملخصاً۔

5... بخاری، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال، ۴/۴۵۱، حدیث:۷۱۳۱۔

सुवाल दज्जाल के साथ किस की फ़ौजें होंगी ?

जवाब दज्जाल के साथ यहूद की फ़ौजें होंगी ।(1)

सुवाल दज्जाल कितने दिन में तमाम रूए ज़मीन का गश्त करेगा ?

जवाब दज्जाल ह़रमैने त़य्यिबैन के सिवा तमाम रूए ज़मीन का चालीस (40) दिन में गश्त करेगा ।(2)

सुवाल इतने कम दिनों में सारी ज़मीन का गश्त कैसे होगा ?

जवाब क्यूंकि चालीस दिन में पहला दिन साल भर के बराबर होगा, दूसरा दिन महीने भर के बराबर, तीसरा दिन हफ़्ते के बराबर और बाक़ी दिन चोबीस घन्टे के होंगे और वोह बहुत तेज़ी के साथ सफ़र करेगा, जैसे बादल कि जिस को हवा उड़ाती है ।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का दज्जाल पर क्या असर होगा ?

जवाब लईन दज्जाल जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को देखेगा तो ऐसे पिघलेगा जैसे पानी में नमक घुलता है और वोह आप से भागेगा ।(4)

सुवाल दज्जाल किस के हाथों क़त्ल होगा ?

जवाब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام उसे जहन्नम वासिल करेंगे ।(5)

---

1 . . . ابن ماجہ، ابواب الفتن، باب فتنۃ الدجال، ۴/۴۰۲، حدیث: ۴۰۷۷۔

2 . . . مسلم، کتاب الفتن، باب قصۃ الجساسۃ، ص ۱۵۷۴، حدیث: ۲۹۴۲۔

3 . . . مسلم، کتاب الفتن، باب فی ذکر الدجال۔۔۔الخ، ص ۱۵۶۸، حدیث: ۲۹۳۷۔

4 . . . ابن ماجہ، ابواب الفتن، باب فتنۃ الدجال۔۔۔الخ، ۴/۴۰۶، حدیث: ۴۰۷۷۔

5 . . . ابن ماجہ، ابواب الفتن، باب فتنۃ الدجال۔۔۔الخ، ۴/۴۰۶، حدیث: ۴۰۷۷۔

सुवाल कुर्बे क़ियामत निकलने वाला जानवर "दाब्बतुल अर्ज़" हर शख़्स पर क्या निशानी लगाएगा ?

जवाब हर मुसलमान की पेशानी पर एक निशान नूरानी बनाएगा और अंगुश्तरी (या'नी अंगूठी) से हर काफ़िर की पेशानी पर एक सख़्त सियाह धब्बा, उस वक़्त तमाम मुसलमान व काफ़िर अ़लानिय्या ज़ाहिर होंगे ।(1)

क़ियामत

सुवाल क़ियामत के दिन लोग क़ब्रों से किस ह़ालत में उठेंगे ?

जवाब क़ियामत के दिन लोग अपनी क़ब्रों से नंगे बदन, नंगे पाउं, ना ख़तनाशुदा उठेंगे ।(2)

सुवाल क़ियामत के दिन कौन ह़श्र के मैदान में मुंह के बल चल कर जाएंगे ?

जवाब क़ियामत के दिन काफ़िर मुंह के बल चल कर ह़श्र के मैदान में जाएंगे ।(3)

सुवाल क़ियामत का दिन कितने साल का होगा ?

जवाब पचास हज़ार साल का ।(4)

---

1 . . . ابن ماجه، ابواب الفتن، باب دابة الارض، ۴/۳۹۳، حديث: ۴۰۶۶۔
बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 126 मुल्तक़तन ।

2 . . . مسلم، کتاب الجنة وصفة نعيمها واهلها، باب فناء الدنيا ۔۔۔ الخ، ص ۱۵۲۹، حديث: ۲۸۶۹۔

3 . . . مسلم، کتاب صفات المنافقين واحكامهم، يحشر الكافر على وجهه، ص ۱۵۰۸، حديث: ۲۸۰۶۔

4 . . . پ ۲۹، المعارج: ۴۔

सुवाल मुन्किरे क़ियामत का क्या हुक्म है ?

जवाब इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है।(1)

सुवाल इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام जब दूसरी बार सूर फूंकेंगे तो अपनी क़ब्रे मुबारक में से सब से पहले कौन बाहर तशरीफ़ लाएंगे ?

जवाब सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।(2)

सुवाल मैदाने मह़शर किस ज़मीन पर क़ाइम होगा ?

जवाब मुल्के शाम की सर ज़मीन पर।(3)

सुवाल जब अह्ले मह़शर शफ़ाअ़त के वासिते़ सरकारे दो आ़लम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे तो आप क्या फ़रमाएंगे ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएंगे : اَنَا لَهَا या'नी मैं शफ़ाअ़त के लिये हूं।(4)

सुवाल "पुल सिरात़" किसे कहते हैं ?

जवाब "सिरात़" जहन्नम का पुल है जो बाल से बारीक और तल्वार से तेज़ है, जन्नत का रास्ता इसी पर है।(5)

सुवाल पुल सिरात़ कहां नस्ब किया जाएगा ?

जवाब पुल सिरात़ जहन्नम की पुश्त पर नस्ब किया जाएगा, सब से पहले

---

1 ...منح الروض الازہر، ص۱۹۵۔

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب قولہ صلی اللہ علیہ وسلم۔۔۔الخ، ۴/۳۷۸، حدیث: ۳۶۸۹۔

3 ...مسند احمد، حدیث بھز بن حکیم، ۷/۲۳۵، حدیث: ۲۰۰۴۲۔

4 ...بخاری، کتاب التوحید، باب کلام الرب۔۔۔الخ، ۴/۵۷۷، حدیث: ۷۵۱۰۔

5 ...مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۹/۴۱۵، حدیث: ۲۴۸۴۷۔ حدیقۃ ندیۃ، ۱/۲۶۸۔

सरकारे दो आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की उम्मत उस पुल से गुज़रेंगे ।(1)

सुवाल क्या क़ियामत का दिन हर एक के लिये यक्सां त़वील होगा ?

जवाब नहीं, रोज़े क़ियामत की दराज़ी बा'ज़ काफ़िरों के लिये हज़ार बरस और बा'ज़ के लिये पचास हज़ार बरस होगी जब कि बन्दए मोमिन के लिये येह दिन फ़क़त़ एक फ़र्ज़ नमाज़ के बराबर होगा जो दुन्या में पढ़ता था ।(2)

सुवाल मीज़ान क्या है ?

जवाब वोह तराज़ू है जिस में लोगों के आ'माल तोले जाएंगे । इस की एक ज़बान और दो पलड़े हैं, नेकियां ख़ूब सूरत शक्ल में और गुनाह बुरी शक्ल में मीज़ान में रखे जाएंगे ।(3)

सुवाल मैदाने मह़शर में ज़मीन किस चीज़ की कर दी जाएगी ?

जवाब तांबे की ।(4)

ईमान व कुफ़्र

सुवाल ईमान किसे कहते हैं ?

जवाब सच्चे दिल से उन सब बातों की तस्दीक़ करना जो ज़रूरियाते दीन से हैं, ईमान कहलाता है ।(5)

1 . . . بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالی: وجوہ یومئذ ناضرۃ ـــ الخ، ۴/ ۵۵۱، حدیث: ۷۴۳۷۔

2 . . . تفسیر خازن، پ ۲۱، السجدۃ، تحت الآیۃ: ۵، ۳/ ۴۷۶۔

3 . . . تفسیر بغوی، پ ۸، الاعراف، تحت الآیۃ: ۸، ۲/ ۱۲۴، ملخصاً۔

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 132 ।

5.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 172 ।

सुवाल कुफ़्र किसे कहते हैं ?

जवाब किसी एक ज़रूरते दीनी के इन्कार को कुफ़्र कहते हैं अगर्चे बाक़ी तमाम ज़रूरियाते दीन की तस्दीक़ करता हो ।(1)

सुवाल ज़रूरियाते दीन से क्या मुराद है ?

जवाब ज़रूरियाते दीन से मुराद इस्लाम के वोह अह़काम हैं जिन को हर ख़ासो आम जानते हों, जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक होना, अम्बियाए किराम عَلَيۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की नुबुव्वत, नमाज़ व ज़कात, जन्नत व दोज़ख़, क़ियामत में उठाया जाना, ह़िसाबो किताब लेना वग़ैरा ।(2)

सुवाल ईमाने मुफ़स्सल व ईमाने मुजमल बताइये ?

जवाब ईमाने मुफ़स्सल :

اٰمَنۡتُ بِاللّٰہِ وَمَلٰۤئِکَتِہٖ وَکُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ وَالۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَالۡقَدۡرِ خَیۡرِہٖ وَشَرِّہٖ مِنَ اللّٰہِ تَعَالٰی وَالۡبَعۡثِ بَعۡدَ الۡمَوۡتِ ط

ईमाने मुजमल :

اٰمَنۡتُ بِاللّٰہِ کَمَا ھُوَ بِاَسۡمَآئِہٖ وَصِفَاتِہٖ وَقَبِلۡتُ جَمِیۡعَ اَحۡکَامِہٖ اِقۡرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصۡدِیۡقٌ بِالۡقَلۡبِ ط

सुवाल क्या ईमान व कुफ़्र के दरमियान कोई तीसरा दरजा भी है ?

जवाब ईमान व कुफ़्र के दरमियान कोई वासित़ा (दरजा) नहीं है या तो बन्दा मुसलमान होगा या काफ़िर तीसरी कोई सूरत नहीं कि न मुसलमान हो न काफ़िर ।(3)

---

1 ...مسامرۃ شرح مسایرۃ، مفھوم الایمان، ص ۳۳۰۔ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 172

2 ...مسامرۃ شرح مسایرۃ، مفھوم الایمان، ص ۳۳۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 181, मुलख़्ख़सन ।

सुवाल काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़्फ़िरत की दुआ़ करना कैसा है ?

जवाब जो किसी काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़्फ़िरत की दुआ़ करे या किसी मुर्दा मुर्तद को मर्हूम या मग़्फ़ूर कहे वोह खुद काफ़िर है ।(1)

सुवाल निफ़ाक़ किसे कहते हैं ?

जवाब ज़बान से इस्लाम का दा'वा करना और दिल में इस का इन्कार करना निफ़ाक़ है और येह भी ख़ालिस कुफ़्र है ।(2)

सुवाल मुर्तद किसे कहते हैं ?

जवाब मुर्तद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बा'द किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो ज़रूरियाते दीन से हो । या'नी ज़बान से (ऐसा) कलिमए कुफ़्र बके जिस में तावीले सहीह़ की गुन्जाइश न हो । यूंही बा'ज़ अफ़्आ़ल भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है मसलन बुत को सजदा करना । मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) को नजासत की जगह फैंक देना ।(3)

सुवाल शिर्क किसे कहते हैं ?

जवाब शिर्क के मा'ना ग़ैरे ख़ुदा को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़े इबादत जानना ।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 185, मुल्तक़तन ।

2...تفسیر خازن، پ ا، البقرة، تحت الآیة:٦، ا/٢٥۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 9, 2 / 455 ।

4...شرح عقائد نسفیة، اللہ تعالی خالق لافعال العباد، ص ٢٠٣، ملتقطاً۔

सुवाल इस्लाम की बुन्याद कितनी चीज़ों पर है ?

जवाब इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : (1) इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं (2) नमाज़ क़ाइम करना (3) ज़कात देना (4) रमज़ान के रोज़े रखना और (5) हज करना ।[1]

सुवाल ईमान की कितनी शाख़ें हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि ईमान की सत्तर (70) से कुछ ज़ाइद शाख़ें हैं ।[2]

सुवाल ह़राम को ह़लाल और ह़लाल को ह़राम जानने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब जिस चीज़ की ह़िल्लत नस्से क़त्ई से साबित हो उस को ह़राम कहना और जिस की हुरमत यक़ीनी हो उसे ह़लाल बताना कुफ़्र है जब कि येह हुक्म ज़रूरियाते दीन से हो या मुन्कर इस हुक्मे क़त्ई से आगाह हो ।[3]

विलायत

सुवाल विलायत किसे कहते हैं ?

जवाब विलायत एक क़ुर्बे ख़ास है कि मौला عَزَّوَجَلَّ अपने बरगुज़ीदा बन्दों को महज़ अपने फ़ज़्लो करम से अ़ता फ़रमाता है ।[4]

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الایمان والاسلام . . . الخ، ص ۲۱، حدیث: ۸۔

2 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان . . . الخ، ص ۳۹، حدیث: ۳۵۔

3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 176 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 1,1 / 264 ।

सुवाल क्या कोई वली किसी सहाबी से अफ़्ज़ल हो सकता है ?

जवाब कोई वली कितने ही बड़े मर्तबे का हो किसी सहाबी के रुत्बे को नहीं पहुंच सकता।[1]

सुवाल क्या अकाबिर औलिया भी गुनाहों से पाक होते हैं ?

जवाब अकाबिर औलिया को **अल्लाह** तआ़ला मह़फ़ूज़ रखता है, उन से गुनाह होता नहीं, अगर हो तो उस पर इसरार नहीं करते फ़ौरी तौबा करते हैं।[2]

सुवाल करामत किसे कहते हैं ?

जवाब वली से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को करामत कहते हैं।[3]

सुवाल औलियाए किराम से किस त़रह़ की करामात मुमकिन हैं ?

जवाब मुर्दे ज़िन्दा करना, मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को शिफ़ा देना, मशरिक़ से मग़रिब तक सारी ज़मीन एक क़दम में तै़ कर जाना, ग़रज़ तमाम ख़िलाफ़े आ़दत बातें औलिया से मुमकिन हैं।[4]

सुवाल करामाते औलिया का इन्कार करना कैसा है ?

जवाब करामते औलिया ह़क़ है, इस का मुन्किर गुमराह है।[5]

सुवाल इल्हाम किसे कहते हैं ?

---

1 ...مرقاۃ، کتاب الفتن، ۲۸۲/۹-۲۸۳، تحت الحدیث: ۵۴۰۱۔

2 ...بریقۃمحمودیۃ، الباب الثانی، الفصل الاول، مطلب کرامات الاولیاء...الخ، ۲۶۵/۱۔ رسالۃقشیریۃ، باب کرامات الاولیاء، ص ۳۸۱۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 58 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 269–270 ।

5 ...الفقہ الاکبر، ص ۷۹۔ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 269

जवाब औलिया के दिल में बा'ज़ औक़ात सोते या जागते में कोई बात इल्क़ा होती है, उसे इल्हाम कहते हैं।[1]

सुवाल वस्वसा और इल्हाम में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब बुरे ख़यालात, फ़ासिद फ़िक्र को वस्वसा कहते हैं और अच्छे ख़यालात को इल्हाम। वस्वसा शैत़ान की त़रफ़ से होता है, इल्हाम रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से।[2]

सुवाल क्या औलियाए किराम को भी इल्मे ग़ैब अ़त़ा होता है ?

जवाब जी हां ! औलियाए किराम को भी इल्मे ग़ैब अ़त़ा होता है मगर अम्बिया के वासित़े से।[3]

सुवाल क्या किसी जाहिल, बे इ़ल्म शख़्स को विलायत मिल सकती है ?

जवाब जी नहीं ! विलायत बे इ़ल्म को नहीं मिलती (बल्कि इस के लिये इ़ल्म ज़रूरी है) ख़्वाह इ़ल्म बत़ौरे ज़ाहिर ह़ासिल किया हो, या इस मर्तबे पर पहुंचने से पेशतर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस पर उ़लूम मुन्कशिफ़ कर दिये हों।[4]

सुवाल सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम किस उम्मत के हैं ?

जवाब सब से अफ़्ज़ल औलियाए किराम हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उम्मत के हैं।[5]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 35 ।

2.....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 81 ।

3...روح البیان، پ۲۹، الجن، تحت الآیۃ:۲۷، ۱۰/۲۰۱۔
ارشاد الساری، کتاب التفسیر، سورۃ الرعد، تحت الحدیث:۴۶۹۷، ۱۰/۳۲۹۔

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1,1 / 264 ।

5...الیواقیت والجواھر، المبحث السابع والاربعون، الجزء الثانی، ص۳۴۸۔

सुवाल क्या कोई वली अह्कामे शरइय्या की पाबन्दी से आज़ाद हो सकता है ?

जवाब जी नहीं, कोई वली कैसा ही अ़ज़ीम हो अह्कामे शरइय्या की पाबन्दी से सुबुक दोश नहीं हो सकता ।(1)

त़हारत

सुवाल कुरआने पाक की रौशनी में त़हारत की अहम्मिय्यत बयान करें ?

जवाब पाकीज़गी और पाकीज़ा लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं चुनान्चे, इरशाद होता है : ﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝﴾ (پ۱۱، التوبة:۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और सुथरे अल्लाह को प्यारे हैं ।"

इस के साथ ही नापाकी को इतना ना पसन्द किया गया कि बिग़ैर वुज़ू कुरआने पाक को हाथ तक लगाने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया, चुनान्चे, इरशाद हुवा : ﴿لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝﴾ (پ۲۷، الواقعة:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "इसे न छूएं मगर बा वुज़ू ।"

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़हारत की अहम्मिय्यत से मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब फ़रमाया : "त़हारत निस्फ़ ईमान है ।"(2)

सुवाल वोह त़हारत जो नमाज़ की शर्त़ है इस से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि नमाज़ी का बदन, इस के कपड़े और वोह जगह जहां नमाज़ पढ़नी है नजासत से पाक हो ।(3)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1 / 266 ।

2 ...مسلم، کتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، ص۱۴۰، حديث:۲۲۳۔

3 ...شرح وقاية، كتاب الصلوة، باب شروط الصلوة، الجزء ا، ص۱۵۶۔

सुवाल तहारत की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब तहारत की दो क़िस्में हैं : (1) तहारते सुग़रा (2) तहारते कुब्रा। तहारते सुग़रा से मुराद वुज़ू और तहारते कुब्रा से मुराद ग़ुस्ल है।[1]

सुवाल तहारत के बिग़ैर नमाज़ पढ़ने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब बिला उ़ज़्र जान बूझ कर बिग़ैर तहारत के नमाज़ पढ़ना कुफ़्र है जब कि इसे जाइज़ समझे या इस्तिह्ज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुवे) येह फ़े'ल करे।[2]

सुवाल मछली, मच्छर या मख्खी वग़ैरा का ख़ून अगर कपड़ों पर लग जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और ख़च्चर और गधे का लुआ़ब और पसीना पाक है।[3]

सुवाल बिल्ली अगर पानी में मुंह डाल दे तो उस पानी का क्या हुक्म है ?

जवाब घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिपकली का झूटा मकरूह है।[4]

सुवाल कुत्ते का लुआ़ब क्या हुक्म रखता है ?

जवाब कुत्ते का लुआ़ब नापाक है।[5]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 282।

2...منح الروض الازھر، ص۱۷۲۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 392।

4...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی، ۱/۲۴۔
ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب المیاہ، فصل فی البئر، مطلب فی السؤر، ۱/۴۲۶۔

5...ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب فی السؤر، ۱/۴۲۵۔

सुवाल क्या दूध पीते बच्चे का पेशाब पाक होता है ?

जवाब जी नहीं, एक दिन के दूध पीते बच्चे का पेशाब भी उसी त़रह़ नापाक है जिस त़रह़ आ़म लोगों का।(1)

सुवाल किन परिन्दों की बीट पाक है ?

जवाब जो परिन्द ह़लाल ऊंचे उड़ते हैं जैसे कबूतर, मीना, मुर्ग़ाबी, इन की बीट पाक है।(2)

सुवाल नापाक कारपेट (CARPET) को कैसे पाक किया जाए ?

जवाब कारपेट का नापाक ह़िस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये ह़त्ता कि पानी टपकना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी त़रह़ धो कर लटका दीजिये जब पानी टपकना बन्द हो जाएगा तो कारपेट पाक हो जाएगा। चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वग़ैरा जिन चीज़ों में पतली नजासत जज़्ब हो जाती हो इसी त़रीक़े पर पाक कीजिये।(3)

सुवाल दूसरे के कपड़े पर नजासत लगी देखी तो क्या किया जाए ?

जवाब किसी दूसरे मुसलमान के कपड़े में नजासत लगी देखी और ग़ालिब गुमान है कि उस को ख़बर करेगा तो पाक कर लेगा तो ख़बर करना वाजिब है। (ऐसी सूरत में ख़बर नहीं देगा तो गुनहगार होगा)।(4)

---

1 ...درمختار، کتاب الطهارة، باب الانجاس، ۱/۵۷۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2,1 / 39।

3 .....इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 263।

4 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2,1 / 405।

वुज़ू

सुवाल वुज़ू से मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब वुज़ू के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में इरशाद होता है :

﴿يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَ اَیْدِیَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَ امْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَ اَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَیْنِؕ﴾ (پ٦، المائدة:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपना मुंह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मस्ह़ करो और गिट्टों तक पाउं धोओ।"

सुवाल ह़दीसे पाक में वुज़ू की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब आदमी वुज़ू करता है तो हाथ धोने से हाथों के और चेहरा धोने से चेहरे के और सर का मस्ह़ करने से सर के और पाउं धोने से पाउं के गुनाह झड़ते हैं।"(1)

सुवाल हमेशा बा वुज़ू रहने वाले को कौन सी सात फ़ज़ीलतें मिलती हैं ?

जवाब (1) मलाइका उस की सोह़बत में रग़बत करें (2) क़लम उस की नेकियां लिखता रहे (3) उस के आ'ज़ा तस्बीह़ करें (4) उस से तक्बीरे ऊला फ़ौत न हो (5) जब सोए अल्लाह तआ़ला कुछ फ़िरिश्ते भेजे कि जिन्नो इन्स के शर से उस की ह़िफ़ाज़त करें (6) सकराते मौत उस पर आसान हो (7) जब तक वुज़ू हो अमाने इलाही में रहे।(2)

1 ...مسند امام احمد، ١/١٣٠، حدیث:٤١٥۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 1 / 703।

सुवाल वुज़ू के कितने फ़राइज़ हैं ?

जवाब वुज़ू में चार फ़र्ज़ हैं : (1) मुंह धोना (2) कोहनियों समेत दोनों हाथों का धोना (3) सर का मस्ह करना (4) टख़्नों समेत दोनों पाउं का धोना ।(1)

सुवाल किसी उ़ज़्व को धोने के क्या मा'ना हैं ?

जवाब किसी उ़ज़्व के धोने के येह मा'ना हैं कि उस उ़ज़्व के हर हिस्से पर कम से कम दो बूंद पानी बह जाए । भीग जाने या तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लेने या एक आध बूंद बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस से वुज़ू या ग़ुस्ल अदा हो ।(2)

सुवाल क्या मिस्वाक नमाज़ के लिये सुन्नत है या वुज़ू के लिये ?

जवाब मिस्वाक नमाज़ के लिये सुन्नत नहीं बल्कि वुज़ू के लिये, तो जो एक वुज़ू से चन्द नमाज़ें पढ़े, उस से हर नमाज़ के लिये मिस्वाक का मुत़ालबा नहीं, जब तक तग़य्युरे राइह़ा (सांस बदबूदार) न हो गया हो, वरना इस के दफ़्अ़ के लिये मुस्तक़िल सुन्नत है ।(3)

सुवाल हाथ वग़ैरा से ख़ून निकलने के बा वुजूद कब वुज़ू नहीं टूटता ?

जवाब ख़ून निकला लेकिन बहा नहीं तो येह वुज़ू को नहीं तोड़ता ।(4)

सुवाल ख़ून निकल कर बह गया मगर वुज़ू न टूटा, इस की क्या सूरत है ?

जवाब अगर ख़ून बहा मगर बह कर ऐसी जगह नहीं पहुंचा जिस का वुज़ू

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 288 ।
2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 288 ।
3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 295 ।
4...فتاوى هندية، كتاب الطهارة، الباب الاول في الوضوء، الفصل الخامس، ١/١٠-

या गुस्ल में धोना फ़र्ज़ हो मसलन ख़ून निकल कर आंख या कान में बहा मगर इन से बाहर नहीं आया तो वुज़ू नहीं टूटा।[1]

सुवाल इन्जिक्शन लगाने से वुज़ू टूटेगा या नहीं ?

जवाब गोश्त में इन्जिक्शन लगाने में सिर्फ़ उसी सूरत में वुज़ू टूटेगा जब कि बहने की मिक्दार में ख़ून निकले।[2]

सुवाल क्या नस का इन्जिक्शन लगाने या टेस्ट के लिये ख़ून निकालने से वुज़ू टूट जाएगा ?

जवाब नस का इन्जिक्शन लगा कर पहले ऊपर की तरफ़ ख़ून खींचते हैं जो कि बहने की मिक्दार में होता है लिहाज़ा वुज़ू टूट जाता है यूंही सिरिंज के ज़रीए टेस्ट करने के लिये ख़ून निकालने से वुज़ू टूट जाता है क्यूंकि येह बहने की मिक्दार में होता है।[3]

सुवाल क्या ग्लूकोज़ वग़ैरा की ड्रिप लगवाने से वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब ग्लूकोज़ वग़ैरा की ड्रिप नस में लगवाने से वुज़ू टूट जाएगा क्यूंकि बहने की मिक्दार में ख़ून निकल कर नल्की में आ जाता है।[4]

सुवाल दुखती आंख से निकलने वाले आंसूओं का क्या हुक्म है ?

जवाब आंख की बीमारी के सबब जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुज़ू भी तोड़ देगा।[5]

---

1 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء، الفصل الرابع، فی المکروھات، ۱/۱۱۔

2 .....नमाज़ के अह्काम, स. 27।

3 .....नमाज़ के अह्काम, स. 26-27।

4 .....नमाज़ के अह्काम, स. 26।

5 ...درمختار ورد المحتار، کتاب الطھارۃ، ۱/۲۹۰۔

गुस्ल

सुवाल गुस्ल के कितने फ़राइज़ हैं ?

जवाब गुस्ल के तीन फ़राइज़ हैं : (1) कुल्ली करना (2) नाक में पानी चढ़ाना (3) तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना।(1)

सुवाल "तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना" से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर रौंगटे पर पानी बह जाए, अगर एक ज़र्रा भर जगह या किसी बाल की नोक भी पानी बहने से रह गई तो गुस्ल न होगा।(2)

सुवाल मर्द के बाल अगर गुंधे हुवे हों तो गुस्ल किस तरह होगा ?

जवाब अगर मर्द के सर के बाल गुंधे हुवे हों तो उन्हें खोल कर जड़ से नोक तक पानी बहाना फ़र्ज़ है।(3)

सुवाल अगर नाखुन पर नेल पॉलिस लगी हुई हो तो क्या गुस्ल हो जाएगा ?

जवाब अगर नेल पॉलिस नाखुनों पर लगी हुई है तो उस का छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना गुस्ल नहीं होगा।(4)

सुवाल अगर हाथ में सियाही की तेह लगी रह जाए तो क्या गुस्ल हो जाएगा ?

जवाब पकाने वाले के नाखुन में आटा, लिखने वाले के नाखुन में सियाही का जिर्म, आ़म लोगों के लिये मख्खी, मच्छर की बीट लगी हुई रह

---

1 ...فتاوی هندية، كتاب الطهارة، الباب الثاني في الغسل، الفصل الاول في فرائضة، ١/١٣-

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 1 / 443-444 मुल्तक़तन।

3 ...فتاوی هندية، كتاب الطهارة، الباب الثاني في الغسل، الفصل الاول، ١/١٣-

4 .....नमाज़ के अह़काम, स. 106 ।

गई और तवज्जोह न रही तो गुस्ल हो जाएगा, हां मा'लूम हो जाने के बा'द जुदा करना और उस जगह का धोना ज़रूरी है पहले जो नमाज़ पढ़ी वोह हो गई।(1)

सुवाल बहते पानी में गुस्ल का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब अगर बहते पानी मसलन दरया या नहर में गुस्ल किया तो थोड़ी देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं।(2)

सुवाल औ़रत के बाल अगर गुंधे हुवे हों तो इस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब औ़रत पर सिर्फ़ बालों की जड़ तर कर लेना ज़रूरी है खोलना ज़रूरी नहीं, हां अगर चोटी इतनी सख़्त गुंधी हुई हो कि बे खोले जड़ें तर न होंगी तो खोलना ज़रूरी है।(3)

सुवाल जिन पर गुस्ल फ़र्ज़ हो क्या वोह अज़ान का जवाब दे सकते हैं ?

जवाब जिन पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उन को अज़ान का जवाब देना जाइज़ है।(4)

सुवाल नापाकी की हालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब जिन पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उन को दुरूद शरीफ़ और दुआ़एं पढ़ने में ह़रज नहीं, मगर बेहतर येह है कि वुज़ू या कुल्ली कर के पढ़ें।(5)

सुवाल ऐसे दिन गुस्ल फ़र्ज़ हुवा जिस दिन गुस्ल करना सुन्नत या मुस्तह़ब

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 1 / 455।

2 ...درمختاروردالمحتار، کتاب الطہارۃ، ۱/۳۲۰-۳۲۱۔ मुल्तक़तन , बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 320

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطہارۃ، الباب الثانی فی الغسل، الفصل الاول، ۱/۱۳۔

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الطہارۃ، الباب السادس، الفصل الرابع، ۱/۳۸۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 327।

है तो क्या उसे फ़र्ज़ के साथ दूसरा गुस्ल अलग से करना होगा ?

जवाब जिस पर चन्द गुस्ल हों मसलन ईद भी है और जुमुआ़ का दिन भी मज़ीद फ़र्ज़ गुस्ल भी हो तो तीनों की निय्यत कर के एक गुस्ल कर लिया, सब अदा हो गए और सब का सवाब मिलेगा।[1]

सुवाल किन अय्याम में गुस्ल करना सुन्नत है ?

जवाब जुमुआ़, ईदुल फ़ित्र, बक़र ईद, अ़रफ़ा के दिन (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतुल ह़राम) और एह़राम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है।[2]

सुवाल किन मवाक़ेअ़ पर गुस्ल करना मुस्तह़ब है ?

जवाब (1) वुक़ूफ़े अ़रफ़ात (2) वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा (3) ह़ाज़िरिये ह़रम (4) ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (5) दुख़ूले मिना (6) जमरों पर कंकरियां मारने के लिये तीनों दिन (7) शबे बराअत (8) शबे क़द्र (9) त़वाफ़ (10) अ़रफ़ा की रात (11) मजलिसे मीलाद शरीफ़ (12) दीगर मजालिसे ख़ैर में ह़ाज़िरी के लिये (13) मुर्दा नहलाने के बा'द (14) मजनून को जुनून जाने के बा'द (15) ग़शी से इफ़ाक़ा के बा'द।[3]

तयम्मुम

सुवाल कुरआने पाक में तयम्मुम के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब कुरआने पाक में इरशाद हुवा :

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب: یوم عرفۃ افضل . . . الخ، ۱/ ۳۴۱۔

2 . . . فتاوی ھندیۃ، الباب الثالث، الفصل الاول، ۱/ ۱۶۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1/ 324-325۔ درمختار وردالمحتار، ۱/ ۳۴۱-۳۴۳۔

﴿وَ اِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ
مِّنَ الْغَآىٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَیَمَّمُوْا صَعِیْدًا طَیِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَ اَیْدِیْكُمْ مِّنْهُ﴾ (پ۶، المائدۃ:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम बीमार या सफ़र में हो या तुम में कोई क़ज़ाए हाजत से आया या तुम ने औरतों से सोहबत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह करो ।

सुवाल हदीसे पाक में तयम्मुम के मुतअ़ल्लिक़ क्या आया है ?

जवाब नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "पाक मिट्टी मुसलमान का वुज़ू है अगर्चे दस बरस पानी न पाए ।"[1]

सुवाल तयम्मुम का हुक्म कब और किस मक़ाम पर नाज़िल हुवा ?

जवाब तयम्मुम का हुक्म हिजरत के पांचवें साल मक़ामे बैदा या ज़ातुल जैश में नाज़िल हुवा ।[2]

सुवाल आयते तयम्मुम को किस की बरकत कहा गया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आल की ।[3]

सुवाल तयम्मुम के कितने और कौन कौन से फ़राइज़ हैं ?

जवाब तयम्मुम में तीन फ़राइज़ हैं : (1) निय्यत (2) सारे मुंह पर हाथ फेरना (3) दोनों हाथ का कोहनियों समेत मस्ह करना ।[4]

---

1 ...مسند احمد، ۸/۸۶، حدیث:۲۱۴۲۹-

2 ...بخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، ۱/۱۳۳، حدیث:۳۳۴- सीरते मुस्त़फ़ा, स. 320

3 ...بخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، ۱/۱۳۳، حدیث:۳۳۴-

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 1 / 353-355 ।

सुवाल तयम्मुम की कितनी और कौन कौन सी सुन्नतें हैं ?

जवाब तयम्मुम की दस सुन्नतें हैं : (1) بِسۡمِ اللّٰهِ शरीफ़ कहना (2) हाथों को ज़मीन पर मारना (3) ज़मीन पर हाथ मार कर लौट देना (या'नी आगे बढ़ाना और पीछे लाना) (4) उंगलियां खुली हुई रखना (5) हाथों को झाड़ लेना (6) पहले मुंह फिर हाथों का मस्ह़ करना (7) दोनों का मस्ह़ पै दर पै होना (8) पहले सीधे फिर उलटे हाथ का मस्ह़ करना (9) दाढ़ी का ख़िलाल करना (10) उंगलियों का ख़िलाल करना जब कि ग़ुबार पहुंच गया हो ।[1]

सुवाल किस सूरत में उंगलियों का ख़िलाल करना फ़र्ज़ है ?

जवाब अगर (उंगलियों में) ग़ुबार न हो तो ख़िलाल फ़र्ज़ है ।[2]

सुवाल तयम्मुम किस चीज़ से करना जाइज़ है ?

जवाब जो चीज़ आग से जल कर न राख होती है न पिघलती है न नर्म होती है वोह ज़मीन की जिन्स (या'नी क़िस्म) से है इस से तयम्मुम जाइज़ है ।[3]

सुवाल तयम्मुम किन चीज़ों से टूट जाता है ?

जवाब जिन चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है या ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है उन से तयम्मुम भी टूट जाता है और पानी पर क़ादिर होने से भी तयम्मुम टूट जाता है ।[4]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 356 ।

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 356 ।

3...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، ۱/۲٦۔

4...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الثانی، ۱/۲۹۔

सुवाल वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के तयम्मुम का एक ही त़रीक़ा है।[1]

सुवाल क्या ज़म ज़म शरीफ़ के इलावा दूसरा पानी न होने की सूरत में तयम्मुम किया जा सकता है ?

जवाब अगर इतना आबे ज़म ज़म शरीफ़ पास है जो वुज़ू के लिये काफ़ी है तो तयम्मुम जाइज़ नहीं।[2]

सुवाल क्या नमक से तयम्मुम जाइज़ है ?

जवाब जो नमक पानी से बनता है उस से तयम्मुम जाइज़ नहीं और जो कान से निकलता है जैसे सींधा नमक उस से जाइज़ है।[3]

अज़ानो इक़ामत

सुवाल अज़ान की इब्तिदा कब हुई और इस्लाम के सब से पहले मुअज़्ज़िन का नाम बताइये ?

जवाब अज़ान की इब्तिदा हिजरत के पहले साल हुई और इस्लाम के सब से पहले मुअज़्ज़िन ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।[4]

सुवाल दीने इस्लाम में अज़ान को क्या अहम्मिय्यत ह़ासिल है ?

जवाब अज़ान की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि पांचों फ़र्ज़ नमाज़ें ब शुमूल जुमुआ़ मुबारक जब जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के

---

1 ...جوہرۃ النیرۃ، کتاب الطہارۃ، باب التیمم، ص۲۸۔

2 ...فتاوی تاتارخانیۃ، کتاب الطہارۃ، الفصل الخامس فی التیمم، نوع آخر فی بیان شرائطہم، ۱/۲۳۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2,1 / 358 ।

4 ...شرح المواھب، باب بدء الاذان، ۲/۱۹۵۔ مسند احمد، مسند الانصار، ۸/۲۶۴۔

الاوائل للطبرانی، باب اول من اذن، ص۱۱۶، رقم:۸۵۔

साथ मस्जिद में वक़्त पर अदा की जाएं तो इन के लिये अज़ान सुन्नते मुअक्कदा है और इस का हुक्म मिस्ले वाजिब है कि अगर अज़ान न कही तो वहां के सब लोग गुनहगार होंगे। "फ़तावा ख़ानिया" में है : अज़ान शआइरे इस्लाम में से है हत्ता कि अगर किसी शहर, बस्ती या महल्ले के लोग अज़ान कहना छोड़ दें तो हाकिम उन्हें इस पर मजबूर करेगा और अगर वोह फिर भी न मानें तो उन से लड़ाई करेगा।[1]

सुवाल क्या प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अज़ान देना साबित है ?

जवाब जी हां ! हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सफ़र में अज़ान देना साबित है जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कलिमाते शहादत यूं इरशाद फ़रमाए : اَشْهَدُ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰه ।[2]

सुवाल आंखें दुखने से हिफ़ाज़त का कोई अ़मल बताएं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं जो शख़्स मुअज़्ज़िन से اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه सुन कर مَرْحَبًا بِحَبِيْبِيْ وَقُرَّةِ عَيْنِيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِاللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم कहे फिर दोनों अंगूठे चूम कर आंखों पर रखे उस की आंखें कभी न दुखें।[3]

सुवाल पांचों नमाज़ों की अज़ान व इक़ामत का जवाब देने पर मर्दों को कितनी नेकियां मिलती हैं ?

1....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3,1 / 464 माख़ूज़न - فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الثاني في الاذان، ١/٥٣ - درمختار، كتاب الصلاة، ٢/١٠ - فتاوى خانية، كتاب الصلاة، باب الاذان، ١/٣٤

2...جدالممتار، باب الاذان، ٢/٨١ - फ़तावा रज़विय्या, हिस्सा, 5 / 375

3...المقاصد الحسنة، حرف الميم، ص٣٩٠، تحت الحديث: ١٠٢١

जवाब तीन करोड़ चौबीस लाख (3,24,00,000) ।[1]

सुवाल अज़ान देने वाला कैसा हो ?

जवाब मुस्तहब येह है कि मुअज़्ज़िन मर्द, आ़क़िल, सालेह़, परहेज़गार, आ़लिम बिस्सुन्नह, ज़ी वजाहत, लोगों के अह़वाल का निगरां और जो जमाअ़त से रह जाने वाले हों, उन को ज़ज्र करने वाला हो, अज़ान पर मुदावमत (हमेशगी) करता हो और सवाब के लिये अज़ान कहता हो ।[2]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कितने मुअज़्ज़िन थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पांच मुअज़्ज़िन थे :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन आ़इज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मह़ज़ूरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन ह़ारिस सुदाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[3]

सुवाल तिलावते कुरआन के दौरान अज़ान शुरूअ़ हो जाए तो क्या करे ?

जवाब जब अज़ान हो तो उतनी देर के लिये सलाम व कलाम और जवाबे सलाम और तमाम काम मौक़ूफ़ कर दीजिये यहां तक कि तिलावत भी, अज़ान को ग़ौर से सुनिये और जवाब दीजिये । इक़ामत में भी इसी त़रह़ कीजिये ।[4]

---

1 .....फ़ैज़ाने अज़ान, स. 6 ।

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الاذان، الفصل الاول، ۱/۵۳۔

3 ...مجموعۃ رسائل اللکنوی، خیر الخبر فی اذان خیر البشر، ۴/۳۲۸۔

4 .....फ़ैज़ाने अज़ान, स. 12 ।

सुवाल क्या अज़ान हो जाने के बा'द भी अज़ान का जवाब दिया जा सकता है ?

जवाब अगर ब वक़्ते अज़ान जवाब न दिया और ज़ियादा देर न गुज़री हो तो जवाब दे सकते हैं ।(1)

सुवाल ब वक़्ते अज़ान बातें करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब जो शख़्स अज़ान के वक़्त बातों में लगा रहे उस पर مَعَاذَاللہ ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है ।(2)

सुवाल क्या अज़ान सिर्फ़ नमाज़ों के लिये दी जा सकती है ?

जवाब जी नहीं ! बल्कि दर्जे ज़ैल मवाक़ेअ़ पर भी अज़ान देना मुस्तहब है : (1) बच्चे (2) ग़मगीन (3) मिर्गी वाले (4) ग़ज़ब नाक और बद मिज़ाज आदमी और (5) बद मिज़ाज जानवर के कान में (6) लड़ाई की शिद्दत के वक़्त (7) आग लगने के वक़्त (8) मय्यित दफ़्न करने के बा'द (9) जिन्न की सरकशी के वक़्त (या किसी पर जिन्न सुवार हो) (10) उस वक़्त जब जंगल में रास्ता भूल जाएं और कोई बताने वाला न हो ।(3) और (11) वबा के ज़माने में भी अज़ान देना मुस्तहब है ।

सुवाल इक़ामत के वक़्त कोई शख़्स आया तो उस का खड़े हो कर इन्तिज़ार करना कैसा ?

जवाब इक़ामत के वक़्त कोई शख़्स आया तो उसे खड़े हो कर इन्तिज़ार करना मकरूह है बल्कि बैठ जाए जब इक़ामत कहने वाला

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الاذان، مطلب: فی کراھۃ تکرار الجماعۃ فی المسجد، ۲/۸۱۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 473 ।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 370 ।

حَيَّ عَلَى الْفَلَاح पर पहुंचे उस वक़्त खड़ा हो। यूंही जो लोग मस्जिद में मौजूद हैं, वोह भी बैठे रहें, उस वक़्त उठें, जब इक़ामत कहने वाला حَيَّ عَلَى الْفَلَاح पर पहुंचे, येही हुक्म इमाम के लिये है।(1)

नमाज़

सुवाल हदीसे पाक में नमाज़ का चोर किसे कहा गया है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों में बदतरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नमाज़ का चोर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : जो रुकूअ़ और सजदे पूरे न करे।(2)

सुवाल **अल्लाह** तआ़ला कैसी नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला बन्दे की उस नमाज़ की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में रुकूअ़ व सुजूद के दरमियान पीठ सीधी न करे।(3)

सुवाल त़वील क़ियाम करना अफ़्ज़ल है या ज़ियादा रक्अ़तें पढ़ना ?

जवाब नमाज़ में क़ियाम त़वील होना कसरते रक्आ़त से अफ़्ज़ल है या'नी जब कि किसी वक़्ते मुअ़य्यन तक नमाज़ पढ़ना चाहे मसलन दो रक्अ़त में उतना वक़्त सर्फ़ कर देना चार रक्अ़त पढ़ने से अफ़्ज़ल है।(4)

---

1 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی فی الأذان، الفصل الثانی، ۱/۵۷۔

2 ...مسند احمد، حدیث ابی قتادۃ الانصاری، ۸/۳۸۶، حدیث: ۲۲۷۰۵۔

3 ...مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۶۱۷، حدیث: ۱۰۸۰۳۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 4, 1 / 667।

सुवाल किस नमाज़ की जमाअ़त में नया आने वाला मुक़्तदी शरीक नहीं हो सकता ?

जवाब अगर फ़र्ज़ छूट जाने के इ़लावा किसी सबब से नमाज़े बा जमाअ़त दोहराई जा रही हो तो नया आने वाला मुक़्तदी उस में शरीक नहीं हो सकता, अलबत्ता अगर तर्के फ़र्ज़ के सबब दोहराई जाए तो नया शख़्स शरीक हो सकता है।(1)

सुवाल एक रुक्न में कितनी बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है ?

जवाब एक रुक्न में तीन बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है, या'नी यूं कि खुजा कर हाथ हटा लिया फिर खुजाया फिर हटा लिया, येह दो बार हुवा अगर अब इसी त़रह़ तीसरी बार किया तो नमाज़ जाती रहेगी।(2)

सुवाल कब आमीन कहने से नमाज़ टूट जाती है इस की कोई सूरत बयान करें ?

जवाब नमाज़ पढ़ने वाले को छींक आई तो दूसरे ने कहा : يَرْحَمُكَ الله, उस पर छींक वाले ने आमीन कहा तो इस सूरत में आमीन कहने से नमाज़ टूट जाती है।(3)

सुवाल नमाज़ की ह़ालत में इधर उधर देखने का क्या हुक्म है ?

जवाब इधर उधर मुंह फेर कर देखना चाहे पूरा मुंह फेरा या थोड़ा मकरूहे तह़रीमी है, मुंह फेरे बिग़ैर सिर्फ़ आंखें फिरा कर इधर उधर बे

1.....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 52 ।

2 . . . فتاوی ھندیة، کتاب الصلاة، الباب السابع فیما یفسد الصلاة، النوع الثاني، ۱/ ۱۰۴۔

غنیة المتملی، مفسدات الصلاة، ص ۴۴۸۔

3 . . . غنیة المتملی، کتاب الصلاة، فصل فیما یفسد الصلاة، ص ۴۳۹۔

ज़रूरत देखना मकरूहे तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़र्ज़े सहीह से हो तो अस्लन हरज नहीं, हालते नमाज़ में निगाह आस्मान की तरफ़ उठाना भी मकरूहे तह़रीमी है।(1)

सुवाल सुतरा किसे कहते हैं और इस की मिक्दार कितनी हो ?

जवाब नमाज़ी के आगे किसी ऐसी चीज़ का होना जिस से आड़ हो जाए उसे सुतरा कहते हैं। सुतरा ब क़दर एक हाथ के ऊंचा और उंगली बराबर मोटा हो।(2)

सुवाल किस सूरत में दौराने जमाअ़त एक शख़्स नमाज़ियों के आगे से गुज़रने के बा वुजूद गुनाहगार नहीं होता ?

जवाब जब इमाम के आगे सुतरा मौजूद हो तो अब इमाम का सुतरा मुक़्तदियों के लिये भी सुतरा है, उन के लिये अलग सुतरे की हाजत नहीं, इस सूरत में कोई मुक़्तदियों के आगे से गुज़रा तो गुनाहगार नहीं।(3)

सुवाल नमाज़ में क़ुरआने पाक से देख कर पढ़ना कैसा है ?

जवाब नमाज़ में मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) से देख कर क़ुरआन पढ़ना मुत़लक़न मुफ़्सिदे नमाज़ है, यूंही अगर मेह़राब वग़ैरा में लिखा हो उसे देख कर पढ़ना भी मुफ़्सिद है, हां अगर याद पर पढ़ता हो मुस्ह़फ़ या मेह़राब पर फ़क़त़ नज़र है, तो ह़रज नहीं।(4)

सुवाल ता'दीले अरकान किसे कहते हैं ?

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 626 मुलख़्ख़सन।
2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 615।
3...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب مایفسد الصلاۃ ومایکرہ فیھا، مطلب اذا قرأ قولہ... الخ، ۲/۴۸۷۔
4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 609।

जवाब ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार سُبْحَانَ اللّٰہ कहने की मिक़्दार ठहरना।(1)

सुवाल अ़मले कसीर क्या है और कब इस से नमाज़ फ़ासिद होती है ?

जवाब अ़मले कसीर कि न आ'माले नमाज़ से हो न नमाज़ की इस्लाह़ के लिये किया गया हो, नमाज़ फ़ासिद कर देता है, जिस काम के करने वाले को दूर से देख कर उस के नमाज़ में न होने का शक न रहे, बल्कि गुमाने ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तो वोह अ़मले कसीर है।(2)

नमाज़ की शराइत़

सुवाल नमाज़ की कितनी और कौन कौन सी शराइत़ हैं ?

जवाब नमाज़ की छे शराइत़ हैं (1) त़हारत (2) सित्रे औ़रत (3) इस्तिक़्बाले क़िब्ला (4) वक़्त (5) निय्यत (6) तक्बीरे तह़रीमा।(3)

सुवाल वोह कौन सी जगह है जहां किसी भी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ी जा सकती है ?

जवाब का'बा शरीफ़ की इमारत के अन्दर या उस की छत पर नमाज़ पढ़े तो जिस त़रफ़ भी चाहे मुतवज्जेह हो कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है।(4)

सुवाल वोह कौन सा पाक व साफ़ कपड़ा है जिसे पहन कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ?

जवाब चुराया हुवा कपड़ा या धोबी वग़ैरा के यहां से बदला हुवा कपड़ा अगर्चे पाक व साफ़ हो मगर उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना मकरूहे

---

1 . . . درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: قد یشار الی المثنی . . . الخ، ۲/ ۱۹۳۔

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 609 मुल्तक़तन।

3 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/ ۸۹۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الثالث فی استقبال القبلۃ، ۱/ ۶۳۔

तहरीमी, नाजाइज़ और गुनाह है, नमाज़ वाजिबुल इआदा होगी और ऐसे कपड़े का पहनना मर्द व औरत सब को हराम है।[1]

सुवाल वोह कौन है जो पानी पर कुदरत और याद होते हुवे बिग़ैर वुज़ू नमाज़ पढ़े तो गुनाहगार नहीं ?

जवाब नाबालिग़ बच्चा ऐसा करे तो गुनाहगार नहीं क्यूंकि नाबालिग़ पर वुज़ू फ़र्ज़ नहीं।[2] मगर उन से वुज़ू कराना चाहिये ताकि आदत हो और वुज़ू करना आ जाए और मसाइले वुज़ू से आगाह हो जाएं।

सुवाल वोह कौन सी ज़मीन है जिस से तयम्मुम नहीं कर सकता लेकिन वहां नमाज़ पढ़ सकता है ?

जवाब ऐसी नजिस ज़मीन जो धूप या हवा से पाक हो गई उस पर मुसल्ला बिछाए बिग़ैर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है मगर उस से तयम्मुम करना जाइज़ नहीं।[3]

सुवाल मकरूह औक़ात कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब मकरूह औक़ात तीन हैं : (1) तुलूए आफ़्ताब से ले कर 20 मिनट बा'द तक (2) ग़ुरूबे आफ़्ताब से 20 मिनट पहले (3) निस्फ़ुन्नहार या'नी ज़हवए कुब्रा से ले कर ज़वाले आफ़्ताब तक।[4]

सुवाल एक पाउं पर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी तो क्या हुक्म है ?

जवाब बिला ज़रूरत एक पाउं पर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ी तो मकरूह है

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या 7/ 298, 394, मुल्तक़तन।

2 ... ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب في اعتبارات المرکب التام، ١/٢٠٢-

3 ... شرح وقاية، کتاب الطهارة، باب التيمم، الجزء١، ص ٩٨-

4 ... درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاة، مطلب: يشترط العلم بدخول الوقت، ٢/٣٧-٣٠-

बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1/ 454 मुलख़्ख़सन।

हां जिस जगह पाउं रखना है वोह जगह नापाक है तो एक पाउं उठा कर नमाज़ पढ़ सकता है।[1]

सुवाल सजदे में पेशानी पाक जगह जब कि नाक नजिस जगह पर हो तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब जी हां नमाज़ हो जाएगी कि नाक दिरहम से कम जगह पर लगती है लेकिन बिला ज़रूरत येह भी मकरूह है।[2]

सुवाल अगर नमाज़ की हालत में सिर्फ़ मुंह क़िब्ले से फेर दिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर मुंह क़िब्ले से फेरा तो वाजिब है कि फ़ौरन क़िब्ले की जानिब कर ले इस सूरत में नमाज़ फ़ासिद न होगी लेकिन बिला ज़रूरत येह भी मकरूह है।[3]

सुवाल अगर किसी ने नमाज़ की यूं निय्यत की, कि "मैं चार रक्अ़त मग़रिब की या तीन रक्अ़त ज़ोहर की अदा करता हूं" नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब जी हां नमाज़ हो जाएगी क्यूंकि निय्यत में ता'दादे रक्आ़त की ज़रूरत नहीं अलबत्ता अफ़्ज़ल ज़रूर है।[4]

सुवाल इमाम ने अगर किसी मख़्सूस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ येह क़स्द कर लिया कि "मैं फ़ुलां का इमाम नहीं हूं" तो ऐसी सूरत में उस शख़्स की नमाज़ होगी या नहीं ?

जवाब उस शख़्स की नमाज़ हो जाएगी क्यूंकि इमाम को निय्यते इमामत करना ज़रूरी नहीं।[5]

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/ ۹۲

2 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ، ۲/ ۹۲۔

3 . . . منیۃ المصلی، الشرط الرابع وھواستقبال القبلۃ، ص ۲۲۳-۲۲۴۔

4 . . . درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی حضور القلب والخشوع، ۲/ ۱۲۱۔

5 . . . فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الرابع فی النیۃ، ۱/ ۶۶۔

सुवाल ऐसे कपड़ों में नमाज़ पढ़ी जिस में बदन नज़र आता हो तो नमाज़ का क्या हुक्म है ?

जवाब इतना बारीक कपड़ा जिस में बदन चमकता हो सत्र के लिये काफ़ी नहीं उस में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ न होगी ।(1)

नमाज़ के फ़राइज़

सुवाल नमाज़ के फ़राइज़ कितने और कौन कौन से हैं ?

जवाब नमाज़ के सात फ़राइज़ हैं : (1) तक्बीरे तह़रीमा (2) क़ियाम (3) क़िराअत (4) रुकूअ़ (5) सुजूद (6) क़ा'दए अख़ीरा (7) ख़ुरूजे बिसुन्इही ।(2)

सुवाल नमाज़ में क़िराअत किस त़रह़ करनी चाहिये ?

जवाब क़िराअत इस त़रह़ करनी चाहिये कि तमाम ह़ुरूफ़ मख़ारिज से अदा किये जाएं कि हर ह़र्फ़ दूसरे से सह़ीह़ त़ौर पर मुमताज़ (नुमायां) हो जाए ।(3)

सुवाल मुक़्तदी ने तक्बीरे तह़रीमा इमाम से पहले ख़त्म कर ली तो नमाज़ का क्या हुक्म होगा ?

जवाब मुक़्तदी ने तक्बीरे तह़रीमा का लफ़्ज़े "**अल्लाह**" इमाम के साथ कहा मगर "**अक्बर**" इमाम से पहले ख़त्म कर लिया तो नमाज़ न होगी ।(4)

सुवाल जो रुकूअ़ में "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم" का "عظیم" सह़ीह़ अदा न कर सके वोह क्या पढ़े ?

---

(1) . . . فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث فی شروط الصلاۃ، الفصل الاول فی الطھارۃ وستر العورۃ، ۱/۵۸۔

(2) . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۱۵۸۔۱۷۰۔

(3) . . . فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول، ۱/۶۹۔

(4) . . . فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع، الفصل الاول، ۱/۶۸-۶۹۔

जवाब उसे चाहिये कि वोह "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْکَرِیْم" पढ़े।[1]

सुवाल रुकूअ़ का अदना दरजा क्या है ?

जवाब इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटने को पहुंच जाए, येह रुकूअ़ का अदना दरजा है।[2]

सुवाल रुकूअ़ का मुकम्मल दरजा क्या है ?

जवाब इतना झुकना कि पीठ सीधी बिछा दे येह रुकूअ़ का पूरा दरजा है।[3]

सुवाल हर रक्अ़त में कितनी बार सजदा फ़र्ज़ है ?

जवाब हर रक्अ़त में दो बार सजदा फ़र्ज़ है।[4]

सुवाल सजदे में पेशानी जमने का क्या मत़लब है ?

जवाब जमने के मा'ना येह हैं कि ज़मीन की सख़्ती मह़सूस हो अगर किसी ने इस त़रह़ सजदा किया कि पेशानी न जमी तो सजदा न होगा।[5]

सुवाल नमाज़ में तक्बीरे तह़रीमा की बजाए سُبْحَانَ اللّٰه कह कर नमाज़ शुरूअ़ की तो क्या हुक्म है ?

जवाब इस सूरत में नमाज़ शुरूअ़ हो जाएगी लेकिन اَللّٰهُ اَکْبَر की जगह سُبْحَانَ اللّٰه कहना मकरूहे तह़रीमी है।[6]

सुवाल किस सूरत में सामने नमाज़ पढ़ने वाले की पीठ पर सजदा करना जाइज़ है ?

---

1 ...ردالمحتار،کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، مطلب: قراءۃ البسملۃ...الخ، ۲/۲۴۲۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۱۶۵۔

3 ...حاشیۃ طحطاوی، کتاب الصلاۃ، باب شروط الصلاۃ وارکانہا، ص ۲۲۹۔

4 ...درمختار ورد المحتار، کتاب الصلاۃ، ۲/۱۶۷۔

5 ...فتاوی ہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع، الفصل الاول، ۱/۷۰، नमाज़ के अह़काम स. 214 मुल्तक़त़न

6 ...فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول فی فرائض الصلاۃ، ۱/۶۸۔

जवाब जब भीड़ बहुत ज़ियादा हो तो सामने वाले की पीठ पर सजदा करना जाइज़ है जब कि वोह उस की नमाज़ में शरीक हो।[1]

सुवाल सजदए सह्व करने के बा'द बिग़ैर तशह्हुद पढ़े सलाम फेर दिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब फ़र्ज़ अदा हो जाएगा लेकिन ऐसा करने से गुनाहगार होगा और नमाज़ फिर से पढ़नी वाजिब होगी।[2]

सुवाल क़िराअत की जगह सिर्फ़ بِسْمِ الله पढ़ ली तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

जवाब नमाज़ नहीं होगी क्यूंकि सिर्फ़ بِسْمِ الله पढ़ने से फ़र्ज़ अदा न होगा।[3]

वाजिबाते नमाज़ और सजदए सह्व

सुवाल वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए तो सजदए सह्व वाजिब है।[4]

सुवाल सजदए सह्व का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब अत्तहिय्यात पढ़ कर बल्कि अफ़्ज़ल येह है कि दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये, सीधी त़रफ़ सलाम फेर कर दो सजदे कीजिये फिर तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ कर सलाम फेर दीजिये।[5]

---

1 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الرابع فی صفۃ الصلاۃ، الفصل الاول فی فرائض الصلاۃ، ۱/۷۰۔

2 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، ۲/۱۹۳، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 516

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، ۲/۲۳۶، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 512

4 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ۲/۲۵۱، ۲۵۵۔

5 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، ۱/۱۲۵۔

सुवाल अगर दाहिनी त़रफ़ सलाम फेरे बिग़ैर सजदए सह्व कर लिया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर बिग़ैर सलाम फेरे सजदए सह्व कर लिया तो नमाज़ हो जाएगी लेकिन ऐसा करना मकरूहे तन्ज़ीही है।(1)

सुवाल सजदए सह्व के बा'द अत्तहिय्यात पढ़ने का क्या हुक्म है ?

जवाब सजदए सह्व के बा'द भी अत्तहिय्यात पढ़ना वाजिब है।(2)

सुवाल क़ियाम में कोई शख़्स सूरए फ़ातिहा पढ़ कर कुछ देर सोचता रहा कि कौन सी सूरत पढ़ूं तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर ब क़दरे अदाए रुक्न या'नी जितनी देर में 3 बार "سُبْحَانَ اللّٰہ" कह लेता इतने वक़्त तक सोचता रहा तो सजदए सह्व लाज़िम है।(3)

सुवाल अगर सजदए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अस्ल हुक्म येह है (कि) सजदए सह्व वाजिब हुवा अगर न किया नमाज़ मकरूहे तह़रीमी हुई जिस का इआ़दा करना वाजिब (है)।(4)

सुवाल जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो क्या हुक्म है ?

जवाब जान बूझ कर वाजिब तर्क किया तो सजदए सह्व काफ़ी नहीं बल्कि नमाज़ दोबारा लौटाना वाजिब है।(5)

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/۶۵۳۔

2 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو ۱/۱۲۵۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 177 मुल्तक़तन।

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 178 मुल्तक़तन।

5 . . . درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب: سجود السھو ۲/۶۵۵۔

सुवाल फ़र्ज़ तर्क हो गया तो क्या सजदए सह्व से उस की तलाफ़ी हो जाएगी ?

जवाब फ़र्ज़ तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सजदए सह्व से उस की तलाफ़ी नहीं हो सकती लिहाज़ा दोबारा पढ़िये ।(1)

सुवाल नमाज़ में कुरआने पाक पढ़ने से कब सजदए सह्व वाजिब होता है ?

जवाब क़ियाम के इलावा दीगर अरकान में कुरआने मजीद पढ़ने से सजदए सह्व वाजिब होता है ।(2)

सुवाल एक से ज़ाइद वाजिब तर्क हुवे तो कितने सजदए सह्व करने होंगे ?

जवाब नमाज़ में अगर्चे दस वाजिब तर्क हुवे, सह्व के दो ही सजदे सब के लिये काफ़ी हैं ।(3)

सुवाल क़ा'दए ऊला में तशहहुद के बा'द अगर बे ख़याली में اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا या اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ कह लिया तो इस से नमाज़ पर क्या असर पड़ेगा ?

जवाब फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में ऐसा हुवा सजदए सह्व वाजिब हो जाएगा और अगर जान बूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है ।(4)

सुवाल किस सूरत में नमाज़ी सलाम फेरने के बा वुजूद नमाज़ से बाहर नहीं होता ?

जवाब जिस पर सजदए सह्व वाजिब हो मगर सह्व होना याद न हो तो इस सूरत में सलाम फेरने के बा वुजूद नमाज़ के बाहर नहीं बशर्त्

---

1 ...درمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب: سجود السھو ۲/۶۵۵۔

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/۶۵۷، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 713

3 ...درمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب: سجود السھو ۲/۶۵۵۔

4 ...درمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو ۲/۶۵۷۔

येह कि सजदए सह्व कर ले लिहाज़ा जब तक कोई फ़े'ल मुनाफ़िये नमाज़ न किया हो उसे हुक्म है कि सजदए सह्व करे और तशह्हुद वग़ैरा पढ़ कर नमाज़ पूरी करे।[1]

नमाज़े वित्र

सुवाल नमाज़े वित्र का वक़्त कब से कब तक है?

जवाब वित्र का वक़्त इशा के फ़र्ज़ों के बा'द से सुब्हे सादिक़ तक है।[2]

सुवाल नमाज़े वित्र कब अदा करना अफ़्ज़ल है?

जवाब जो सो कर उठने पर क़ादिर हो उस के लिये अफ़्ज़ल है कि रात के आख़िरी हिस्से में उठ कर पहले तहज्जुद अदा करे फिर वित्र।[3] ह़दीसे पाक में है : "जिस शख़्स को येह ख़द्शा हो कि वोह रात के पिछले पहर नहीं उठ सकेगा वोह वित्र पढ़ कर सोया करे और जिस शख़्स को रात के उठने पर ए'तिमाद हो वोह रात के पिछले पहर वित्र पढ़े"[4]

सुवाल नमाज़े वित्र का हुक्म बताइये?

जवाब नमाज़े वित्र वाजिब है।[5] अगर येह छूट जाए तो इस की क़ज़ा लाज़िम है।[6]

---

1 ... درمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السهو ۲/ ۶۷۰-۶۷۱۔

2 ... مراقی الفلاح وحاشیۃ طحطاوی، ص ۱۷۸۔

3 ... غنیۃ المتملی، ص ۴۰۳۔

4 ... مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب من خاف ان لا یقوم ... الخ، ص ۳۸۰، حدیث: ۷۵۵۔

5 ... بحر الرائق، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/ ۲۶۔

6 ... درمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب: فی منکر الوتر ... الخ، ۲/ ۵۳۲۔

सुवाल विත्र में तक्बीरे कुनूत कहने का क्या हुक्म है ?

जवाब तीसरी रक्अ़त में क़िराअत के बा'द तक्बीरे कुनूत कहना वाजिब है।[1]

सुवाल मश्हूर दुआ़ए कुनूत कौन सी है ?

जवाब मश्हूर दुआ़ए कुनूत येह है :

"اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ
وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِىْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
يَّفْجُرُكَ ؕ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّىْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ
رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ۔"[2]

सुवाल जो शख़्स दुआ़ए कुनूत न पढ़ सके तो वोह क्या पढ़े ?

जवाब वोह येह पढ़े : "اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارُ" या तीन मरतबा येह पढ़े : "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ"।[3]

सुवाल अगर दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल जाएं तो क्या करें ?

जवाब अगर दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल गए और रुकूअ़ में चले गए तो वापस न लौटिये बल्कि सजदए सह्व कर लीजिये।[4]

सुवाल दुआ़ए कुनूत बुलन्द आवाज़ से पढ़ी जाए या आहिस्ता ?

जवाब दुआ़ए कुनूत आहिस्ता आवाज़ से पढ़े इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़्तदी, अदा हो या क़ज़ा, रमज़ान में हो या और दिनों में।[5]

---

1 . . . درمختارورد المحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب: فی منکر الوتر . . . الخ، ۲/۵۳۳-

2 .....नमाज़ के अह़काम, स. 274 ।

3 . . . مراقی الفلاح، کتاب الصلاۃ، باب الوتر واحکامہ، ص۱۹۷-

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ۱/۱۱۱-

5 . . . درمختارورد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی منکر الوتر . . . الخ، ۲/۵۳۶-

सुवाल किस शख़्स को वित्र की नमाज़ में दुआ़ए कुनूत पढ़ना मन्अ़ है ?

जवाब जो शख़्स वित्र की जमाअ़त में तीसरी रक्अ़त के रुकूअ़ में शामिल हुवा और इमाम के साथ कुनूत न पढ़ सका वोह अपनी बक़िय्या नमाज़ में भी कुनूत नहीं पढ़ेगा।(1)

सुवाल मुक़्तदी की दुआ़ए कुनूत ख़त्म होने से क़ब्ल इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब अगर मुक़्तदी दुआ़ए कुनूत से फ़ारिग़ न हुवा था कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी भी इमाम की इत्तिबाअ़ करते हुवे रुकूअ़ में चला जाए।(2)

सुवाल क्या वित्र के इलावा किसी और नमाज़ में दुआ़ए कुनूत पढ़ सकते हैं ?

जवाब वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में कुनूत न पढ़े।(3)

सुवाल क़ा'दए अख़ीरा के इलावा नमाज़ में कब दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है ?

जवाब क़ा'दए अख़ीरा के इलावा नमाज़ में दुआ़ए कुनूत के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्तहब है।(4)

सुन्नतें और नवाफ़िल

सुवाल सब सुन्नतों में क़वी तर सुन्नत कौन सी है ?

---

1 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ۱/۱۱۱۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ۱/۱۱۱۔

3 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی القنوت للنازلۃ... الخ، ۲/۵۴۱۔

4 ...غنیۃ المتملی، صلاۃ الوتر، ص ۴۱۴-۴۱۸۔

درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی منکر الوتر... الخ، ۲/۵۳۴، ملتقطاً۔

जवाब सुन्नते फ़ज्र ।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ किसे कहा गया ?

जवाब ह़दीसे पाक में फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द रात की नमाज़ को सब से अफ़्ज़ल कहा गया ।[2]

सुवाल किस सूरत में ज़ोहर की दो रक्अ़त सुन्नत को ज़ोहर की चार रक्अ़त सुन्नत से पहले पढ़ना अफ़्ज़ल है ?

जवाब जब कि ज़ोहर की चार रक्अ़त सुन्नत को फ़र्ज़ से पहले न पढ़ सका हो तो इस सूरत में ज़ोहर की दो सुन्नत को ज़ोहर की चार रक्अ़त सुन्नत से पहले पढ़ना अफ़्ज़ल है ।[3]

सुवाल दिन भर में कितनी रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हैं ?

जवाब जुमुआ़ के दिन जुमुआ़ पढ़ने वाले पर चौदह रक्अ़तें और इलावा जुमुआ़ के बाक़ी दिनों में हर रोज़ बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हैं : (1) दो रक्अ़त नमाज़े फ़ज्र से पहले (2) चार ज़ोहर से पहले, दो बा'द (3) दो मग़रिब के बा'द (4) दो इ़शा के बा'द और (5) चार जुमुआ़ से पहले, चार बा'द ।[4]

सुवाल वोह कौन सी सुन्नतें हैं जिन की मशरूइय्यत का जान बूझ कर बिला शुब्हा इन्कार करना कुफ़्र है ?

जवाब फ़ज्र की सुन्नतें ।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 663 ।

2 ...مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، ص ۵۹۱، حدیث: ۱۱۶۳۔

3 ...عمدۃ الرعایۃ، کتاب الصلاۃ، باب ادراک الفریضۃ، ۱/۲۱۴۔

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۴۵۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 663 ।

सुवाल सलातुल अव्वाबीन किसे कहते हैं ?

जवाब मग्रिब के फ़र्ज़ों के बा'द जो छे रक्अ़तें अदा की जाती हैं उन्हें सलातुल अव्वाबीन कहते हैं।(1)

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जो सुवारी पर पढ़ी जाए तो उस में क़िब्ला को मुंह करना शर्त़ नहीं ?

जवाब वोह नफ़्ल नमाज़ जो बैरूने शहर (जहां से मुसाफ़िर पर क़स्र वाजिब होता है) सुवारी पर अदा की जाए।(2)

सुवाल नमाज़े चाश्त का वक़्त कब तक है और इस की कितनी रक्अ़ते हैं ?

जवाब नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है, इस की कम से कम दो और ज़ियादा से ज़ियादा बारह रक्अ़तें हैं।(3)

सुवाल सलातुल्लैल किसे कहते हैं ?

जवाब नमाज़े इशा के बा'द जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल्लैल कहते हैं।(4)

सुवाल वोह कौन सी नफ़्ल नमाज़ है जिस के लिये सोना ज़रूरी है ?

जवाब वोह नमाज़े तहज्जुद है कि इशा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं।(5)

---

1 ...ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،باب الوتر والنوافل،مطلب فی السنن والنوافل، ۲/۵۴۷۔

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 671 ।

3 ...فتاوی ھندیۃ،کتاب الصلاۃ،الباب التاسع فی النوافل، ۱/۱۱۲، बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 676 मुल्तक़तन

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 677 ।

5.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 677 ।

सुवाल दिन रात के नवाफ़िल में एक सलाम के साथ कितनी रक्अ़तें पढ़ी जा सकती हैं ?

जवाब दिन के नफ़्ल में एक सलाम के साथ चार रक्अ़त से ज़ियादा और रात में आठ रक्अ़त से ज़ियादा पढ़ना मकरूह है और अफ़्ज़ल येह है कि दिन हो या रात हो चार चार रक्अ़त पर सलाम फेरे ।(1)

सुवाल सलातुत्तस्बीह़ में कौन सी तस्बीह़ पढ़ी जाती है ?

जवाब سُبْحٰنَ اللهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ (2)

तरावीह़

सुवाल बा क़ाइदा तौर पर तरावीह़ की जमाअ़त कब से शुरूअ़ हुई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में ।(3)

सुवाल मौलाए काइनात शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने इस मुबारक काम पर क्या दुआ़इया कलिमात इरशाद फ़रमाए ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की क़ब्र को रौशन व मुनव्वर फ़रमाए जैसे इन्हों ने हमारी मस्जिदों को मुनव्वर कर दिया ।(4)

सुवाल उन पहले ह़ाफ़िज़े क़ुरआन का नाम बताएं जिन्हों ने तरावीह़ में क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाई ?

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ۲/۵۵۰۔

2 . . . غنیۃ المتملی، صلاۃ التسبیح، ص ۴۳۱۔

3 . . . بخاری، کتاب صلاۃ التراویح، باب فضل من قام رمضان، ۱/۶۵۸، حدیث: ۲۰۱۰۔

4 . . . تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۲۰۶، عمر بن الخطاب، ۴۴/۲۸۰۔

जवाब हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[1]

सुवाल तरावीह़ की कितनी रक्अ़तें हैं ?

जवाब तरावीह़ की 20 रक्अ़तें हैं । अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्दे मुबारक में 20 रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं ।[2]

सुवाल नमाज़े तरावीह़ का हुक्म बयान करें ?

जवाब हर आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान पर तरावीह़ पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है और इसे छोड़ना जाइज़ नहीं ।[3]

सुवाल तरावीह़ में पूरा क़ुरआने मजीद पढ़ने या सुनने की शरई ह़ैसिय्यत क्या है ?

जवाब तरावीह़ में पूरा कलामुल्लाह शरीफ़ पढ़ना और सुनना सुन्नते मुअक्कदा है ।[4]

सुवाल तन्हा नमाज़े तरावीह़ अदा करना कैसा ?

जवाब तरावीह़ की जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है या'नी अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब इसाअत के मुर्तकिब हुवे (या'नी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला जमाअ़त की फ़ज़ीलत से मह़रूम रहा ।[5]

---

1 . . . بخاری، کتاب صلاۃ التراویح، باب فضل من قام رمضان، ۱/۶۵۸، حدیث: ۲۰۱۰۔

2 . . . معرفۃ السنن والآثار، کتاب الصلاۃ، باب قیام رمضان، ۲/۳۰۵، حدیث: ۱۳۵۶۔

3 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/۵۹۶۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 458 ।

5 . . . ھدایۃ، کتاب الصلاۃ، باب النوافل، فصل فی قیام شھر رمضان، ۱/۷۰۔

सुवाल क्या बालिग़ अफ़राद नाबालिग़ इमाम के पीछे तरावीह़ पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! नाबालिग़ के पीछे बालिग़ अफ़राद की तरावीह़ (बल्कि कोई भी नमाज़) नहीं होगी ।[1]

सुवाल तरावीह़ में "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" बुलन्द आवाज़ से पढ़ना चाहिये या आहिस्ता ?

जवाब तरावीह़ में "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" एक बार ऊंची आवाज़ से पढ़ना सुन्नत है और हर सूरत की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मुस्तह़ब है ।[2]

सुवाल क्या तरावीह़ बैठ कर पढ़ सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! तरावीह़ बिला उ़ज़्र बैठ कर पढ़ना मकरूह (तन्ज़ीही) है, बल्कि बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان के नज़्दीक तो (बिला उ़ज़्र बैठ कर) तरावीह़ होती ही नहीं ।[3]

सुवाल इशा के फ़र्ज़ों से पहले तरावीह़ अदा कर ली तो हो जाएगी ?

जवाब तरावीह़ का वक़्त इशा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्ह़े सादिक़ तक है । अगर इशा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले पढ़ ली तो न होगी ।[4]

सुवाल क्या नमाज़े वित्र पढ़ने के बा'द तरावीह़ पढ़ी जा सकती है ?

जवाब आ़म तौर पर तरावीह़ वित्रों से पहले पढ़ी जाती है लेकिन अगर कोई वित्र पहले पढ़ ले तो तरावीह़ बा'द में भी पढ़ सकता है ।[5]

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس، الفصل الثالث، ۱/ ۸۵-

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 694 ।

3 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/ ۶۰۳-

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع، فصل فی التراویح، ۱/ ۱۱۵-

5 . . . تنویر الابصار ودرمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراویح، ۲/ ۵۹۷-

क़ज़ा नमाज़ें

सुवाल क्या क़ज़ा नमाज़ के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन है और कब क़ज़ा नमाज़ पढ़ना जाइज़ नहीं ?

जवाब क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगा बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगा मगर तुलूअ़ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं।[1]

सुवाल जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वालों के लिये क्या वई़द है ?

जवाब कुरआने पाक में इरशाद होता है :

﴿فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾﴾ (پ۳۰، الماعون:۴،۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।" ह़दीसे पाक में है : इस से मुराद वोह हैं जो नमाज़ का वक़्त गुज़ार कर पढ़ें।[2]

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जिसे लोगों पर ज़ाहिर करना गुनाह है ?

जवाब क़ज़ा नमाज़ का लोगों पर ज़ाहिर करना गुनाह है क्यूंकि नमाज़ का तर्क करना गुनाह है और गुनाह का ज़ाहिर करना भी गुनाह है।[3]

सुवाल क़ज़ा नमाज़ों में ताख़ीर करने का गुनाह कैसे मुआ़फ़ होगा ?

जवाब क़ज़ा नमाज़ों में ताख़ीर करने का गुनाह तौबा या ह़ज्जे मक़्बूल से मुआ़फ़ हो जाएगा और जो नमाज़ छूट गई है उस की क़ज़ा ज़रूरी है।[4]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 702।

2 ...سنن کبری للبیھقی، کتاب الصلوۃ، باب الترغیب فی حفظ...الخ، ۲/۳۰۴، حدیث:۳۱۲۳۔

3 ...درمختار ورد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، فروع فی قضاء الفوائت، ۲/۶۵۰۔

4 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۲۶۔

सुवाल किस अन्देशे की वज्ह से नमाज़ क़ज़ा करना जाइज़ है ?

जवाब मुसाफ़िर को चोर और डाकूओं का सहीह़ अन्देशा है यूंही दाई को नमाज़ पढ़ने की वज्ह से बच्चे के मर जाने का अन्देशा है तो नमाज़ क़ज़ा करना जाइज़ है ।(1)

सुवाल वोह कौन सा तन्दुरुस्त मुसलमान है जिस से नमाज़ें फ़ौत हो जाएं तो उस पर क़ज़ा वाजिब नहीं ?

जवाब दारुल ह़र्ब में कोई मुसलमान हुवा और उसे अह़कामे शरइय्या नमाज़, रोज़ा और ज़कात वग़ैरा की इत्तिलाअ़ न हुई तो जब तक वहां रहा उन दिनों की क़ज़ा उस पर वाजिब नहीं ।(2)

सुवाल वोह कौन सा मरीज़ है जिस से नमाज़ें फ़ौत हो जाएं तो उस पर क़ज़ा नहीं ?

जवाब ऐसा मरीज़ कि इशारे से भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता अगर येह ह़ालत पूरे छे वक़्त तक रही तो इस ह़ालत में जो नमाज़ें फ़ौत हुईं उन की क़ज़ा वाजिब नहीं ।(3)

सुवाल जिस पर क़ज़ा नमाज़ें हों क्या वोह उन्हें छोड़ कर सुनन व नवाफ़िल पढ़ सकता है ?

जवाब क़ज़ा नमाज़े नवाफ़िल से अहम हैं या'नी जिस वक़्त नफ़्ल पढ़ता है उन्हें छोड़ कर उन के बदले क़ज़ाएं पढ़े कि बरियुज़्ज़िम्मा हो जाए अलबत्ता तरावीह़ और बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा की न छोड़े ।(4)

---

(1).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 702 मुलख़्ख़सन ।

(2)...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۴۷۔

(3).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 702 ।

(4).....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 706 ।

सुवाल नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा होने का अन्देशा हो तो बिला ज़रूरते शरइय्या रात देर तक जागना कैसा ?

जवाब नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा होने का अन्देशा हो तो बिला ज़रूरते शरइय्या रात देर तक जागना ममनूअ़ है।(1)

सुवाल एक दिन की क़ज़ा नमाज़ों की कितनी रक्अ़तें हैं ?

जवाब एक दिन की क़ज़ा नमाज़ों की 20 रक्अ़तें हैं। दो रक्अ़तें फ़ज्र की, चार ज़ोहर, चार अ़स्र, तीन मग़रिब, चार इ़शा की और तीन वित्र।(2)

सुवाल जिस ने कभी नमाज़ें ही न पढ़ीं हों वोह क़ज़ाए उ़म्री कैसे पढ़े ?

जवाब जिस ने कभी नमाज़ें न पढ़ी हों और अब तौफ़ीक़ हुई और क़ज़ाए उ़म्री पढ़ना चाहता है वोह जब से बालिग़ हुवा है उस वक़्त से हि़साब लगाए और तारीख़े बुलूग़ भी नहीं मा'लूम तो एह़तियात़ इसी में है कि औ़रत नव साल की उ़म्र से और मर्द बारह साल की उ़म्र से नमाज़ों का हि़साब लगाए।(3)

सुवाल जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों वोह क्या करे ?

जवाब जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरियात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है लिहाज़ा कारोबार भी करता रहे और फ़ुरसत का जो वक़्त मिले उस में क़ज़ा पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं।(4)

---

(1) . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی طلوع الشمس من مغربھا، ۲/۳۳۔

(2).....नमाज़ के अह़काम, स, 338।

(3).....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 154 माख़ूज़न।

(4) . . . درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، ۲/۶۴۶۔ नमाज़ के अह़काम, स, 335

सजदए तिलावत

सुवाल आयते सजदा पढ़ कर सजदा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जब जब आदमी आयते सजदा पढ़ कर सजदा करता है, शैतान हट जाता है और रो कर कहता है : हाए मेरी बरबादी ! इब्ने आदम को सजदे का हुक्म हुवा उस ने सजदा किया उस के लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुवा मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है।(1)

सुवाल कुरआने पाक में आयाते सजदा कितनी हैं ?

जवाब सजदे की चौदह आयतें हैं।(2)

सुवाल सजदए तिलावत का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा सजदे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहे फिर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा खड़ा हो जाए, सजदए तिलावत के लिये اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद है न सलाम।(3)

सुवाल क्या सजदए तिलावत भी फ़ासिद हो जाता है ?

जवाब जी हां जो चीज़ें नमाज़ को फ़ासिद करती हैं उन से सजदा भी फ़ासिद हो जाएगा।(4)

सुवाल सजदए तिलावत कब वाजिब होता है ?

---

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان اطلاق اسم الکفر علی من ترک الصلاۃ، ص ۵۲، حدیث: ۸۱۔

2 . . . ھدایۃ، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، الجزء الاول، ص ۷۸۔

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۲-۱۳۵۔
درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۰-۷۰۲، ملتقطاً۔

4 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۶۹۹۔

जवाब आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है, पढ़ने में येह शर्त् है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो खुद सुन सके।(1)

सुवाल क्या आयते सजदा लिखने या देखने से सजदा वाजिब होता है ?

जवाब नहीं आयते सजदा लिखने या देखने से सजदा वाजिब नहीं होता।(2)

सुवाल अगर आयते सजदा सुनने की निय्यत न थी बल्कि बिला क़स्द सुन ली तो क्या हुक्म होगा ?

जवाब सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो, बिला क़स्द सुनने से भी सजदा वाजिब हो जाता है।(3)

सुवाल अगर आयते सजदा का तर्जमा सुना तो इस सूरत में क्या हुक्म है ?

जवाब किसी भी ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ने और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने समझा हो या न समझा हो कि आयते सजदा का तर्जमा है। अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सजदा का तर्जमा है।(4)

सुवाल अगर नमाज़ के बाहर आयते सजदा पढ़ी तो क्या फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब है ?

जवाब आयते सजदा नमाज़ के बाहर पढ़ी तो फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब नहीं है। अलबत्ता वुज़ू हो तो (बिला उ़ज़्र) ताख़ीर करना मकरूहे तन्ज़ीही है।(5)

---

1 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/ ۱۳۲۔

2 . . . غنیۃ المتملی، سجدۃ التلاوۃ، ص ۵۰۰۔

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/ ۱۳۲۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/ ۱۳۲۔

5 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/ ۷۰۳۔

सुवाल कोई शख़्स अपनी नमाज़ पढ़ते हुवे आयते सजदा सुन ले तो क्या हुक्म है ?

जवाब जो शख़्स नमाज़ में नहीं उस ने आयते सजदा पढ़ी और नमाज़ी ने सुन ली तो नमाज़ के बा'द सजदा करे और अगर नमाज़ ही में सजदा कर लिया तो काफ़ी न होगा बा'दे नमाज़ फिर करना होगा।(1)

सुवाल अगर किसी नाबालिग़ बच्चे से आयते सजदा सुनी तो क्या हुक्म होगा ?

जवाब नाबालिग़ से आयते सजदा सुनने से भी सजदए तिलावत वाजिब हो जाएगा।(2)

सुवाल पूरी सूरत पढ़ना और आयते सजदा छोड़ देना कैसा है।

जवाब मकरूहे तह्रीमी है।(3)

मुसाफ़िर की नमाज़

सुवाल शरई सफ़र की मसाफ़त क्या है ?

जवाब शरअ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो साढ़े 57 मील (तक़रीबन 92 किलो मीटर) के फ़ासिले तक जाने के इरादे से अपने मक़ामे इक़ामत (ठहरने की जगह, वतन) मसलन शहर या गाऊं से बाहर हो गया।(4)

सुवाल क्या सफ़र की निय्यत करते ही बन्दा शरअ़न मुसाफ़िर बन जाएगा ?

जवाब मह्ज़ निय्यते सफ़र से मुसाफ़िर न होगा बल्कि मुसाफ़िर का हुक्म

---

(1) ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثالث عشر فی سجود التلاوۃ، ۱/۱۳۳۔

(2) ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ۲/۷۰۱۔

(3) ...المبسوط، کتاب الصلاۃ، باب السجدۃ، ۲/۵۔

(4).....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 270 मुलख़्ख़सन।

उस वक़्त है कि बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए, शहर में है तो शहर से, गाऊं में है तो गाऊं से।(1)

सुवाल नमाज़े क़स्र किसे कहते हैं ?

जवाब सफ़र में चार फ़र्ज़ों को दो पढ़ना क़स्र कहलाता है।(2)

सुवाल क्या मुसाफ़िर के लिये क़स्र करना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां मुसाफ़िर पर नमाज़ में क़स्र करना वाजिब है।(3)

सुवाल क्या मुसाफ़िर सुन्नतें भी क़स्र कर के पढ़ेगा ?

जवाब सुन्नतों में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी अलबत्ता ख़ौफ़ और रवारवी (घबराहट) की हालत में मुआफ़ हैं और अम्न की हालत में पढ़ी जाएं।(4)

सुवाल अगर कोई शख़्स तीन दिन की राह पर जा रहा है लेकिन उस का दौराने मसाफ़त दो दिन की राह पर किसी काम के हवाले से रुकने का इरादा है तो क्या वोह भी नमाज़ क़स्र पढ़ेगा ?

जवाब जी नहीं वोह मुसाफ़िर नहीं हुवा नमाज़ पूरी पढ़ेगा, क़स्र नमाज़ के लिये इस मसाफ़त का तीन दिन पूरा और राह का मुत्तसिल (मिला हुवा, लगातार) होना ज़रूरी है।(5)

सुवाल वत़्ने अस्ली किसे कहते हैं ?

---

1 ... درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ۲/۷۲۲۔

2 ... فتاوی هندية، کتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ۱/۱۳۹ مفهومًا

3 ... فتاوی هندية، کتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ۱/۱۳۹۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 744।

5 .....फ़तावा रज़विय्या, 8 / 270 मुलख़्ख़सन।

जवाब वोह जगह जहां उस की पैदाइश हुई है या उस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत कर ली और येह इरादा है कि यहां से न जाएगा ।[1]

सुवाल निय्यते इक़ामत सहीह़ होने के लिये कितनी शराइत़ हैं ?

जवाब निय्यते इक़ामत सहीह़ होने के लिये छे शर्तें हैं : (1) चलना तर्क करे अगर चलने की ह़ालत में इक़ामत की निय्यत की तो मुक़ीम नहीं । (2) वोह जगह इक़ामत की सलाहिय्यत रखती हो जंगल या दरया ग़ैर आबाद टापू (जज़ीरा, ख़ुश्की के टुकड़े) में इक़ामत की निय्यत की मुक़ीम न हुवा । (3) पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत हो इस से कम ठहरने की निय्यत से मुक़ीम न होगा । (4) येह निय्यत एक ही जगह ठहरने की हो अगर दो मौज़ओं में पन्दरह दिन ठहरने का इरादा हो, मसलन एक में दस दिन दूसरे में पांच दिन का तो मुक़ीम न होगा । (5) अपना इरादा मुस्तक़िल रखता या'नी किसी का ताबेअ़ न हो । (6) उस की ह़ालत उस के इरादे के मुनाफ़ी न हो ।[2]

सुवाल वत़ने इक़ामत की ता'रीफ़ बताएं ?

जवाब वत़ने इक़ामत वोह जगह जहां मुसाफ़िर ने 15 दिन या इस से ज़ियादा ठहरने का इरादा किया हो ।[3]

सुवाल मुसाफ़िर किसी काम के लिये या साथियों के इन्तिज़ार में दो चार रोज़ या तेरह चौदह दिन की निय्यत से ठहरा और येह इरादा है कि

---

1 ...فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ١/١٤٢۔ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 750

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4,1 / 744 ।

3 ...فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ١/١٤٢۔

काम हो जाएगा तो चला जाएगा अगर इस सूरत में "आज कल आज कल करते" ज़ियादा दिन गुज़र जाएं तो नमाज़ क़स्र पढ़े या पूरी ?

जवाब इस सूरत में अगर आज कल आज कल करते कई बरस गुज़र जाएं जब भी मुसाफ़िर ही है, नमाज़ क़स्र पढ़े ।[1]

सुवाल मुसाफ़िर ने चार रक्अ़त की निय्यत कर ली तो अब क्या हुक्म होगा ?

जवाब मुसाफ़िर ने क़स्र की बजाए चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत बांध ली फिर याद आने पर दो पर सलाम फेर दिया तो नमाज़ हो जाएगी ।[2]

सुवाल मुसाफ़िर को किस सूरत में चार रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ना ज़रूरी है ?

जवाब मुसाफ़िर जब कि मुक़ीम की इक़्तिदा करे तो उस को चार रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ना ज़रूरी है ।[3]

जुमुआ़

सुवाल वोह कौन सा दिन है जिस को बरोज़े क़ियामत दुल्हन की त़रह़ उठाया जाएगा ?

जवाब जुमुआ़ का दिन ।[4]

सुवाल जुमुआ़ न पढ़ने वालों के लिये क्या वईद है ?

जवाब सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोग जुमुआ़ छोड़ने से बाज़ आएं वरना **अल्लाह** तआ़ला उन के दिलों पर मोहर कर देगा फिर वोह ग़ाफ़िलों में से हो जाएंगे ।[5]

1 . . . فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ١/١٣٩۔

2 . . . فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ١/١٣٩ ماخوذاً۔

3 . . . فتاوى هندية، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر فی صلاة المسافر، ومايتصل بذلک . . . الخ، ١/١٤٢۔

4 . . . درمنثور، پ٢٨، الجمعة، تحت الآية: ٩، ٨/١٥٦۔

5 . . . مسلم، كتاب الجمعة، باب التغليظ فی ترک الجمعة، ص ٤٣٠، حديث: ٨٦٥۔

सुवाल यौमे जुमुआ में वोह मुख़्तसर घड़ी कौन सी है जिस में भलाई मांगने वाले मुसलमान को ज़रूर दिया जाता है ?

जवाब इस बारे में अकाबिर मुहक़्क़िक़ीन उ़लमा और कसीर अइम्मए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक राजेह़ और क़वी क़ौल दो हैं : (1) वोह रोज़े जुमुआ की आख़िरी साअ़त या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब से कुछ पहले का वक़्त है। (2) जब इमाम मिम्बर पर बैठे उस वक़्त से फ़र्ज़े जुमुआ के सलाम तक। अलबत्ता इमाम के मिम्बर पर आने के बा'द से फ़र्ज़े जुमुआ का सलाम फेरने तक किसी भी क़िस्म का कलाम मन्अ़ होने की वज्ह से दुआ फ़क़त़ दिल से की जा सकती है।[1]

सुवाल दौराने ख़ुत़बा खाने पीने या बात चीत करने का क्या हुक्म है ?

जवाब ख़ुत़बे के दौरान खाना पीना, बात करना, سُبْحٰنَ اللّٰه कहना, सलाम का जवाब देना या नेकी की बात बताना ह़राम है।[2]

सुवाल ख़ुत़बे की आवाज़ न पहुंचती हो तो क्या हुक्म है ?

जवाब जिस तक ख़ुत़बे की आवाज़ न पहुंचती हो वोह भी ख़ामोश रहे।[3]

सुवाल क्या ख़ामोशी के इलावा ख़ुत़बा सुनने के कुछ और भी आदाब हैं ?

जवाब ख़ुत़बे के वक़्त सिर्फ़ ज़बान से ख़ामोशी काफ़ी नहीं बल्कि सुकून व इत़्मीनान से बैठना भी ज़रूरी है, कंकर पथ्थरों से खेलना भी ममनूअ़ है। उ़लमा फ़रमाते हैं कि ख़ुत़बे के वक़्त दामन या पंखे से

1.....फ़ज़ाइले दुआ, स. 116 ता 119, मुलख़्ख़सन।

2 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ۳/۳۹۔

3 . . . تبیین الحقائق، کتاب الصلاۃ، ۱/۳۴۰۔

हवा करना भी मन्अ़ है अगर्चे गर्मी हो, इस वक़्त हमा तन ख़ुत़बे की त़रफ़ मुतवज्जेह होना ज़रूरी है।(1)

सुवाल पहला ख़ुत़बा हाथ बांध कर और दूसरा ज़ानूओं पर हाथ रख कर सुनने का क्या अज्र है ?

जवाब बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं कि दो ज़ानू बैठ कर ख़ुत़बा सुने, पहले ख़ुत़बे में हाथ बांधे और दूसरे में ज़ानूओं पर हाथ रखे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दो रक्अ़त का सवाब मिलेगा।(2)

सुवाल जुमुआ़ के दिन मस्जिद आने वाले किन अफ़राद का नाम फ़िरिश्ते नहीं लिखते ?

जवाब जब जुमुआ़ का दिन आता है फ़िरिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो जाते हैं और जल्दी आने वालों का नाम लिखते हैं। फिर जब इमाम ख़ुत़बे के लिये मिम्बर पर आता है तो येह फ़िरिश्ते अपने दफ़्तर लपेट कर इन्सानों के साथ ख़ुत़बा सुनने लगते हैं, अब जो उस वक़्त आएगा न उस का नाम उन के दफ़्तर में लिखा जाएगा न उसे जल्द आने का सवाब मिलेगा।(3)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कितने जुमुआ़ अदा फ़रमाए ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तक़रीबन पांच सौ जुमुए़ पढ़े हैं क्यूंकि जुमुआ़ बा'दे हिजरत शुरूअ़ हुवा जिस के बा'द आप की ज़ाहिरी ज़िन्दगी मुबारक दस साल रही, इस अ़र्से में जुमुए़ इतने ही होते हैं।(4)

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 335।

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 338।

3 ...بخاری، کتاب الجمعۃ، باب الاستماع الی الخطبۃ، ۱/۳۱۹، حدیث:۹۲۹، मिरआतुल मनाजीह, 2 / 335

4 ...اشعۃ اللمعات، کتاب الصلاۃ، باب الخطبۃ والصلاۃ، الفصل الثالث، ۱/۶۳۱۔

सुवाल वोह कौन सी नमाज़ है जिसे अदा करना फ़र्ज़े ऐन है मगर उस की क़ज़ा पढ़ना ह़राम है ?

जवाब वोह नमाज़े जुमुआ़ है कि जिस का पढ़ना फ़र्ज़े ऐन है लेकिन अगर वोह छूट जाए तो उस की क़ज़ा पढ़ना ह़राम है बल्कि उस की क़ज़ा की जगह वोह ज़ोहर पढ़ेगा ।(1)

सुवाल क्या सुस्ती के सबब जुमुआ़ में देर से पहुंचने वाले का जुमुआ़ हो जाएगा ?

जवाब जो जुमुआ़ में सुस्ती से आए और देर में पहुंचे अगर्चे उस का जुमुआ़ तो हो जाएगा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो जल्दी पहुंचने वाले को मिलता है ।(2)

सुवाल जुमुए़ के लिये अलग जोड़ा रखने का क्या हुक्म है ?

जवाब मुस्तह़ब है कि जुमुआ़ का जोड़ा अलग रखे जो ब वक़्ते नमाज़ पहन लिया करे और बा'द में उतार दिया करे । इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन तो नमाज़े पंजगाना के लिये अलग जोड़ा रखते थे ।(3)

ईदैन

सुवाल ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा किन चीज़ों के शुक्राने के तौर पर मनाई जाती हैं ?

जवाब ईदुल फ़ित्र इबादाते रमज़ान की तौफ़ीक़ मिलने के शुक्रिय्ये की है और बक़र ईद ह़ज़रते इब्राहीम व इस्माईल عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कामयाबी के शुक्रिय्या में ।(4)

---

1 ...الاشباہ والنظائر، الفن الرابع، کتاب الصلاۃ، ص ۳۴۲۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 338 ।

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 337 ।

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 355 मुल्तक़तन ।

सुवाल पहली नमाज़े ईद कब अदा की गई ?

जवाब सिन 2 हिजरी में जब रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हुवे, उसी साल नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले नमाज़े ईद पढ़ी फिर बक़्र ईद।[1]

सुवाल ईदैन की नमाज़ का हुक्म बयान करें ?

जवाब ईदैन की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि उन्हीं पर जिन पर जुमुआ़ वाजिब[2] है।[3]

सुवाल नमाज़े ईद में कितनी तक्बीरें ज़ाइद होती हैं ?

जवाब नमाज़े ईद में छे तक्बीरें ज़ियादा कही जाती हैं।[4]

सुवाल नमाज़े ईद में ज़ाइद तक्बीरें किस वक़्त कही जाती हैं ?

जवाब ज़ाइद तक्बीरें हर रक्अ़त में तीन तीन हैं, पहली रक्अ़त में क़िराअत से पहले और तक्बीरे तह़रीमा के बा'द और दूसरी रक्अ़त में रुकूअ़ से पहले और क़िराअत के बा'द कही जाती हैं।[5]

---

1 ......मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 355 मुलख़्ख़सन।

2 ......जुमुआ़ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं : (1) शहर में मुक़ीम होना (2) सिह़्ह़त या'नी मरीज़ पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं मरीज़ से मुराद वोह है कि मस्जिदे जुमुआ़ तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा। शैख़े फ़ानी मरीज़ के हुक्म में है। (3) आज़ाद होना, ग़ुलाम पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं और उस का आक़ा मन्अ़ कर सकता है (4) मर्द होना (5) बालिग़ होना (6) आ़क़िल होना। येह दोनों शर्तें ख़ास जुमुआ़ के लिये नहीं बल्कि हर इ़बादत के वुजूब में अ़क़्ल व बुलूग़ शर्त़ है (7) अंखयारा होना (8) चलने पर क़ादिर होना (9) क़ैद में न होना (10) बादशाह या चोर वग़ैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना (11) मींह या आंधी या औले या सर्दी का न होना या'नी इस क़दर कि उन से नुक़्सान का ख़ौफ़े सह़ीह़ हो। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 770-772)

3 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۵۱۔

4 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۱۔

5 ...درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۱-۶۳، ملتقطاً۔

सुवाल नमाज़े ईद में तक्बीरे तह़रीमा के इलावा हाथ कानों तक कब उठाए जाते हैं ?

जवाब नमाज़े ईद में कही जाने वाली छे ज़ाइद तक्बीरों में कानों तक हाथ उठाए जाते हैं।[1]

सुवाल नमाजे ईद में इमाम को रुकूअ़ में पाने वाला ज़ाइद तक्बीरें कैसे कहेगा ?

जवाब अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे।[2]

सुवाल ईद की नमाज़ से पहले कुछ खाना चाहिये या नहीं ?

जवाब ईदुल फ़ित्र में नमाज़ से पहले चन्द खजूरें त़ाक़ अ़दद में तीन, पांच, सात या कोई भी मीठी शै खा लेना मुस्तह़ब जब कि ईदुल अज़्ह़ा (बक़र ईद) में नमाज़ से पहले कुछ न खाना मुस्तह़ब है अगर्चे क़ुरबानी न करे।[3] जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और ईदुल अज़्ह़ा के रोज़ नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते।[4]

---

1 ... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۵، مفصلاً۔

2 ... ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۶۴۔

3 ... فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع عشر فی صلاۃ العیدین، ۱/۱۵۰۔

4 ... ترمذی، کتاب العیدین، باب ماجاء فی الاکل یوم الفطر قبل الخروج، ۲/۷۰، حدیث: ۵۴۲۔

सुवाल कुरबानी से पहले ह़जामत बनवाने और नाखुन तरशवाने का क्या हुक्म है ?

जवाब कुरबानी करनी हो तो मुस्तह़ब येह है कि पहली से दसवीं ज़िल हिज्जा तक न ह़जामत बनवाए और न नाखुन तरशवाए।(1)

सुवाल तक्बीरे तशरीक़ और इस का हुक्म बयान करें ?

जवाब नवीं ज़िल हिज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक पांचों वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ें जो मस्जिद की जमाअ़ते ऊला के साथ अदा की गईं उन में (सलाम फेरने के बा'द फ़ौरन) एक बार बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहना वाजिब और तीन बार अफ़्ज़ल।(2) तक्बीरे तशरीक़ येह है : (3)اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

सुवाल ईद के दिन की मुस्तह़ब चीज़ें क्या हैं ?

जवाब गुस्ल करना, मिस्वाक करना, अच्छे कपड़े पहनना, खुश्बू लगाना, ईदगाह जल्द चले जाना, ईदगाह पैदल जाना वग़ैरा।(4)

सुवाल नमाज़े ईद के बा'द मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करना कैसा है ?

जवाब सदरुश्शरीअ़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बा'दे नमाज़े ईद मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा करना जैसा उ़मूमन मुसलमानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है।(5)

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، مطلب فی ازالۃ الشعر . . . الخ، ۳/۷۷۔

2 . . . تبیین الحقائق، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ العیدین، ۱/۵۴۴-۵۴۵، ملتقطاً۔

3 . . . تنویر الابصار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ۳/۷۲۔

4 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع عشر فی صلاۃ العیدین، ۱/۱۴۹۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 784।

बीमारी, इयादत और मौत

सुवाल हदीसे पाक में बीमार और बीमारी की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी गुनाहों से कफ़्फ़ारा हो जाती है और आइन्दा के लिये नसीहत जब कि मुनाफ़िक़ के बीमार हो कर अच्छा होने की मिसाल ऊंट की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ? एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! बीमारी क्या चीज़ है ? मैं तो कभी बीमार न हुवा ? फ़रमाया : हमारे पास से उठ जा कि तू हम में से नहीं ।[(1)]

सुवाल ह़क़ीक़ी बीमारी कौन सी है ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़क़ीक़ी बीमारी अमराज़े रूहानिया हैं कि येह अलबत्ता बहुत ख़ौफ़ की चीज़ है और इसी को मरज़ समझना चाहिये ।[(2)]

सुवाल इयादत के वक़्त मरीज़ से क्या कलिमात कहना सुन्नत है ?

जवाब لَا بَاْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی या'नी कोई ह़रज की बात नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है ।[(3)]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الجنائز، باب الأمراض المکفرة للذنوب، ۳/۲۴۵، حدیث: ۳۰۸۹۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 799 ।

3 . . . بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة في الاسلام، ۲/۵۰۵، حدیث: ۳۶۱۶۔

सुवाल मरीज़ के पास बैठ कर किस त़रह़ की बात करनी चाहिये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मरीज़ के पास जाओ तो उसे ज़िन्दगी की उम्मीद दिलाओ, येह तक़्दीर तो नहीं बदलेगा मगर उस के दिल को खुश करेगा।"(1)

सुवाल मरीज़ की दुआ़ किस की दुआ़ के मानिन्द है ?

जवाब मरीज़ की दुआ़ को मलाइका की दुआ़ की मानिन्द कहा गया है।(2)

सुवाल मरीज़ की इ़यादत करने वाले को आस्मान से क्या निदा की जाती है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मरीज़ की इ़यादत या अपने भाई से मुलाक़ात करने जाता है आस्मान से मुनादी निदा करता है : तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा और जन्नत की एक मन्ज़िल को तू ने ठिकाना बनाया।(3)

सुवाल मुसीबतों से तंग आ कर मौत की तमन्ना करना कैसा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई मुसीबत व तक्लीफ़ पहुंचने पर मौत की आरज़ू न करे अगर नाचार करनी ही है तो यूं कहे : "इलाही मुझे ज़िन्दा रख जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये ख़ैर हो और मौत दे जब मौत मेरे लिये बेहतर हो।"(4)

---

1 . . . ترمذی، ابواب الطب، باب ۴، ۲۵/۳۵، حدیث: ۲۰۹۴۔

2 . . . ابن ماجہ، ابواب ماجاء فی الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، ۱۹۱/۲، حدیث: ۱۴۴۱۔

3 . . . ترمذی، ابواب البر والصلۃ، باب ماجاء فی زیارۃ الاخوان، ۴۰۵/۳، حدیث: ۲۰۱۵۔

4 . . . بخاری، کتاب المرضی، باب تمنی المریض الموت، ۱۳/۴، حدیث: ۵۶۷۱۔

सुवाल ❁ क्या मा'मूली बीमारी में भी बीमार पुरसी की जाए ?

जवाब ❁ मा'मूली बीमारी में भी बीमार पुरसी करना सुन्नत है जैसे आंख या कान या दाढ़ का दर्द कि येह अगर्चे ख़त्रनाक नहीं मगर बीमारी तो हैं।[1]

सुवाल ❁ तल्क़ीन किस वक़्त करनी चाहिये, नीज़ तल्क़ीन करने का त़रीक़ा बयान करें ?

जवाब ❁ जान कनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आई हो उस वक़्त तल्क़ीन करें और मरीज़ के पास اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله बुलन्द आवाज़ से पढ़ें मगर उस को पढ़ने का न कहें।[2]

सुवाल ❁ नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो क्या करना चाहिये ?

जवाब ❁ नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो सूरए यासीन और सूरए रअ़्द पढ़ें।[3]

सुवाल ❁ मौत की अ़लामात पाए जाने पर मरीज़ को कैसे लिटाया जाए ?

जवाब ❁ जब मौत का वक़्त क़रीब आए और अ़लामतें पाई जाएं तो सुन्नत येह है कि दहनी करवट पर लिटा कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर दें और येह भी जाइज़ है कि चित लिटाएं और क़िब्ले को पाउं करें कि यूं भी क़िब्ला को मुंह हो जाएगा मगर इस सूरत में सर को क़दरे ऊंचा रखें और क़िब्ले को मुंह करना दुश्वार हो कि उस को तक्लीफ़ होती हो तो जिस ह़ालत पर है छोड़ दें।[4]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 415।

2 . . . جوهرة نيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز ص ١٣٠۔

3.....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 4, 1 / 808।

4 . . . درمختار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ٣/ ٩١۔

सुवाल किस चीज़ को ह़दीसे पाक में क़ाते़ए़ लज़्ज़ात कहा गया है ?

जवाब मौत को क़ाते़ए़ लज़्ज़ात कहा गया है, ह़दीसे पाक में है : लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत को कसरत से याद करो ।(1)

मय्यित का ग़ुस्ल और कफ़न

सुवाल मय्यित को नहलाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो किसी मय्यित को नहलाए, कफ़न पहनाए, ख़ुश्बू लगाए, जनाज़ा उठाए, नमाज़ पढ़े और जो नाक़िस बात नज़र आए उसे छुपाए वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा जिस दिन मां के पेट से पैदा हुवा था ।(2)

सुवाल मय्यित के ग़ुस्ल व कफ़न में जल्दी करनी चाहिये या नहीं ?

जवाब जी हां, ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़्न में जल्दी चाहिये कि ह़दीस में इस की बहुत ताकीद आई है ।(3)

सुवाल मय्यित को ग़ुस्ल देते हुवे कितनी बार पानी बहाना ज़रूरी है ?

जवाब एक मरतबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन मरतबा बहाना सुन्नत है ।(4)

सुवाल अगर मय्यित को ग़ुस्ल देने वाला जनाबत की ह़ालत में हो तो ग़ुस्ल अदा हो जाएगा ?

---

1 . . . ترمذی، ابواب الزھد، باب ماجاء فی ذکر الموت، ۴/۱۳۸، حدیث:۲۳۱۴۔

2 . . . ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی غسل المیت، ۲/۲۰۱، حدیث:۱۴۶۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 4, 1 / 806 । جوہرة النیرة، کتاب الصلاۃ، باب الجنائز، ص ۱۳۱۔

4 . . . فتاوی هندیه، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۸۔

जवाब जी हां मगर ऐसी हालत में ग़ुस्ल देना मकरूह है।[1]

सुवाल मर्द और औ़रत की कफ़नी में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब मर्द की कफ़नी मूंढे पर चीरी जाती है जब कि औ़रत के लिये सीने की त़रफ़ से।[2]

सुवाल अगर इतनी बारिश बरसे कि मय्यित के सारे बदन पर पानी बह जाए तो क्या फिर भी ग़ुस्ल देना ज़रूरी है ?

जवाब मय्यित के सारे बदन पर पानी बह जाने से ग़ुस्ल तो हो जाएगा मगर ज़िन्दों पर उसे ग़ुस्ल देना वाजिब ही रहेगा लिहाज़ा ग़ुस्ल देना ज़रूरी है।[3]

सुवाल मय्यित को कफ़न पहनाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने मय्यित को कफ़नाया (या'नी कफ़न पहनाया) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सुन्दुस का लिबास (जन्नत का इन्तिहाई नफ़ीस रेशमी लिबास) पहनाएगा।[4]

सुवाल मर्द व औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत क्या है ?

जवाब मर्द के लिये कफ़न तीन कपड़े हैं : (1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस। औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत पांच कपड़े हैं : (1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस (4) सीनाबन्द (5) ओढ़नी।[5]

1... فتاوی ہندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/ ۱۵۹۔

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 818।

3... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۱۰۹، ۱۱۰۔

4... مستدرک، کتاب الجنائز، فضیلۃ صفوف فی صلاۃ الجنازۃ، ۱/ ۲۹۰، حدیث: ۱۳۸۰۔

5... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/ ۱۱۲، ۱۱۳۔

सुवाल : बच्चों को कौन सा कफ़न दिया जाएगा ?

जवाब : जो नाबालिग़ हद्दे शहवत को पहुंच गया वोह बालिग़ के हुक्म में है या'नी बालिग़ को कफ़न में जितने कपड़े दिये जाते हैं उसे भी दिये जाएं और इस से छोटे लड़के को एक कपड़ा (इज़ार) और छोटी लड़की को दो कपड़े (लिफ़ाफ़ा और इज़ार) दे सकते हैं और लड़के को भी दो कपड़े (लिफ़ाफ़ा और इज़ार) दिये जाएं तो अच्छा है और बेहतर येह है कि दोनों को पूरा कफ़न दें अगर्चे एक दिन का बच्चा हो ।(1)

सुवाल : मय्यित को आ़म सा कफ़न देना चाहिये या क़ीमती ?

जवाब : कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ई़दैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मैके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये ।(2) ह़दीसे पाक में है : "मुर्दों को अच्छा कफ़न दो कि वोह क़ब्रों में बाहम मुलाक़ात करते हैं ।"(3)

सुवाल : मय्यित को ग़ुस्ल कैसे शख़्स से दिलवाया जाए ?

जवाब : अमानतदार और परहेज़गार शख़्स से ग़ुस्ल दिलवाया जाए ताकि वोह दौराने ग़ुस्ल ऐ़ब वाली बात देखे तो उसे छुपाए और भलाई वाली बात देखे तो ज़ाहिर करे । बेहतर येह है कि नहलाने वाला मय्यित का क़रीबी रिश्तेदार हो ।(4)

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۷۔

2 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۳۔

3 . . . مسلم، کتاب الجنائز، باب فی تحسین کفن المیت، ص ۴۷۰، حدیث: ۹۴۳،
الکامل لابن عدی، الرقم: ۷۳۴، سلیمان بن ارقم، ۴/۲۳۷۔

4 . . . ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ۱/۱۵۹۔

सुवाल मय्यित का कफ़न किस के माल से ख़रीदा जाए ?

जवाब मय्यित ने अगर कुछ माल छोड़ा तो कफ़न उसी के माल से होना चाहिये। मय्यित ने माल न छोड़ा तो कफ़न उस के ज़िम्मे है जिस के ज़िम्मे ज़िन्दगी में नफ़क़ा था और अगर कोई ऐसा नहीं या वोह नादार है तो वहां के मुसलमानों पर कफ़न देना फ़र्ज़ है।[1]

नमाज़े जनाज़ा

सुवाल नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ है या वाजिब या फिर सुन्नत ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है।[2]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा में कितने रुक्न और कितनी सुन्नतें हैं ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न हैं : (1) चार तक्बीरें और (2) क़ियाम। और क़ियाम में तीन सुन्नते मुअक्कदा हैं : (1) सना (2) दुरूदे पाक और (3) मय्यित के लिये दुआ।[3]

सुवाल क्या ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा हो सकती है ?

जवाब मय्यित का सामने होना ज़रूरी है, ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती।[4]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा का इमाम कहां खड़ा हो ?

जवाब मुस्तहब येह है कि इमाम मय्यित के सीने के सामने खड़ा हो।[5]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा. 4, 1 / 819-820 درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۱۴۔

2... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۰۔

3... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۴۔

4... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۲۳۔

5... درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۳۴۔

सुवाल किस नमाज़ की आख़िरी सफ़ सब से अफ़्ज़ल है ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा की आख़िरी सफ़ तमाम सफ़ों से अफ़्ज़ल है ।[1]

सुवाल जनाज़े में कितनी सफ़ें होनी चाहियें ?

जवाब बेहतर येह है कि जनाज़े में तीन सफ़ें हों कि ह़दीसे पाक में है : जिस की नमाज़ (जनाज़ा) तीन सफ़ों ने पढ़ी उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ।[2]

सुवाल अगर जनाज़ा पढ़ने वाले अफ़राद बहुत ही कम हों तो तीन सफ़ें कैसे बनाएं ?

जवाब अगर कुल सात आदमी हों तो एक इमाम बन जाए अब पहली सफ़ में तीन खड़े हो जाएं दूसरी में दो और तीसरी में एक ।[3]

सुवाल जनाज़े को कन्धा देने का क्या सवाब है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जो जनाज़े को चालीस क़दम ले कर चले उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे ।[4]

सुवाल नमाज़े जनाज़ा के बा'द दुआ़ करना कैसा है ?

जवाब जनाज़े की नमाज़ के बा'द दुआ़ करना रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सुन्नत है ।[5]

---

1 . . . درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ۳/۱۳۱۔

2 . . . ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصلوۃ علی المیت . . . الخ، ۲/۳۱۷، حدیث: ۱۰۳۰۔

3 . . . غنیۃ المتملی، فصل فی الجنائز، ص ۵۸۸۔

4 . . . معجم اوسط، ۴/۲۵۹، حدیث: ۵۹۲۰۔

5 . . . دلائل النبوۃ، باب ماجاء فی غزوۃ مؤتۃ . . . الخ، ۴/۳۶۹،
سنن کبری للبیهقی، کتاب الجنائز، باب الرجل تفوته الصلاۃ . . . الخ، ۴/۷۴، حدیث: ۶۹۹۶۔

सुवाल नमाज़े जनाज़ा की इब्तिदा कब हुई ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के दौरे मुबारक से हुई।(1)

सुवाल जन्नती शख़्स का जनाज़ा ले कर चलने वालों पर क्या इन्आम फ़रमाया जाता है ?

जवाब हदीसे पाक में है कि जब कोई जन्नती शख़्स फ़ौत होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का जनाज़ा उठाने, उस के पीछे चलने और उस की नमाज़े जनाज़ा अदा करने वालों को अज़ाब देने से हया फ़रमाता है।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जनाज़ा देख कर क्या कहा करते थे ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह पढ़ा करते थे : سُبْحٰنَ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ या'नी पाक है वोह ज़ात जिसे मौत नहीं।(3)

क़ब्र व दफ़्न

सुवाल मय्यित को दफ़्न करने का क्या हुक्म है ?

जवाब मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है।(4)

सुवाल तदफ़ीन में शिर्कत करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसलमान के जनाज़े के साथ ईमान से ब निय्यते सवाब जाए

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 375।

2 ...فردوس الأخبار، ۱/۱۲۸، حدیث:۱۱۱۵-

3 ...احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الثامن، ۵/۲۲۶-

4 ...فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۵-

और उस के साथ ही रहे हत्ता कि उस पर नमाज़ पढ़ ले और उस के दफ़्न से फ़ारिग़ हो जाए तो वोह सवाब के दो क़ीरात् (हिस्से) ले कर लौटेगा हर हिस्सा उहुद के बराबर।[1]

सुवाल क़ब्र की कितनी और कौन कौन सी क़िस्में हैं ?

जवाब बनावट के ए'तिबार से क़ब्र की दो क़िस्में हैं : (1) लह़द (या'नी बग़ली क़ब्र) (2) शक़ (या'नी सन्दूक़) ।[2]

सुवाल लह़द कैसे बनाई जाती है ?

जवाब सन्दूक़ नुमा गढ़ा खोद कर उस में क़िब्ले की त़रफ़ दीवार में इतनी जगह खोदें जिस में मय्यित को बा आसानी रखा जा सके।[3]

सुवाल "शक़" कैसे बनाई जाती है ?

जवाब येह सन्दूक़ नुमा गढ़ा खोद कर तय्यार की जाती है और आ़म तौ़र पर हमारे यहां येही राइज है, लह़द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और नर्म ज़मीन हो तो सन्दूक़ में ह़रज नहीं।[4]

सुवाल क़ब्र की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई कितनी होनी चाहिये ?

जवाब क़ब्र की लम्बाई मय्यित के क़द से कुछ ज़ाइद हो और चौड़ाई आधे क़द की और गहराई कम से कम निस्फ़ क़द की और बेहतर येह कि गहराई भी क़द बराबर हो और मुतवस्सित् (दरमियानी) दर्जा येह

---

1 . . . بخاری، کتاب الایمان، باب اتباع الجنازۃ من الایمان، ۱/ ۲۹، حدیث: ۴۷۔

2 . . . فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۵۔

3 . . . فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۵۔

4 . . . فتاوی ھندیہ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/ ۱۶۵۔

कि सीने तक हो।(1) इस से मुराद येह कि लह्द या सन्दूक़ इतना हो, येह नहीं कि जहां से खोदनी शुरूअ़ की वहां से आख़िर तक येह मिक़्दार हो।(2)

सुवाल क्या क़ब्र के अन्दरूनी हिस्से में ईंटें लगाई जा सकती हैं ?

जवाब क़ब्र के अन्दर की दीवारें वग़ैरा कच्ची मिट्टी की हों, आग की पकी हुई ईंटें इस्ति'माल न की जाएं।(3) अगर अन्दर में पकी हुई ईंट की दीवारें ज़रूरी हों तो फिर अन्दरूनी हिस्सा मिट्टी के गारे से अच्छी तरह लीप दिया जाए।(4)

सुवाल क्या क़ब्र में चटाई वग़ैरा बिछा सकते हैं ?

जवाब क़ब्र के अन्दर चटाई वग़ैरा बिछाना जाइज़ नहीं है कि बे सबब माल ज़ाएअ़ करना है।(5)

सुवाल मय्यित को क़ब्र में लिटाने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब मय्यित को सीधी करवट पर इस त़रह लिटाएं कि उस का मुंह और सीना क़िब्ले की त़रफ़ हो जाए।(6)

सुवाल क्या मय्यित को क़ब्र में लिटाने के बा'द कफ़न की बन्दिश खोल सकते हैं ?

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/۱۶۴۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 843।

3 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۶۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 843 मफ़्हूमन।

5 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، مطلب: فی دفن المیت، ۳/۱۶۴۔

6 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، ۱/۱۶۶۔

जवाब जी हां ! क़ब्र में रखने के बा'द कफ़न की बन्दिश खोल दें की अब ज़रूरत नहीं और अगर बन्दिश नहीं खोली तो भी ह़रज नहीं।[1]

सुवाल क़ब्र ऊपर से किस शक्ल की बनाई जाए ?

जवाब क़ब्र ऊंट की कोहान की त़रह़ ढाल वाली बनाएं चौखटी न बनाएं।[2]

सुवाल क़ब्र पर पानी छिड़कना कैसा है ?

जवाब बा'दे दफ़्न क़ब्र पर पानी छिड़कना मसनून है।[3] इस के इलावा बा'द में पौदे वग़ैरा को पानी देने की ग़रज़ से छिड़कें तो जाइज़ है।[4] बा'ज़ लोग अपने अ़ज़ीज़ की क़ब्र पर बिला मक़्सदे सह़ीह़ मह़ज़ रस्मी त़ौर पर पानी छिड़कते हैं येह नाजाइज़ और इसराफ़ है।[5]

ज़कात

सुवाल ज़कात का क्या मत़लब है ?

जवाब ज़कात से मुराद शरीअ़त के मुक़र्रर कर्दा माल के एक ह़िस्से को **अल्लाह** तआ़ला के लिये किसी मुसलमान फ़क़ीर (मुस्तह़िक़) को मालिक बना देना है जो हाशिमी हो और न ही किसी हाशिमी का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हो और मालिक बनाने वाला उस माल से अपना नफ़्अ़ बिल्कुल जुदा कर ले।[6]

1 ...جوهرة النيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ۱۴۰۔

2 ...ردالمحتار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: في دفن الميت، ۳/۱۶۹۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 373 ।

4 .....मदनी वसिय्यत नामा, स. 15 ।

5 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 373 मफ़्हूमन ।

6 ...تنوير الابصار، كتاب الزكاة، ۳/۲۰۳-۲۰۶۔

सुवाल ज़कात की शरई हैसिय्यत क्या है ?

जवाब ज़कात फ़र्ज़ है, इस का मुन्किर काफ़िर और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनहगार है।[1]

सुवाल कुरआने करीम में ज़कात अदा न करने वालों के लिये क्या वईद आई है ?

जवाब ऐसों को क़ियामत में दर्दनाक अ़ज़ाब होगा। इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَالَّذِیْنَ یَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا یُنْفِقُوْنَهَا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۳۴﴾ یَّوْمَ یُحْمٰى عَلَیْهَا فِیْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾﴾ (پ۱۰، التوبة:۳۴، ۳۵)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर उस से दागेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।)

सुवाल अहादीसे करीमा में ज़कात अदा करने के क्या फ़वाइद बयान हुवे हैं ?

जवाब अहादीसे मुबारका में ज़कात की अदाएगी के बा'ज़ फ़वाइद येह बयान हुवे हैं : (1) ज़कात देना बन्दे के इस्लाम की तक्मील है।[2] (2) ज़कात की अदाएगी से माल की हिफ़ाज़त होती है।[3] (3) ज़कात अदा करने से माल का शर दूर हो जाता है।[4]

---

1 ...فتاوی ھندیة، کتاب الزکاۃ، الباب الاول، ۱/۱۷۰، ملتقطاً۔

2 ...الترغیب والترہیب، الترغیب فی اداء الزکاۃ وتاکید وجوبھا، ۱/۳۰۱، حدیث:۱۲۔

3 ...معجم کبیر، ۱۰/۱۲۸، حدیث:۱۰۱۹۲۔

4 ...مستدرک للحاکم، کتاب الزکاۃ، باب التغلیظ فی منع الزکاۃ، ۲/۶، حدیث:۱۴۷۹۔

सुवाल ज़कात किस पर और कब वाजिब होती है ?

जवाब ज़कात वाजिब होने की दस शराइत़ हैं : (1) मुसलमान होना (2) बुलूग़ (3) अ़क़्ल (4) आज़ाद होना (5) माल ब क़दरे निसाब उस की मिल्क में होना, अगर निसाब से कम है तो ज़कात वाजिब न हुई (6) पूरे तौ़र पर उस का मालिक हो या'नी उस पर क़ाबिज़ भी हो (7) निसाब का दैन से फ़ारिग़ होना (8) निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो (9) माले नामी होना या'नी बढ़ने वाला ख़्वाह ह़क़ीक़तन बढ़े या ह़ुक्मन (10) साल गुज़रना, साल से मुराद क़मरी साल है या'नी चांद के महीनों से बारह(12) महीने।[1]

सुवाल क्या रिश्तेदारों को ज़कात दी जा सकती है ?

जवाब रिश्तेदारों में से कोई ह़ाजत मन्द और शरई फ़क़ीर हो तो उस को ज़कात देना अफ़्ज़ल है मगर इन को देने की चन्द शराइत़ हैं : (1) सय्यिद या हाशिमी न हो (2) वालिदैन (3) या अपनी औलाद में से न हों (4) मियां बीवी न हों (5) ऐसा नाबालिग़ न हो जिस का वालिद ग़नी (साह़िबे निसाब मालदार) हो । इन के इ़लावा भाई, बहन, सास, सुसर, बहू, दामाद, ख़ाला, फूफी, चचा, मामूं इन सब को ज़कात देना जाइज़ है। बशर्ते़ कि मुस्तह़िक़ हों (या'नी इन को ज़कात लगती हो) ।[2]

सुवाल क्या प्लॉट पर ज़कात होती है ?

जवाब अगर प्लॉट बेचने की निय्यत से लिये थे तो उन पर ज़कात होगी वरना नहीं।[3]

1.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 72 ।

2.....बहारे शरीअ़त, 1 / 927-928 । फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 399।

3.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 121 ।

सुवाल शादी करने या हज उमरे के लिये जाने या मकान ख़रीदने के लिये जम्अ़ की गई रक़म पर ज़कात है ?

जवाब अगर येह रक़म तन्हा या दूसरे माले ज़कात से मिल कर निसाब के बराबर है और इस पर साल भी गुज़र चुका है तो इस जम्अ़ की गई रक़म पर ज़कात है।[1]

सुवाल क्या औ़रत के इस्ति'माली ज़ेवरात की भी ज़कात निकालनी होगी ?

जवाब जी हां, उन में भी ज़कात है अगर्चे वोह इस्ति'माल में हों।[2]

सुवाल ज़कात के मसारिफ़ क्या हैं ?

जवाब ज़कात के मसारिफ़ सात (7) हैं : (1) फ़क़ीर (2) मिस्कीन (3) आ़मिल (ज़कात वुसूल करने के लिये हाकिमे इस्लाम का मुक़र्रर कर्दा शख़्स) (4) रिक़ाब (मुकातब ग़ुलाम) (5) ग़ारिम (मदयून / मक़रूज़) (6) फ़ी सबीलिल्लाह (जिहाद या हज का इरादा रखने वाला या त़ालिबे इ़ल्म वग़ैरा) और (7) इब्ने सबील (मुसाफ़िर जिस के पास माल न रहा)।[3]

सुवाल किन जानवरों पर ज़कात होती है ? नीज़ उन की ता'दाद कितनी होना ज़रूरी है ?

जवाब तीन क़िस्म के जानवरों पर ज़कात वाजिब है जब कि वोह साइमा हों। (1) ऊंट (2) गाए, भैंस (3) बकरी। ऊंट पांच या पांच से

1.....फ़तावा अहले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 100। फ़ैज़ाने ज़कात, स. 47-48।

2...نورالایضاح،کتاب الزکاۃ،ص ۳۲۱۔

3.....फ़तावा अहले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 370।

ज़ियादा हों, गाए तीस या तीस से ज़ियादा हों और बकरियां चालीस या इस से ज़ियादा हों तो ज़कात वाजिब है।[1]

सुवाल क्या ज़मीन की पैदावार पर भी ज़कात फ़र्ज़ है ?

जवाब जी हां ! उ़श्री ज़मीन से ऐसी चीज़ पैदा हुई जिस की ज़राअ़त से मक़्सूद ज़मीन से मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करना है तो उस पैदावार की ज़कात फ़र्ज़ है और इस ज़कात का नाम उ़श्र है।[2]

सदक़ा

सुवाल सदक़ा किसे कहते हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से सवाब पाने की उम्मीद पर जो अ़तिय्या दिया जाए उसे सदक़ा कहते हैं।[3]

सुवाल ह़दीसे पाक में सदक़ा करने की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सदक़ा रब तआ़ला के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है।[4]

सुवाल सदक़ा करने के कोई दस फ़ाएदे बयान फ़रमाइये ?

जवाब सदक़ा करने के बेशुमार फ़वाइद हैं जिन में से दस येह हैं : (1) बुरी मौत से बचना (2) उ़म्र ज़ियादा होना (3) रिज़्क़ और माल में बरकत होना (4) बलाएं दूर होना (5) मददे इलाही का

1.....फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 567। बहारे शरीअ़त, 1 / 893–896 माख़ूज़न। जो जानवर साल का अक्सर हिस्सा जंगल में चर कर गुज़ारा करते हों और चराने से मक़्सूद सिर्फ़ दूध और बच्चे लेना और फ़र्बा करना हो उन को साइमा कहते हैं। (درمختار و ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، ۳/۲۳۲)

2.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 5, 1 / 916।

3...کتاب التعریفات، باب الصاد، ص ۹۵۔

4...ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی فضل الصدقۃ، ۲/۱۴۶، حدیث:۶۶۴۔

शामिले हाल होना (6) दरजात का बुलन्द होना (7) रिज़ाए इलाही नसीब होना (8) गुनाहों का मुआफ़ होना (9) महब्बतों में इज़ाफ़ा होना और (10) टेढ़े काम दुरुस्त होना वग़ैरा।[1]

सुवाल सदक़ा अ़लानिय्या करना बेहतर है या पोशीदा ?

जवाब पोशीदा सदक़ा करना बेहतर है मगर दूसरों की तरग़ीब के लिये अ़लानिय्या सदक़ा करना अफ़्ज़ल है।[2]

सुवाल सदक़ा कहां ख़र्च करे ?

जवाब सदक़ा रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों, मुसाफ़िरों, साइलों और ग़ुलाम लौंडियां आज़ाद कराने में ख़र्च किया जाए। (پ۲، البقرۃ:۱۷۷)

सुवाल सदक़ा व ख़ैरात किन लोगों को देना अफ़्ज़ल है ?

जवाब सदक़ा व ख़ैरात उन ग़रीब उ़लमा, त़लबा, मुदर्रिसीन और दीन के ख़ादिमों वग़ैरा को देना अफ़्ज़ल है जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां ख़िदमते दीन के लिये वक़्फ़ कर दी हैं। अगर इन की ख़िदमत न की गई और येह त़लबे मआ़श के लिये मजबूरन मश्ग़ूल हुवे तो दीने इस्लाम का सख़्त नुक़्सान होगा।[3]

सुवाल क्या ह़राम माल से सदक़ा किया जा सकता है ?

जवाब ह़राम माल से सदक़ा नहीं किया जा सकता, ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1.....ज़ियाए सदक़ात, स. 174।

2...تفسیر مدارک، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷۱، ص ۱۳۹۔

3.....तफ़्सीरे नईमी, पारह. 3, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 273, 3 / 134।

फ़रमाया : जो हराम माल जम्अ़ करे फिर इस से सदक़ा दे तो इस में उस के लिये कोई अज्र नहीं और इस का वबाल उसी पर होगा।(1)

सुवाल क्या क़र्ज़ देने की भी कोई फ़ज़ीलत है ?

जवाब जी हां ! हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर क़र्ज़ सदक़ा है।"(2)

सुवाल क्या बीवी अपने शौहर का माल सदक़ा कर सकती है ?

जवाब जी हां ! हुसूले सवाब की निय्यत से शौहर की रिज़ामन्दी से बीवी माल सदक़ा कर सकती है।(3)

सुवाल क्या सदक़ा करने के बा'द वापस ले सकते हैं ?

जवाब नहीं ले सकते क्यूंकि ह़दीसे पाक में इस की मुमानअ़त है।(4)

सुवाल सदक़ाते वाजिबा, नफ़्ली सदक़ात और औक़ाफ़ की आमदनी बनी हाशिम को देना कैसा ?

जवाब सदक़ाते वाजिबा (जैसे ज़कात, सदक़ए फ़ित्र वग़ैरा) नहीं दे सकते सदक़ए नफ़्ल और औक़ाफ़ की आमदनी दे सकते हैं, ख़्वाह वक़्फ़ करने वाले ने इन की तअ़यीन की हो या नहीं।(5)

---

1 . . . صحیح ابن حبان، کتاب الزکاۃ، ذکر البیان بأن المال . . . الخ، ۸/۱۵۳، حدیث: ۳۳۶۷۔

2 . . . شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی القرض، ۳/۲۸۴، حدیث: ۳۵۶۳۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 127 ।

4 . . . بخاری، کتاب الزکاۃ، ھل یشتری الرجل صدقتہ، ۱/۵۰۲، حدیث: ۱۴۸۹۔

5 .....फ़तावा अहले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 423, 424 । बहारे शरीअ़त, हिस्सा. 5, 1 / 931 ।

सुवाल क्या किसी का दिया हुवा तोहफ़ा सदक़ा कर सकते हैं ?

जवाब जी हां ! ह़दीस शरीफ़ में है : जब तुम्हें बिन मांगे कुछ दिया जाए तो खाओ और सदक़ा करो ।(1)

रोज़ा

सुवाल रोज़े कब फ़र्ज़ हुवे ?

जवाब रोज़े 10 शा'बान 2 हिजरी को फ़र्ज़ हुवे ।(2)

सुवाल रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत और अज्रो सवाब बताइये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी के हर नेक अ़मल का बदला दस से सात सौ गुना तक दिया जाता है । अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं खुद दूंगा क्यूंकि बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वज्ह से तर्क करता है, रोज़ादार के लिये दो खुशियां हैं, एक इफ़्त़ार के वक़्त और एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त और रोज़ादार के मुंह की बू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है ।(3)

सुवाल क्या रोज़ा रखने का कोई त़िब्बी फ़ाएदा भी है ?

जवाब जी हां, रोज़ा रखने से शूगर कन्ट्रोल, दिल की घबराहट दूर, ज़ेहनी

1 . . . ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی الاستعفاف، ۲/ ۱۷۱، حدیث: ۱۶۴۷۔

2 . . . درمختار، کتاب الصوم، ۳/ ۳۸۳۔

3 . . . مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، ص ۵۸۰، حدیث: ۱۱۵۱۔

डिप्रेशन व नफ़्सानी अमराज़ का ख़ातिमा होता है। नीज़ मे'दे, जिगर और पठ्ठों के अमराज़ में इफ़ाक़ा होता है।(1)

सुवाल क्या रोज़ा रखने के लिये निय्यत करना ज़रूरी है ?

जवाब जी ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स बिग़ैर निय्यत के पूरा दिन भूका प्यासा रहे तो उस का रोज़ा न होगा।(2)

सुवाल क्या रोज़ा रखने के लिये सह़री करना ज़रूरी है ?

जवाब ज़रूरी तो नहीं, हां सुन्नत है।(3) लिहाज़ा जान बूझ कर इस अ़ज़ीम सुन्नत को न छोड़ा जाए।

सुवाल क्या रोज़ा बन्द करने या खोलने के लिये अज़ान ज़रूरी है ?

जवाब जी नहीं ! "रोज़ा बन्द करने का तअ़ल्लुक़ अज़ाने फ़ज्र से नहीं। सुब्हे सादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है।" यूं ही "जब ग़ुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए, इफ़्तार करने में देर नहीं करनी चाहिये। न साइरन का इन्तिज़ार कीजिये, न अज़ान का। फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये।"(4)

सुवाल किस सफ़र की वज्ह से रोज़ा न रखने की इजाज़त है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ शरअ़न सफ़र की मिक़्दार साढ़े सत्तावन मील

---

1 .....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 107।

2 ...درمختارو ردالمحتار، کتاب الصوم، ۳/۳۸۴-۳۸۵۔

3 ...بدائع الصنائع، کتاب الصوم، ۲/۲۶۶۔

4 .....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 173-177।

(या'नी तक़रीबन बानवे किलो मीटर) है जो कोई इतनी मिक़्दार का फ़ासिला तै करने की ग़रज़ से (पन्दरह दिन से कम के लिये) अपने शहर या गाऊं की आबादी से बाहर निकल आया, वोह अब शरअ़न मुसाफ़िर है। उसे रोज़ा क़ज़ा कर के रखने की इजाज़त है।(1)

सुवाल कै आने से रोज़ा कब टूटता है ?

जवाब रोज़ा याद होने के बा वुजूद जान बूझ कर कै की और वोह मुंह भर हो और उस कै में खाना, पानी, कड़वा पानी या ख़ून आए तो रोज़ा टूट जाएगा। बिला इख़्तियार कै हुई अब अगर वोह मुंह भर है और उस में एक चने के बराबर वापस लौटा दी तो भी रोज़ा टूट जाएगा।(2)

सुवाल क्या जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस का रोज़ा हो जाता है ?

जवाब जी हां, जनाबत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने) की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि सारा दिन कोई जनाबत की ह़ालत में रहा तो रोज़ा हो जाएगा।(3) मगर उतनी देर तक जान बूझ कर ग़ुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह व ह़राम है।

सुवाल रोज़े के कोई 6 मकरूहात बयान कीजिये ?

जवाब झूट, ग़ीबत, बद निगाही, गाली देना, बिला इजाज़ते शरई किसी का दिल दुखाना, दाढ़ी मुंडाना वैसे भी नाजाइज़ व ह़राम हैं रोज़े में

1.....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 235।

2...ردالمحتار، کتاب الصوم، باب مایفسد الصوم ومالا یفسد، ۳/۴۵۰۔

3...درمختار، کتاب الصوم، ۳/۴۲۸۔

और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से रोज़े में कराहिय्यत आती और रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है।[1]

सुवाल मजबूरी के सबब रोज़ा न रखा तो मजबूरी ख़त्म होने पर क्या हुक्म है ?

जवाब बा'ज़ मजबूरियां ऐसी हैं जिन के सबब रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा न रखने की इजाज़त है मगर येह याद रहे कि मजबूरी में रोज़ा मुआफ़ नहीं वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने के बा'द इस की क़ज़ा रखना फ़र्ज़ है। अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह नहीं होगा।[2]

सुवाल रोज़े का कफ़्फ़ारा क्या है ?

जवाब मुमकिन हो तो एक बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके तो पै दर पै साठ रोज़े रखे। येह भी अगर मुमकिन न हो तो साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों वक़्त खाना खिलाए।[3]

ह़ज व उ़मरह

सुवाल एह़राम के क्या मा'ना हैं ?

जवाब एह़राम के लफ़्ज़ी मा'ना हैं : ह़राम करना क्यूंकि एह़राम बांधने पर बा'ज़ ह़लाल बातें भी ह़राम हो जाती हैं।[4]

सुवाल एह़राम की ह़ालत में इ़त्र की शीशी हाथ में ली और हाथ में ख़ुश्बू लग गई तो क्या कफ़्फ़ारा है ?

1.....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 224।
2.....फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 234।
3...ردالمحتار، کتاب الصوم، مطلب فی الکفارۃ، ۳/۴۴۷۔
4.....रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन, स. 28।

जवाब अगर लोग देख कर कहें कि येह बहुत सी ख़ुश्बू लग गई है अगर्चे उ़ज़्व के थोड़े से हिस्से में लगी हो तो दम वाजिब है, वरना मा'मूली सी ख़ुश्बू भी लग गई तो सदक़ा है।(1)

सुवाल क्या एह़राम की ह़ालत में जूं भी नहीं मार सकते ?

जवाब जी हां ! जूं मारना, फेंकना, किसी को मारने के लिये इशारा करना, कपड़ा उस के मारने के लिये धोना या धूप में डालना, बालों में जूं मारने के लिये किसी क़िस्म की दवा वग़ैरा डालना, ग़रज़ येह कि किसी त़रह़ उस के हलाक पर बाइ़स होना येह सब ह़राम है।(2)

सुवाल इज़्त़िबाअ़ किसे कहते हैं ?

जवाब मर्द अपनी चादर सीधे हाथ की बग़ल के नीचे से निकाल कर उस के दोनों पल्ले उलटे कन्धे पर इस त़रह़ डाले कि सीधा कन्धा खुला रहे।(3)

सुवाल इस्तिलाम क्या है ?

जवाब ह़जरे अस्वद को बोसा देने या हाथ या लकड़ी से छू कर चूम लेने या इशारा कर के हाथों को बोसा देने को इस्तिलाम कहते हैं।(4)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 6, 1 / 1163 माख़ूज़न فتاوی ہندیہ، کتاب الحج، الباب الثامن فی الجنایات، ۱/ ۲۴۰۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 733।

3 ... ردالمحتار، کتاب الحج، مطلب فی دخول مکہ، ۳/ ۵۷۹۔
فتاوی ھندیہ، کتاب المناسک، الباب الخامس فی کیفیۃ اداء الحج، ۱/ ۲۲۵۔

4 ... ردالمحتار، کتاب الحج، مطلب فی دخول مکہ، बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 6, 1 / 1096

सुवाल सअ्य किसे कहते हैं ?

जवाब सफ़ा व मरवा के दरमियान दौड़ने को सअ्य कहते हैं।(1)

सुवाल रमी किसे कहते हैं ?

जवाब जमरात (या'नी शैतानों) पर कंकरियां मारना रमी कहलाता है।(2)

सुवाल रमल किसे कहते हैं ?

जवाब अकड़ कर शाने (कन्धे) हिलाते हुवे छोटे छोटे क़दम उठाते हुवे क़दरे (या'नी थोड़ा) तेज़ी से चलना।(3)

सुवाल त़वाफ़ में कितने फेरे और कितने इस्तिलाम होते हैं ?

जवाब सात (7) फेरे और आठ (8) इस्तिलाम।(4)

सुवाल तक़्सीर की ता'रीफ़ बताइये ?

जवाब तक़्सीर या'नी कम अज़ कम चौथाई (1 / 4) सर के बाल उंगली के पोरे बराबर कटवाना।(5)

सुवाल इस्लामी बहनों की तक़्सीर का आसान त़रीक़ा क्या है ?

जवाब इस का आसान त़रीक़ा येह है कि अपनी चुटया के सिरे को उंगली के गिर्द लपेट कर उतना हिस्सा काट लें, लेकिन येह एह़तियात़

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 6, 1 / 1048।

2 .....रफ़ीक़ुल ह़रमैन, स. 60।

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب المناسک، الباب الخامس فی کیفیۃ اداء الحج، ۱/ ۲۲۶۔

4 .....रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन, स. 62।

5 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب المناسک، الباب الخامس فی کیفیۃ اداء الحج، ۱/ ۲۳۱۔

लाज़िमी है कि कम अज़ कम चौथाई (1 / 4) सर के बाल पोरे के बराबर कट जाएं ।[1]

सुवाल तवाफ़ में कितनी और कौन कौन सी बातें हराम हैं ?

जवाब तवाफ़ में सात बातें हराम हैं : (1) बे वुज़ू तवाफ़ करना (2) जो उज़्व सत्र में दाख़िल है उस का चौथाई (1 / 4) हिस्सा खुला होना, मसलन रान या आज़ाद औरत का कान या कलाई (3) बे मजबूरी सुवारी पर या किसी की गोद में या कन्धों पर तवाफ़ करना (4) बिला उज़्र बैठ कर सरकना या घुटनों पर चलना (5) का'बे को सीधे हाथ पर ले कर उल्टा तवाफ़ करना (6) तवाफ़ में "हतीम" के अन्दर हो कर गुज़रना (7) सात फेरों से कम करना ।[2]

ज़ब्ह और क़ुरबानी

सुवाल क़ुरबानी किसे कहते हैं ?

जवाब मख़्सूस जानवर को मख़्सूस वक़्त में सवाब की निय्यत से ज़ब्ह करना क़ुरबानी कहलाता है ।[3]

सुवाल यौमुन्नह्र किस दिन को कहा जाता है ?

जवाब ज़ुल हिज्जा की 10 तारीख़ को "यौमुन्नह्र" कहते हैं ।[4]

सुवाल क़ुरबानी किस पर वाजिब है ?

1.....रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन, स. 85 ।

2.....फ़तावा रज़विय्या, 10 / 744 । बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 6, 1 / 1112-1113 ।

3... درمختار، کتاب الاضحیة، ۹/۵۱۹۔

4... درمختاروردالمحتار، کتاب الاضحیة، ۹/۵۲۹۔

जवाब हर बालिग़, मुक़ीम, मुसलमान मर्द व औ़रत, मालिके निसाब[1] पर कुरबानी वाजिब है।[2]

सुवाल जिस पर कुरबानी वाजिब हो लेकिन पैसे न हों तो क्या करे ?

जवाब अगर कुरबानी उस पर वाजिब है और उस वक़्त उस के पास रूपिया नहीं तो क़र्ज़ ले कर या कोई चीज़ फ़रोख़्त कर के कुरबानी का जानवर ह़ासिल करे और कुरबानी करे।[3]

सुवाल कुरबानी के जानवरों में किस की कितनी उ़म्र होना ज़रूरी है ?

जवाब कुरबानी के जानवरों में ऊंट की उ़म्र पांच साल, गाए की उ़म्र दो साल और बकरे की एक साल होना ज़रूरी है इस से कम हो तो कुरबानी न होगी अलबत्ता दुम्बा या भेड़ का छे माह का बच्चा जो देखने में साल का लगे उस की कुरबानी जाइज़ है।[4]

सुवाल ज़ब्ह़ में काटी जाने वाली चार रगों के नाम बताइये ?

जवाब वोह चार रगें येह हैं : (1) हुल्क़ूम, (2) मुरी और (3-4) वदजैन।[5]

1.....मालिके निसाब होने से मुराद येह है कि उस शख़्स के पास साढ़े बावन तोले चांदी या इतनी मालिय्यत की रक़म या इतनी मालिय्यत का तिजारत का माल या इतनी मालिय्यत का ह़ाजते अस्लिय्या के इ़लावा सामान हो और उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ या बन्दों का इतना क़र्ज़ा न हो जिसे अदा कर के ज़िक्र कर्दा निसाब बाक़ी न रहे। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरियाते ज़िन्दगी) से मुराद वोह चीज़ें हैं जिन की उ़मूमन इन्सान को ज़रूरत होती है और उन के बिग़ैर गुज़र औक़ात में शदीद तंगी व दुश्वारी मह़सूस होती है जैसे रहने का घर, पहनने के कपड़े, सुवारी, इ़ल्मे दीन से मुतअ़ल्लिक़ किताबें और पेशे से मुतअ़ल्लिक़ औज़ार वग़ैरा। (अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 6)

2.....अब्लक़ घोड़े सुवार, स. 6।

3.....फ़तावा अमजदिया, 3 / 315।

4...درمختار، کتاب الاضحیة، ۹/۵۳۳۔

5...درمختار وردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/۴۹۱-۴۹۳۔

सुवाल जानवर को ज़ब्ह करने में कितनी रगों का कटना ज़रूरी है ?

जवाब ज़ब्ह की चार रगों में से तीन का कट जाना काफ़ी है और अगर चारों में से हर एक का अक्सर हिस्सा भी कट गया तो जानवर हलाल है ।(1)

सुवाल जानवर के पेट से अगर बच्चा निकला तो क्या कुरबानी हो जाएगी ?

जवाब जी हां ! इस सूरत में कुरबानी हो जाएगी ।(2)

सुवाल एक ऊंट में कुरबानी के कितने हिस्से होते हैं ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ के मुत़ाबिक़ एक ऊंट की कुरबानी में 7 अफ़राद शरीक हो सकते हैं ।(3)

सुवाल हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने ऊंट नह़र फ़रमाए ?

जवाब इस मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुक़द्दस हाथ से 63 ऊंट नह़र फ़रमाए ।(4)

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बक़र ईद के दिन सब से पहले खाने में क्या खाते ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईदुल अज़्हा में सब से पहले कुरबानी की कलेजी तनावुल फ़रमाते ।(5)

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الذبائح، ۹/۴۹۳۔

2 . . . فتاوی هنديه، کتاب الاضحية، الباب السادس في بيان مايستحب في الاضحية. . . الخ، ۵/۳۰۱۔

3 . . . مسلم، کتاب الحج، باب الاشتراک في الهدی. . . الخ، ص ۶۸۴، حديث: ۱۳۱۸۔

4 . . . مسلم، کتاب الحج، باب حجة النبي، ص ۶۳۷، حديث: ۱۲۱۸۔

5 . . . المدخل، فصل من العوائد الرديئة. . . الخ، الموسم الاول عيد الاضحی، ۱/۲۰۵۔

सुवाल कुरबानी के जानवर के हर बाल के बदले कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब कुरबानी करने वाले को कुरबानी के जानवर के हर बाल के इवज़ एक नेकी मिलती है।(1)

निकाह़

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने निकाह़ की इस्तित़ाअ़त होने या न होने की सूरत में निकाह़ करने के मुतअ़ल्लिक़ क्या हुक्म दिया है ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जवानो ! तुम में जो कोई निकाह़ की इस्तित़ाअ़त रखता है वोह निकाह़ करे कि येह अजनबी औ़रत की त़रफ़ नज़र करने से निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने वाला है और जिस में निकाह़ की इस्तित़ाअ़त नहीं वोह रोज़े रखे कि रोज़ा क़ात़ेए़ शहवत (या'नी शहवत को तोड़ने वाला) है।(2)

सुवाल निकाह़ में कौन से उमूर का लिह़ाज़ रखना मुस्तह़ब है ?

जवाब निकाह़ में येह उमूर मुस्तह़ब हैं : (1) अ़लानिय्या होना (2) निकाह़ से पहले ख़ुत़बा पढ़ना (3) मस्जिद में होना (4) जुमुआ़ के दिन (5) गवाहाने आ़दिल के सामने (6) औ़रत उ़म्र, ह़सब (ख़ानदानी शरफ़), माल, इ़ज़्ज़त में मर्द से कम हो और (7) चाल चलन और अख़्लाक़ व तक़्वा व जमाल में बेश (या'नी ज़ियादा) हो।(3)

---

1 . . . ترمذی، کتاب الاضاحی، باب ماجاء فی فضل الاضحیۃ، ۳/۱۶۲، حدیث:۱۴۹۸۔

2 . . . بخاری، کتاب النکاح، باب من لم یستطع الباءۃ فلیصم، ۳/۴۲۲، حدیث:۵۰۶۶۔

3 . . . درمختار، کتاب النکاح، ۴/۷۵۔

सुवाल औरत से उस की इ़ज़्ज़त या माल की वज्ह से निकाह़ करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो किसी औ़रत से उस की इ़ज़्ज़त के बाइ़स निकाह़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ज़िल्लत में इज़ाफ़ा करेगा और जो किसी औ़रत से उस के माल के सबब निकाह़ करेगा **अल्लाह** तआ़ला उस की मोह़ताजी ही बढ़ाएगा ।(1)

सुवाल कम से कम मेह्र कितना है ?

जवाब मेह्र कम से कम दस दिरहम (या'नी दो तोला साढ़े सात माशा (30.618 ग्राम) चांदी या इस की क़ीमत) है इस से कम नहीं हो सकता ।(2)

सुवाल क्या औ़रत के मेह्र मुआ़फ़ कर देने से मुआ़फ़ हो जाएगा ?

जवाब औ़रत कुल मेह्र या जुज़ (कुछ) मुआ़फ़ कर दे तो मुआ़फ़ हो जाएगा बशर्त़ येह कि शौहर ने इन्कार न कर दिया हो ।(3)

सुवाल मेह्र की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब मेह्र तीन क़िस्म (का) है : (1) मुअ़ज्जल कि ख़ल्वत से पहले मेह्र देना क़रार पाया है । (2) मुअज्जल जिस के लिये कोई मीआ़द मुक़र्रर हो । (3) मुत़लक़ जिस में न वोह हो न येह (या'नी न ख़ल्वत से पहले देना क़रार पाया हो, न ही इस के लिये कोई मुद्दत मुक़र्रर हो) ।(4)

---

1 . . . معجم اوسط، ۲/۱۸، حدیث: ۲۳۴۲۔

2 . . . فتاوی ھندیۃ، کتاب النکاح، الباب السابع فی المھر، الفصل الاول، ۱/۳۰۳۔

3 . . . درمختار، کتاب النکاح، باب المھر، ۴/۲۳۹۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 7, 2 / 74 ।

सुवाल मेहर न देने की निय्यत से निकाह़ करने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स निकाह़ करे और निय्यत येह हो कि औ़रत को मेहर में से कुछ न देगा तो जिस रोज़ मरेगा ज़ानी मरेगा।[1]

सुवाल क्या मर्द का परी से और औ़रत का जिन्न से निकाह़ हो सकता है ?

जवाब मर्द का परी से या औ़रत का जिन्न से निकाह़ नहीं हो सकता।[2]

सुवाल बच्चे को मां का दूध कितने साल तक पिलाने की इजाज़त है ?

जवाब बच्चे को दो बरस तक दूध पिलाया जाए, इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं और बरस से मुराद हिजरी बरस है।[3]

सुवाल क्या लड़के और लड़की को दूध पिलाने की मुद्दत में कोई फ़र्क़ है ?

जवाब जो बा'ज़ अ़वाम में मशहूर है कि लड़की को दो बरस तक और लड़के को ढाई बरस तक पिला सकते हैं येह सह़ीह़ नहीं।[4]

सुवाल क्या मुद्दत पूरी होने के बा'द बत़ौरे इलाज दूध पिलाया जा सकता है ?

जवाब मुद्दत पूरी होने के बा'द बत़ौरे इलाज भी दूध पिलाना जाइज़ नहीं।[5]

---

1 ...معجم کبیر، ۸/۳۵، حدیث: ۷۳۰۲۔

2 ...درمختار و رد المحتار، کتاب النکاح، ۴/۷۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 7 / 36। ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 189, स. 63 माख़ूज़न।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2, 7 / 36।

5 ...درمختار، کتاب النکاح، باب الرضاع، ۴/۳۸۹۔

सुवाल हुरमते रज़ाअ़त या'नी निकाह़ ह़राम होने के लिये दूध पिलाने की मुद्दत क्या है ?

जवाब निकाह़ ह़राम होने के लिये ढाई बरस का ज़माना है या'नी दो बरस के बा'द अगर्चे दूध पिलाना ह़राम है मगर ढाई बरस के अन्दर अगर दूध पिला देगी हुरमते निकाह़ साबित हो जाएगी ।(1)

त़लाक़, इद्दत और सोग

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन सी ह़लाल चीज़ सब से ज़ियादा ना पसन्द है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : اَبْغَضُ الْحَلَالِ اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی الطَّلَاق या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ह़लाल चीज़ों में सब से ना पसन्दीदा शै त़लाक़ है ।(2)

सुवाल त़लाक़ किसे कहते हैं ?

जवाब निकाह़ से औ़रत शौहर की पाबन्द हो जाती है इस पाबन्दी के उठा देने को त़लाक़ कहते हैं और इस के लिये कुछ अल्फ़ाज़ मुक़र्रर हैं ।(3)

सुवाल त़लाक़े बाइन और रजई में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब त़लाक़ की दो सूरतें हैं : एक येह कि औ़रत उसी वक़्त निकाह़ से बाहर हो जाए इसे बाइन कहते हैं । दुवुम येह कि इद्दत गुज़रने पर बाहर होगी, इसे रजई कहते हैं ।(4)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 7, 2 / 36 ।

2 . . .ابوداود، کتاب الطلاق، باب کراھیۃ الطلاق، ۲/۳۷۰، حدیث:۲۱۷۸۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 110 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 110 ।

सुवाल क्या नशे की ह़ालत में त़लाक़ देने से त़लाक़ हो जाएगी ?

जवाब नशे वाले ने त़लाक़ दी तो वाक़ेअ़ हो जाएगी, नशा ख़्वाह शराब पीने से हो या भंग वग़ैरा किसी और चीज़ से। अफ़्यून की पीनक में त़लाक़ दे दी जब भी वाक़ेअ़ हो जाएगी त़लाक़ में औ़रत की जानिब से कोई शर्त़ नहीं ना बालिग़ा हो या मजनूना बहर ह़ाल त़लाक़ वाक़ेअ़ होगी।(1)

सुवाल इ़द्दत से क्या मुराद है ?

जवाब निकाह़ ख़त्म होने के बा'द औ़रत को निकाह़ की मुमानअ़त होना और एक मुद्दत तक इन्तिज़ार करना इ़द्दत है।(2)

सुवाल जिस का शौहर फ़ौत हो गया तो उस की इ़द्दत क्या है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और तुम में जो मरें और बीबियां छोड़ें वोह चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें।" (پ۲، البقرۃ:۲۳۴)

तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में है : यहां ग़ैर ह़ामिला का बयान है जिस का शौहर मर जाए उस की इ़द्दत चार माह दस रोज़ है।(3)

सुवाल ह़ामिला औ़रत की इ़द्दत क्या है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

1.....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 8, 2 / 111-112।

2...فتاوی ہندیۃ، کتاب الطلاق، الباب الثالث عشر فی العدۃ، ۱/۵۲۶۔

3.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 234, स. 80।

﴿وَ اُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ یَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ﴾ (پ۲۸، الطلاق: ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ह़म्ल वालियों की मीआ़द येह है कि वोह अपना ह़म्ल जन लें।" **मस्अला :** ह़ामिला औ़रतों की इ़द्दत वज़्ए़ ह़म्ल (बच्चे की पैदाइश तक) है ख़्वाह वोह इ़द्दत त़लाक़ की हो या वफ़ात की।(1)

सुवाल ह़म्ल की कम से कम और ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत क्या है?

जवाब ह़म्ल की मुद्दत कम से कम छे महीने और ज़ियादा से ज़ियादा दो साल है।(2)

सुवाल सोग के क्या मा'ना हैं?

जवाब सोग के येह मा'ना हैं कि ज़ीनत को तर्क करे।(3)

सुवाल किस औ़रत पर सोग वाजिब है?

जवाब सोग उस पर है जो आ़क़िला बालिग़ा मुसलमान हो और मौत या त़लाक़े बाइन की इ़द्दत हो।(4)

सुवाल शौहर के मरने पर औ़रत को कितने दिन के सोग का हुक्म है?

जवाब हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो औ़रत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती है उसे ह़लाल नहीं कि किसी मय्यित पर तीन रातों से ज़ियादा सोग करे मगर शौहर पर कि चार महीने दस दिन सोग करे।(5)

1.....ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 28, अत्त़लाक़, तह़्तुल आयत : 4, स. 1033।

2 . . . ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی ثبوت النسب، ۵/ ۲۳۴۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 242।

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 8, 2 / 243।

5 . . . بخاری، کتاب الجنائز، باب احداد المرأة علی غیر زوجها، ۱/ ۴۳۳، حدیث: ۱۲۸۰۔

सुवाल क़रीबी रिश्तेदार के मर जाने पर औ़रत को कितने दिन सोग करने की इजाज़त है ?

जवाब किसी क़रीबी के मरने पर औ़रत को तीन दिन तक सोग करने की इजाज़त है इस से ज़ाइद की नहीं और औ़रत शौहर वाली हो तो शौहर इस से भी मन्अ़ कर सकता है।(1)

क़सम

सुवाल यमीन या'नी क़सम की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब क़सम की तीन क़िस्में हैं : (1) ग़मूस (2) लग़्व (3) मुन्अ़क़िदा।(2)

सुवाल यमीने ग़मूस किसे कहते हैं ?

जवाब ग़मूस येह है कि किसी गुज़रे हुवे या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़मले) पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर) झूटी क़सम खाए।(3)

सुवाल यमीने ग़मूस का हुक्म बताएं ?

जवाब यमीने ग़मूस खाने वाला सख़्त गुनहगार हुवा, इस्तिग़फ़ार व तौबा फ़र्ज़ है मगर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं।(4)

सुवाल यमीने लग़्व किसे कहते हैं ?

जवाब लग़्व येह है कि किसी गुज़रे हुवे या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ़मले) पर अपने ख़याल में (या'नी ग़लत़ फ़हमी की वज्ह से) सह़ीह़ जान

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الطلاق، فصل فی الحداد، ۵/۲۲۳۔

2 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا...الخ، ۲/۵۲۔

3 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا...الخ، ۲/۵۲۔

4 ...فتاوی ھندیۃ، کتاب الأیمان، الباب الثانی فیمایکون یمینا...الخ، ۲/۵۲۔

कर क़सम खाए और दर ह़क़ीक़त वोह बात इस के ख़िलाफ़ (या'नी उलट) हो।(1)

सुवाल यमीने लग़्व का हुक्म बताएं ?

जवाब यमीने लग़्व मुआ़फ़ है और इस पर कफ़्फ़ारा नहीं।(2)

सुवाल यमीने मुन्अ़क़िदा किसे कहते हैं ?

जवाब यमीने मुन्अ़क़िदा येह है कि मुस्तक़्बिल में किसी काम के करने या न करने की क़सम खाई।(3)

सुवाल यमीने मुन्अ़क़िदा का हुक्म बताएं ?

जवाब यमीने मुन्अ़क़िदा में अगर क़सम तोड़ेगा कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा और बा'ज़ सूरतों में गुनहगार भी होगा।(4)

सुवाल झूटी क़सम खाने से मुतअ़ल्लिक़ नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या फ़रमान है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क करना, वालिदैन की नाफ़रमानी करना, किसी जान को क़त्ल करना और झूटी क़सम खाना कबीरा गुनाह हैं।"(5)

सुवाल सब से पहले झूटी क़सम किस ने खाई ?

जवाब पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है।(6)

---

1 . . . فتاوی هندية، كتاب الأيمان، الباب الثاني فيما يكون يمينا. . . الخ، ۲/۵۲۔

2 .....बहारे शरीअ़त, 2 / 299, मुलख़्ख़सन।

3 . . . فتاوی هندية، كتاب الأيمان، الباب الثاني فيما يكون يمينا. . . الخ، ۲/۵۲۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 2 / 299।

5 . . . بخاری، کتاب الایمان والنذور، باب یمین الغموس، ۴/۲۹۵، حدیث: ۶۶۷۵۔

6 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 8, अल आ'राफ़, तह़्तुल आयत : 22, स. 289।

सुवाल ग़लती से क़सम खा ली तो क्या उस पर भी कफ़्फ़ारा होगा ?

जवाब ग़लती से क़सम खा बैठा मसलन कहना चाहता था कि पानी पिलाओ और ज़बान से निकल गया कि "ख़ुदा की क़सम पानी नहीं पियूंगा।" तो येह भी क़सम है अगर तोड़ेगा कफ़्फ़ारा देना होगा।[1]

सुवाल भूल कर या किसी के मजबूर करने पर क़सम तोड़ी तो भी कफ़्फ़ारा देना होगा ?

जवाब क़सम तोड़ना किसी के मजबूर करने से हो या भूल चूक से हर सूरत में कफ़्फ़ारा है।[2]

सुवाल क्या दूसरे के क़सम दिलाने से क़सम हो जाएगी ?

जवाब दूसरे के क़सम दिलाने से क़सम नहीं होती। मसलन कहा : तुम्हें ख़ुदा की क़सम येह काम कर दो। तो इस कहने से (जिस से कहा गया) उस पर क़सम न हुई या'नी न करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं।[3]

लुक़्ता

सुवाल लुक़्ता किसे कहते हैं ?

जवाब लुक़्ता उस माल को कहते हैं जो कहीं पड़ा हुवा मिल जाए।[4]

सुवाल लुक़्ता किस सूरत में उठा लेना मुस्तह़ब है ?

जवाब पड़ा हुवा माल कहीं मिला और येह ख़याल हो कि मैं इस के मालिक को तलाश कर के दे दूंगा तो उठा लेना मुस्तह़ब है।[5]

---

1 . . . تبیین الحقائق، کتاب الأیمان، ۳/۴۲۳۔

2 . . . تبیین الحقائق، کتاب الأیمان، ۳/۴۲۳۔

3 .....बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 2 / 303।

4 . . . درمختار، کتاب اللقطۃ، ۶/۴۲۱۔

5 . . . درمختارو ردالمحتار، کتاب اللقطۃ، ۶/۴۲۲۔

सुवाल किस सूरत में लुक़्ता छोड़ देना बेहतर है ?

जवाब अगर अन्देशा हो कि लुक़्ता शायद मैं ख़ुद ही रख लूं और मालिक को तलाश न करूं तो छोड़ देना बेहतर है।(1)

सुवाल किस सूरत में लुक़्ता उठाना जाइज़ नहीं ?

जवाब अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि मालिक को न दूंगा तो उठाना जाइज़ नहीं और अपने लिये उठाना ह़राम है क्यूंकि येह ग़स्ब (या'नी किसी का माल छीन लेने) की त़रह़ है।(2)

सुवाल किस सूरत में लुक़्ता उठा लेना ज़रूरी है ?

जवाब अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि मैं न उठाऊंगा तो येह चीज़ ज़ाएअ़ और हलाक हो जाएगी तो उठा लेना ज़रूरी है लेकिन अगर न उठाए और ज़ाएअ़ हो जाए तो इस पर तावान नहीं।(3)

सुवाल लुक़्ते को इस्ति'माल की निय्यत से उठाया मगर फिर नदामत हुई तो क्या हुक्म है ?

जवाब लुक़्ते को अपने तसर्रुफ़ में लाने के लिये उठाया फिर नादिम हुवा कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये और जहां से लाया वहीं रख आया तो बरियुज़्ज़िम्मा न होगा या'नी अगर ज़ाएअ़ हो गया तो तावान देना पड़ेगा बल्कि इस पर लाज़िम है कि मालिक को तलाश करे और उस के ह़वाले कर दे।(4)

सुवाल वोह कौन सी सूरत है कि लुक़्ता उठाया, फिर वहीं रख दिया और ज़ाएअ़ हो गया मगर तावान नहीं ?

---

1 . . . درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطۃ، ۶/۴۲۲۔

2 . . . درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطۃ، ۶/۴۲۲۔

3 . . . درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطۃ، ۶/۴۲۳۔

4 . . . درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطۃ، ۶/۴۲۲۔

जवाब अगर लुक़्ता मालिक को देने के लिये उठाया था मगर फिर वहीं रख आया जहां से लाया था तो ज़ाएअ़ होने की सूरत में तावान नहीं।(1)

सुवाल क्या लुक़्ते का ए'लान करना ज़रूरी है?

जवाब जी हां, ह़दीसे पाक में ए'लान का हुक्म दिया गया है।(2)

सुवाल लुक़्ता उठाने के लिये कितने अ़र्से तक इस का ए'लान करना ज़रूरी है?

जवाब लुक़्ता उठाने वाले पर उस की तश्हीर करना लाज़िम है या'नी बाज़ारों और शारेए़ आ़म और मसाजिद में उस वक़्त तक ए'लान करे कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि मालिक अब तलाश न करता होगा।(3)

सुवाल शादी में लुटाने के लिये दिये गए पैसे किसी और को लुटाने के लिये देना कैसा?

जवाब शादियों में रूपे पैसे लुटाने के लिये जिस को दिये वोह ख़ुद लुटाए, दूसरे को लुटाने के लिये नहीं दे सकता और कुछ बचा कर अपने लिये रख ले या गिरा हुवा (रूपिया पैसा) ख़ुद उठा ले येह जाइज़ नहीं।(4)

सुवाल शादी में छूहारे वग़ैरा लुटाने के लिये किसी को दिये तो क्या हुक्म है?

जवाब शकर छूहारे लुटाने को दिये तो बचा कर कुछ रख सकता है और दूसरे को भी लुटाने के लिये दे सकता है और दूसरे ने लुटाए तो अब वोह भी लूट सकता है।(5)

---

1 ...درمختاروردالمحتار، کتاب اللقطة، ۶/۴۲۲۔

2 ...مسلم، کتاب اللقطة، باب فی لقطة الحاج، ص ۹۵۰، حدیث: ۱۷۲۵۔

3 ...فتاوی ھندیة، کتاب اللقطة، ۲/۲۸۹۔

4 ...فتاوی خانیة، کتاب اللقطة، ۲/۳۵۸۔

5 ...فتاوی خانیة، کتاب اللقطة، ۲/۳۵۸۔

सुवाल क्या कोई ऐसी दुआ़ है जिस के पढ़ने से गुमी हुई चीज़ मिल जाए ?

जवाब जी हां, जब कोई चीज़ गुम हो जाए तो येह दुआ़ पढ़ें :

“يَاجَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ اِنَّ اللهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ اِجْمَعْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ ضَآلَّتِيْ”

ضَآلَّتِيْ की जगह उस गुमशुदा चीज़ का नाम ज़िक्र करे वोह चीज़ मिल जाएगी। इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस को मैं ने आज़माया है गुमी हुई चीज़ जल्द मिल जाती है।(1)

वक़्फ़ और चन्दा

सुवाल वक़्फ़ के क्या मा'ना हैं ?

जवाब वक़्फ़ के येह मा'ना हैं कि किसी शै को अपनी मिल्क से ख़ारिज कर के ख़ालिस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मिल्क कर दिया जाए इस त़रह़ कि उस का नफ़्अ़ बन्दगाने ख़ुदा में से जिस को चाहे मिलता रहे।(2)

सुवाल वक़्फ़ की चीज़ में मालिकाना तसर्रुफ़ करना कैसा है ?

जवाब वक़्फ़ में तसर्रुफ़े मालिकाना ह़राम है और मुतवल्ली जब ऐसा करे तो फ़र्ज़ है कि उसे निकाल दें अगर्चे (वोह) ख़ुद वाक़िफ़ (या'नी वक़्फ़ करने वाला ही) हो।(3)

सुवाल चन्दा कैसे इस्ति'माल किया जाए ?

जवाब चन्दे का उसूल येह है कि जिस मद्द (या'नी उ़नवान) में वुसूल किया इस के इ़लावा किसी और मद्द में इस्ति'माल करना गुनाह है।(4)

1 . . . ردالمحتار، كتاب اللقطة، مطلب سرق مكعبه ووجد مثله اودونه، ۶/۴۳۸۔

2.....वक़्फ़ के शरई मसाइल, स. 30।

3.....फ़तावा रज़विय्या, 16 / 162।

4.....फ़तावा अमजदिया, 3 / 38, 39, चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 20।

सुवाल इजतिमाअ़ के लिये किया गया चन्दा बच गया तो क्या करें ?

जवाब चन्दा देने वाले अगर मा'लूम हों तो बची हुई रक़म उन्हीं को लौटानी ज़रूरी है, उन की इजाज़त के बिग़ैर किसी दूसरे मसरफ़ में इस्ति'माल करना जाइज़ नहीं और अगर मा'लूम न हों तो जिस काम के लिये चन्दा देने वालों ने दिया था उसी में सर्फ़ करें (मसलन सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ के लिये दिया था तो किसी दूसरे सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ पर ख़र्च करें) अगर इस त़रह़ का कोई दूसरा काम न पाएं तो फ़ुक़रा पर तसद्दुक़ करें।[1]

सुवाल रमज़ानुल मुबारक में लोग मस्जिद में जो इफ़्त़ारी भिजवाते हैं क्या ग़ैरे रोज़ादार उसे खा सकता है ?

जवाब जो इफ़्त़ारी रोज़ादारों के लिये भेजी जाती है वोह ग़ैरे रोज़ादार नहीं खा सकता, बिलफ़र्ज़ कोई मरीज़ या मुसाफ़िर है या किसी वज्ह से उस का रोज़ा टूट चुका है तो वोह उस इफ़्त़ारी में शरीक न हो। आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैरे रोज़ादारों को इस का खाना ह़राम है।[2]

सुवाल क्या मुतवल्ली मस्जिद का चन्दा किसी को उधार दे सकता है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुतवल्ली को रवा (या'नी जाइज़) नहीं कि माले वक़्फ़ किसी को क़र्ज़ (दे) या बत़ौरे क़र्ज़ अपने तसर्रुफ़ में लाए।[3]

---

1 .....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 22-23।

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 16 / 487।

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 16 / 574।

सुवाल क्या बच जाने की सूरत में मद्रसे में पकाया गया खाना महल्ले में तक़्सीम कर सकते हैं ?

जवाब वोह खाना जो मद्रसे में पकाया गया हो और बच जाए, दूसरे वक़्त त़लबा भी न खाएं, ख़राब हो जाने का अन्देशा होने की सूरत में महल्ले या आ़म मुसलमानों में तक़्सीम कर सकते हैं ।[1]

सुवाल अपनी दुकान पर या घर में पीने के लिये मस्जिद या मद्रसे के कूलर से ठन्डा पानी भर कर ले जाना कैसा ?

जवाब नाजाइज़ है, मुअज़्ज़िन, ख़ादिम या इमाम बल्कि मुतवल्ली भी चन्दे की इन चीज़ों को ख़िलाफ़े शरीअ़त इस्ति'माल करने की इजाज़त नहीं दे सकते ।[2]

सुवाल किसी से मद्रसे का डेस्क टूट गया तो क्या हुक्म है ?

जवाब अगर इस की अपनी ग़लती से डेस्क टूटा या कोई सा नुक़्सान हुवा तो तावान देना होगा अगर अपनी ग़लती से ऐसा नहीं हुवा तो इस पर मुवाख़ज़ा नहीं ।[3]

सुवाल मद्रसे के डेस्क, दरवाज़े और दीवार वग़ैरा पर कुछ लिखना कैसा ?

जवाब मद्रसे और मस्जिद की चीज़ों पर कुजा, किसी दूसरे के मकान, दुकान, दीवार, दरवाज़े या गाड़ी और बस वग़ैरा चीज़ों पर भी बिला इजाज़ते शरई कुछ लिखना स्टीकर या इश्तिहार चस्पां करना ममनूअ़ है ।[4]

1.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 55 ।
2.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 57 ।
3.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 61 ।
4.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 61 ।

सुवाल ज़कात व फ़ित्रे का ह़ीला करने का आसान त़रीक़ा बताइये ?

जवाब किसी फ़क़ीरे शरई को या उस के वकील को माले ज़कात व फ़ित्रा का मालिक बना दिया जाए मसलन उस को नोटों की गड्डी येह कह कर दे दी कि येह आप की मिल्क है। वोह उस को हाथ में ले कर या किसी त़रह क़ब्ज़ा कर ले अब येह इस का मालिक हो गया और किसी भी काम (मसलन मस्जिद की ता'मीर वग़ैरा) में सर्फ़ कर दे। यूं ज़कात अदा होने के साथ साथ दोनों सवाब के भी ह़क़दार होंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ।(1)

सुवाल मदनी क़ाफ़िले के इख़्तिताम पर अगर मुश्तरका रक़म बच जाए तो क्या किया जाए ?

जवाब वाजिब है कि पाई पाई का ह़िसाब कर के हर एक को उस के ह़िस्से की रक़म लौटा दी जाए। हां जो मर्ज़ी से अपने ह़िस्से की रक़म किसी कारे ख़ैर में देना चाहे तो दे सकता है, बाहम मश्वरे से मसलन येह भी तै किया जा सकता है कि हम बची हुई रक़म उसी मस्जिद के चन्दे में पेश कर देते हैं।(2)

मस्जिद

सुवाल कौन सी इमारत शैत़ान से बचाव के लिये क़ल्आ़ है ?

जवाब मरवी है कि اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِيْنٌ مِّنَ الشَّيْطٰن या'नी मस्जिद शैत़ान से बचने के लिये एक मज़बूत़ क़ल्आ़ है।(3)

1.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 71।

2.....चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 92।

3 . . . مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب ماجاء فی لزوم المساجد، ۸/۲۷۱، حدیث: ۴۔

सुवाल रिज़ाए इलाही के लिये मस्जिद बनाने का क्या सवाब है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक मस्जिद बनाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।(1)

सुवाल किसी इमारत के मस्जिद होने के लिये क्या ज़रूरी है ?

जवाब मस्जिद होने के लिये येह ज़रूर है कि बनाने वाला कोई ऐसा फ़े'ल करे या ऐसी बात कहे जिस से मस्जिद होना साबित होता हो महज़ मस्जिद की सी इमारत बना देना मस्जिद होने के लिये काफ़ी नहीं।(2)

सुवाल मस्जिद बनाई और जमाअ़त की इजाज़त दे दी तो क्या येह मस्जिद होने के लिये काफ़ी है ?

जवाब मस्जिद बनाई और जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दे दी मस्जिद हो गई अगर्चे जमाअ़त में दो ही शख़्स हों मगर येह जमाअ़त अ़लल ए'लान या'नी अज़ान व इक़ामत के साथ हो।(3)

सुवाल मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में क्या हुक्म है ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों में मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया और येह कि वोह साफ़ और ख़ुश्बूदार रखी जाएं।(4)

---

1 . . . ابن ماجه، كتاب المساجد، باب من بنى لله مسجدا، ۱/ ۴۰۸، حديث: ۷۳۷-

2 . . . فتاوى خانية، كتاب الوقف، باب الرجل يجعل داره...الخ، ۲/ ۲۹۲- बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 557

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 10, 2 / 557 ।

4 . . . ابوداود، كتاب الصلاة، باب اتخاذ المساجد في الدور، ۱/ ۱۹۷، حديث: ۴۵۵-

सुवाल कौन से सहाबी मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ख़ुश्बू की धूनी देते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जुमुअ़तुल मुबारक के दिन मस्जिदे नबवी शरीफ़ علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام में ख़ुश्बू की धूनी दिया करते थे।(1)

सुवाल मुंह में बदबू हो तो क्या मस्जिद जा सकते हैं ?

जवाब जी नहीं ! मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है।(2)

सुवाल मस्जिद में दाख़िल होते ही सब से पहले क्या करना चाहिये ?

जवाब जब से (मस्जिद में) दाख़िल हो बाहर आने तक ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले। इन्तिज़ारे नमाज़ व अदाए नमाज़ के साथ ए'तिकाफ़ का भी सवाब पाएगा।(3)

सुवाल कच्चा लेहसन और कच्ची प्याज़ खा कर मस्जिद में जाना कैसा ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ हज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : मस्जिद में कच्चा लेहसन और कच्ची प्याज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक कि बू बाक़ी हो।(4)

सुवाल मस्जिद में कौन सी बदबूदार चीज़ों की मुमानअ़त है ?

जवाब (1) कच्चा लेहसन (2) कच्ची प्याज़ (3) गन्दना (येह लेहसन से मिलती जुलती तरकारी है) (4) मूली (5) कच्चा गोश्त (6) मिट्टी का तेल (7) वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो

---

1 . . . مسندابی یعلی، مسندعمربن الخطاب، ۱/۱۰۳، حدیث:۱۸۵۔

2.....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 384 मुलख़्ख़सन।

3.....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 674।

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 648।

(8) रियाह़ ख़ारिज करना (9) बदबूदार ज़ख़्म (10) कोई बदबूदार दवा लगाना।[1]

सुवाल मस्जिद में दुन्यावी बातें करने का क्या हुक्म है ?

जवाब मस्जिद में दुन्या की बातें करनी मकरूह हैं। मस्जिद में कलाम करना नेकियों को इस त़रह़ खाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खाती है, येह जाइज़ कलाम के मुतअ़ल्लिक़ है नाजाइज़ कलाम के गुनाह का क्या पूछना ?[2]

सुवाल मस्जिद के कुछ आदाब बयान करें ?

जवाब (1) मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है। (2) मस्जिद के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा हरगिज़ न फैंकें। (3) मस्जिद में झाड़ू देने में जो गर्द और कूड़ा वग़ैरा निकले वोह ऐसी जगह मत डालिये जहां बे अदबी हो। (4) मस्जिद के फ़र्श पर कोई चीज़ फैंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। (5) वुज़ू करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (6) मस्जिद में अगर छींक या खांसी आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले (7) मस्ख़रा पन वैसे ही ममनूअ़ है और मस्जिद में सख़्त नाजाइज़। (8) मस्जिद में किसी त़रफ़ पाउं न फैलाए।[3]

---

1 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی الغرس فی المسجد، ۲/۵۲۵۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 499।

3 .....नेकी की दा'वत, स. 417-420 मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न।

कस्ब और तिजारत

सुवाल सब से बेहतर कमाई कौन सी है ?

जवाब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बेहतर गिज़ा वोह है जो इन्सान अपने हाथों की कमाई से खाए, हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام भी अपनी कमाई से खाते थे ।(1)

सुवाल इस्लाम में हलाल कमाई की क्या अहम्मिय्यत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हलाल रोज़ी तलब करना फ़र्ज़ के बा'द फ़र्ज़ है ।(2)

सुवाल झूट से रिज़्क़ में क्या असर पड़ता है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वालिदैन के साथ नेक सुलूक उम्र में इज़ाफ़ा करता, झूट रिज़्क़ में कमी करता और दुआ क़ज़ा को टाल देती है ।(3)

सुवाल ताजिर को कैसा होना चाहिये ?

जवाब हुज़ूर रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक सब से पाकीज़ा कमाई उन ताजिरों की है जो बात करें तो झूट न बोलें, जब उन के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत न करें, वा'दा करें तो ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करें, जब कोई चीज़ ख़रीदें तो उस में बुराई न निकालें और जब कुछ बेचें तो उस की बेजा ता'रीफ़ न करें, जब उन पर किसी का कुछ आता हो तो देने में पसो पेश न करें और जब उन्हों ने किसी से लेना हो तो वुसूली के लिये तंगी न करें ।(4)

---

1 . . . بخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل وعملہ بیدہ، ۲/۱۱، حدیث: ۲۰۷۲۔

2 . . . شعب الایمان، الستون من شعب الایمان . . . الخ، ۶/۴۲۰، حدیث: ۸۷۴۱۔

3 . . . الکامل لابن عدی، ۶۰۰ – خالد بن اسماعیل . . . الخ، ۳/۴۷۹۔

4 . . . شعب الایمان، الرابع والثلاثون من شعب الایمان . . . الخ، ۴/۲۲۱، حدیث: ۴۸۵۴۔

सुवाल क्या कमाने के लिये भी इल्मे दीन ज़रूरी है ?

जवाब जी हां क्यूंकि ह़राम रोज़ी से वोही बच सकेगा जिसे ह़लाल व ह़राम का इल्म होगा। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म फ़रमा दिया था कि हमारे बाज़ार में वोही ख़रीदो फ़रोख़्त करें जो फ़क़ीह (या'नी इल्म वाले) हों।(1)

सुवाल किस ताजिर पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है ?

जवाब वोह ताजिर जो बहुत क़समें खा कर अपना माल बेचता है।(2)

सुवाल आ़म मुसलमानों की त़रह़ किस चीज़ का हुक्म पैग़म्बरों को भी दिया गया ?

जवाब हुज़ूर इमामुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को वोही हुक्म दिया है जो रसूलों को हुक्म दिया, इरशाद फ़रमाया :

﴿يَاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّیْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِیْمٌ ﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۵۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ पैग़म्बरो पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छा काम करो मैं तुम्हारे कामों को जानता हूं।"

और फ़रमाया : ﴿يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ﴾ (پ۲، البقرة: ۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो खाओ हमारी दी हुई सुथरी चीज़ें।"(3)

---

1 . . . ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاة علی النبی، ۲/۲۹، حدیث: ۴۸۷۔

2 . . . شعب الایمان، الرابع والثلاثون من شعب الایمان . . . الخ، ۴/۲۲۰، حدیث: ۴۸۵۳۔

3 . . . مسلم، کتاب الزکاة، باب قبول الصدقة من الکسب . . . الخ، ص۵۰۶، حدیث: ۱۰۱۵۔

सुवाल भीक मांगने से बचने वालों के लिये हदीस शरीफ़ में क्या ख़ुश ख़बरी है ?

जवाब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो कोई भीक न मांगने का ज़ामिन बन जाए मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं ।(1)

सुवाल सच्चा और अमानतदार क़ियामत में किस के साथ होगा ?

जवाब हदीसे पाक में है : सच्चा और अमानतदार ताजिर नबियों, सिद्दीक़ों और शहीदों के साथ होगा ।(2)

सुवाल अबुल बशर हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने कौन सा पेशा इख़्तियार फ़रमाया ?

जवाब हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने अव्वलन कपड़ा बुनने का काम किया(3) और बा'द में खेतीबाड़ी को इख़्तियार फ़रमाया ।(4)

सुवाल हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श क्या था ?

जवाब हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام का ज़रीअ़ए मआ़श लकड़ी का काम (बढ़ई का पेशा) था ।(5)

सुवाल हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का मुबारक पेशा क्या था ?

जवाब हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام खेतीबाड़ी किया करते थे ।(6)

---

1 . . . ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب کراھیۃ المسألۃ، ۲/۱۷۰، حدیث: ۱۶۴۳۔

2 . . . ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی التجار . . . الخ، ۳/۵، حدیث: ۱۲۱۳۔

3 . . . فردوس الأخبار، باب اللام والالف، ۲/۲۱۵، حدیث: ۵۵۲۷۔

4 . . . مستدرک حاکم، کتاب تواریخ المتقدمین . . . الخ، ذکر حرف الانبیاء علیہم السلام، ۳/۴۹۱، حدیث: ۴۲۲۱۔

5 . . . مستدرک حاکم، کتاب تواریخ المتقدمین . . . الخ، ذکر حرف الانبیاء علیہم السلام، ۳/۴۹۱، حدیث: ۴۲۲۱۔

6 . . . مستدرک حاکم، کتاب تواریخ المتقدمین . . . الخ، ذکر حرف الانبیاء علیہم السلام، ۳/۴۹۱، حدیث: ۴۲۲۱۔

क़र्ज़ और सूद

सुवाल क़र्ज़ दे कर उस पर नफ़्अ़ लेना कैसा है ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत इमाम अह्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 17, सफ़हा 713 पर फ़रमाते हैं : क़र्ज़ देने वाले को क़र्ज़ पर जो नफ़्अ़ व फ़ाएदा ह़ासिल हो वोह सब सूद और निरा ह़राम है । ह़दीस में है रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : كُلُّ قَرْضٍ جَرَّ مَنْفَعَةً فَهُوَ رِبًا क़र्ज़ से जो फ़ाएदा ह़ासिल किया जाए वोह सूद है ।(1)

सुवाल क़ुरआने करीम में सूद की मज़म्मत के ह़वाले से क्या इरशाद फ़रमाया गया है ?

जवाब क़ुरआने करीम की सूरए बक़रह की आयत 275 ता 279 में सूद की भरपूर मज़म्मत फ़रमाई गई है जिस का ख़ुलासा येह है कि सूद खाने वाले बरोज़े क़ियामत ऐसे खड़े होंगे जैसे आसेब ज़दा शख़्स सीधा खड़ा होने की बजाए गिरते पड़ते चलता है, **अल्लाह** तआला ने सूद को ह़राम किया है, सूद न छोड़ने वाला मुद्दतों दोज़ख़ में रहेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सूद को हलाक (बरकत से मह़रूम) करता है पस अगर तुम सूद नहीं छोड़ते तो **अल्लाह** तआला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लड़ाई के लिये तय्यार हो जाओ ।

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में सूद की क्या मज़म्मत बयान हुई है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि ह़ुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सूद लेने वाले, सूद देने वाले, इस की तह़रीर लिखने वाले और इस के

---

(1) . . . مسند حارث، کتاب البیوع، باب فی القرض یجر المنفعة، ۱/۵۰۰، حدیث:۴۳۷۔

गवाहों पर ला'नत फ़रमाई और फ़रमाया : येह सब (गुनाह में) बराबर हैं ।(1) और इरशाद फ़रमाया : सूद का गुनाह ऐसे सत्तर गुनाहों के बराबर है जिन में सब से कम दरजे का गुनाह येह है कि मर्द अपनी मां से बदकारी करे ।(2)

सुवाल बैंक में दुगना होने के लिये पैसा जम्अ़ करना कैसा है ?

जवाब बैंक में इस त़रह़ पैसा जम्अ़ करवाना नाजाइज़ व ह़राम है क्यूंकि इस पर जो मुनाफ़अ़ मिल रहा है येह सूद है और सूद को **अल्लाह** جَلَّ مَجْدُہٗ ने कुरआने मजीद में ह़राम क़रार दिया है ।(3)

सुवाल दुकानदार को मख़्सूस रक़म पेशगी देना और थोड़ा थोड़ा सामान ख़रीद कर पैसे कटवाते रहना कैसा है ?

जवाब इस त़रह़ रूपिया देना ममनूअ़ है कि इस क़र्ज़ से येह नफ़्अ़ हुवा कि अपने पास रहने में पैसे ज़ाएअ़ होने का एह़तिमाल था अब येह एह़तिमाल जाता रहा और क़र्ज़ से नफ़्अ़ उठाना जाइज़ नहीं ।(4)

सुवाल क्या मोबाइल कम्पनी से एडवान्स बेलेन्स लेना सूदी मुआ़मला है ?

जवाब येह हरगिज़ सूद नहीं है बल्कि एक जाइज़ त़रीक़ा है क्यूंकि येह इजारा है क़र्ज़ नहीं है क्यूंकि यहां कम्पनी से पैसे वुसूल नहीं किये जा रहे बल्कि इन की सर्विस इस्ति'माल की जा रही है । अलबत्ता इस को लोन (Loan) का नाम न दिया जाए क्यूंकि इस से येह शुबा होता है कि कम्पनी क़र्ज़ दे कर इस पर नफ़्अ़ वुसूल कर रही है ।(5)

---

1 . . . مسلم، کتاب المساقاۃ، باب لعن آکل الربا وموکلہ، ص ۸۶۲، حدیث: ۱۵۹۸۔

2 . . . معجم اوسط، ۵/۲۲۷، حدیث: ۷۱۵۱۔

3 .....दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ।

4 . . . درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۶۴۹۔

5 .....दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ।

सुवाल सूद से बचने के कोई दो इलाज बयान कीजिये ?

जवाब (1) इन्सान क़नाअ़त इख़्तियार करे, इस तरह वोह माल की हिर्स से बचेगा और हराम ज़राएअ़ इख़्तियार नहीं करेगा। (2) हर दम मौत को याद रखा जाए, जब येह सोच बन जाएगी कि मरना है और मौत का कोई भरोसा नहीं कब आ जाए तो हराम रोज़ी की तरफ़ बढ़ने से रुकना नसीब हो जाएगा (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)।[1]

सुवाल कोई चीज़ गिरवी रखवा कर क़र्ज़ लिया हो तो क्या उस चीज़ को इस्ति'माल कर सकते हैं ?

जवाब जी नहीं, उसे इस्ति'माल करना जाइज़ नहीं है।[2]

सुवाल अहादीसे करीमा में क़र्ज़ देने के क्या फ़ज़ाइल आए हैं ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर क़र्ज़ सदक़ा है।[3] और यूं ही इरशाद फ़रमाया : सदक़े का सवाब दस गुना जब कि क़र्ज़ देने का सवाब अठ्ठारह गुना है।[4]

सुवाल आ'ला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़र्ज़ की वापसी का मुतालबा करते थे न क़र्ज़ को हिबा करते इस की क्या वज्ह थी ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मेरे पन्दरह सौ रूपे लोगों पर क़र्ज़ हैं, जब क़र्ज़ दिया येह ख़याल कर लिया कि दे दे तो ख़ैर वरना तलब न करूंगा। जिन

---

1 .....हिर्स, स. 58-65 माख़ूज़न।

2 ...فتاوی ھندیة، کتاب البیوع، الباب التاسع عشر فی القرض... الخ، ۳/۲۰۴، ۲۰۳۔

3 ...معجم اوسط، ۲/۳۴۵، حدیث: ۳۴۹۸۔

4 ...ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب القرض، ۳/۱۵۴، حدیث: ۲۴۳۱۔

साहिबों ने क़र्ज़ लिया देने का नाम न लिया। (फिर फ़रमाया) जब यूं क़र्ज़ देता हूं तो हिबा क्यूं नहीं कर देता ? इस की वज्ह येह है कि हदीस शरीफ़ में इरशाद फ़रमाया : जब किसी का दूसरे पर दैन (या'नी क़र्ज़) हो और उस की मीआद गुज़र जाए तो हर रोज़ इसी क़दर रूपिये की ख़ैरात का सवाब मिलता है जितना दैन है।(1) इस सवाबे अज़ीम के लिये मैं ने क़र्ज़ दिये, हिबा न किये कि पन्दरह सौ रूपे रोज़ मैं कहां से ख़ैरात करता।(2)

सुवाल मक़रूज़ अगर तंगदस्त हो तो उसे मोहलत देने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस को येह बात पसन्द हो कि क़ियामत की सख़्तियों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे नजात बख़्शे वोह तंगदस्त को मोहलत दे या मुआफ़ कर दे।(3)

सुवाल क़र्ज़ लेते वक़्त चीज़ की क़ीमत कम थी मगर लौटाते वक़्त ज़ियादा हो जाए तो क्या अब वोही चीज़ देनी होगी या कम क़ीमत शै भी दे सकते हैं ?

जवाब क़र्ज़ की अदाएगी में चीज़ के सस्ते और मेहंगे होने का ए'तिबार नहीं होता, वोही चीज़ वापस करनी होती है। लिहाज़ा चीज़ मेहंगी हो जाए या सस्ती वोही चीज़ लौटाई जाएगी।(4)

---

1 . . . مسند امام احمد، مسند عمران بن حسین، ۷/۲۲۴، حدیث: ۱۹۹۹۷۔

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 91।

3 . . . مسلم، کتاب المساقاۃ . . . الخ، باب فضل انظار المعسر، ص ۸۴۵، حدیث: ۱۵۶۳۔

4 . . . درمختار، کتاب البیوع، باب المرابحۃ والتولیۃ، فصل فی القرض، ۷/۴۰۸۔

खाना

सुवाल किस सूरत में खाना खाना फ़र्ज़ है ?

जवाब अगर भूक का इतना ग़लबा हो कि जानता हो कि न खाने से मर जाएगा तो इतना खा लेना जिस से जान बच जाए फ़र्ज़ है और इस सूरत में अगर नहीं खाया यहां तक कि मर गया तो गुनहगार हुवा।(1)

सुवाल "पेट का कुफ़्ले मदीना" किसे कहते हैं ?

जवाब अपने पेट को ह़राम ग़िज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना "पेट का कुफ़्ले मदीना" लगाना है।(2)

सुवाल इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने तन्दुरुस्ती के लिये क्या रहनुमा उसूल बताया है ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "खाने से पहले भूक लगी होना ज़रूरी है, जो कोई खाना शुरूअ़ करते वक़्त भी भूका हो और अभी भूक बाक़ी हो और हाथ खींच ले वोह हरगिज़ त़बीब का मोह़ताज न होगा।"(3)

सुवाल क़ियामत के दिन कौन लोग भूके होंगे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या में पेट भर के खाने वाले कल आख़िरत में भूके होंगे।(4)

---

1 ...درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ۹/۵۵۹۔

2 .....फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 643।

3 ...احیاء العلوم، کتاب آداب الاکل، ۲/۵۔

4 ...معجم کبیر، ۱۱/۲۱۳، حدیث:۱۱۶۹۳۔

सुवाल पेट भर कर खाना किस सूरत में मुस्तहब है ?

जवाब इस लिये सैर हो कर खाना कि नवाफ़िल कसरत से पढ़ सकेगा और पढ़ने पढ़ाने में कमज़ोरी पैदा न होगी, अच्छी तरह इस काम को अन्जाम दे सकेगा येह मन्दूब है।(1)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना कितनी बार खाना खाते ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर सुब्ह को खाना खा लेते तो रात को न खाते और अगर रात को खाना खाते तो सुब्ह को तनावुल न फ़रमाते।(2)

सुवाल खाने से पहले और बा'द में हाथ धोने का मस्नून तरीक़ा बयान करें ?

जवाब सुन्नत येह है कि क़ब्ले तआम और बा'दे तआम दोनों हाथ गिट्टों तक धोए जाएं, बा'ज़ लोग सिर्फ़ एक हाथ या फ़क़त उंगलियां धो लेते हैं बल्कि सिर्फ़ चुटकी धोने पर किफ़ायत करते हैं इस से सुन्नत अदा नहीं होती।(3)

सुवाल सब से पहली बिदअ़त कौन सी ज़ाहिर हुई ?

जवाब हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सुल्ताने मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सब से पहली बिदअ़त(4) पेट भर कर खाने की पैदा हुई जब लोगों के पेट भर जाते हैं तो इन के नफ़्स दुन्या की तरफ़ सरकश हो जाते हैं।"(5)

---

1 ... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، ۹/۵۶۰۔

2 ... مسند الشامیین، الوضین عن عطاء بن ابی رباح، ۱/۳۸۴، حدیث: ۶۵۰۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 376 ।

4 .....इस बिदअ़त से मुराद मुबाह़ या'नी जाइज़ बिदअ़त है।

5 ... قوت القلوب، الفصل التاسع والثلاثون، ۲/۲۸۳۔

सुवाल बरतन खाना खाने वाले के लिये कब इस्तिग़्फ़ार करता है ?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो खाने के बा'द बरतन को चाट लेगा वोह बरतन उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करेगा।(1)

सुवाल बरोज़े क़ियामत किस शख़्स पर हिसाब की शिद्दत न होगी ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : उस भूके पर हिसाब की शिद्दत न होगी जिस ने (दुन्या में) फ़ाक़ा और भूक पर सब्र किया होगा।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कितने लुक़्मे खाया करते थे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सात या नव लुक़्मों से ज़ियादा खाना नहीं खाते थे।(3)

सुवाल मोमिन और काफ़िर व मुनाफ़िक़ के खाने में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : मोमिन एक आंत में खाता है और काफ़िर या मुनाफ़िक़ सात आंतों में खाता है।(4)

दा'वत और मेहमान नवाज़ी

सुवाल ह़दीसे पाक में मेहमान के इकराम की अहम्मिय्यत किस त़रह़ बयान हुई है ?

जवाब रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे

(1) ... ترمذی، کتاب الاطعمۃ، باب ماجاء فی اللقمۃ تسقط، ۳/۳۱۵، حدیث:۱۸۱۱۔

(2) ... البدور السافرۃ، ص:۲۱۲۔

(3) ... احیاء العلوم، کتاب کسر الشھوتین، ۳/۱۱۱۔

(4) ... بخاری، کتاب الاطعمۃ، باب المؤمن یأکل فی معی واحد، ۳/۵۲۶، حدیث:۵۳۹۳۔

चाहिये कि (1) वोह मेहमान का इकराम करे (2) अपने पड़ोसी को ईज़ा न दे और (3) वोह भली बात बोले या चुप रहे।(1)

सुवाल मेहमान के लिये कौन सी चार बातें ज़रूरी हैं ?

जवाब (1) जहां बिठाया जाए वहीं बैठे (2) जो कुछ इस के सामने पेश किया जाए उस पर खुश हो (3) साहिबे ख़ाना की इजाज़त के बिग़ैर वहां से न उठे और (4) जब वहां से जाए तो उस के लिये दुआ़ करे।(2)

सुवाल अगर हमारी मेहमान नवाज़ी न करने वाला हमारे हां आए तो हम क्या करें ?

जवाब एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह फ़रमाइये कि मैं एक शख़्स के यहां गया, उस ने मेरी मेहमानी नहीं की, अब वोह मेरे यहां आए तो मैं उस की मेहमानी करूं या बदला दूं ? इरशाद फ़रमाया : "बल्कि तुम उस की मेहमानी करो।"(3)

सुवाल क्या मेहमान मेज़बान के गुनाह मुआ़फ़ होने का सबब भी बनता है ?

जवाब जी हां, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साहिबे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है।(4)

---

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار... الخ، ص ۴۴، حدیث: ۷۷۔

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 394।

3 . . . ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الاحسان والعفو، ۳/۴۰۵، حدیث: ۲۰۱۳۔

4 . . . کشف الخفاء، حرف الضاد المعجمۃ، ۲/۳۳، حدیث: ۱۶۴۱۔

सुवाल मेहमान को रुख़्सत करने का सुन्नत त़रीक़ा क्या है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुन्नत येह है कि मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए।(1)

सुवाल जिस को दा'वते वलीमा दी गई उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब दा'वते वलीमा का क़बूल करना सुन्नते मुअक्कदा है जब कि वहां कोई गुनाह मसलन गाने बाजे का काम और कोई और शरई रुकावट न हो, क़बूल करने का मा'ना वहां जाना है, खाने न खाने में इख़्तियार है।(2)

सुवाल सब से बुरा खाना कौन सा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बुरा खाना वलीमे का वोह खाना है जिस में मालदार लोग बुलाए जाएं और ग़रीब मोहताज लोगों को न पूछा जाए।(3)

सुवाल दा'वते वलीमा कितने दिन हो सकती है ?

जवाब दा'वते वलीमा पहले दिन या इस के बा'द दूसरे दिन बस इन ही दो दिन तक हो सकती है। इस के बा'द की तो वोह सुन्नत नहीं बल्कि रिया व सुम्आ़ (या'नी लोगों को दिखाना सुनाना है)।(4)

---

1 . . . ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، ۴/۵۲، حدیث: ۳۳۵۸۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 655 माख़ूज़न।

3 . . . بخاری، کتاب النکاح، باب من ترک الدعوۃ . . . الخ، ۳/۴۵۵، حدیث: ۵۱۷۷۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 376।

सुवाल हज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वलीमे में क्या खिलाया गया था ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वलीमे में सत्तू और खजूरें थीं ।[1]

सुवाल बिन बुलाए दा'वत में जाने वाले के लिये क्या वईद है ?

जवाब ऐसे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान है : जो बिग़ैर बुलाए गया वोह चोर हो कर घुसा और ग़ारत गरी (या'नी लूट मार) कर के निकला ।[2]

सुवाल दा'वत में बूढ़े और जवान दोनों हों तो पहले किस के हाथ धुलाए जाएं ?

जवाब खाने से क़ब्ल जवानों के हाथ पहले धुलाए जाएं और खाने के बा'द पहले बूढ़ों के हाथ धुलाए जाएं, इस के बा'द जवानों के ।[3]

सुवाल किस सूरत में मेज़बान को मेहमानों के साथ खाने पर बैठना चाहिये ?

जवाब अगर मेहमान थोड़े हों तो मेज़बान उन के साथ खाने पर बैठ जाए कि येही तक़ाज़ाए मुरव्वत है और बहुत से मेहमान हों तो उन के साथ न बैठे बल्कि उन की ख़िदमत और खिलाने में मश्ग़ूल हो ।[4]

लिबास, अंगूठी और ज़ेवर

सुवाल कितना लिबास फ़र्ज़ है ?

जवाब इतना लिबास जिस से सत्रे औ़रत[5] हो जाए और गर्मी सर्दी की

---

1 . . . ترمذی، کتاب النکاح، باب ماجاء فی الولیمۃ، ۲/۳۴۹، حدیث:۱۰۹۷۔

2 . . . ابوداود، کتاب الاطعمۃ، باب ماجاء فی اجابۃ الدعوۃ، ۳/۳۷۹، حدیث:۳۷۴۱۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 376 ।

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 394 ।

5 .....बदन का जो हिस्सा छुपाना फ़र्ज़ है उसे छुपाने को "सत्रे औ़रत" कहते हैं, मर्द के लिये इस की मिक़्दार नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक है जब कि औ़रत के लिये सारा...........

तक्लीफ़ से बचे फ़र्ज़ है।(1)

सुवाल टख़्नों से नीचे कपड़ा लटकाने की क्या वईद है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मोह़्तशम, शफ़ीए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कपड़ा टख़्ने से नीचे हो वोह आग में है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस शख़्स की त़रफ़ नज़्रे रह़मत नहीं फ़रमाएगा।(2)

सुवाल कपड़ों में दामन और आस्तीन की लम्बाई कितनी होनी चाहिये ?

जवाब सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिन्डली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो।(3)

सुवाल नाबालिग़ लड़कों को रेशमी कपड़े पहनाने का हुक्म बयान करें ?

जवाब नाबालिग़ लड़कों को भी रेशम के कपड़े पहनाना ह़राम है और गुनाह पहनाने वाले पर है।(4)

सुवाल क्या रेशम का लिह़ाफ़ ओढ़ सकते हैं ?

जवाब रेशम का लिह़ाफ़ ओढ़ना नाजाइज़ है कि येह भी लुब्स (पहनने) में दाख़िल है।(5)

सुवाल ऊन और बालों के कपड़े सब से पहले किस ने पहने ?

......बदन छुपाना ज़रूरी है सिवाए मुंह की टिकली, दोनों हथेलियों और पाउं के तल्वों के नीज़ सर के लटकते बालों, गर्दन और कलाइयों का छुपाना भी फ़र्ज़ है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 3, 1 / 481 मुलख़्ख़सन)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 409।

2...ابوداود، کتاب اللباس، باب فی قدر موضع الازار، ۴/۸۲، حدیث:۴۰۹۳۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 409।

4.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 415।

5.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 411।

जवाब ऊन और बालों से बने कपड़े सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने पहने।[1]

सुवाल रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी का नगीना किस त़रफ़ होता था ?

जवाब हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अंगूठी का मुक़द्दस नगीना हथेली की त़रफ़ होता था।[2]

सुवाल अंगूठी किस के लिये सुन्नत है ?

जवाब जिन को मोहर करने की ह़ाजत होती है जैसे सुल्त़ान, क़ाज़ी और उ़लमा जो फ़तवा पर मोहर करते हैं।[3]

सुवाल किस रंग के लिबास को ह़दीसे पाक में बेहतर कहा गया है ?

जवाब सफ़ेद रंग के लिबास को। नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सफ़ेद कपड़े पहनो कि वोह ज़ियादा पाक व सुथरे हैं और उन्हीं में अपने मुर्दे कफ़नाओ।[4]

सुवाल मर्द को कैसी अंगूठी पहनना जाइज़ है ?

जवाब सिर्फ़ चांदी की एक अंगूठी एक नगीने वाली जाइज़ है जो वज़्न में साढ़े चार माशा से कम हो। बिग़ैर नगीने की या एक से ज़ियादा नगीने की अंगूठी अगर्चे चांदी की हो मर्द के लिये नाजाइज़ है।[5]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 416।

2 ...مسلم، کتاب اللباس، باب في خاتم الورق فصه حبشی، ص ۱۱۶۰، حدیث: ۲۰۹۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 427।

4 ...مسند احمد، حدیث سمرة بن جندب، ۷/۲۶۰، حدیث: ۲۰۱۷۴۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 426-428 मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न।

सुवाल क्या लड़कों के कान छिदवाना और इस में बाली पहनाना जाइज़ है ?

जवाब लकड़ों के कान छिदवाना और इस में बाली पहनाना नाजाइज़ है।[1]

सुवाल घुंगरू के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीस शरीफ़ में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर घुंगरू के साथ शैत़ान होता है।"[2]

ज़ीनत

सुवाल क्या छोटे लड़कों के हाथ पाउं में मेहंदी लगा सकते हैं ?

जवाब छोटे लड़कों के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना नाजाइज़ है।[3]

सुवाल क्या मर्द अपने कान छिदवा कर इस में ज़ेवर पहन सकता है ?

जवाब मर्दों का अपने कान छिदवाना और इस में ज़ेवर पहनना दोनों नाजाइज़ हैं।[4]

सुवाल औ़रतों का नाक, कान छिदवाना फ़र्ज़ है वाजिब है या सुन्नत ?

जवाब न फ़र्ज़ है न वाजिब न सुन्नत सिर्फ़ मुबाह़ (या'नी जाइज़) है। हां अच्छी निय्यत हो तो कारे सवाब है।[5]

सुवाल औ़रत को ज़ेबाइश व आराइश के लिये मिस्सी सियाह (दन्दासा) लगाना कैसा है ?

---

1 ...ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع، ۹/۶۹۳۔

2 ...ابوداود،کتاب الخاتم،باب ماجاء فی خاتم الذہب، ۴/۱۲۱، حدیث:۴۲۲۲۔

3 ...ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی اللبس، ۹/۵۹۹۔

4 ...ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع، ۹/۶۹۳۔

5 .....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 483, मुलख़्ख़सन।

जवाब मिस्सी किसी रंग की हो औ़रतों को इलाजे दन्दां (दांतों के इलाज के लिये) या शौहर के वासिते़ आराइश के लिये मुत़्लक़न जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है। सिर्फ़ ह़ालते रोज़ा में लगाना मन्अ़ है।(1)

सुवाल क्या औ़रत जूड़ा बांध सकती है ?

जवाब जी हां बांध सकती है।(2)

सुवाल औ़रत का अपने शौहर के लिये बनाव सिंगार करना कैसा ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : औ़रत का अपने शौहर के लिये गहना (ज़ेवर) पहनना, बनाव सिंगार करना बाइ़से अज्रे अ़ज़ीम और इस के ह़क़ में नमाज़े नफ़्ल से अफ़्ज़ल है।(3)

सुवाल मर्द का अपनी बीवी के लिये जमाल इख़्तियार करना कैसा ?

जवाब ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : बिलाशुबा मैं अपनी बीवी के लिये ज़ीनत इख़्तियार करता हूं जिस त़रह़ वोह मेरे लिये बनाव सिंगार करती है और मुझे येह बात पसन्द है कि मैं वोह तमाम हुक़ूक़ अच्छी त़रह़ ह़ासिल करूं जो मेरे उस पर हैं और वोह भी अपने हुक़ूक़ ह़ासिल करे जो उस के मुझ पर हैं।(4)

सुवाल क्या मर्द ज़नाना या औ़रतें मर्दाना कपड़े या जूते पहन सकते हैं ?

जवाब जी नहीं। ह़दीसे मुबारका में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों की मुशाबहत इख़्तियार करने वाले ज़नाने मर्दों और

1.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 489।
2.....फ़तावा रज़विय्या, 7 / 298 माख़ूज़न।
3.....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 126।
4...تفسیر قرطبی، پ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۲۸، ۲/۹۱۔

मर्दों की मुशाबहत इख़्तियार करने वाली मर्दानी औरतों पर ला'नत फ़रमाई है।(1)

सुवाल सुर्मा कब लगाना सुन्नत है ?

जवाब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सुन्नत येह ही है कि रात को सोते वक़्त सुर्मा लगाए। दिन में सुर्मा लगाना जुमुआ की नमाज़ के लिये, ईदैन के लिये सुन्नत है, यूंही आशूरा के दिन और रोज़ाना शब को सुन्नत है।(2)

सुवाल मर्द और औरत की ख़ुश्बू में क्या फ़र्क़ होना चाहिये ?

जवाब हदीसे मुबारका में है : मर्दाना ख़ुश्बू वोह है कि उस की ख़ुश्बू तो ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर न हो और ज़नाना ख़ुश्बू वोह है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो।(3)

सुवाल क्या मकान में जानदार की तस्वीर आवेज़ां कर सकते हैं ?

जवाब जी नहीं, मकान में जानदार की तस्वीर आवेज़ां करना नाजाइज़ है।(4)

सुवाल मीलाद शरीफ़ की ख़ुशी में नीज़ इजतिमाए मीलाद के लिये ज़ेबो ज़ीनत इख़्तियार करना कैसा है ?

जवाब जाइज़ ज़ीनत इख़्तियार करना अज़ ख़ुद जाइज़ है और अगर प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआदत की ख़ुशी और आप के मुबारक ज़िक्र की ता'ज़ीम की निय्यत से हो फिर तो इस

---

1 . . . مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۱۳۳، حدیث:۷۸۶۰۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 6 / 180।

3 . . . ترمذی، کتاب الادب، باب ماجآء فی طیب الرجال والنساء، ۴/۳۶۱، حدیث:۲۷۹۶۔

4 . . . فتاوی ہندیۃ، کتاب الکراہیۃ، الباب العشرون فی الزینۃ، ۵/۳۵۹۔

अ़मल का मुस्तह़ब होना वाज़ेह़ है ।[1] उ़लमा फ़रमाते हैं : भलाई के कामों में ख़र्च करने में कोई इसराफ़ नहीं । जिस चीज़ के ज़रीए़ सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िक्र की ता'ज़ीम मक़्सूद हो वोह हरगिज़ ममनूअ़ नहीं हो सकती ।[2]

बैठने, सोने और चलने के आदाब

सुवाल किसी के आने पर उस के बैठने के लिये जगह कुशादा करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स किसी क़ौम के पास आए और उस की ख़ुश्नूदी के लिये वोह लोग जगह में वुस्अ़त कर दें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उन को राज़ी करे ।[3]

सुवाल किस त़रह़ की छत पर सोने की मुमानअ़त है ?

जवाब ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसी छत पर सोने से मन्अ़ फ़रमाया जिस पर मुन्डेर (दीवार की आड़) न हो ।[4]

सुवाल क़ैलूला करना किस के लिये मुस्तह़ब है ?

जवाब सदरुश्शरीअ़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी

1.....फ़तावा रज़विय्या, 26 / 553 मुलख़्ख़सन ।
2.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा अव्वल, स. 174 मुलख़्ख़सन ।
3 . . . کنزالعمال، الجزءالتاسع، کتاب الصحبة، قسم الاقوال، حق المجالس والجلوس، ۵/۵۸، حدیث: ۲۵۳۷۰۔
4 . . . ترمذی، کتاب الادب، باب ۴، ۲/۳۸۸، حدیث: ۲۸۶۳۔

करते हैं, रात में नमाज़ें पढ़ते, ज़िक्रे इलाही करते हैं या कुतुब बीनी में मश्ग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान हुवा क़ैलूला से दफ़्अ़ हो जाएगा।[1]

सुवाल किस त़रह़ लेटना जहन्नमियों का त़रीक़ा है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : पेट के बल लेटना जहन्नमियों का त़रीक़ा है।[2]

सुवाल सोने का मुस्तह़ब त़रीक़ा बयान कीजिये ?

जवाब सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और कुछ देर दहनी करवट पर दहने हाथ को रुख़्सार के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर।[3]

सुवाल सोते वक़्त क्या दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيَا [4]

सुवाल जागने के बा'द क्या दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْيَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ [5]

सुवाल सुब्ह़ उठ कर किस बात का पक्का इरादा करना चाहिये ?

जवाब सुब्ह़ उठने, दुआ़ पढ़ने और यादे ख़ुदा करने के बा'द इस बात का पक्का इरादा करे कि तक़्वा व परहेज़गारी करेगा किसी को सताएगा नहीं।[6]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 435।

2 . . . ابن ماجه، کتاب الادب، باب النهی عن الاضطجاع علی الوجه، ۴/۲۱۴، حدیث: ۳۷۲۴۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436।

4 . . . بخاری، کتاب الدعوات، باب وضع ید الیمنی تحت الخد الایمن، ۴/۱۹۲، حدیث: ۶۳۱۴۔

5 . . . ابوداود، کتاب الدعا، باب مایقول عند النوم، ۴/۴۰۵، حدیث: ۵۰۴۹۔

6 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436 मुलख़्ख़सन।

सुवाल कौन कौन से औक़ात में सोना मकरूह है ?

जवाब दिन के इब्तिदाई हिस्से में सोना या मग़रिब और इशा के दरमियान सोना मकरूह है ।[1]

सुवाल अ़स्र के बा'द सोने वाले को ह़दीसे पाक में क्या तम्बीह की गई है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल चली जाए तो वोह अपने आप को ही मलामत करे ।[2]

सुवाल क्या नमाज़े इशा के बा'द बातें कर सकते हैं ?

जवाब बा'द नमाज़े इशा इल्मी गुफ़्त्गू, मस्अला पूछना या जवाब देना या मस्अले की तह़क़ीक़ व तफ़्तीश करना ऐसी गुफ़्त्गू सोने से अफ़्ज़ल है जब कि झूटे क़िस्से कहानी कहना, मस्ख़रा पन और हंसी मज़ाक़ की बातें मकरूह हैं अलबत्ता मियां बीवी का बाहम या मेहमान से उन्सिय्यत के लिये कलाम करना जाइज़ है इस क़िस्म की बातें करे तो आख़िर में ज़िक्रे इलाही करे और तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार पर कलाम का ख़ातिमा होना चाहिये ।[3]

सुवाल राह चलने के आदाब बयान कीजिये ?

जवाब राह चलने में तमाम तर उमूर को मल्ह़ूज़ रखना होता है, बीच राह में चलने से बचना चाहिये, परेशान नज़री (इधर उधर देखने) से बचते हुवे, निगाहें नीची किये पुर वक़ार त़रीक़े से चलना चाहिये, नीज़ रास्ते में ख़िलाफ़े तहज़ीब और ना पसन्दीदा काम करने से भी बचना चाहिये ।[4]

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436 ।

2...مسند ابی یعلی، مسند عائشة رضی اللہ عنہا، ۴/۲۷۸، حدیث: ۴۸۹۷۔

3.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 436 मुलख़्ख़सन ।

4.....163 मदनी फूल, स. 6 मुलख़्ख़सन ।

सलाम और मुसाफ़ह़ा

सुवाल वोह कौन सा अ़मल है जिस से मुसलमानों में बाहमी मह़ब्बत पैदा होती है ?

जवाब वोह सलाम है। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि जब तुम उसे करो तो आपस में मह़ब्बत करने लगो ! वोह येह है कि आपस में सलाम फैलाओ।(1)

सुवाल सलाम करने में क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं उस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी हि़फ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।(2)

सुवाल क्या सलाम उसी मुसलमान को करे जिसे पहचानता है ?

जवाब नहीं ! बल्कि हर मुसलमान को सलाम करे चाहे पहचानता हो या न पहचानता हो।(3)

सुवाल सलाम के जवाब में ताख़ीर करना कैसा ?

जवाब सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है, बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनहगार होगा, जवाब के साथ साथ तौबा भी करनी होगी सिर्फ़ जवाब से गुनाह मुआ़फ़ न होगा।(4)

---

1 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان أنه لا یدخل الجنة الا المؤمنون . . . الخ، ص ۴۷، حدیث: ۹۳۔

2 . . . درمختار ورد المحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل في البیع، ۹ / ۶۸۲۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 16, 3 / 459।

4 . . . درمختار ورد المحتار، کتاب الحظر والإباحة، فصل في البیع، ۹ / ۶۸۳۔

सुवाल : क्या ख़त में लिखे सलाम का जवाब भी वाजिब है और वोह किस त़रह दिया जाए ?

जवाब : ख़त में लिखे हुवे सलाम का भी जवाब देना वाजिब है और इस के जवाब की दो सूरतें हैं। एक येह कि ज़बान से जवाब दे, दूसरी सूरत येह है कि सलाम का जवाब लिख कर भेजे मगर चूंकि सलाम का जवाब फ़ौरन देना वाजिब है और ख़त का जवाब फ़ौरन ही नहीं लिखा जाता उमूमन कुछ ताख़ीर हो जाती है लिहाज़ा ज़बान से जवाब फ़ौरन दे दे ताकि ताख़ीर का गुनाह न हो।(1)

सुवाल : कौन से औक़ात में सलाम करना सुन्नत है ?

जवाब : हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : तीन वक़्त सलाम करना सुन्नत है : घर में आने की इजाज़त चाहते वक़्त, मुलाक़ात के वक़्त और रुख़्सत के वक़्त।(2)

सुवाल : अगर ख़ाली घर में जाना हो तो किस त़रह सलाम करना चाहिये ?

जवाब : ह़ज़रते अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि अगर घर में कोई न हो तो यूं कहो :

اَلسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْنَ

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : येह इस लिये कि मुसलमानों के घरों में हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ मुबारक तशरीफ़ फ़रमा होती है।(3)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हि़स्सा, 16, 3 / 463 मुलख़्ख़सन।

2 .....मिरआतुल मनाजीह़ 2 / 404।

3 ...شفا، فصل فی المواطن التی یستحب...الخ، الجزء الثانی، ص ٦٧۔

شرح الشفاء، فصل فی المواطن التی یستحب...الخ، ۲/۱۱۸۔

सुवाल सलाम में اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه कहने पर कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब अ़ता फ़रमाया। जब वोह शख़्स बैठ गया तो इरशाद फ़रमाया : "दस नेकियां हैं।" फिर दूसरा शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे भी सलाम का जवाब दिया। वोह बैठ गया तो इरशाद फ़रमाया : "बीस नेकियां हैं।" फिर एक और शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه फिर वोह बैठ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीस नेकियां हैं।"[1]

सुवाल उंगली या हथेली के इशारे से सलाम करना कैसा है ?

जवाब उंगली या हथेली से सलाम करना ममनूअ़ है। ह़दीस में फ़रमाया कि उंगलियों से सलाम करना यहूदियों का और हथेलियों के इशारे से सलाम करना नसारा का त़रीक़ा है।[2]

सुवाल मुसाफ़ह़ा का सुन्नत त़रीक़ा क्या है ?

जवाब इस त़रह़ मुसाफ़ह़ा करना सुन्नत है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ह़ा किया जाए और दोनों के हाथों के माबैन कपड़ा वग़ैरा कोई चीज़ ह़ाइल न हो।[3]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب کیف السلام، ۴/۴۴۹، حدیث: ۵۱۹۵۔

2 . . . ترمذی، کتاب الاستئذان والآداب، باب ماجاء فی کراھیۃ اشارۃ الید بالسلام، ۴/۳۱۹، حدیث: ۲۷۰۴۔

3 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، باب الاستبراء وغیرہ، ۹/۶۲۹۔

सुवाल मुलाक़ात के वक़्त किया जाने वाला कौन सा अ़मल मग़्फ़िरत का सबब बनता है ?

जवाब **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते वक़्त मुसाफ़ह़ा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।"[1]

सुवाल एक मोमिन के दूसरे मोमिन पर कितने हुक़ूक़ हैं ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर छे ह़क़ हैं : (1) जब वोह बीमार हो तो इ़यादत करे (2) जब वोह मर जाए तो उस के जनाज़े में ह़ाज़िर हो (3) जब वोह दा'वत दे तो क़बूल करे (4) जब उस से मिले तो सलाम करे (5) जब वोह छींके तो जवाब दे और (6) ह़ाज़िर व ग़ाइब उस की ख़ैर ख़्वाही करे।[2]

छींक और जमाही

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में छींक की क्या फ़ज़ीलत और जमाही की क्या मज़म्मत आई है ?

जवाब ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला को छींक पसन्द और जमाही ना पसन्द है।[3]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی المصافحۃ، ۴/۴۵۳، حدیث: ۵۲۱۲۔

2 . . . نسائی، کتاب الجنائز، باب النھی عن سب الاموات، ص۳۲۸، حدیث: ۱۹۳۵۔

3 . . . بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع یدہ علی فیہ، ۴/۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶۔

सुवाल दुन्या में सब से पहले छींक किस को आई ?

जवाब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा होते ही सब से पहले छींक आई ।(1)

सुवाल छींक आने के बा'द हम्द करने का क्या हुक्म है ?

जवाब छींक आने के बा'द हम्द करना सुन्नत है ।(2)

सुवाल छींक का जवाब देने का क्या हुक्म है ?

जवाब छींक का जवाब देना वाजिब है जब कि छींकने वाला اَلْحَمْدُلِلّٰه कहे और इस का जवाब भी फ़ौरन देना होता है और इतनी आवाज़ में जवाब दे कि वोह सुन ले वाजिब है जिस त़रह सलाम के जवाब में है यहां भी है ।(3)

सुवाल एक मजलिस में अगर कई बार छींक आ जाए तो क्या हर मरतबा जवाब देना होता है ?

जवाब एक मजलिस में अगर किसी को कई बार छींक आए तो सिर्फ़ तीन मरतबा जवाब देना है, एक मरतबा वाजिब, दोबारा मुस्तह़ब है, इस के बा'द इख़्तियार है जवाब दे या न दे ।(4)

सुवाल छींकने वाले से पहले सुनने वाला اَلْحَمْدُلِلّٰه कह दे तो क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे पाक में आया है कि ऐसा शख़्स दांतों और कानों के दर्द और बद हज़्मी से मह़फ़ूज़ रहेगा और एक ह़दीस में है कि कमर के दर्द से मह़फ़ूज़ रहेगा ।(5)

---

1 ...ترمذی، ابواب تفسیر القرآن، باب: ١، ٥/ ٢٤١، حدیث: ٣٣٧٩۔

2 ...حاشیۃ طحطاوی، مقدمۃ، ص٧، मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 476-ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل في البيع، ٩/ ٦٨٣

4 ...فتاوی بزازیة، کتاب الکراهية، نوع في السلام، ٦/ ٣٥٥۔

5 ...معجم اوسط، ٦/ ٢٢٤، حدیث: ٨١٤١۔ المقاصد الحسنة، حرف الميم، ص ٤٢٠، حدیث: ١١٣٠۔

सुवाल छींकते वक़्त क्या करना चाहिये ?

जवाब छींक के वक़्त सर झुका ले और मुंह छुपा ले और आवाज़ को पस्त करे, छींक की आवाज़ बुलन्द करना हमाक़त है।(1)

सुवाल जहां एक से ज़ाइद अफ़राद हों तो कितने लोग छींक का जवाब दें ?

जवाब छींक का जवाब बा'ज़ हाज़िरीन ने दे दिया तो सब की त़रफ़ से हो गया और बेहतर येह है कि सब हाज़िरीन जवाब दें।(2)

सुवाल जमाही शैत़ान को क्यूं पसन्द है ?

जवाब क्यूंकि जमाही की वज्ह से इ़बादात में चुस्ती नहीं रहती और ग़फ़्लत आती है इसी लिये शैत़ान को येह पसन्द है।(3)

सुवाल जब किसी को जमाही आए तो उसे क्या करना चाहिये ?

जवाब मुंह पर हाथ रख लेना चाहिये, ह़दीसे पाक में है : जब किसी को जमाही आए तो मुंह पर हाथ रख ले क्यूंकि शैत़ान मुंह में घुस जाता है।(4)

सुवाल जमाही को रोकने का त़रीक़ा बयान कीजिये ?

जवाब जमाही आए तो मुंह बन्द किये रहे और न रुके तो होंट दांत के नीचे दबाए। जमाही रोकने का मुजर्रब त़रीक़ा येह है कि दिल में ख़याल करे कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाही नहीं आती थी।(5)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 478।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 477।

3 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الآداب، باب العطاس والتثاؤب، ۸/۴۹۴، تحت الحدیث: ۴۷۳۲۔

4 ...مسلم، کتاب الزھد، باب تشمیت العاطس...الخ، ص ۱۵۹۷، حدیث: ۲۹۹۵۔

5 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 538।

सुवाल अगर नमाज़ में किसी को जमाही आए और हाथ के ज़रीए रोके बिग़ैर कोई चारए कार न रहे तो क्या करे ?

जवाब क़ियाम में दाहने हाथ की पुश्त से मुंह ढांक ले और ग़ैरे क़ियाम में बाएं की पुश्त से या दोनों में आस्तीन से।(1)

ज़ियारते क़ुबूर

सुवाल अ़ज़ीज़ो अक़ारिब की क़ब्रों पर जाने के लिये बेहतर अय्याम कौन से हैं ?

जवाब जुमुआ़ या जुमा'रात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में अफ़्ज़ल रोज़े जुमुआ़ वक़्ते सुब्ह है।(2)

सुवाल क़ब्र वालों को सलाम करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह कर के इस त़रह़ सलाम कहिये :
اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ۔(3)

सुवाल अगर क़ब्रिस्तान का रास्ता क़ब्रें मिस्मार कर के बनाया गया हो तो उस पर चलना कैसा ?

जवाब (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है(4) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना नाजाइज़ व गुनाह है।(5)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 538 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 4, 1 / 848 ।

3 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب مایقول الرجل اذا دخل المقابر، ۲/۳۲۹، حدیث:۱۰۵۵۔

4 ...ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب: القول مرجح علی الفعل، ۱/۲۱۲۔

5 ...درمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنائز، ۳/۱۸۳۔

सुवाल घर से फ़ातिहा पढ़ कर ईसाल करने में ज़ियादा सवाब है या क़ब्रिस्तान जा कर ?

जवाब क़ब्रिस्तान में जा के पढ़ने में ज़ियादा सवाब है कि ज़ियारते क़ुबूर भी सुन्नत है और वहां पढ़ने में अमवात (मुर्दों) का दिल भी बहलता है और जहां क़ुरआने मजीद पढ़ा जाए रह़मते इलाही उतरती है।(1)

सुवाल क़ब्र को सजदा करने का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब क़ब्र को सजदए ता'ज़ीमी करना ह़राम है और अगर इबादत की निय्यत हो तो कुफ़्र है।(2)

सुवाल क्या क़ब्र पर अगरबत्ती या मोमबत्ती जला सकते हैं ?

जवाब क़ब्र पर अगरबत्ती या मोमबत्ती न जलाई जाए कि येह आग है और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को तक्लीफ़ होती है। हां अगर ह़ाज़िरीन को खुश्बू पहुंचाना मक़्सूद हो तो क़ब्र के पास ख़ाली जगह पर अगरबत्ती लगा सकते हैं।(3)

सुवाल मज़ार पर किस तरह ह़ाज़िरी दी जाए ?

जवाब मज़ार शरीफ़ पर क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो और चेहरे के सामने कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर खड़ा हो और दरमियानी आवाज़ में सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاسَيِّدِىْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर दुरूदे ग़ौसिया(4) तीन बार, सूरए फ़ातिहा व आयतुल कुरसी

---

(1).....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 609 ।

(2).....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 423 माख़ूज़न ।

(3).....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 525, 482 माख़ूज़न ।

(4).....दुरूदे ग़ौसिया येह है : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَاٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

एक एक बार, सूरए इख़्लास और दुरूदे ग़ौसिया सात सात बार पढ़ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ करे कि इलाही ! इस पढ़ाई पर मुझे अपने करम के मुताबिक़ सवाब दे और इसे मेरी तरफ़ से साहिबे मज़ार को नज़्र पहुंचा, फिर अपनी जाइज़ तलब के लिये साहिबे मज़ार की रूह को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर सलाम कर के वापस आ जाए।(1)

सुवाल क्या मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी देने के इरादे से सफ़र करना जाइज़ है ?

जवाब बिल्कुल जाइज़ है क्यूंकि वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं।(2) ज़ियारते क़ुबूर का हुक्म तो ह़दीसे पाक में दिया गया है। रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम को ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया था अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो।(3) और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खुद भी हर साल शुहदाए ग़ज़्वए उहुद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते थे।(4)

सुवाल मज़ारात पर ग़लत़ काम होते हों तो क्या हाज़िरी तर्क कर दी जाए ?

जवाब अ़ल्लामा सय्यिद मुह़म्मद अमीन इब्ने आ़बिदीन शामी ने इमाम इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا के ह़वाले से लिखा है : मज़ार पर कोई मुन्किरे शरई (ना पसन्दीदा काम) हो मसलन औ़रतों से इख़्तिलात़

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 522 मुलख़्ख़सन।

2 . . . ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۳/۱۷۸۔

3 . . . مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی صلی اللہ علیہ وسلم . . . الخ، ص۴۸۶، حدیث:۹۷۷۔

4 . . . مصنف عبدالرزاق، کتاب الجنائز، باب فی زیارۃ القبور، ۳/۳۸۱، حدیث:۶۷۴۵۔

(टकराव, मेल जोल) वग़ैरा हो तो इस की वज्ह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता बल्कि उसे बुरा जाने और मुमकिन हो तो बुरी बात को ख़त्म करे।(1)

सुवाल मज़ार पर फूल डालना और मज़ार को बोसा देना कैसा है ?

जवाब क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।(2) और इमामे अहले सुन्नत आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़ार को न हाथ लगाए न बोसा दे।(3)

सुवाल क्या इस्लामी बहनें मज़ारात पर हाज़िरी दे सकती हैं ?

जवाब इस्लामी बहनें मज़ारात पर न जाएं बल्कि घर से ही ईसाले सवाब कर दिया करें। औ़रत जब घर से क़ुबूर की त़रफ़ चलने का इरादा करती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों की ला'नत में होती है और जब वापस आती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत में होती है।(4)

सुवाल दा'वते इस्लामी की "मजलिस मज़ाराते औलिया" किस मक़्सद से बनाई गई है ?

जवाब येह मजलिस ह़त्तल मक़्दूर साहि़बे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त करती है। मज़ार शरीफ़ के इह़ाते़ में (बिलखु़सूस उ़र्स के दिनों में) सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम और नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ सुन्नतें

---

1 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی زیارۃ القبور، ۳/۱۷۸۔

2 ...ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی وضع الجرید ونحو الآس علی القبور، ۳/۱۸۴، ماخوذاً۔

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 9 / 522।

4 ...غنیۃ المتملی، فصل فی الجنائز، ص ۵۹۴، ملتقطاً۔

सिखाई जाती हैं और आ़शिक़ाने रसूल को बा जमाअ़त नमाज़ की अदाएगी, दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत देने या सुनने की तरग़ीब दी जाती है।[1]

क़ुरआने करीम (फ़ज़ाइल व मा'लूमात)

सुवाल क़ुरआने पाक के कितने और कौन से मशहूर नाम हैं ?

जवाब क़ुरआने अ़ज़ीम के कसीर अस्मा हैं जो कि इस किताब की अ़ज़्मत व शरफ़ की दलील हैं, इन में से छे मशहूर अस्मा येह हैं : (1) क़ुरआन (2) बुरहान (3) फ़ुरक़ान (4) किताब (5) मुस्ह़फ़ (6) नूर।[2]

सुवाल क़ुरआने पाक की तिलावत की कोई फ़ज़ीलत बयान करें ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : जिस को क़ुरआन ने मेरे ज़िक्र और मुझ से सुवाल करने से मश्ग़ूल रखा, उसे मैं उस से बेहतर दूंगा जो मांगने वालों को देता हूं। और कलामुल्लाह की फ़ज़ीलत दूसरे कलामों पर वैसी ही है जैसी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की फ़ज़ीलत उस की मख़्लूक़ पर है।[3]

सुवाल क़ुरआन के एक ह़र्फ़ की तिलावत के बदले कितनी नेकियां मिलती हैं ?

जवाब जिस ने क़ुरआने मजीद से एक ह़र्फ़ पढ़ा उस के लिये दस नेकियां हैं।[4]

1.....मज़ाराते औलिया की ह़िकायात, स. 31, मुलख़्ख़सन।

2.....सिरातुल जिनान, 1 / 11।

3 . . . ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب:۲۵، ۴/۴۲۵، حدیث:۲۹۳۵۔

4 . . . مستدرک حاکم، کتاب فضائل القرآن، باب القرآن مأدبة الله . . . الخ، ۲/۲۵۱، حدیث:۲۰۸۴۔

सुवाल वोह कौन सा खुश नसीब है जो अपने घर के दस अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा ?

जवाब जिस ने कुरआन पढ़ा और उस को याद कर लिया, उस के ह़लाल को ह़लाल समझा और ह़राम को ह़राम जाना। उस के घरवालों में से दस शख़्सों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका था।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में किस सीने को वीरान मकान की त़रह़ क़रार दिया गया है ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के सीने में कुछ कुरआन नहीं वोह वीरान मकान की त़रह़ है।[2]

सुवाल ज़बान आसानी से न चलने के बाइ़स रुक रुक कर तक्लीफ़ के साथ कुरआने पाक की तिलावत करने वाले को कितना अज्र मिलता है ?

जवाब ऐसे शख़्स को दो गुना सवाब मिलता है।[3]

सुवाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तय्यार कर्दा मसाहिफ़ (या'नी कुरआने पाक) की ता'दाद कितनी थी ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 26, सफ़ह़ा 449 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते उ़स्मान ने सात मुस्ह़फ़ तह़रीर फ़रमाए। एक

---

1 ...ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل قارئ القرآن، ۴/۱۴۴، حدیث: ۲۹۱۴۔

2 ...ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ۱۸، ۴/۱۹، حدیث: ۲۹۲۲۔

3 ...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل الماہر بالقرآن...الخ، ص ۴۰۰، حدیث: ۷۹۸۔

मक्कए मुकर्रमा, एक शाम, एक यमन, एक बह्‌रैन, एक बसरा और एक कूफ़ा में भेज दिया जब कि एक मदीनए मुनव्वरा में रख लिया।[1]

सुवाल कुरआने करीम में कितने नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं ?

जवाब कुरआने करीम में 26 नबियों और रसूलों के नाम मौजूद हैं।[2]

सुवाल कुरआने पाक में किस वाक़िए को अह्‌सनुल क़सस सब से अच्छा बयान कहा गया ?

जवाब सूरए यूसुफ़ में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के वाक़िए को अह्‌सनुल क़सस (सब से अच्छा बयान) कहा गया।[3]

सुवाल कुरआने पाक में मुबारक दरख़्त किस दरख़्त को कहा गया है ?

जवाब ज़ैतून के दरख़्त को।[4]

सुवाल उन सुवारियों की ता'दाद और नाम बताएं जिन की सराह़त कुरआने पाक में ख़ास तौर पर मौजूद हैं ?

जवाब वोह चार हैं : (1) ऊंट[5] (2) घोड़ा (3) ख़च्चर और (4) गधा।[6]

सुवाल कुरआने करीम में किन लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अ़जीब निशानी फ़रमाया है ?

जवाब अस्ह़ाबे कह्‌फ़ को।[7]

---

1 ...اتقان فی علوم القرآن، النوع الثامن عشر، ۱/۱۸۹۔
2 ...روح البیان، پ۲۴، المؤمن، تحت الآیۃ:۷۸، ۸/۲۱۶۔
3 ...پ۱۲، یوسف:۳۔
4 ...پ۱۸، النور:۳۵۔
5 ...پ۳۰، الغاشیۃ:۱۷۔
6 ...پ۱۴، النحل:۸۔
7 ...پ۱۵، الکہف:۹۔

आयात और सूरतों की मा'लूमात

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयात सब से पहले नाज़िल हुईं ?

जवाब सब से पहले सूरतुल अ़लक़ की इब्तिदाई पांच आयात नाज़िल हुईं ।(1)

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ?

जवाब सब से आख़िर में सूरतुल बक़रह की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۸۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा ।(2)

सुवाल सूरए रह़मान में ﴿فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ﴾ कितनी मरतबा आया है ?

जवाब इकतीस (31) बार आया है ?

सुवाल किस आयत में उम्मते मुह़म्मदिय्या को सब से बेहतर उम्मत फ़रमाया गया है ?

जवाब ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ﴾ (پ۴، آل عمرٰن:۱۱۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो ।

सुवाल वोह कौन सी सूरत है जो एक ही रात में मुकम्मल नाज़िल हुई थी ?

जवाब सूरए अन्आ़म जो मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई ।(3)

---

1 . . . بخاری، کتاب التفسیر، باب سورۃ اقرأ باسم ربک الذی خلق، ۳/۳۸۴، حدیث:۴۹۵۳۔

2 . . . تفسیر خازن، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۸۱، ۱/۲۱۹۔

3 . . . تفسیر خازن، سورۃ الانعام، ۲/۲۔

सुवाल वोह कौन सी पहली सूरत है जिस का रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमाया और ह़रम शरीफ़ में मुशरिकीन के रू बरू पढ़ी ?

जवाब सूरतुन्नज्म ।[1]

सुवाल वोह कौन सी सूरत है जिस की हर आयत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम आया है ?

जवाब सूरतुल मुजादला ।

सुवाल किस सूरत को एक बार पढ़ने से दस मरतबा कुरआने पाक पढ़ने का सवाब मिलता है ?

जवाब सूरए यासीन शरीफ़ ।[2]

सुवाल किस सूरत की तिलावत करने की फ़ज़ीलत चौथाई कुरआन के बराबर है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जिस ने सूरत قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पढ़ी तो गोया कि उस ने कुरआने मजीद के चौथाई ह़िस्से की तिलावत की ।[3]

सुवाल रात के वक़्त सूरए मुल्क की तिलावत की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका का खुलासा है कि जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों, सीने, पेट या फिर उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो येह सब आ'ज़ा कहेंगे तेरे लिये हमारी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था ।[4]

---

1 . . . تفسیر قرطبی، سورۃ النجم، ۹/۲۱۔

2 . . . ترمذی، ابواب فضائل القراٰن، باب ماجاء فی فضل یٰس، ۴/۴۰۶، حدیث: ۲۸۹۶۔

3 . . . معجم صغیر، باب الالف، من اسمه احمد، ص ۲۱، الجزء الاول، حدیث: ۱۲۵۔

4 . . . مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، المانعة من عذاب القبر سورۃ الملک، ۳/۳۲۲، حدیث: ۳۸۹۲۔

सुवाल हदीसे पाक में किस सूरत को हर मरज़ के लिये शिफ़ा कहा गया है ?

जवाब सूरए फ़ातिहा, हदीसे पाक में है : सूरए फ़ातिहा हर मरज़ के लिये शिफ़ा है ।(1)

सुवाल हर बुरी चीज़ से हिफ़ाज़त के लिये कौन सी सूरतों की ता'लीम फ़रमाई गई है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुब्ह शाम तीन तीन बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد ، قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس पढ़ो ! इन की तिलावत करना तुम्हें हर बुरी चीज़ से बचाएगा ।(2)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

सुवाल हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की चार ख़ास फ़ज़ीलतें बताइये ?

जवाब (1) अल्लाह तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अपने दस्ते क़ुदरत से तख़्लीक़ फ़रमाया (2) इन में अपनी त़रफ़ की ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ रूह फूंकी (3) फ़िरिश्तों को इन के हुज़ूर सजदा करने का हुक्म दिया (4) इन्हें दुन्या की तमाम चीज़ों के नाम सिखाए ।(3)

सुवाल हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र मुबारक कितनी थी ?

जवाब हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ एक हज़ार साल थी ।(4)

---

1 ... دارمی، کتاب فضائل القران، باب فضل فاتحة الکتاب، ۲/ ۵۳۸، حدیث: ۳۳۷۰۔

2 ... نسائی، کتاب الاستعاذة، باب، ص ۸۶۲، حدیث: ۵۴۳۸۔

3 ... پ ۱۴، الحجر: ۲۹، بخاری، کتاب التفسیر، سورة البقرة، باب قول اللّٰه: وعلم ادم... الخ، ۳/ ۱۶۴، حدیث: ۴۴۷۶۔

4 ... ترمذی، کتاب التفسیر، باب المعوذتین، باب منه، ۵/ ۲۴۱، حدیث: ۳۳۷۹۔

सुवाल हज़रते इदरीस عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम क्या है ?

जवाब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम अख़्नूख़ है और कुतुबे इलाहिय्या की कसरते दर्स के बाइस आप का नाम इदरीस हुवा।(1)

सुवाल हज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कितने साल तक क़ौम को तब्लीग़ फ़रमाते रहे ?

जवाब हज़रते नूह़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को दा'वत व तब्लीग़ फ़रमाते रहे।(2)

सुवाल सर मुबारक कट जाने के बा वुजूद कौन से नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हक़ बयान करते रहे ?

जवाब हज़रते यह्या عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام।(3)

सुवाल सब से पहले ज़िरह किस नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बनाई ?

जवाब हज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने।(4)

सुवाल हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वफ़ात का किस त़रह़ पता चला ?

जवाब आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हस्बे आ़दत नमाज़ के लिये अपने अ़सा पर तक्या लगा कर खड़े हुवे और इसी ह़ालत में आप की वफ़ात हो गई। आप की वफ़ात के पूरे एक साल बा'द तक जिन्नात आप की वफ़ात पर मुत्तलअ़ न हुवे और अपनी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमक ने आप का अ़सा खा लिया और आप का जिस्मे मुबारक जो लाठी के सहारे से क़ाइम था ज़मीन पर आया, उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात का इ़ल्म हुवा।(5)

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम, तह़्तुल आयत : 56, स. 577, मुल्तक़तन।

2.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, हूद, तह़्तुल आयत : 26, स. 421।

3...تاریخ ابن عساکر، حرف الیاء، ذکر من اسمہ یحیی، ۸۱۳۵-یحیی بن زکریا...الخ، ۲۱۵/۶۴۔

4...تفسیر مدارک، پ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۱، ص۹۵۷۔

5...تفسیر خازن، پ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۴، ۵۱۹/۳، ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22 सबा तह़्तुल आयत : 14, स. 795

सुवाल वोह कौन से मेज़्बान हैं जो बिग़ैर मेहमान के खाना तनावुल नहीं फ़रमाते थे ?

जवाब हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ।[1]

सुवाल "ऊलुल अज़्म" रुसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कौन से हैं ?

जवाब वोह पांच हैं : (1) हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام (2) हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام (3) हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام (4) हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और (5) प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ।[2] सब में अफ़्ज़ल हमारे आक़ा व मौला सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़ा मर्तबा हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام का है, फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام, फिर हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام का, येह पांचों हज़रात बाक़ी तमाम अम्बिया व मुर्सलीन इन्सो मलक व जिन्न व जमीअ़ मख़्लूक़ाते इलाही से अफ़्ज़ल हैं ।[3]

सुवाल किस नबी عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ से उन के भाई को नुबुव्वत मिली ।

जवाब हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब मेरे घरवालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और हज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया ।[4]

---

1 ...تفسیر خازن، پ ۱۲، ہود، تحت الآیۃ: ۲۹، ۳/ ۲۱ ملخصاً۔

2 ...تفسیر طبری، پ ۲۶، الاحقاف، تحت الآیۃ: ۳۵، ۱۱/ ۳۰۳۔

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 52-54 ।

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 16, मरयम तह़्तुल आयत : 53, स. 577 ।

सुवाल वोह कौन से नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं जिन्हों ने मां की गोद में अपने नबी होने की ख़बर दी ?

जवाब हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام (1)

सुवाल हज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के कुछ मो'जिज़ात बताएं ?

जवाब मुर्दे ज़िन्दा करना, अन्धे और बरस वाले को अच्छा करना, परिन्द पैदा करना, ग़ैब की ख़बर देना वग़ैरा ।(2)

हुस्ने अख़्लाक़

सुवाल किन बातों को दुन्या व आख़िरत के बेहतर अख़्लाक़ फ़रमाया गया है ?

जवाब हदीसे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के अच्छे अख़्लाक़ न बताऊं ? सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ज़रूर बताइये । इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें महरूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो ।"(3)

सुवाल अख़्लाक़े मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ हदीस शरीफ़ में क्या आया है ?

जवाब एक मरतबा किसी ने उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के बारे में पूछा तो इरशाद फ़रमाया : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

---

1 ...پ۱٦، مریم:۳۰۔

2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तहतुल आयत : 87, स. 30 ।

3 ...شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، ٦/۲۱۲، حدیث:۸۰۰۰۔

का खुल्क़ कुरआन है।[1] क्या तुम ने कुरआन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं पढ़ा : ﴿وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ﴾ (پ۲۹، القلم:۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बेशक तुम्हारी ख़ू बू बड़ी शान की है।"[2]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ का सर चश्मा क्या है ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का फ़रमान है : رَأْسُ مَكَارِمِ الْاَخْلَاقِ الْحَيَاءُ या'नी हुस्ने अख़्लाक़ का सर चश्मा हया है।[3]

सुवाल अच्छे अख़्लाक़ गुनाहों पर क्या असर डालते हैं ?

जवाब रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़ गुनाहों को ऐसे पिघला देते हैं जैसे सूरज की ह़रारत बर्फ़ को पिघला देती है।"[4]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ वाला मोमिन किस के दरजे को पहुंच जाता है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "मोमिन अच्छे अख़्लाक़ की बदौलत दिन को रोज़ा रखने और रात को इबादत करने वाले का दर्जा पा लेता है।"[5]

सुवाल ख़ादिमों को रोज़ाना कितनी बार मुआ़फ़ कर देना चाहिये ?

जवाब बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम ख़ादिम को कितनी बार मुआ़फ़ कर दिया करें तो हुज़ूर नबिय्ये

1...या'नी हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुरआने करीम में बयान कर्दा तमाम आदाब व अह़काम और अख़्लाक़ व अच्छाइयों के पैकर थे। (النهاية في غريب الحديث والاثر، باب الخاء مع اللام، ۲/۶۷)

2...مسند احمد، مسند عائشة، ۹/۳۸۰، حديث: ۲۴۶۵۵-

3...مکارم الاخلاق لابن ابی الدنيا، باب ذکر الحياء وماجاء فيه، ص ۶۲-

4...شعب الايمان، باب في حسن الخلق، ۶/۲۴۷، حديث: ۸۰۳۶-

5...ابوداود، کتاب الادب، باب في حسن الخلق، ۴/۳۳۲، حديث: ۴۷۹۸-

पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दिन में 70 मरतबा मुआफ़ कर दिया करो (या'नी हर दिन उसे बहुत दफ़्अ़ मुआफ़ी दो)।(1)

सुवाल : क्या अख़्लाक़ के अच्छा होने के लिये कोई दुआ़ भी है ?

जवाब : जी हां, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ़ फ़रमाया करते थे : اَللّٰھُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने मेरी सूरत को अच्छा किया पस मेरे अख़्लाक़ को भी अच्छा फ़रमा।(2)

सुवाल : इन्सान को दी गई सब से बेहतरीन चीज़ क्या है ?

जवाब : बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन्सान को दी गई सब से बेहतरीन चीज़ क्या है ? इरशाद फ़रमाया : "अच्छे अख़्लाक़।"(3)

सुवाल : सब से ज़ियादा जन्नत में दाख़िल करने वाला अ़मल कौन सा है ?

जवाब : ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि सब से ज़ियादा जन्नत में दाख़िल करने वाला अ़मल तक़्वा और हुस्ने अख़्लाक़ है।(4)

सुवाल : कौन सी चार ख़ूबियां हों तो किसी दुन्यावी महरूमी का नुक़्सान नहीं पहुंचता ?

जवाब : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम में चार ख़ूबियां हों तो दुन्या की किसी शै का फ़ौत होना तुम्हें

---

1 ... ابوداود، کتاب الادب، باب ماجاء فی حق المملوک، ۴/۴۳۹، حدیث: ۵۱۶۴۔

2 ... مسند احمد، مسند عبد اللہ بن مسعود، ۲/۲۲، حدیث: ۳۳۶۷۔

3 ... معجم اوسط، ۱/۱۱۷، حدیث: ۳۶۷۔

4 ... ابن ماجہ، کتاب الزہد، باب ذکر الذنوب، ۴/۴۸۹، حدیث: ۴۲۴۶۔

नुक़्सान नहीं देगा : (1) अमानत की हिफ़ाज़त (2) सच बोलना (3) हुस्ने अख़्लाक़ और (4) पाकीज़ा खाना।"[1]

सुवाल हदीसे पाक में मीज़ाने अ़मल में सब से वज़्नी अ़मल किसे कहा गया है ?

जवाब हुस्ने अख़्लाक़।[2]

सुवाल हुस्ने अख़्लाक़ का सब से ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?

जवाब एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे हुस्ने अख़्लाक़ का ज़ियादा ह़क़दार कौन है ? इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी मां।" दोबारा अ़र्ज़ की : फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारी मां।" तीसरी बार अ़र्ज़ करने पर भी येही इरशाद फ़रमाया। चौथी मरतबा अ़र्ज़ की : फिर कौन ? तो इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारा बाप, फिर क़रीब वाले का ज़ियादा ह़क़ है फिर जो उस के बा'द क़रीबी हो।"[3]

ख़ौफ़े ख़ुदा

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब क्या है ?

जवाब अल्लाह तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबरा जाए तो उसे ख़ौफ़े ख़ुदा कहते हैं।[4]

---

1 . . . مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۲/۵۹۲، حدیث: ۲۲۲۴۔

2 . . . الادب المفرد، باب حسن الخلق، ص ۱۹، رقم: ۲۷۳۔

3 . . . بخاری، کتاب الادب، باب من احق الناس بحسن الصحبة، ۴/۹۳، حدیث: ۵۹۷۱۔

4 .....ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 14۔ احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۱۹۱ ماخوذاً۔

सुवाल जो बारगाहे इलाही में खड़ा होने से डरे उस के लिये क्या इन्आम है ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ﴾ (پ۲۷، الرحمن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।

सुवाल हिक्मत का सर चश्मा क्या है ?

जवाब हदीसे पाक में है : "हिक्मत का सर चश्मा ख़ौफ़े ख़ुदा है।"(1)

सुवाल ख़ौफ़ का कम से कम दर्जा कौन सा है ?

जवाब ख़ौफ़ का कम से कम दर्जा जिस का असर आ'माल में ज़ाहिर हो येह है कि बन्दा उन तमाम कामों से बाज़ आ जाए जो शरअ़न ममनूअ़ हैं।(2)

सुवाल सब से कामिल अ़क़्ल वाला कौन है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से कामिल अ़क़्लमन्द वोह है जो सब से ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ रखने वाला हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिन चीज़ों के करने का और जिन से बचने का हुक्म दिया है उन में सब से अच्छी तरह ग़ौर करने वाला हो।"(3)

सुवाल जो दुन्या में बे ख़ौफ़ रहा आख़िरत में उस के साथ क्या होगा ?

---

(1) . . . شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، ۱/۴۷۰، حدیث:۷۴۳۔

(2) . . . احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۱۹۲۔

(3) . . . مسند حارث، کتاب الادب، باب ماجاء فی العقل، ۲/۸۰۴، حدیث:۸۲۰۔

जवाब हदीसे पाक में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के दिल में दो ख़ौफ़ और दो अम्न जम्अ़ नहीं करूंगा, अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहा तो मैं उसे क़ियामत के दिन डराऊंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से डरा तो मैं उसे क़ियामत के दिन बे ख़ौफ़ कर दूंगा।(1)

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा से रौंगटे खड़े होने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हदीसे पाक में है : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से बन्दे के रौंगटे खड़े हो जाएं तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।(2)

सुवाल वोह कौन हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब उन के सीने की गड़ गड़ाहट एक मील से सुनाई देती थी ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गिर्या व ज़ारी से सीने में होने वाली गड़ गड़ाहट एक मील के फ़ासिले से सुनाई देती।(3)

सुवाल वोह कौन हैं कि ख़ौफ़े ख़ुदा में ब कसरत रोने के सबब उन का लक़ब ही उन का नाम हो गया ?

जवाब हज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام । ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अपने गुनाहों पर नौह़ा करना (रोना)

---

1 ... زہدلابن مبارک، باب ماجاء فی الخشوع والخوف، ص ۵۰، حدیث:۱۵۷۔

2 ... شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۹۱، حدیث:۸۰۳۔

3 ... احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۲۲۴۔

ऐन इबादत है, ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़ौफ़े ख़ुदा में इतना रोते थे कि आप का लक़ब ही नूह़ हो गया वरना आप का नाम यश्कुर है।[1]

सुवाल ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोने की क्या फ़ज़ीलत बयान हुई है ?

जवाब हुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस मोमिन बन्दे की आंख से ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइस मख्खी के पर बराबर आंसू चेहरे पर बह निकले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा देता है।"[2]

सुवाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन से दो क़त़रे सब से ज़ियादा पसन्दीदा हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़ौफ़े ख़ुदा में बहने वाले आंसू का क़त़रा और राहे ख़ुदा में बहने वाले ख़ून का क़त़रा सब से ज़ियादा पसन्द है।"[3]

सुवाल क़ियामत में कौन सी चार आंखें नहीं रोएंगी ?

जवाब मरवी है कि क़ियामत में चार आंखों के सिवा तमाम आंखें रोएंगी : (1) वोह आंख जो दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोई। (2) वोह आंख जो जिहाद में ज़ख़्मी हुई। (3) वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से झुकी रही और (4) वोह आंख जो (इबादत में) रातों को जागती रही।[4]

1.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 505।

2 . . . ابن ماجه، كتاب الزہد، باب الحزن والبكاء، ۴/۴۶۷، حدیث: ۴۱۹۷۔

3 . . . ترمذی، كتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، ۳/۲۵۳، حدیث: ۱۶۷۵۔

4 . . . كنز العمال، كتاب المواعظ . . . الخ، الباب الاول، الفصل الرابع، ۸/۳۶۸، الجزء: ۱۵، حدیث: ۴۳۴۶۱۔

सिलए रेह़मी

सुवाल सिलए रेह़मी क्या है ?

जवाब सिलए रेह़म के मा'ना रिश्ते को जोड़ना है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना ।(1)

सुवाल कुरआने करीम में सिलए रेह़मी से मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद हुवा ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ﴾ (پ۴، النساء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो ।

सुवाल सिलए रेह़मी और क़त़्ए रेह़मी का शरीअ़त में क्या हुक्म है ?

जवाब सिलए रेह़मी वाजिब है और क़त़्ए रेह़म ह़राम है ।(2)

सुवाल सिलए रेह़मी करने की बा'ज़ सूरतें बयान कीजिये ?

जवाब रिश्तेदारों को हदया व तोह़फ़ा देना और अगर उन को किसी बात में तुम्हारी इआ़नत दरकार हो तो उस काम में उन की मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना बैठना, उन से बात चीत करना उन के साथ लुत़्फ़ो मेहरबानी से पेश आना ।(3)

सुवाल रिश्तेदारी तोड़ने वाले की क्या सज़ा है ?

जवाब रिश्तेदारी को काटने वाला जन्नत में (इब्तिदाअन) दाख़िल नहीं होगा ।(4)

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

3 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

4 ...بخاری، کتاب الادب، باب اثم القاطع، ۴/۹۷، حدیث:۵۹۸۴-

सुवाल हदीसे कुदसी में सिलए रेहमी के मुतअल्लिक़ क्या आया है ?

जवाब हदीसे कुदसी में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रेहम (या'नी रिश्तेदारी) से फ़रमाया : जो तुझे मिलाएगा मैं उसे मिलाऊंगा और जो तुझे काटेगा मैं उसे काटूंगा।(1)

सुवाल हदीसे पाक में सिलए रेहमी की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की उम्र दराज़ करे, उस के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा करे और उस से बुरी मौत को दूर फ़रमाए तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरे और सिलए रेहमी (रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) करे।(2)

सुवाल रिश्तेदार को सदक़ा देने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रिश्तेदार पर किये जाने वाले सदके़ का सवाब दो गुना कर दिया जाता है।(3)

सुवाल सिलए रेहमी के फ़ाएदे बयान कीजिये ?

जवाब (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल होती है (2) लोगों की खुशी का सबब है (3) मुसलमान उस शख़्स की ता'रीफ़ करते हैं (4) शैतान को उस से रन्ज पहुंचता है (5) उम्र बढ़ती है (6) रिज़्क़ में बरकत होती है और (7) आपस में महब्बत बढ़ती है।(4)

सुवाल क्या बदले के तौर पर हुस्ने सुलूक करने वाला भी सिलए रेहमी करने वाला है ?

---

1 . . . بخاری، کتاب الادب، باب من وصل وصلہ اللہ، ۴/۹۸، حدیث:۵۹۸۸۔

2 . . . مستدرک، کتاب البر والصلة، باب من سرہ ان یدفع عنہ میتة السوء...الخ، ۵/۲۲۲، حدیث:۷۳۶۲۔

3 . . . معجم کبیر، یحیی بن ایوب المصری...الخ، ۸/۲۰۷، حدیث:۷۸۳۴۔

4 .....फूफी से हाथों हाथ सुल्ह कर ली, स. 6 माख़ूज़न।

जवाब जी नहीं, ह़दीसे पाक में है : बदला देने वाला सिलए रेह़्मी करने वाला नहीं बल्कि सिलए रेह़्मी करने वाला वोह है कि जब उस से रिश्ता तोड़ा जाए तो वोह उसे जोड़े ।(1)

सुवाल क्या क़त्ए रेह़्मी करने वाला क़ौम के लिये भी नुक़्सान देह होता है ?

जवाब जी हां, मरवी है : उस क़ौम पर रह़मते इलाही का नुज़ूल नहीं होता जिस में क़ाते़ए रेह़्म हो ।(2)

सुवाल जिन रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़्मी वाजिब है वोह कौन हैं ?

जवाब बा'ज़ उलमा ने फ़रमाया : वोह ज़ू रेह़्म मह़रम हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : "इस से मुराद ज़ू रेह़्म(3) हैं, मह़रम हों या न हों ।" और ज़ाहिर येही क़ौमे दुवुम है ।(4)

सब्रो शुक्र

सुवाल सब्र किसे कहते हैं ?

जवाब नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क़्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो सब्र कहलाता है ।(5)

---

1 . . . بخاری، کتاب الادب، باب لیس الواصل بالمکافیء، ۴/۹۸، حدیث: ۵۹۹۱۔

2 . . . معجم کبیر، خطبۃ ابن مسعود ومن کلامہ، ۹/۱۵۸، حدیث: ۸۷۹۳۔

3 .....जिन का रिश्ता ब ज़रीअ़ए मां बाप के हो उसे "ज़ी रेह़्म" कहते हैं, येह तीन तरह़ के हैं : एक बाप के क़राबत दार जैसे दादा, दादी, चचा, फूफी वग़ैरा, दूसरे मां के जैसे नाना, नानी, मामूं, ख़ाला, अख़्याफ़ी भाई (या'नी जिन का बाप अलग अलग हो और मां एक हो) वग़ैरा, तीसरे दोनों के क़राबत दार जैसे ह़क़ीक़ी भाई बहन । (तफ़्सीरे नईमी, 1 / 497)

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 558 ।

5 .....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 153, 1 / 246 ।

सुवाल सब्र की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब बुन्यादी तौर पर सब्र की दो क़िस्में हैं : (1) बदनी सब्र जैसे बदनी मशक़्क़तें बरदाश्त करना और इन पर साबित क़दम रहना। (2) त़बई ख़्वाहिशात और उन के तक़ाज़ों से सब्र करना। पहली क़िस्म का सब्र जब शरीअ़त के मुवाफ़िक़ हो तो क़ाबिले ता'रीफ़ होता है लेकिन मुकम्मल तौर पर ता'रीफ़ के क़ाबिल सब्र की दूसरी क़िस्म है।[(1)]

सुवाल किस सब्र को शरीअ़त ने ह़राम क़रार दिया है ?

जवाब तक्लीफ़ देह फ़े'ल जो शरअ़न ममनूअ़ है इस पर सब्र की मुमानअ़त है। मसलन किसी शख़्स या उस के बेटे का हाथ ना ह़क़ काटा जाए तो उस शख़्स का ख़ामोश रहना और सब्र करना, यूंही कोई शख़्स शहवत से मग़लूब हो कर बुरे इरादे से उस के घरवालों की त़रफ़ बढ़े तो उस की ग़ैरत भड़क उठे लेकिन ग़ैरत का इज़्हार न करे और घरवालों के साथ जो कुछ हो रहा है उस पर सब्र करे, शरीअ़त ने इस सब्र को ह़राम क़रार दिया है।[(2)]

सुवाल किस चीज़ से सब्र करना हर आदमी पर फ़र्ज़ है ?

जवाब ममनूआ़ते शरइय्या से सब्र करना (रुकना) हर आदमी पर फ़र्ज़ है।[(3)]

सुवाल शुक्र किसे कहते हैं ?

जवाब किसी के एह़सान व ने'मत की वज्ह से ज़बान, दिल या आ'ज़ा के साथ उस की ता'ज़ीम करना शुक्र कहलाता है।[(4)]

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۸۲۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۸۵۔

3 ...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۸۵۔

4 .....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 1, 1 / 43 ।

सुवाल ने'मतों पर शुक्र अदा करने का क्या हुक्म है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर शुक्र अदा करना वाजिब है ।(1)

सुवाल शुक्र करने पर **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों से क्या वा'दा फ़रमाया है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों के शुक्र पर ने'मत में इज़ाफ़े का वा'दा फ़रमाया । इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ﴾(پ۱۳، ابراھیم:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर एह़सान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा ।

सुवाल अह्ले जन्नत अपनी गुफ़्तुगू का आग़ाज़ किस बात से करेंगे ?

जवाब हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत वालों की गुफ़्तुगू के आग़ाज़ में "शुक्र" को रखा है, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ﴾(پ۲۴، الزمر:۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया ।(2)

सुवाल ने'मत का इज़्हार करना कैसा है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत का इज़्हार इख़्लास के साथ हो तो येह भी शुक्र है । हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** को पसन्द है कि बन्दे पर उस की ने'मत ज़ाहिर हो ।(3)

सुवाल क्या ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मनाना भी शुक्र गुज़ारी है ?

1.....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 2, अल बक़रह, तह़तुल आयत : 172 ।

2...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۹۹۔

3...ترمذی، کتاب الادب، ۴/۳۷۴، حدیث:۲۸۲۸۔

जवाब जी हां, सदरुल अफ़ाज़िल नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : ईदे मीलाद मनाना जाइज़ है क्यूंकि येह **अल्लाह** तआ़ला की सब से बड़ी ने'मत की यादगार व शुक्र गुज़ारी है।(1)

सुवाल बन्दे को कब "शुक्र करने वाला" कहा जाएगा ?

जवाब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का इस्ति'माल फ़रमां बरदारी में करे तो शुक्र करने वाला होगा क्यूंकि अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी के मुवाफ़िक़ काम किया और अगर उस की नाफ़रमानी में इस्ति'माल करे तो नाशुक्रा कहलाएगा।(2)

सुवाल ह़दीसे पाक में खा कर शुक्र अदा करने वाले के लिये क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : खा कर शुक्र अदा करने वाला सब्र करने वाले रोज़ादार की त़रह़ है।(3)

तौबा व इस्तिग़फ़ार

सुवाल तौबा किस चीज़ का नाम है ?

जवाब तौबा गुनाहों से **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में रुजूअ़ का नाम है।(4)

सुवाल तौबा का क्या हुक्म है ?

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 6, अल माइदह, तह़्तुल आयत : 3, स. 208 माख़ूज़न।

2 ...احیاء العلوم، کتاب الصبر والشکر، ۴/۱۰۹۔

3 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب:۴۳، ۴/۲۱۹، حدیث:۲۴۹۴۔

4 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/۳۔

जवाब जूंही गुनाह सादिर हो फ़ौरन तौबा कर लेना वाजिब है ख़्वाह सग़ीरा गुनाह ही क्यूं न हो ।(1)

सुवाल कुफ़्र से तौबा कब तक क़बूल है ?

जवाब जब तक रूह़ गले तक न आ जाए क़बूल है ।(2)

सुवाल तौबा के अरकान कितने हैं ? उन की वज़ाह़त कीजिये ?

जवाब तौबा के तीन रुक्न हैं : (1) ए'तिराफ़े जुर्म (2) नदामत (3) अ़ज़्मे तर्क (या'नी उस गुनाह को तर्क कर देने का पक्का इरादा) अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी (या'नी नुक़्सान का बदला) भी लाज़िम मसलन तारिकुस्सलात (या'नी बे नमाज़ी) के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है ।(3)

सुवाल तौबा में ताख़ीर का क्या नुक़्सान है ?

जवाब आदमी गुनाह को मुक़द्दम करता है और तौबा को मुअख़्ख़र, येही कहता रहता है : अब तौबा करूंगा, अब अ़मल करूंगा, यहां तक कि मौत आ जाती है और वोह अपनी बदियों में मुब्तला होता है ।(4)

सुवाल ह़ज़रते लुक़्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बेटे को तौबा के मुतअ़ल्लिक़ क्या नसीह़त फ़रमाई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने अपने बेटे से फ़रमाया : ऐ जाने पिदर ! तौबा में ताख़ीर न करना क्यूंकि मौत अचानक आ

---

1 ...شرح نووی، جز:۱۷، ۹/۵۹۔

2 ...ابن ماجه، ۴/۴۹۲، حدیث:۴۲۵۳۔ مرقاۃ المفاتیح، ۵/۱۷۴، تحت الحدیث:۲۳۴۳۔

3 .....ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 299 । ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 37, स. 16 ।

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 29, अल क़ियामह, तह़्तुल आयत : 5, स. 1070 ।

जाती है जो तौबा की त़रफ़ सबक़त नहीं करता और आज कल पर टालता रहा वोह बड़े ख़त़रात में मुब्तला होगा।(1)

सुवाल तौबा किस पर लाज़िम है ?

जवाब तौबा हर फ़र्दे बशर पर लाज़िम है।(2)

सुवाल हर फ़र्दे बशर को तौबा का हुक्म क्यूं है ?

जवाब क्यूंकि कोई आदमी क़ुसूर से ख़ाली नहीं, जब आदमी आ'ज़ा के गुनाह से मह़फ़ूज़ रहे तो दिल के इरादे से नहीं बचता, अगर दिल में भी इरादा न हो तो वस्वसए शैत़ान से नहीं बच पाता कि वोह ख़यालात दिल में डालता रहता है जिन से यादे इलाही में ग़फ़्लत होती है वग़ैरा वग़ैरा येह सब नुक़्सान ही हैं, अस्ल नुक़्सान किसी त़रीक़े से हो हर एक में मौजूद है, अलबत्ता मिक़्दारे नुक़्सान में फ़र्क़ है।(3)

सुवाल बा बरकत जगहों में जा कर तौबा करना कैसा है ?

जवाब मक़ामाते मुतबर्रका जो रह़मते इलाही के मूरिद (उतरने की जगह) हों वहां तौबा करना और त़ाअ़त बजा लाना समराते नेक (अच्छा नतीजा) और सुरअ़ते क़बूल (जल्दी क़बूल होने) का सबब होता है।(4)

सुवाल क्या तौबा से तमाम छोटे बड़े गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं ?

जवाब जी हां ! गुनाह ख़्वाह सग़ीरा हों या कबीरा, जब बन्दा इन से तौबा करता है तो अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन सब को मुआ़फ़ फ़रमाता है।(5)

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/ ۱۵۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/ ۱۱-۱۲۔

3 ...احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، ۴/ ۱۲۔

4 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 58, स. 21 ।

5 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 9, अल आ'राफ़, तह़्तुल आयत : 153, स. 319 ।

सुवाल क्या तौबा व इस्तिग़फ़ार से उ़म्र बढ़ती और रिज़्क़ वसीअ़ होता है ?

जवाब जी हां ! इख़्लास के साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार करना दराज़िये उ़म्र (लम्बी ज़िन्दगी) व कशाइशे रिज़्क़ (रिज़्क़ में वुस्अ़त) के लिये बेहतर अ़मल है ।(1)

सुवाल सच्ची तौबा की अ़लामत क्या है ?

जवाब सच्ची तौबा वोह है जिस का असर तौबा करने वाले के आ'माल में ज़ाहिर हो और उस की ज़िन्दगी ताअ़तों और इबादतों से मा'मूर हो जाए और वोह गुनाहों से मुज्तनिब (बचा) रहे ।(2)

इ़ल्म के फ़ज़ाइल

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में इ़ल्म की क्या अहम्मिय्यत बयान हुई है ?

जवाब ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इ़ल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ।(3)

सुवाल हर मुसलमान पर कितना इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है ?

जवाब हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है । इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले ह़लाल व ह़राम भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ मसाइले इ़ल्मे क़ल्ब या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बात़िनी फ़राइज़) मसलन आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को ह़ासिल

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 11, हूद, स. 415, तह़्तुल आयत : 3 ।
2 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 28, अत्तह़रीम, स. 1038, तह़्तुल आयत : 8 ।
3 ...ابن ماجہ، کتاب السنة، باب فضل العلماء والحث علی طلب العلم، ۱/ ۱۴۶، حدیث: ۲۲۴۔

करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।(1)

सुवाल इल्म ह़ासिल करने की बेहतरीन उ़म्र क्या है ?

जवाब इल्म ह़ासिल करने की बेहतरीन उ़म्र जवानी है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला किसी नबी को नहीं भेजता मगर इस ह़ाल में कि वोह जवान होता है और किसी को जो इल्म दिया जाता है उस के लिये बेहतर ज़माना येह है कि वोह जवान हो।(2)

सुवाल इल्म की त़लब में निकलने वाले की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो इल्म की तलाश में निकला वोह अपने लौटने तक राहे खुदा में है।(3)

सुवाल अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की मीरास क्या है और उन के वारिस कौन हैं ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : बेशक उ़लमा ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के वारिस हैं और ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام दिरहम व दीनार का नहीं इल्म का वारिस बनाते हैं तो जिस ने इसे लिया उस ने बहुत बड़ा ह़िस्सा पा लिया।(4)

1.....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 624 मुलख़्ख़सन।

2 . . . الفقیہ والمتفقہ، باب التفقہ فی الحداثۃ . . . الخ، ۲/ ۱۷۷، رقم: ۸۱۴۔

3 . . . ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، ۴/ ۲۹۴، حدیث: ۲۶۵۶۔

4 . . . ابوداود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، ۳/ ۴۴۴، حدیث: ۳۶۴۱۔

सुवाल आ़लिमे दीन की तौहीन करने का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब अगर आ़लिम को इस लिये बुरा कहता है कि वोह आ़लिम है जब तो सरीह़ काफ़िर है और अगर ब वज्हे इल्म उस की ता'ज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी ख़ुसूमत के बाइ़स बुरा कहता है गाली देता तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है अगर बे सबब रन्ज रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब ख़बीसुल बात़िन है और इस के कुफ़्र का अन्देशा है।(1)

सुवाल ह़दीसे पाक में आ़लिम की गुस्ताख़ी पर क्या वईद आई है ?

जवाब हुज़ूर मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन आदमियों की तह़क़ीर नहीं करता मगर मुनाफ़िक़ : एक वोह जिसे इस्लाम में बुढ़ापा आया, दूसरा इल्म वाला और तीसरा आ़दिल बादशाहे इस्लाम।(2)

सुवाल किस की ता'ज़ीम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बूढ़े मुसलमान, कु़रआन में तजावुज़ न करने वाले आ़लिम और इन्साफ़ करने वाले बादशाहे इस्लाम की ता'ज़ीम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम का एक हिस्सा है।(3)

सुवाल किस इल्म की आरज़ू करनी चाहिये ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इल्मे नाफ़ेअ़ की आरज़ू करो और बे फ़ाएदा इल्म से पनाह मांगो।(4)

1.....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 129।

2 . . . معجم كبير، عبيد الله بن زحر . . . الخ، ٨/٢٠٢، حديث: ٧٨١٩۔

3 . . . ابوداود، كتاب الادب، باب في تنزيل الناس منازلهم، ٤/٣٤٤، حديث: ٤٨٤٣۔

4 . . . ابن ماجه، كتاب الدعاء، باب ما تعوذ منه رسول الله، ٤/٢٧٠، حديث: ٣٨٤٣۔

सुवाल आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत के बारे में कोई रिवायत बयान करें ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना शख़्स पर है ।(1)

सुवाल कौन सा इल्म मरने के बा'द फ़ाएदा देता है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी मर जाता है तो उस के अ़मल का सिलसिला मुन्क़ते़अ़ हो जाता है लेकिन तीन अ़मल मुन्क़ते़अ़ नहीं होते सदक़ए जारिया, इल्मे नाफ़ेअ़ और नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करती है ।(2)

सुवाल आ़लिम की ज़ियारत करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़लिम की ज़ियारत करना, उस के पास बैठना, उस से बातें करना और उस के साथ खाना इबादत है ।(3)

वालिदैन और इन के हुक़ूक़

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में वालिदैन से हुस्ने सुलूक की अहम्मिय्यत क्या बयान हुई है ?

जवाब मरवी है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वालिदैन का औलाद पर क्या ह़क़ है ? हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة، ۴/۳۱۳، حدیث: ۲۶۹۴۔

2 ...مسلم، کتاب الوصیه، باب مایلحق الانسان...الخ، ص ۸۸۶، حدیث: ۱۶۳۱۔

3 ...فردوس الاخبار، ۲/۳۷۵، حدیث: ۷۱۱۹۔

दोनों तेरी जन्नत व दोज़ख़ हैं ।(1) या'नी उन को राज़ी रखने से जन्नत मिलेगी और नाराज़ रखने से दोज़ख़ के मुस्तहिक़ होगे ।(2)

सुवाल बाप की नाफ़रमानी करने की क्या वईद है ?

जवाब बाप की नाफ़रमानी करना ऐसा है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करना । ह़दीसे पाक में है : مَعْصِيَةُ اللّٰهِ مَعْصِيَةُ الْوَالِدِ या'नी बाप की नाफ़रमानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी है ।"(3)

सुवाल औलाद पर मां बाप में से किस का हक़ ज़ियादा है ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बाप का हक़ निहायत अ़ज़ीम है और मां का हक़ इस से भी अ़ज़ीम । मां बाप के हक़ के ह़वाले से उ़लमाए किराम ने यूं तक़्सीम बयान फ़रमाई है कि "ख़िदमत में मां को तरजीह़ ह़ासिल है और ता'ज़ीम में बाप को ।"(4)

सुवाल मां बाप में अगर झगड़ा हो तो औलाद किस का साथ दे ?

जवाब मां बाप में अगर लड़ाई हो तो न मां का साथ दे न बाप का, इन दोनों में से जो मा'सियत (या'नी गुनाह व ख़त़ा) पर हो उसे समझाए अगर वोह मान लें तो ठीक वरना सुकूत (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार) करे और इन के लिये दुआ़ करे ।(5)

सुवाल वालिदैन के विसाल के बा'द औलाद पर उन के क्या हुक़ूक़ हैं ?

---

1 ...ابن ماجه، کتاب الادب، باب بر الوالدین، ۴/۱۸۶، حدیث:۳۶۶۲۔
2 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 553 ।
3 ...معجم اوسط، من اسمه احمد، ۱/۶۱۴، حدیث:۲۲۵۵۔
4 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 387-390, माख़ूज़न ।
5 ...ردالمحتار، کتاب الحدود، مطلب فی تعزیر المتهم، ۶/۱۲۵۔

जवाब (1) सब से पहला हक़ उन का गुस्ल व कफ़न और नमाज़े जनाज़ा व दफ़्न है (2) उन के लिये हमेशा दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करना (3) सदक़ा व ख़ैरात व आ'माले सालिहा का सवाब उन्हें पहुंचाते रहना (4) उन पर किसी का क़र्ज़ हो तो अदा में इन्तिहाई जल्दी करना और इस काम को अपने दीनो दुन्या के लिये बाइसे सआ़दत समझना (5) उन का कोई फ़र्ज़ रह गया हो तो ब क़दरे इस्तिताअ़त उस की अदाएगी की कोशिश करना (6) उन की त़रफ़ से की गई ऐसी वसिय्यत जो शरअ़न जाइज़ हो और उसे पूरा करना उस पर लाज़िम न हो अगर्चे उस पर गिरां हो फिर भी उसे पूरा करने की भरपूर कोशिश करना (7) अगर कोई शरई मुमानअ़त न हो तो उन के इन्तिक़ाल के बा'द भी उन की मर्ज़ी और खुशी का ख़याल रखना (8) हर जुमुआ़ को उन की क़ब्र पर जा कर इतनी आवाज़ से यासीन शरीफ़ की तिलावत करना कि वोह सुनें फिर उन्हें ईसाले सवाब करना जुमुआ़ के इलावा भी जब उन की क़ब्र के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम करना और उन के लिये फ़ातिह़ा ख़्वानी करना (9) उन के रिश्तेदारों के साथ उ़म्र भर नेक सुलूक करते रहना (10) उन के दोस्तों के साथ दोस्ती नबाहना और उन के साथ हमेशा इ़ज़्ज़त व तकरीम से पेश आना (11) किसी के वालिदैन को बुरा कह कर जवाबन उन्हें बुरा न कहलवाना (12) सब से अहम हक़ जिस की हर एक को हमेशा सख़्ती के साथ ताकीद है वोह येह है कि कभी कोई गुनाह कर के उन्हें क़ब्र में ईज़ा न पहुंचाना क्यूंकि वालिदैन को उस के तमाम आ'माल की ख़बर पहुंचती है।[1]

1.....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 391-392 मुलख़्ख़सन।

सुवाल वालिदैन से लड़ने, उन्हें मारने और बुरा भला कहने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब ऐसा शख़्स बहुत बड़ा फ़ासिक़, बड़ा ही बद बख़्त और **अल्लाह** रब्बुल आलमीन के सख़्त ग़ज़ब और बड़े अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ और दोज़ख़ की आग का ह़क़दार है।[1]

सुवाल अगर बेटा मुल्क से बाहर हो और वालिदैन उसे बुलाएं तो उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब अगर बेटा मुल्क से बाहर हो और वालिदैन उसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, सिर्फ़ ख़त़ लिखना काफ़ी न होगा, इसी त़रह़ अगर वालिदैन को उस की ख़िदमत की ह़ाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे।[2]

सुवाल वालिदा के पाउं चूमने की ह़दीस में क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : "जिस ने अपनी वालिदा का पाउं चूमा तो ऐसा है जैसे जन्नत की चौखट को बोसा दिया।"[3]

सुवाल वालिदैन को नज़्रे रह़मत से देखने का क्या सवाब है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब औलाद अपने वालिदैन की त़रफ़ नज़्रे रह़मत करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर नज़्र के बदले ह़ज्जे मबरूर का सवाब लिखता है।[4]

---

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 24 / 402 मुलख़्ख़सन।

2 . . . ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۶۷۸۔

3 . . . درمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ۹/۶۰۶۔

4 . . . مشکاۃ المصابیح، کتاب الآداب، باب البر والصلۃ، الفصل الثالث، ۲/۲۰۹، حدیث: ۴۹۴۴۔

सुवाल क्या काफ़िर वालिदैन के साथ भी सिलए रेह्मी की जाएगी ?

जवाब जी हां ! हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) फ़रमाती हैं कि ज़मानए नबवी में मेरे पास मेरी वालिदा आई जब कि वोह मुशरिका थी। मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : मेरी मां आई है हालांकि वोह मुसलमान नहीं तो क्या फिर भी मैं उस से सिलए रेह्मी करूं ? रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी मां से सिलए रेह्मी करो।[1]

सुवाल क्या वालिदैन का ख़िलाफ़े शरअ़ दिया गया हुक्म मानना पड़ेगा ?

जवाब नहीं। हुज़ूर नबिय्ये मोह्तरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "لَا طَاعَةَ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी में किसी की इताअ़त जाइज़ नहीं।[2]

सुवाल अगर वालिदैन नाराज़ी की हालत में फ़ौत हो जाएं तो औलाद क्या करे ?

जवाब उन के लिये ब कसरत दुआ़ए मग़्फ़िरत करे, औलाद की त़रफ़ से मुसलसल नेकियों के तहाइफ़ पहुंचेंगे तो उम्मीद है कि मर्हूम वालिदैन राज़ी हो जाएं। सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : किसी के मां बाप दोनों या एक का इन्तिक़ाल हो गया और येह उन की नाफ़रमानी करता था तो अब उन के लिये हमेशा दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करता रहता है ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस को (वालिदैन के साथ) हुस्ने सुलूक करने वाला लिख देता है।[3]

---

1 . . . بخاری، کتاب الھبة وفضلھا. . . الخ، باب الھدیة للمشرکین، ۲/۱۸۲، حدیث: ۲۶۲۰۔

2 . . . مسلم، کتاب الامارة، باب وجوب طاعة الامراء. . . الخ، ص ۱۰۲۲، حدیث: ۱۸۴۰۔

3 . . . شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی حفظ حق الوالدین بعد موتھما، ۶/۲۰۲، حدیث: ۷۹۰۲۔

औलाद और इन के हुक़ूक़

सुवाल लड़की पैदा होने पर ग़म व रंज का इज़्हार करना किस का त़रीक़ा है ?

जवाब क़ुरआने करीम में इस को कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा क़रार दिया गया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِیْمٌ ﴾ (پ۱۴، النحل:۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब इन में किसी को बेटी होने की खुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह गुस्सा खाता है।

सुवाल अहले ईमान के लिये किस त़रह़ की बीवियां और औलाद दुश्मन हैं ?

जवाब वोह जो उन्हें नेक कामों से रोकें। इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ﴾(پ۲۸، التغابن:۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीबियां और बच्चे तुम्हारे दुश्मन हैं तो इन से एह़तियात़ रखो" इस आयत के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى लिखते हैं : (इस लिये) कि (वोह) तुम्हें नेकी से रोकते हैं और उन के कहने में आ कर नेकी से बाज़ न रहो।[1]

सुवाल औ़रत की पहली औलाद लड़की होने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : औ़रत के लिये येह बहुत ही मुबारक है कि उस की पहली औलाद लड़की हो।[2]

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान पारह 28, अत्तग़ाबुन, तह़्तुल आयत : 14, स. 1030।

2 ...تاریخ ابن عساکر، العلاء بن کثیر، ۴۷/۲۲۵-

सुवाल कौन से अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام की सिर्फ़ बेटियां ही थीं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना लूत़ और हज़रते सय्यिदुना शुऐब (عَلَیۡہِمَا السَّلَام)(1)

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के बयान कर्दा औलाद के हुक़ूक़ में से कोई पांच बयान कीजिये ?

जवाब (1) बच्चे को पाक कमाई से पाक रोज़ी खिलाए (2) औलाद को छोड़ कर अकेले न खाए बल्कि अपनी ख़्वाहिश को उन की ख़्वाहिश के ताबेअ़ रखे (3) चन्द बच्चे हों तो सब को बराबर व यक्सां दे, एक को दूसरे पर दीनी फ़ज़ीलत के इलावा तरजीह़ न दे (4) बहलाने के लिये झूटा वा'दा न करे और (5) वोह बीमार हों तो उन का इलाज करवाए।(2)

सुवाल औलाद को कितनी उ़म्र में नमाज़ का हुक्म दिया जाए ?

जवाब हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी औलाद को नमाज़ का हुक्म दो जब वोह सात साल के हों और उन्हें नमाज़ पर मारो जब वोह दस साल के हों।(3)

सुवाल कितनी उ़म्र में बच्चों के बिस्तर अलग कर देने का हुक्म है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : दस साल की उ़म्र में बच्चों के बिस्तर अलग कर दो।(4)

सुवाल बच्चों को खुश करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक

---

1 . . . تفسیر مدارک، پ۲۵، الشوری، تحت الآیۃ:۵۰، ص۱۰۹۳۔

2 .....औलाद के हुक़ूक़, स. 19-20, मुलख़्ख़सन।

3 . . . ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب متی یؤمر الغلام بالصلاۃ، ۱/۲۰۸، حدیث:۴۹۴۔

4 . . . ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب متی یؤمر الغلام بالصلاۃ، ۱/۲۰۸، حدیث:۴۹۵۔

जन्नत में एक घर है जिसे दारुल फ़रह़ (ख़ुशी का घर) कहा जाता है। उस में वोही लोग दाख़िल होंगे जो बच्चों को ख़ुश करते हैं।(1)

सुवाल अपने बच्चे को क़ुरआने पाक सिखाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने दुन्या में अपने बच्चे को क़ुरआने करीम पढ़ना सिखाया बरोज़े क़ियामत उसे जन्नत में ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस के सबब अह्ले जन्नत जान लेंगे कि इस शख़्स ने दुन्या में अपने बेटे को क़ुरआने करीम की ता'लीम दी थी।(2)

सुवाल औलाद को अदब सिखाने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : इन्सान का अपने बच्चे को अदब सिखाना एक साअ़ (तक़रीबन चार किलो और सौ ग्राम) सदक़ा करने से बेहतर है।(3)

सुवाल बेटे के निकाह़ में ताख़ीर करने पर क्या वईद आई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर बालिग़ होने के बा'द निकाह़ न किया और लड़का गुनाह में मुब्तला हुवा तो उस का गुनाह वालिद के सर होगा।(4)

सुवाल अपनी बेटी का निकाह़ फ़ासिक़ से करना कैसा है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपनी बेटी का निकाह़ किसी फ़ासिक़ से किया उस ने क़त्ए़ रेह़मी की।(5)

---

1 ...جامع صغیر، حرف الہمزۃ، ص ۱۴۰، حدیث: ۲۳۲۱۔

2 ...معجم اوسط، باب الالف، باب من اسمه احمد، ۱/ ۴۰، حدیث: ۹۲۔

3 ...ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی ادب الولد، ۳/ ۳۸۲، حدیث: ۱۹۵۸۔

4 ...شعب الایمان، الستون من شعب الایمان...الخ، ۶/ ۴۰۱، حدیث: ۸۶۶۶۔

5 ...الکامل لابن عدی، الحسن بن محمد ابو محمد البلخی...الخ، ۳/ ۱۶۵۔

ग़ीबत

सुवाल ग़ीबत की ता'रीफ़ क्या है ?

जवाब सदरुश्शरीआ़ हज़रते मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने ग़ीबत की ता'रीफ़ येह फ़रमाई है कि "किसी शख़्स के पोशीदा ऐ़ब को उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना।"[1]

सुवाल कुरआने करीम में ग़ीबत से किस त़रह़ रोका गया है ?

जवाब अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ﴾ (پ۲۶، الحجرات:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। क्या तुम में कोई पसन्द रखेगा कि अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो येह तुम्हें गवारा न होगा।

सुवाल शबे मे'राज पीठ पीछे बुराई करने वालों का क्या अ़ज़ाब दिखाया गया ?

जवाब शबे असरा के दूल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मे'राज की रात मेरा गुज़र ऐसी औ़रतों और मर्दों के पास से हुवा जो अपनी छातियों के साथ लटक रहे थे। मैं ने कहा : जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह मुंह पर ऐ़ब लगाने वाले और पीठ पीछे बुराई करने वाले लोग हैं।[2]

---

1 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 16, 3 / 532।

2 . . شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس، ۵/ ۳۰۹، حدیث: ۶۷۵۰۔

सुवाल गीबत और बोहतान में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (गीबत येह है कि) तुम अपने भाई का इस त़रह़ ज़िक्र करो जिसे वोह ना पसन्द करता है। अ़र्ज़ की गई : अगर वोह बात उस में मौजूद हो तो ? इरशाद फ़रमाया : जो बात तुम कह रहे हो अगर वोह उस में मौजूद हो तो तुम ने उस की गीबत की और अगर उस में न हो तो तुम ने उस पर बोहतान बांधा।(1)

सुवाल कौन सा दोज़ख़ी है जिसे जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा ?

जवाब ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ गीबत करने वाले को जहन्नम में मुर्दार खाना पड़ेगा।(2)

सुवाल गीबत करने वाला क़ियामत में किस शक्ल में उठेगा ?

जवाब गीबत करने वाला रोज़े मह़शर कुत्ते की शक्ल में उठाया जाएगा।(3)

सुवाल लोगों की इ़ज़्ज़त ख़राब करने वालों की क्या सज़ा है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये गैब दां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शबे मे'राज ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाख़ुनों से नोच रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी गीबत करते) थे और उन की इ़ज़्ज़त ख़राब करते थे।(4)

सुवाल किसी मुसलमान की बे इ़ज़्ज़ती करना कैसा ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद

---

1 . . . مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الغیبة، ص۱۳۹۷، حدیث: ۲۵۸۹۔

2 . . . مسند احمد، مسند عبد اللہ بن عباس، ۱/۵۵۳، حدیث: ۲۳۲۴۔

3 . . . التوبیخ والتنبیہ، باب البھتان وماجاء فیہ، ص۲۳۷، حدیث: ۲۱۲۔

4 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی الغیبة، ۴/۳۵۳، حدیث: ۴۸۷۸۔

फ़रमाते हैं : बेशक किसी मुसलमान की नाहक़ बे इज़्ज़ती करना कबीरा गुनाहों में से है।[1]

सुवाल हदीस शरीफ़ में कामिल मुसलमान किसे फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : कामिल मुसलमान वोह है जिस के हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।[2]

सुवाल कौन से तीन लोगों की दुआ क़बूल नहीं होती ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : तीन लोगों की दुआ क़बूल नहीं होती : (1) हराम खाने वाला (2) ब कसरत ग़ीबत करने वाला और (3)मुसलमानों से हसद रखने वाला।[3]

सुवाल क्या ग़ीबत की कोई जाइज़ सूरत भी है ?

जवाब जी हां ! ग़ीबत की मुबाह (जाइज़) सूरत येह है कि फ़ासिके़ मो'लिन (अ़लानिय्या गुनाह करने वाला) या बद मज़हब (बुरे अ़क़ाइद रखने वाले) की बुराई बयान करे जब कि लोगों को उस के शर से बचाना मक़्सूद हो तो सवाब मिलने की उम्मीद है।[4]

सुवाल क्या ग़ीबत से बचने का कोई वज़ीफ़ा भी है ?

जवाब जी हां ! वोह आसान तरीन विर्द येह है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد[5]

---

1 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی الغیبۃ، ۴/۳۵۳، حدیث:۴۸۷۷۔

2 . . . بخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من سلم المسلمون...الخ، ۱/۱۵، حدیث:۱۰۔

3 . . . تنبیہ الغافلین، باب الحسد، ص۹۵۔

4 . . . تنبیہ الغافلین، باب الغیبۃ، ص۹۰۔

5 . . . القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلوۃ...الخ، ص۲۷۸۔

बद शुगूनी

सुवाल शुगून की अक़्साम बताइये और इन की वज़ाहत कीजिये ?

जवाब शुगून की दो क़िस्में हैं : (1) अच्छा शुगून (2) बुरा शुगून। अच्छा येह है कि जिस काम का इरादा किया हो उस के बारे में कोई अच्छा कलाम सुन कर दलील पकड़ना, अगर बुरा कलाम हो तो बद शुगूनी है। हुक्मे शरअ़ येह है कि इन्सान अच्छा शुगून ले कर ख़ुश हो और अपना काम ख़ुशी ख़ुशी मुकम्मल करे और बुरा कलाम सुन कर उस की त़रफ़ तवज्जोह न करे और न ही उस के सबब अपने काम से रुके।(1)

सुवाल किसी काम से निकलते वक़्त हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क्या सुनना पसन्द था ?

जवाब किसी काम से निकलते वक़्त हु़ज़ूर नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को يَارَاشِدُ (ऐ हिदायत याफ़्ता) يَانَجِيْحُ (ऐ कामयाब) सुनना पसन्द था।(2)

सुवाल किसी शै को मन्ह़ूस जानने के बारे में इस्लाम क्या फ़रमाता है ?

जवाब किसी शख़्स, जगह, चीज़ या वक़्त को मन्ह़ूस जानने का इस्लाम में कोई तसव्वुर नहीं येह मह़ज़ वहमी ख़यालात होते हैं।(3)

---

1 ...تفسیر قرطبی، پ۲۶، الاحقاف، ۸/۱۳۲، تحت الآیۃ:۴۔

2 ...ترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الطیرۃ، ۳/۲۲۸، حدیث:۱۶۲۲۔

3 .....बद शुगूनी, स. 8।

सुवाल अच्छा शुगून लेने और बद शुगूनी का शरीअ़त में क्या हुक्म है ?

जवाब मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस्लाम में नेक फ़ाल लेना जाइज़ है। बद फ़ाली बद शुगूनी लेना ह़राम है।(1)

सुवाल नजूमियों, काहिनों से क़िस्मत का ह़ाल मा'लूम करना कैसा ?

जवाब काहिनों और ज्योतिशियों से हाथ दिखा कर तक़्दीर का भला बुरा दरयाफ़्त करना अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद हो या'नी जो येह बताएं ह़क़ है तो कुफ़्रे ख़ालिस है और अगर बत़ौरे ए'तिक़ाद व तयक़्क़ुन (या'नी बत़ौरे यक़ीन) न हो मगर मेल व रग़बत के साथ हो तो गुनाहे कबीरा है और अगर बत़ौरे हज़्ल व इस्तिहज़ा (या'नी हंसी मज़ाक़ के त़ौर पर) हो तो अ़बस (या'नी बेकार) व मकरूह व ह़माक़त है, हां ! अगर ब क़स्दे ता'जीज़ (या'नी उसे आ़जिज़ करने के लिये) हो तो ह़रज नहीं।(2)

सुवाल मकान की तब्दीली से बद शुगूनी लेना कैसा ?

जवाब एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम एक मकान में रहते थे, उस में हमारे अह्लो इ़याल कसीर और माल कसरत से था फिर हम ने मकान बदला तो हमारे माल और अह्लो इ़याल कम हो गए। ह़ुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : छोड़ो ! ऐसा कहना बुरी बात है।(3)

---

1 .....तफ़्सीरे नईमी, 9 / 119 ।

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 155 ।

3 . . . ادب الدنیا والدین، الفصل السادس فی الطیرۃ والفال، الطیرۃ مفزع الیائسین، ص ۴۹۹۔

सुवाल छींक से बद शुगूनी लेना किस का त़रीक़ा है ?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : छींक अच्छी चीज़ है, इसे बद शुगूनी जानना मुशरिकीने हिन्द का नापाक अ़क़ीदा है।[1]

सुवाल फ़ाल खोलना या फ़ाल खोलने पर उजरत लेने का क्या हुक्म है ?

जवाब ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : फ़ाल खोलना या फ़ाल खोलने पर उजरत लेना या देना सब ह़राम है।[2]

सुवाल शरीअ़त में इस्तिख़ारे की क्या अहम्मिय्यत है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा ता'लीम फ़रमाते जैसे क़ुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे।[3]

सुवाल इस्तिख़ारा के क्या मा'ना हैं ?

जवाब मुह़द्दिसे कबीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस्तिख़ारा के मा'ना हैं : ख़ैर मांगना या किसी से भलाई का मश्वरा करना, चूंकि इस दुआ़ व नमाज़ में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गोया मश्वरा करता है कि फ़ुलां काम करूं या न करूं इसी लिये इसे इस्तिख़ारा कहते हैं।[4]

1.....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319।

2.....तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पारह 7, अल माइदह, तह़्तुल आयत : 90, स. 194।

3...بخاری، کتاب التہجد، باب ماجاء فی التطوع مثنی مثنی، ۱/۳۹۳، حدیث: ۱۱۶۲-

4.....मिरआतुल मनाजीह, 2 / 301।

सुवाल हदीसे पाक में इस्तिख़ारे की क्या फ़ज़ीलत आई है ?

जवाब हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो इस्तिख़ारा करे वोह नुक़्सान में न रहेगा, जो मुशावरत से काम करे वोह पशेमान न होगा और जिस ने मियाना रवी इख़्तियार की वोह मोहताज न होगा।[1]

सुवाल इस्तिख़ारा छोड़ने का क्या नुक़्सान है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बन्दे की बद बख़्ती में से है कि वोह **अल्लाह** तआला से इस्तिख़ारा करना छोड़ दे।[2]

बद गुमानी

सुवाल बुन्यादी तौर पर गुमान की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब बुन्यादी ए'तिबार से गुमान की दो अक़्साम हैं :

(1) हुस्ने ज़न (2) सूए ज़न (या'नी बद गुमानी)।

सुवाल बद गुमानी की ता'रीफ़ क्या है ?

जवाब बद गुमानी से मुराद येह है कि बिला दलील दूसरे के बुरे होने का दिल से पुख़्ता यक़ीन करना।[3]

सुवाल बद गुमानी का शरई हुक्म क्या है ?

जवाब मुसलमान के साथ बद गुमानी हराम है।[4]

---

1 ... مسند شهاب، باب ما خاب من استخار، ۲/۷، حديث: ۷۷۴۔

2 ... ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء فی الرضا بالقضاء، ۴/۰۲، حديث: ۲۱۵۸۔

3 ... فیض القدیر، ۳/۱۵۷، ماخوذا۔

4 ... احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة العشرة الغيبة، بیان تحریم الغیبة بالقلب، ۳/۱۸۶۔

सुवाल कुरआने पाक में ब कसरत गुमान की मुमानअ़त किस मक़ाम पर फ़रमाई गई है ?

जवाब कसरते गुमान की मुमानअ़त कुरआने पाक के पारह 26, सूरए हुजुरात की आयत नम्बर 12 में फ़रमाई है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ٘ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है।

सुवाल ज़न या'नी गुमान किसे कहते हैं ?

जवाब जिस बात की त़रफ़ नफ़्स झुके और दिल उस की त़रफ़ माइल हो उसे ज़न (या'नी गुमान) कहते हैं।[1]

सुवाल बद गुमानी के ह़राम होने की सूरतें कौन सी हैं ?

जवाब बद गुमानी के ह़राम होने की दो सूरतें : (1) **बद गुमानी को दिल पर जमा लेना**। अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : गुमान वोह ह़राम है जिस पर इसरार किया जाए और उसे अपने दिल पर जमा लिया जाए।[2] (2) **बद गुमानी को ज़बान पर ले आना या उस के तक़ाज़े पर अ़मल कर लेना**। अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बद गुमानी इस सूरत में ह़राम है जब उस का असर आ'ज़ा पर ज़ाहिर हो, यूं कि उस के तक़ाज़े पर अ़मल किया जाए।[3]

सुवाल बुरे गुमान के दिल में जम जाने की पहचान क्या है ?

जवाब जिस के बारे में इसे बद गुमानी है उस के मुतअ़ल्लिक़ पहले जैसी

1 . . . احیاءالعلوم، کتاب آفات اللسان، الآفۃ الخامسۃ العشرۃ الغیبۃ، بیان تحریم الغیبۃ بالقلب، ۳/۱۸۶۔

2 . . . عمدۃ القاری، کتاب البر والصلۃ، باب ماینھی . . . الخ، ۱۵/۲۱۸، تحت الحدیث: ۶۰۶۵۔

3 . . . حدیقۃ ندیۃ، الخلق الرابع والعشرون، ۲/۱۳۔

क़ल्बी कैफ़िय्यत न रहे, उस से बहुत नफ़रत करने लगे, उसे बोझ तसव्वुर करे, उस के अह़वाल की रिआ़यत और उस की इ़ज़्ज़त करना छोड़ दे।(1)

सुवाल बद गुमानी से कौन से बातिनी अमराज़ पैदा होते हैं ?

जवाब बद गुमानी से बुग़्ज़ और ह़सद जैसे बातिनी अमराज़ भी पैदा होते हैं।(2)

सुवाल बद गुमानी को दूर करने का इलाज क्या है ?

जवाब बद गुमानी से तवज्जोह हटा दी जाए। ह़दीसे पाक में है कि जब तुम बद गुमानी करो तो उस पर जमे न रहो।(3)

सुवाल ह़दीसे पाक में अच्छे गुमान के बारे में क्या फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अच्छा गुमान अच्छी इ़बादत से है।(4)

सुवाल बद तरीन झूट क्या है ?

जवाब ह़दीसे पाक में बद गुमानी को बद तरीन झूट फ़रमाया गया है।(5)

सुवाल मुसलमान से बद गुमानी पर ह़दीस शरीफ़ में क्या वई़द आई है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने मुसलमान भाई से बुरा गुमान रखा, बेशक उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बुरा गुमान रखा।(6)

---

1 . . . احیاء العلوم، کتاب آفات اللسان، الآفة الخامسة العشرة الغیبة، بیان تحریم الغیبة بالقلب، ۳/۱۸۶۔

2 . . . فتح الباری، کتاب الادب، باب ماینہی عن التحاسد والتدابر، ۱۱/۴۱۰، تحت الحدیث: ۶۰۶۶۔

3 . . . معجم کبیر، باب من اسمه الحارث، حارثة بن النعمان . . . الخ، ۳/۲۲۸، حدیث: ۳۲۲۷۔

4 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی حسن الظن، ۴/۳۸۷، حدیث ۴۹۹۳۔

5 . . . بخاری، کتاب الادب، باب یا ایها الذین آمنوا اجتنبوا کثیراً من الظن . . . الخ، ۴/۱۱۷، حدیث: ۶۰۶۶۔

6 . . . درمنثور، پ۲۶، الحجرات، تحت الآیة: ۱۲، ۷/۵۶۶۔

हि़र्स

सुवाल हि़र्स किसे कहते हैं ?

जवाब इरादे में ख़्वाहिश की ज़ियादती हि़र्स कहलाती है।(1) दूसरे लफ़्ज़ों में "किसी चीज़ से जी न भरना और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश करना हि़र्स है।"(2)

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में हि़र्स की किस त़रह़ मज़म्मत फ़रमाई गई है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर इन्सान के पास सोने की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी की ख़्वाहिश करेगा और इन्सान के पेट को मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो शख़्स तौबा करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।(3)

सुवाल क्या कभी हि़र्स अच्छी भी होती है ?

जवाब जी हां, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : दुन्यावी हि़र्स बुरी है दीनी हि़र्स अच्छी है।(4)

सुवाल बुरी हि़र्स की वज़ाह़त कीजिये ?

जवाब बुरी हि़र्स येह है कि अपना हि़स्सा ह़ासिल कर लेने के बा वुजूद दूसरे के हि़स्से की लालच रखे।(5)

---

1 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الرقاق، باب الامل والحرص، ۹/۱۱۹۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 86 ।

3 ...مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو ان لابن آدم...الخ، ص ۵۲۱، حدیث: ۱۰۴۸۔

4 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 222 ।

5 ...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الرقاق، باب الامل والحرص، ۹/۱۱۹۔

सुवाल क्या हिर्स का मुआमला सिर्फ़ दौलत ही में हुवा करता है ?

जवाब ऐसा नहीं है । लालच और हिर्स का जज़्बा ख़ूराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इ़ज़्ज़त, शोहरत अल ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है ।(1)

सुवाल कौन से दो ह़रीस कभी सैर नहीं होते ?

जवाब (1) इ़ल्म का ह़रीस कि इ़ल्म से कभी उस का पेट नहीं भरेगा और (2) दुन्या का लालची कि येह कभी आसूदा नहीं होगा ।(2)

सुवाल कौन सी दो ख़स्लतें हमेशा जवान रहती हैं ?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इब्ने आदम बूढ़ा हो जाता है लेकिन उस की दो ख़स्लतें हमेशा जवान रहती हैं एक माल की हिर्स और दूसरी उ़म्र की हिर्स ।(3)

सुवाल इ़ल्मे दीन के ह़रीस के लिये क्या क्या इन्आ़मात हैं ?

जवाब सूफ़िया फ़रमाते हैं : اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्मे दीन का मुतलाशी मरते ही जन्नती है । उ़लमा फ़रमाते हैं कि किसी को अपने ख़ातिमे की ख़बर नहीं सिवा आ़लिमे दीन के कि उन के लिये हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने वा'दा फ़रमा लिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस की भलाई चाहता है उसे इ़ल्मे दीन देता है ।(4)

सुवाल किस मुआमले में बे सब्री और हिर्स आ'ला है ?

1.....जन्नती ज़ेवर, स. 111 ।

2... دارمی، باب فی فضل العلم والعالم، ۱/۱۰۸، حدیث:۳۳۱۔

3... مسلم، کتاب الزکوٰۃ، باب کراهة الحرص علی الدنیا، ص ۵۲۱، حدیث:۱۰۴۷۔

4.....मिरआतुल मनाजीह, 1 / 204 ।

जवाब हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "दुन्यावी चीज़ों में क़नाअ़त और सब्र अच्छा है मगर आख़िरत की चीज़ों में ह़िर्स और बे सब्री आ'ला है।"(1)

सुवाल माल व मर्तबे की ह़िर्स का क्या नुक़्सान है ?

जवाब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में छोड़ दिये जाएं तो वोह इतना नुक़्सान नहीं करते जितना माल और मर्तबे की ह़िर्स करने वाला अपने दीन के लिये नुक़्सान देह है।(2)

सुवाल किन लोगों को ज़िन्दा रहने की सब से ज़ियादा ह़िर्स है ?

जवाब क़ुरआने करीम की सूरए बक़रह, आयत 96 के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الہَادِی फ़रमाते हैं : मुशरिकीन का एक गुरौह मजूसी है आपस में तह़िय्यत व सलाम के मौक़अ़ पर कहते हैं "ज़ेह हज़ार साल" या'नी हज़ार बरस जियो। मत़लब येह है कि मजूसी मुशरिक हज़ार बरस जीने की तमन्ना रखते हैं यहूदी इन से भी बढ़ गए कि इन्हें ह़िर्से ज़िन्दगानी सब से ज़ियादा है।(3)

सुवाल ह़िर्स के इलाज के लिये किन चीज़ों की ज़रूरत है ?

जवाब सब्र, इल्म और अ़मल।(4)

---

1 .....मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 112।

2 ...ترمذی، کتاب الزهد، ۴۳- باب، ۴/ ۱۶۲، حدیث: ۲۳۸۳۔

3 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 96, स. 33।

4 ...احیاء العلوم، کتاب ذم البخل...الخ، بیان علاج البخل، ۳/ ۲۹۷۔

झूट

सुवाल झूट किसे कहते हैं ?

जवाब किसी चीज़ को उस की ह़क़ीक़त के बर अ़क्स बयान करना।(1)

सुवाल झूटों के लिये कुरआने पाक में क्या वई़द आई है ?

जवाब कुरआने पाक में झूटों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत का मुस्तहि़क़ क़रार दिया गया है।(2)

सुवाल झूट इन्सान को कहां ले जाता है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : झूट इन्सान को बुराई की त़रफ़ ले जाता और बुराई जहन्नम की त़रफ़ ले जाती है।(3)

सुवाल झूट इन्सान की शख़्सिय्यत पर क्या असर डालता है ?

जवाब हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : झूट इन्सान को रुस्वा कर देता है।(4)

सुवाल झूट छोड़ने वाले को ह़दीसे पाक में क्या ख़ुश ख़बरी दी गई है ?

जवाब हुज़ूर शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने बाति़ल झूट बोलना छोड़ दिया उस के लिये जन्नत के किनारे पर मकान बनाया जाएगा।(5)

---

1 ...حدیقۃندیۃ، الصنف الثانی، المبحث الاول، النوع الرابع، ۲/۲۰۰۔

2 ...پ۳، آل عمران: ۶۱۔

3 ...مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب قبح الکذب...الخ، ص ۱۴۰۵، حدیث: ۲۶۰۷۔

4 ...الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، الترغیب فی الصدق الترھیب من الکذب، ۳/۳۶۸، حدیث: ۲۸۔

5 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ما جاء فی المراء، ۳/۴۰۰، حدیث: ۲۰۰۰۔

सुवाल हदीसे पाक में मुनाफ़िक़ की क्या निशानियां आई हैं ?

जवाब (1) जब बात करे झूट बोले (2) जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और (3) जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे।[1] (4) एक रिवायत में येह भी है कि जब झगड़ा करे तो गाली दे।[2]

सुवाल सच्चा इन्सान किस रुत्बे का और झूटा किस वईद का मुस्तहिक़ होता है ?

जवाब प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सच्चाई को लाज़िम कर लो, क्यूंकि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि वोह **अल्लाह** के नज़्दीक "सिद्दीक़" लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूंकि झूट फुजूर (बुराइयों) की त़रफ़ ले जाता है और फुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता है और झूट बोलने की कोशिश करता है, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक, "कज़्ज़ाब" लिख दिया जाता है।[3]

सुवाल झूट की बदबू से फ़िरिश्ता कितना दूर हो जाता है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब बन्दा झूट बोलता है तो उस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।[4]

---

1 . . . بخاری، کتاب الایمان، باب علامة المنافق، ۱/۲۴، حدیث: ۳۳۔

2 . . . بخاری، کتاب الایمان، باب علامة المنافق، ۱/۲۴، حدیث: ۳۴۔

3 . . . مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب قبح الکذب . . . الخ، ص ۱۴۰۵، حدیث: ۲۶۰۷۔

4 . . . ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الصدق والکذب، ۳/۳۹۲، حدیث: ۱۹۷۹۔

सुवाल झूट, ह़सद, चुग़ली और ग़ीबत वाले दोज़ख़ में किस शक्ल के होंगे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : जहन्नम में झूटा कुत्ते की शक्ल में, ह़सद करने वाला सुवर की शक्ल में, चुग़ल ख़ोर और ग़ीबत करने वाला बन्दर की शक्ल में बदल जाएगा ।(1)

सुवाल ह़दीसे मुबारका में किन मवाक़ेअ़ पर झूट बोलने की इजाज़त आई है ?

जवाब (1) जंग की सूरत में कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है (2) दो मुसलमानों के दरमियान सुल्ह़ कराने और (3) अपनी बीवी को राज़ी करने के लिये ।(2)

सुवाल झूटी गवाही देने वाले के लिये क्या वई़द (सज़ा दिये जाने का फ़रमान) है ?

जवाब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया "झूटे गवाह के क़दम हटने भी न पाएंगे कि **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देगा ।"(3)

सुवाल झूटा ख़्वाब सुनाने की क्या वई़द है ?

जवाब जनाबे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : झूटा ख़्वाब सुनाने वाले को जव के दो दानों में गांठ लगाने की तक्लीफ़ दी जाएगी जो वोह नहीं कर सकेगा ।(4)

---

1 ...تنبیہ المغترین، الباب الثالث، ومنہاسدباب الغیبۃفی الناس فی مجالسھم، ص ۱۹۴۔

2 ...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاءفي إصلاح ذات البین، ۳/۳۷۷، حدیث:۱۹۴۵۔

3 ...ابن ماجہ، کتاب الاحکام، باب شھادۃ الزور، ۳/۱۲۳ ، حدیث : ۲۳۷۳۔

4 ...بخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمہ، ۴/۴۲۲، حدیث:۷۰۴۲۔

और एक ह़दीसे पाक में झूटा ख़्वाब घड़ कर सुनाने वाले को जन्नत की ख़ुश्बू से मह़रूमी की वईद सुनाई गई है।[1]

बुग़्ज़ो कीना

सुवाल : कीने की ता'रीफ़ क्या है ?

जवाब : कीना येह है कि इन्सान अपने दिल में किसी को बोझ जाने, उस से ग़ैर शरई दुश्मनी व बुग़्ज़ रखे, नफ़रत करे और येह कैफ़िय्यत हमेशा हमेशा बाक़ी रहे।[2]

सुवाल : बुग़्ज़ो कीना रखने का शरीअ़त में क्या हुक्म है ?

जवाब : किसी भी मुसलमान के मुतअ़ल्लिक़ बिला वज्हे शरई अपने दिल में बुग़्ज़ो कीना रखना नाजाइज़ व गुनाह है। आ़रिफ़ बिल्लाह अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : अगर ह़क़ व इन्साफ़ की बात करने के सबब किसी से बुग़्ज़ो कीना रखे तो ह़राम है और अगर किसी से उस के ज़ुल्म के सबब बुग़्ज़ रखे तो जाइज़ है।[3]

सुवाल : अह़ादीसे करीमा में बुग़्ज़ो कीना का क्या नुक़्सान बयान हुवा है ?

जवाब : बुग़्ज़ो कीना के नुक़्सानात पर मुश्तमिल दो अह़ादीसे मुबारका येह भी हैं : (1) जिस ने इस ह़ाल में सुब्ह़ की, कि वोह कीना परवर है तो वोह जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा।[4]

---

1 ...جامع صغیر، ص ۲۱۴، حدیث: ۳۵۳۲۔

2 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی معنی الحقد ...الخ، ۳/۲۲۳۔

3 ...حدیقۃ ندیۃ، السادس عشر من الاخلاق ــــ الخ، ۱/۶۲۹۔

4 ...حلیۃ الاولیاء، ۸/۱۰۸، حدیث: ۱۱۵۳۶۔

(2) बुग़्ज़ व दुश्मनी रखने से बचो ! क्यूंकि बुग़्ज़ दीन को मूंड डालता (या'नी तबाह कर देता) है।(1)

सुवाल सहाबए किराम से बुग़्ज़ो कीना रखना कैसा ?

जवाब सख़्त हराम है। सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : जो बद नसीब सहाबा की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल है। मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठें।(2)

सुवाल सादाते किराम से बुग़्ज़ रखने का क्या नुक़्सान है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो शख़्स हम से बुग़्ज़ या ह़सद करेगा उसे क़ियामत के दिन हौज़े कौसर से आग के चाबुकों के साथ दूर किया जाएगा।(3)

सुवाल उ़लमाए किराम से बुग़्ज़ रखने वाले का क्या हुक्म है ?

जवाब (आ़लिमे दीन से) अगर बे सबब रंज (या'नी बुग़्ज़) रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब, ख़बीसुल बातिन और इस के कुफ़्र का अन्देशा है।(4)

सुवाल औलियाए किराम से बुग़्ज़ रखने पर क्या वईद आई है ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी रखे तह़क़ीक़ उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ए'लाने जंग कर दिया।(5)

---

1 . . . کنزالعمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، جزء:۳، ۲/۲۸، حدیث:۵۴۸۶۔

2 .....सवानेहे करबला, स. 31।

3 . . . معجم اوسط، ۲/۳۳، حدیث:۲۴۰۵۔

4 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 129।

5 . . . ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ سلامة الفتن، ۴/۳۵۰، حدیث:۳۹۸۹۔

सुवाल : क्या मालो दौलत की फ़रावानी बुग़्ज़ो कीना का सबब बनती है ?

जवाब : जी हां ! येह भी आपस में बुग़्ज़ो कीना का एक सबब है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"لَا تُفْتَحُ الدُّنْيَا عَلٰى اَحَدٍ اِلَّا اَلْقَى اللهُ بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ"

या'नी दुन्या किसी पर कुशादा नहीं की जाती मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ता क़ियामत इन के दरमियान बुग़्ज़ व अ़दावत रख देता है।(1)

सुवाल : बुग़्ज़ो कीना से बचने के कोई दो इलाज बताइये ?

जवाब : (1) ईमान वालों के कीने से बचने की दुआ़ कीजिये, पारह 28 सूरए ह़श्र, आयत नम्बर 10 को याद कर लेना और वक़्तन फ़ वक़्तन पढ़ते रहना भी मुफ़ीद है :

﴿وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हमारे दिल में ईमान वालों की त़रफ़ से कीना न रख ऐ रब हमारे बेशक तू ही निहायत मेहरबान रह़्म वाला है।" (2) मुसलमानों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मह़ब्बत करना क्यूंकि मह़ब्बत कीने की ज़िद है।(2)

सुवाल : क्या शबे बराअत में बुग़्ज़ो कीना रखने वाले की मग़फ़िरत हो जाती है ?

जवाब : जी नहीं ! हुज़ूर नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्द्रहवीं रात अपने बन्दों पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है, मग़फ़िरत चाहने वालों की मग़फ़िरत फ़रमाता

---

1 . . . مسند احمد، مسند عمر بن الخطاب، ۱/۴۵، حديث: ۹۳۔

2 .....बात़िनी बीमारियों की मा'लूमात, स. 55-56।

है और रह़्म त़लब करने वालों पर रह़्म फ़रमाता है जब कि कीना रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।(1)

सुवाल दूसरों को अपने कीने से कैसे बचाया जा सकता है ?

जवाब इस के लिये पांच मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : (1) किसी की बात काटने से बचिये (2) ता'ज़ियत के दौरान मुस्कुराने से बचिये (3) किसी की ग़लत़ी निकालने में एह़तियात़ कीजिये (4) मौक़अ़ मह़ल के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये (5) ख़्वा म ख़्वाह हौसला शिकनी न कीजिये।(2)

सुवाल क्या अह्ले जन्नत के दरमियान भी बुग़्ज़ो कीना होगा ?

जवाब जी नहीं। ह़दीस शरीफ़ में है : अह्ले जन्नत में आपस में इख़्तिलाफ़ न होगा, न बुग़्ज़ व कदूरत। सब के दिल एक होंगे, सुब्ह़ो शाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करेंगे।(3)

ह़सद

सुवाल ह़सद किसे कहते हैं ?

जवाब किसी की दीनी या दुन्यावी ने'मत के छिन जाने की तमन्ना करना या येह ख़्वाहिश करना कि फ़ुलां शख़्स को येह ने'मत न मिले, इसे "ह़सद" कहते हैं।(4)

सुवाल ह़सद करने वाले और जिस से ह़सद किया जाए उसे क्या कहते हैं ?

जवाब ह़सद करने वाले को "ह़ासिद" और जिस से ह़सद किया जाए उसे "मह़सूद" कहते हैं।

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، ۳/ ۳۸۲، حدیث: ۳۸۳۵۔

2 .....बुग़्ज़ो कीना, स. 62 ।

3 ...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ماجاء فی صفۃ الجنۃ... الخ، ۲/ ۳۹۱، حدیث: ۳۲۴۵۔

4 ...طریقۃ محمدیۃ مع حدیقۃ ندیۃ، الخلق الخامس عشر من الاخلاق الستین المذمومۃ ... الخ، ۱/ ۶۰۰-۶۰۱۔

सुवाल गिब्ता किसे कहते हैं ?

जवाब गिब्ता या'नी रश्क के येह मा'ना हैं कि दूसरे को जो ने'मत मिली वैसी मुझे भी मिल जाए और येह आरज़ू न हो कि इसे न मिलती या इस से जाती रहे ।(1)

सुवाल आपस में भाई-भाई होने का क्या नुस्ख़ा है ?

जवाब हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बद गुमानी, हसद, बुग्ज़ वग़ैरा वोह चीज़ें हैं जिन से महब्बत टूटती है और इस्लामी भाईचारा महब्बत चाहता है लिहाज़ा येह उयूब छोड़ो ताकि भाई-भाई बन जाओ ।(2)

सुवाल कौन सी ख़ता सब से पहले वाक़ेअ हुई ?

जवाब जो ख़ता सब से पहले की गई वोह हसद है ।(3)

सुवाल सब से पहले हसद किस ने किया था ?

जवाब सब से पहले हसद शैतान ने किया ।(4)

सुवाल शैतान ने किस से किस मुआमले में हसद किया था ?

जवाब इब्लीस मलऊन ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करने के मुआमले में उन से हसद किया ।(5)

सुवाल हदीसे पाक में हसद की किस तरह मज़म्मत फ़रमाई गई है ?

---

1 ... احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی ذمّ الحسد وفی حقیقته ... الخ، ۳/۲۳۴۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 6 / 608 ।

3 ... درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۴، ۱/۱۲۵۔

4 ... درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۴، ۱/۱۲۵۔

5 ... درمنثور، پ ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۳۴، ۱/۱۲۵۔

जवाब हुज़ूर जाने आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद करने वाला, चुग़ली खाने वाला और काहिन (नजूमी, फ़ाल निकालने वाला) मुझ से नहीं (या'नी मेरे त़रीक़े पर नहीं) और मैं उन से नहीं।(1)

सुवाल ह़सद करने वाला **अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी किस त़रह़ मौल लेता है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला ने बन्दों पर ने'मतों की जो तक़्सीम फ़रमाई है ह़सद करने वाला उस पर ना पसन्दीदगी का इज़्हार करता है और उस के अ़द्लो इन्साफ़ पर उंगली उठाता है।(2) इस त़रह़ वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मौल लेता है।

सुवाल ह़सद से नेकियों को क्या नुक़्सान पहुंचता है ?

जवाब ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खाती है।(3)

सुवाल पिछली उम्मत से इस उम्मत में आने वाली बात़िनी बीमारियां कौन सी हैं ?

जवाब ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगली उम्मत की बीमारी तुम्हारी त़रफ़ भी आई वोह बीमारी ह़सद व बुग़्ज़ है।(4)

---

1 . . . مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی الغیبۃ والنمیمۃ، ۸/۱۷۲، حدیث: ۱۳۱۲۶۔
2 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، القول فی ذمّ الحسد وفی حقیقتہ۔۔۔الخ، ۳/۲۴۲۔
3 . . . ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحسد، ۴/۴۷۳، حدیث: ۴۲۱۰۔
4 . . . ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ۔۔۔الخ، ۵۶-باب، ۴/۲۲۸، حدیث: ۲۵۱۸۔

सुवाल हसद व बुग़्ज़ इन्सान के दीन पर क्या असरात डालते हैं ?

जवाब येह बातिनी अमराज़ इन्सान के दीन को तबाह कर देते हैं।(1)

गुस्सा

सुवाल गुस्सा किसे कहते हैं ?

जवाब हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : ग़ज़ब या'नी गुस्सा नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ करने पर उभारे।(2)

सुवाल गुस्सा पीने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो गुस्सा पी जाएगा हालांकि वोह नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के दिल को अपनी रिज़ा से मा'मूर फ़रमा देगा।(3)

सुवाल क्या गुस्सा ह़राम है ?

जवाब अ़वाम में येह ग़लत़ मश्हूर है कि गुस्सा ह़राम है। गुस्सा एक ग़ैर इख़्तियारी अम्र है, इन्सान को आ ही जाता है, इस में इस का कुसूर नहीं, हां गुस्से का बेजा इस्ति'माल बुरा है।(4)

सुवाल गुस्से के सबब जनम लेने वाली कोई छे बुराइयां बयान कीजिये ?

जवाब गुस्से से तक़रीबन 16 बुराइयां जनम लेती हैं जिन में से छे येह हैं :

1 . . . ترمذی، کتاب صفة القیامة . . . الخ، ۵۶-باب، ۴/۲۲۸، حدیث: ۲۵۱۸۔

2 .....मिरआतुल मनाजीह, 6 / 655 ।

3 . . . کنزالعمال، کتاب الاخلاق، قسم الاقوال، ۳/۱۶۳، حدیث: ۷۱۶۰۔

4 .....गुस्से का इलाज, स. 27 ।

(1) ह़सद (2) ग़ीबत (3) चुग़ली (4) क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ (5) झूट और (6) गाली गलोच।[1]

सुवाल अगर गुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी पर ख़त्म हो तो क्या वई़द है ?

जवाब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जहन्नम का एक दरवाज़ा है जिस से वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का गुस्सा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी पर ही ख़त्म होता है।[2]

सुवाल ह़ज़रते ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی गुसीले शख़्स के लिये क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ आदमी ! गुस्से में तू ख़ूब उछलता है, कहीं अब की उछाल तुझे दोज़ख़ में न डाल दे।[3]

सुवाल अगर गुस्से के सबब गुनाह सरज़द हो जाता हो तो क्या इलाज किया जाए ?

जवाब ऐसे शख़्स को चाहिये कि हर नमाज़ के बा'द بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم 21 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले।[4]

सुवाल किस ख़ुश नसीब का दिल सुकून व ईमान से भर दिया जाता है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि "जिस शख़्स ने गुस्सा ज़ब्त़ कर लिया बा

1.....गुस्से का इलाज, स. 7-8।

2 ...كنزالعمال، كتاب الاخلاق، ۳/ ۲۰۸، حديث: ۷۷۰۳۔

3 ...احياء العلوم، ۳/ ۲۰۵۔

4.....गुस्से का इलाज, स. 30।

वुजूद इस के कि वोह गुस्सा नाफ़िज़ करने पर कुदरत रखता था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को सुकून व ईमान से भर देगा।"(1)

सुवाल क्या गुस्से का इलाज करना ज़रूरी है ?

जवाब जी हां, हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : गुस्से का इलाज करना वाजिब है क्यूंकि बहुत सारे लोग गुस्से के बाइस जहन्नम में जाएंगे।(2)

सुवाल हदीसे मुबारका में गुस्से की आग बुझाने का क्या तरीक़ा बयान किया गया है ?

जवाब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : बेशक गुस्सा शैतान की तरफ़ से है और शैतान आग की पैदाइश है और आग पानी से बुझती है लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए तो वोह वुज़ू कर लिया करे।(3)

सुवाल क्या गुस्से की आदत निकालने के लिये कोई रूहानी इलाज भी है ?

जवाब जी हां, गुस्से की आदत ख़त्म करने के लिये येह दो विर्द किये जा सकते हैं : (1) चलते फिरते कभी कभी يَااَللّٰهُ يَارَحْمٰنُ يَارَحِيْمُ कह लिया करे। (2) चलते फिरते يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن पढ़ता रहे।(4)

सुवाल जब गुस्से में अपने आप पर क़ाबू न हो रहा हो तो खुद को कैसे समझाएं ?

जवाब ऐसे वक़्त में खुद को यूं समझाएं कि मुझे दूसरों पर अगर कुछ

---

1 . . . جامع صغیر ص ۵۴۱، حدیث: ۸۹۹۷۔

2 . . . کیمیائے سعادت، ۲/۲۰۱۔

3 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، ۴/۳۲۷، حدیث: ۴۷۸۴۔

4 .....गुस्से का इलाज, स. 30।

कुदरत हासिल भी है तो इस से बेहद ज़ियादा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर क़ादिर है, अगर मैं ने गुस्से में आ कर किसी की दिल आज़ारी या हक़ तलफ़ी कर डाली तो क़ियामत के रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से मैं किस तरह महफ़ूज़ रह सकूंगा ?[1]

तकब्बुर

सुवाल तकब्बुर किसे कहते हैं ?

जवाब हक़ की मुख़ालफ़त और लोगों को हक़ीर जानने का नाम तकब्बुर है।[2]

सुवाल तकब्बुर से बचने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स तकब्बुर, ख़ियानत और दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।[3]

सुवाल तकब्बुर की कितनी अक़्साम हैं ?

जवाब (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूलों के मुक़ाबले में तकब्बुर (3) बन्दों के मुक़ाबले में तकब्बुर।[4]

सुवाल "तकब्बुर" के अस्बाब बयान करें ?

जवाब (1) इल्म (2) अमल (3) हसब व नसब (4) हुस्नो जमाल

---

1 .....गुस्से का इलाज, स. 15 ।

2 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانه، ص ۶۰، حدیث: ۹۱۔

3 . . . ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب التشدید فی الدین، ۳/۱۴۴، حدیث: ۲۴۱۲۔

4 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان المتکبر علیه ودرجاته . . . الخ، ۳/۴۲۴۔

(5) ताक़त व कुव्वत (6) मालो दौलत और (7) पैरूकारों की कसरत ।[1]

सुवाल क्या इल्म की भी कोई आफ़त है ?

जवाब जी हां, एक रिवायत में "तकब्बुर" को इल्म की आफ़त क़रार दिया गया है ।[2]

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर करने वाले फ़िरऔन का क्या अन्जाम हुवा ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे और उस की क़ौम को दरयाए कुल्ज़ुम में गर्क़ कर दिया और फिर मरे हुवे बैल की त़रह़ दरया के किनारे पर फैंक दिया ताकि वोह बा'द वालों के लिये निशाने इब्रत बन जाए ।[3]

सुवाल बन्दों के मुक़ाबले में तकब्बुर से क्या मुराद है ?

जवाब इस से मुराद येह है कि अपने आप को बेहतर और दूसरे को ह़क़ीर जान कर उस पर बड़ाई चाहना और मुसावात (या'नी बाहमी बराबरी) को ना पसन्द करना ।[4]

सुवाल ह़सब व नसब तकब्बुर का सबब किस त़रह़ बनता है ?

जवाब इस त़रह़ कि आ'ला नसब इन्सान अपने ख़ानदान के बलबूते पर अकड़ता और दूसरों को ह़क़ीर जानता है ।[5]

---

1 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان مابہ التکبر، ۳/۴۲۶۔

2 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان مابہ التکبر، ۳/۴۲۶۔

3 . . . حدیقۃ ندیۃ، الصنف الاول، والخلق الثانی عشر . . . الخ، المبحث الثانی، ۱/۵۴۹۔
الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الاولی، ۱/۷۱، ملتقطاً۔

4 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان المتکبر علیہ ودرجاتہ . . . الخ، ۳/۴۲۵۔

5 . . . احیاء العلوم، کتاب ذم الکبر والعجب، الشطر الاول، بیان المتکبر علیہ . . . الخ، ۳/۴۳۱۔

सुवाल वोह कौन से लोग हैं जो बिग़ैर हिसाब के जहन्नम में दाख़िल होंगे ?

जवाब (1) उमरा ज़ुल्म की वज्ह से (2) अ़रब अ़सबिय्यत की वज्ह से (3) रईस और सरदार तकब्बुर की वज्ह से (4) तिजारत करने वाले झूट की वज्ह से (5) अह्ले इल्म ह़सद की वज्ह से (6) मालदार बुख़्ल की वज्ह से।[1]

सुवाल पाईंचे टख़्नों से नीचे रखना किस सूरत में ह़राम है ?

जवाब इमामे अह्ले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पाईंचों का का'बैन (या'नी टख़्नों) से नीचा होना अगर बराहे उ़ज्ब व तकब्बुर (या'नी ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर की वज्ह से) है तो क़त्अ़न ममनूअ़ व ह़राम है।[2]

सुवाल क्या थोड़े से तकब्बुर की भी मुआ़फ़ी नहीं ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के दिल में ज़र्रा बराबर तकब्बुर होगा वोह जन्नत में नहीं जाएगा।[3]

सुवाल क्या अच्छे कपड़े और अच्छे जूते पसन्द होना भी तकब्बुर है ?

जवाब किसी ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : किसी को येह पसन्द होता है कि कपड़े अच्छे हों, जूते अच्छे हों क्या येह भी तकब्बुर है ? तो हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला जमील है जमाल को दोस्त रखता है और तकब्बुर ह़क़ से सरकशी करने और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।[4]

---

1 . . . كنزالعمال، كتاب المواعظ . . . الخ، الفصل الخامس، الجزء السادس عشر، ٨/٣٧، حديث: ٤٤٠٢٣۔

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 164।

3 . . . مسلم، كتاب الإيمان، باب تحريم الكبر وبيانه، ص ٦١، حديث: ٩١۔

4 . . . مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم الكبر وبيانه، ص ٦٠، حديث: ٩١۔

रियाकारी

सुवाल रियाकारी किसे कहते हैं ?

जवाब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के इलावा किसी और निय्यत या इरादे से इबादत करना रियाकारी है। मसलन लोगों पर अपनी इबादत गुज़ारी की धाक बिठाना मक़्सूद हो कि लोग उस की ता'रीफ़ करें, उसे इ़ज़्ज़त दें और उस की ख़िदमत में माल पेश करें ।(1)

सुवाल ह़दीसे पाक में किस बुराई को शिर्के असग़र फ़रमाया गया है ?

जवाब हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे तुम पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ शिर्के असग़र का है। लोगों ने अ़र्ज़ की : शिर्के असग़र क्या है ? इरशाद फ़रमाया : रियाकारी ।(2)

सुवाल रियाकारी के दरजात कौन कौन से हैं ?

जवाब ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : रिया के बहुत दर्जे हैं, हर दर्जे का हुक्म अ़लाहि़दा है, बा'ज़ रिया शिर्के असग़र हैं, बा'ज़ रिया ह़राम, बा'ज़ रिया मकरूह, बा'ज़ सवाब ।(3)

सुवाल रियाकारी की अक़्साम बयान करें ?

जवाब रिया की दो क़िस्में हैं : (1) जली (या'नी वोह रियाकारी जो

---

1 ...الزواجر، الباب الاول، الكبيرة الثانية، ۱/۸۲۔

2 ...مسند امام احمد، حديث محمود بن لبيد رضى الله عنه، ۹/۱۶۰، حديث: ۲۳۶۹۲۔

3 .....मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 127 ।

बिल्कुल वाज़ेह़ हो) (2) ख़फ़ी (या'नी वोह रियाकारी जो पोशीदा हो) ।(1)

सुवाल रियाकारी की सूरतें और इन के अह़काम बयान करें ?

जवाब रिया की दो सूरतें हैं, कभी तो अस्ल इ़बादत ही रिया के साथ करता है कि मसलन लोगों के सामने नमाज़ पढ़ता है और कोई देखने वाला न होता तो पढ़ता ही नहीं येह रियाए कामिल है कि ऐसी इ़बादत का बिल्कुल सवाब नहीं। दूसरी सूरत येह है कि अस्ल इ़बादत में रिया नहीं, कोई होता या न होता बहर ह़ाल नमाज़ पढ़ता मगर वस्फ़ में रिया है कि कोई देखने वाला न होता जब भी पढ़ता मगर इस ख़ूबी के साथ न पढ़ता। येह दूसरी क़िस्म पहली से कम दर्जे की है इस में अस्ल नमाज़ का सवाब है और ख़ूबी के साथ अदा करने का जो सवाब है वोह यहां नहीं कि येह रिया से है इख़्लास से नहीं।(2)

सुवाल क़ियामत के दिन रियाकार को किन नामों से पुकारा जाएगा ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रोज़े क़ियामत रियाकारों को तमाम लोगों के सामने इन चार नामों से पुकारा जाएगा : ऐ काफ़िर ! ऐ बदकार ! ऐ धोके बाज़ ! ऐ ख़सारा पाने वाले।(3)

सुवाल जहन्नम की जिस वादी से जहन्नम भी 400 मरतबा रोज़ाना पनाह मांगता है उस में कौन जाएगा ?

---

(1) ...احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الثانی، بیان ریاء الخفی الذی ہو اخفی من دبیب النمل، ۳/۳۷۴۔

(2) ...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی البیع، ۹/۷۰۱-۷۰۲۔
बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा, 16,3 / 637 मुल्तक़त़न।

(3) ...الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الثانیۃ، ۱/۸۵۔

जवाब येह वादी इस उम्मत में से कुरआने करीम के रियाकार ह़ाफ़िज़, ग़ैरुल्लाह के लिये सदक़ा करने वाले रियाकार, बैतुल्लाह के रियाकार ह़ाजी और राहे ख़ुदा में निकलने वाले रियाकार के लिये बनाई गई है।[1]

सुवाल रियाकार को किस बड़ी ने'मत से मह़रूमी की वई़द सुनाई गई है ?

जवाब रियाकार को जन्नत से मह़रूमी की वई़द सुनाई गई है, ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर "रियाकार" पर जन्नत को ह़राम कर दिया है।[2]

सुवाल क्या ज़र्रा भर रियाकारी भी नुक़्सान देह है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला उस अ़मल को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में एक ज़र्रा बराबर भी रियाकारी हो।[3]

सुवाल च्यूंटी की चाल से भी ज़ियादा ख़फ़ीफ़ अ़मल कौन सा होता है ?

जवाब रियाकारी।[4]

सुवाल दिखावे के लिये अ़मल करने वालों से बरोज़े क़ियामत क्या इरशाद होगा ?

जवाब ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत में जब लोगों को जम्अ़ फ़रमाएगा तो एक मुनादी निदा करेगा : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किये गए अ़मल में किसी को शरीक किया (या'नी रियाकारी की) तो वोह अपना सवाब उसी ग़ैरुल्लाह से ले।[5]

---

1 ...معجم کبیر، ۱۲/۱۳۶، حدیث:۱۲۸۰۳۔

2 ...جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الہمزۃ، الہمزۃ مع النون، ۲/۲۴۲، حدیث:۵۳۲۹۔

3 ...الترغیب والترھیب، الترھیب من الریاء...الخ، ۱/۳۶، حدیث:۲۷۔

4 ...الزواجر، الباب الاول، الکبیرۃ الثانیۃ، ۱/۹۲۔

5 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الکہف، ۵/۱۰۵، حدیث:۳۱۶۵۔

सुवाल रियाकारी के ख़ौफ़ से किसी नेक काम को छोड़ देना कैसा है ?

जवाब रियाकारी के ख़ौफ़ से उस काम को छोड़ देना येह बहुत ग़लत़ सोच है और शैत़ान की मानना है ।(1)

सीरत

सुवाल हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस तारीख़ को दुन्या में तशरीफ़ लाए ?

जवाब 12 रबीउ़ल अव्वल ।(2) मुत़ाबिक़ 20 अप्रेल 571 ईसवी को तशरीफ़ लाए ।(3)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के किस ख़ानदान से था ?

जवाब नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तअ़ल्लुक़ अ़रब के मश्हूरो मा'रूफ़ और मुअ़ज़्ज़ज़ व मोह़्तशम ख़ानदाने क़ुरैश से था ।(4)

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के परदादा का नाम क्या है ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के परदादा जान का नाम हाशिम है ।(5)

सुवाल रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस नबी की औलाद में से हैं ?

---

1 ...احیاء العلوم، کتاب ذم الجاہ والریاء، الشطر الثانی، بیان ترک الطاعات خوفاً من الریاء ... الخ، ۳/۳۹۵-

2 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، باب الشہر الذی ولد فیہ رسول اللہ، ۱/ ۹، حدیث: ۴-

3 .....फ़तावा रज़विय्या, 26 / 414 ।

4 ...مسلم، کتاب الفضائل، فضل نسب النبی صلی اللہ علیہ وسلم...الخ، ص ۱۲۴۹، حدیث: ۲۲۷۶-

5 ...بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مبعث النبی، ۲/ ۵۷۳-

जवाब हुज़ूरे अकरम, नबिय्ये मोहतशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में से हैं।(1)

सुवाल हज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात कब हुई ?

जवाब हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्र शरीफ़ जब छे बरस की थी तो आप की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल हो गया।(2)

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ाई वालिदा का नाम बताइये ?

जवाब रहमते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ाई वालिदा का नाम हज़रते हलीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا है।(3)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शहज़ादे कितने थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चार शहज़ादे हुवे जिन के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) हज़रते सय्यिदुना क़ासिम (2) हज़रते सय्यिदुना त़य्यिब (3) हज़रते सय्यिदुना त़ाहिर और (4) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) इन में से पहले तीन शहज़ादे उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हैं और येह ज़ुहूरे इस्लाम से पहले इन्तिक़ाल फ़रमा गए थे और चौथे शहज़ादे हज़रते सय्यिदतुना मारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हैं।(4)

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादियां कितनी थीं ?

जवाब रहमते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चार शहज़ादियां थीं और इन

---

1 . . . دلائل النبوة للبيهقى، باب الشهر الذى ولد فيه رسول الله، ۱/۹، حديث: ۴۔

2 . . . المواهب اللدنيه، المقصد الاول، ذكر رضاعته، ۱/۸۸، ملخصاً۔

3 . . . مسند ابو يعلٰى، حديث حليمة بنت الحارث، ۶/۱۷۱، حديث: ۷۱۲۷۔

4 .....बशीरुल क़ारी, स. 106।

के अस्माए मुबारका येह हैं : (1) हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (2) हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या (3) हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम और (4) ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ)[1]

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफियों की ता'दाद बयान करें ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफियों की ता'दाद 6 है।[2]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चांद के जो दो टुकड़े कर के दिखाए थे वोह किस किस पहाड़ पर देखे गए थे ?

जवाब एक टुकड़ा "जबले अबू क़ुबैस" और दूसरा टुकड़ा "जबले कुऐक़िआन" पर देखा गया।[3]

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े करीमा के बारे में कुछ बताइये ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े हसना के बारे में खुद ख़ालिक़े अख़्लाक़ عَزَّوَجَلَّ ने येह फ़रमा दिया : ﴿وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِیْمٍ﴾ (پ۲۹، القلم:۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बेशक तुम्हारी खू बू बड़ी शान की है।" हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم महासिने अख़्लाक़ के तमाम गोशों के जामेअ़ थे। या'नी हिल्म व अ़फ़्व, रह़्मो करम, अ़द्लो इन्साफ़, जूदो सख़ा, ईसार व क़ुरबानी, मेहमान नवाज़ी, अ़दम तशद्दुद, शुजाअ़त, ईफ़ाए अ़ह्द, हुस्ने मुआ़मला, सब्रो क़नाअ़त, नर्म गुफ़्तारी, ख़ुश रूई, मिलनसारी, मुसावात, ग़म ख़्वारी, सादगी

1 ... فقہ الاکبر، ابناء رسول اللہ وبناتہ، ص ۱۹۹۔
2 ... مواہب اللدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الرابع، ۱/۴۲۵۔
3 ... خصائص کبری، باب انشقاق القمر، ۱/۲۱۰۔

व बे तकल्लुफ़ी, तवाज़ोअ़ व इन्किसारी, ह़यादारी की इतनी बुलन्द मन्ज़िलों पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ाइज़ व सरफ़राज़ हैं कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने एक जुम्ले में इस की सह़ीह़ तस्वीर खींचते हुवे इरशाद फ़रमाया कि كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآن या'नी ता'लीमाते कुरआन पर पूरा पूरा अ़मल येही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ थे।[1]

सुवाल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी किस सिने हिजरी में हुवा ?

जवाब ग्यारह सिने हिजरी।[2]

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

सुवाल कुरआने पाक में किसे सब से बड़ा परहेज़गार कहा गया ?

जवाब कुरआने पाक में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को सब से बड़ा परहेज़गार कहा गया। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝۱۷﴾ (پ۳۰،الليل:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बहुत जल्द उस (जहन्नम) से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।" इस आयत में اَتْقٰى (सब से बड़ा परहेज़गार) से मुराद सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं। इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی तफ़्सीरे कबीर में इरशाद फ़रमाते हैं : "मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ है कि येह आयते मुबारका अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में नाज़िल हुई।"[3]

---

1 .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 599-600, मुल्तक़त़न।

2 ...دلائل النبوة للبيهقي، جماع ابواب مرض رسول الله صلى الله عليه وسلم...الخ، باب ماجاء في الوقت...الخ، ۷/۲۳۴۔

3 ...تفسير كبير پ۳۰، الليل: ۱۷، ۱۱/۱۸۷۔

सुवाल शाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में कुछ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बयान फ़रमाएं ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : (1) "फ़िरिश्ते अबू बक्र सिद्दीक़ को रोज़े क़ियामत लाएंगे और अम्बिया व सिद्दीक़ीन के साथ जन्नत में जगह देंगे ।"[1] (2) "मुझ पर जिस किसी का एह्सान था मैं ने उस का बदला चुका दिया है मगर अबू बक्र के मुझ पर वोह एह्सानात हैं जिन का बदला **अल्लाह** तआला रोज़े क़ियामत उन्हें अ़ता फ़रमाएगा ।"[2] (3) "मेरी उम्मत के लिये सब से ज़ियादा मेहरबान अबू बक्र हैं ।"[3]

सुवाल अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल कौन हैं ?

जवाब "बा'दे अम्बिया व मुर्सलीन (इन्सो मलक) तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्न व मलक (फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उमर फ़ारूक़, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)"[4]

सुवाल ख़लीफ़ए अव्वल का नाम, कुन्यत और लक़ब क्या है, नीज़ आप कब पैदा हुवे ?

जवाब ख़लीफ़ए अव्वल जा नशीने पैग़म्बर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नामे नामी "अ़ब्दुल्लाह", कुन्यत

---

1 ...كنز العمال، فضل ابي بكر الصديق، ٦/٢٥٥، حديث: ٣٢٦٢٤۔

2 ...ترمذى، كتاب المناقب، باب فى مناقب ابى بكر وعمر، ٥/٣٧٤، حديث: ٣٦٨١۔

3 ...ترمذى، كتاب المناقب، باب مناقب معاذ بن جبل، ٥/٤٣٥، حديث: ٣٨١٥۔

4 .....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 241 ।

"अबू बक्र" और लक़ब "सिद्दीक़ व अ़तीक़" है, आप आ़मुल फ़ील के दो साल छे माह बा'द पैदा हुवे।(1)

सुवाल आप के लक़ब "सिद्दीक़" और अ़तीक़" की वज्ह बयान करें नीज़ येह अल्क़ाब आप को किस ने दिये ?

जवाब दोनों अल्क़ाबात आप को बारगाहे रिसालत से अ़ता हुवे। वाक़िअ़ए मे'राज की तस्दीक़ करने के सबब आप को सिद्दीक़ कहा गया जब कि अ़तीक़ कहने की वज्ह येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा आप को फ़रमाया : "اَنْتَ عَتِيْقٌ مِّنَ النَّارِ या'नी तुम जहन्नम से आज़ाद हो।" तब से आप को अ़तीक़ कहा जाने लगा।(2)

सुवाल उन शख़्सिय्यत का नाम बताइये जिन्हों ने आज़ाद मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल फ़रमाया ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।(3)

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से वालिहाना अ़क़ीदत व मह़ब्बत और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जानिसारी की कुछ झलक बताइये ?

जवाब जिस वक़्त कुफ़्फ़ार आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जान के दुश्मन थे उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दिफ़ाअ़ करना और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह मदीने की

---

1 ...ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب...الخ، ذکر السبب...الخ، ۹/۶، حدیث: ۶۸۲۵۔ سیرت حلبیہ، ذکر اول الناس ایمانابہ، ۱/۳۹۰۔ریاض النضرۃ، ۱/۷۷، الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، ۴/۱۴۵۔

2 ...ابن حبان، کتاب اخبار عن مناقب الصحابۃ، ۹/۶۔ फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 33
الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، ۸/۳۳۲۔ مستدرک، ۴/۲۵، حدیث: ۴۵۱۵۔

3 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۴۱۱، حدیث: ۳۷۵۵۔

तरफ़ हिजरत करना, ग़ारे सौर में सांप के डसने पर सब्र करना यूंही तमाम ग़ज़्वात में सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा न होना और अपने घर का सारा माल हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करना येह सब बातें रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वालिहाना अ़क़ीदत व महब्बत और आप की जानिसारी की एक बड़ी झलक हैं।[1]

सुवाल सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कब मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे और कितना अ़र्सा ख़लीफ़ा रहे ?

जवाब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के दिन 12 रबीउ़ल अव्वल बरोज़ पीर 11 सिने हिजरी को मन्सबे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन हुवे। आप की मुद्दते ख़िलाफ़त दो साल, तीन माह और कुछ अय्याम थी।[2]

सुवाल ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहला काम क्या फ़रमाया ?

जवाब ख़लीफ़ा बनने के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सरकर्दगी में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भेजे गए उस लश्कर को रवाना किया जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के सबब मक़ामे जुरुफ़ पर ठहरा हुवा था।[3]

सुवाल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में जो नुमायां कारनामे सर अन्जाम दिये उन में से कुछ बयान करें ?

1.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 107-198-251-209-269।

2 . . . صفۃ الصفوۃ، ذکر خلافۃ ابی بکر، ۱/۱۳۲۔ طبقات ابن سعد، ذکر وصیۃ ابی بکر، ۳/۱۵۱۔

3 . . . تاریخ ابن عساکر، اسامۃ بن زید بن حارثۃ، ۲۶/۸۵۹۔ طبقات ابن سعد، ۴/۵۰۔

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में बहुत से नुमायां कारनामे सर अन्जाम दिये जिन में से चन्द येह हैं : (1) मुन्किरीने ज़कात की सरकोबी (2) मुर्तद्दीन की सरकोबी (3) झूटे मुद्दइये नुबुव्वत मुसैलमा कज़्ज़ाब की सरकोबी (4) इराक़ व शाम और इस के मुल्हक़ा अ़लाक़ों में फ़ुतूहात का आग़ाज़ और (5) जम्ए क़ुरआन जो सब से अहम कारनामा है ।[1]

सुवाल आप की ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों को क्या क्या फ़ुतूहात मिलीं ?

जवाब आप की ख़िलाफ़त के दौर में मुसलमानों को बहुत सी फ़ुतूहात हासिल हुईं जिन में से चन्द येह हैं : (1) फ़त्हे ह़ीरा (2) फ़त्हे अम्बार (3) फ़त्हे ऐ़नुत्तमर (4) फ़त्हे दूमतुल जन्दल (5) फ़त्हे उर्दुन और (6) फ़त्हे अजनादैन वग़ैरा । मुन्किरीने ज़कात और मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ फ़ुतूहात इस के इ़लावा हैं ।[2]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल कब हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल 22 जुमादल उख़रा 13 सिने हिजरी मुत़ाबिक़ 23 अगस्त 634 ईसवी बरोज़ मंगल हुवा और आप की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई ।[3]

1.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 364-404-378-409 ।
2.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 404-413 ।
3.....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 468-سنن کبری، ۳/۵۵۷، حدیث:۲۲۶۳-
طبقات ابن سعد، ۳/۱۵۴- ریاض النضرۃ، ۱/۲۵۸-

सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुवाल किस सहाबी की राए के मुवाफ़िक़ कुरआने पाक की कई आयतें नाज़िल हुईं ?

जवाब वोह सहाबी हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जिन की राए के मुवाफ़िक़ तक़रीबन 20 आयाते तृय्यिबा नाज़िल हुईं। हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : बेशक कुरआने करीम में हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए के मुवाफ़िक़ अह़काम मौजूद हैं।[1]

सुवाल ह़दीसे पाक में शाने फ़ारूके आ'ज़म किस तरह बयान की गई है ?

जवाब अहादीसे तृय्यिबा में हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कसीर फ़ज़ाइल वारिद हैं जिन में एक अज़ीम फ़ज़ीलत हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं बयान फ़रमाई : "अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उमर होता।"[2]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत व लक़ब क्या है और आप कब पैदा हुवे ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू हफ़्स" और लक़ब "फ़ारूक़" है। आप आमुल फ़ील के तेरह साल बा'द मुताबिक़ 583 ईसवी पैदा हुवे।[3]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुरादे रसूल क्यूं कहते हैं ?

---

1 ... سیرت حلبیۃ، باب الھجرۃ الاولی الی ارض الحبشۃ...الخ، ۱/۴۷۴۔

2 ... ترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص...الخ، ۵/۳۸۵، حدیث:۳۸۰۶۔

3 ... تاریخ الخلفاء، ص۱۰۸-۱۱۴۔

जवाब हुज़ूर रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इ़ज़्ज़ते इस्लाम के लिये आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को बारगाहे इलाही से मांगा था और यूं दुआ़ फ़रमाई थी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! खुसूसन उ़मर बिन ख़त्ताब के ज़रीए़ इस्लाम को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा।"(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस्लाम और मुसलमानों को कैसे तक़्वियत पहुंचाई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इस्लाम लाने के बा'द हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के साथ मिल कर ह़रमे मक्का में अ़लानिय्या नमाज़ अदा फ़रमाई, यूं आप के क़बूले इस्लाम से इस्लाम व मुसलमानों को तक़्वियत ह़ासिल हुई।(2)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मुतम्मिमुल अरबई़न क्यूं कहते हैं ?

जवाब मुतम्मिमुल अरबई़न का मत़लब है कि 40 का अ़दद पूरा करने वाले चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه चालीसवें मुसलमान थे लिहाज़ा आप को इस लक़ब से भी याद किया जाता है।(3)

सुवाल सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़लीफ़ा कब बने और कितना अ़र्सा ख़लीफ़ा रहे ?

---

1 . . . ابن ماجه، كتاب السنة، فضل عمر بن الخطاب، ۱/۷۷، حديث: ۱۰۵۔

2 . . . طبقات ابن سعد، ومن بنی عدی بن کعب بن لؤی، عمر بن الخطاب، ۳/ ۲۰۴۔

3 . . . نوادر الاصول، الاصل الحادی والاربعون والمائتان، ۲/ ۹۱۵، تحت رقم: ۱۲۰۹۔

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 22 जुमादल उख़रा 13 सिने हिजरी बरोज़ मंगल मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त दस साल, पांच माह और इक्कीस दिन रही ।(1)

सुवाल सब से पहले "अमीरुल मोमिनीन" किस ख़लीफ़ा को कहा गया ?

जवाब सब से पहले हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल मोमिनीन कहा गया ।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिआ़या के साथ कैसा बरताव फ़रमाते ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि अपनी रिआ़या की हर वक़्त ख़बरगीरी फ़रमाते रहते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरा का दौरा फ़रमाते अगर कोई हाजत मन्द दिखाई देता तो उस की मदद करते ।(3)

सुवाल दौरे फ़ारूक़ी में कितने शहर फ़त्ह हुवे और कितनी मसाजिद ता'मीर हुईं ?

जवाब रौज़तुल अह़बाब में है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौर में एक हज़ार छत्तीस (1036) शहर मअ़ मुज़ाफ़ात फ़त्ह हुवे, चार हज़ार (4000) मसाजिद की ता'मीर हुई ।(4)

सुवाल दौरे फ़ारूक़ी की कसीर फ़ुतूह़ात का अन्दाज़ा किस चीज़ से लगाया जा सकता है ?

---

(1) ...طبقات ابن سعد، عمر بن الخطاب، ۳/۲۰۸-۲۷۸، رقم: ۵۲۔

(2) ...الادب المفرد، باب التسليم على الامير، ص ۲۶۴، رقم: ۱۰۲۳۔

(3) .....फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म, 2 / 120-124 ।

(4) .....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 560 ।

जवाब हज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुबारक दौर में मुसलमानों की कसीर फ़ुतूह़ात का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप के अ़ह्दे ख़िलाफ़त में सल्त़नते इस्लामिय्या में 13 लाख नौ हज़ार पांच सौ एक मुरब्बअ़ मील का इज़ाफ़ा हुवा।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब हुई और आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब नमाज़े फ़ज्र में अबू लुअ लुअ फ़ीरोज़ मजूसी के ह़म्ले के नतीजे में 63 साल की उ़म्र में यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 24 सिने हिजरी को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हुई और आप की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई।(2)

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत व लक़ब क्या है और आप कब पैदा हुवे ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और अबू अ़म्र है और लक़ब ज़ुन्नूरैन है। आप वाक़िअ़ए फ़ील के छटे साल मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुवे।(3)

सुवाल ह़दीस में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क्या फ़ज़ीलत वारिद हुई है ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के

1.....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, 2 / 686।

2...طبقات ابن سعد،عمر بن الخطاب،۳/۲۷۸-۲۸۰،رقم:۵۶-

3...الریاض النضرۃ،جزء:۲،۳/۵-تھذیب الاسماء واللغات،۲/۵۲-تاریخ الخلفاء،ص۱۱۸-

बहुत से फ़ज़ाइल अह़ादीसे त़य्यिबा में वारिद हुवे हैं जिन में से एक येह भी है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर नबी का एक रफ़ीक़ है और जन्नत में मेरा रफ़ीक़ उ़स्मान है।"(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम कब क़बूल फ़रमाया ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिअ़्सते नबवी के पहले साल इस्लाम लाए। आप ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दा'वत पर इस्लाम क़बूल किया और चौथे नम्बर पर इस्लाम लाए। खुद इरशाद फ़रमाते हैं : मैं इस्लाम क़बूल करने वाले चार अश्ख़ास में से चौथा हूं।"(2)

सुवाल दो मरतबा जन्नत ख़रीदने का ए'ज़ाज़ किन सह़ाबी को ह़ासिल है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, मालिके जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो मरतबा जन्नत ख़रीदी, एक बार बिरे रूमा ख़रीद कर मुसलमानों के लिये वक़्फ़ किया और दूसरी बार ग़ज़्वए तबूक के लिये सामाने जिहाद फ़राहम किया।(3)

सुवाल किस सह़ाबी के निकाह़ में यके बा'द दीगरे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो शहज़ादियां आईं ?

जवाब वोह खुश नसीब सह़ाबी हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं कि आप के निकाह़ में पहले हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

---

1 . . . ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عثمان بن عفان، ۵/۳۹۰، حدیث: ۳۷۱۷۔

2 . . . اسد الغابۃ، ۳/۲۰۷۔ سیرت سید الانبیاء، ص ۷۳۔

3 . . . مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب اشتری عثمان الجنۃ . . . الخ، ۴/۲۸، حدیث: ۴۲۲۶۔

और उन के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا आईं और इसी वज्ह से आप को "ज़ुन्नूरैन (दो नूरों वाले)" कहा जाता है।[1] जब ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا का भी इन्तिक़ाल हो गया तो हु़ज़ूर ताजदारे नुबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मेरी तीसरी बेटी होती तो मैं उस का निकाह़ भी उ़स्मान से कर देता।"[2]

सुवाल किस सह़ाबी से फ़िरिश्ते भी ह़या करते थे ?

जवाब ह़दीसे पाक में है कि (ह़ज़रत) उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से तो फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं।[3]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सख़ावत की कोई मिसाल बयान कीजिये ?

जवाब हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ग़ज़्वए तबूक की तय्यारी के लिये लोगों को तरग़ीब दिलाई तो सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! पालान और दीगर मुतअ़ल्लिक़ा सामान समेत 100 ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं। दूसरी बार तरग़ीब दिलाने पर 200 और तीसरी बार तरग़ीब दिलाने पर 300 ऊंटों की ज़िम्मेदारी ली। रावी फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि हु़ज़ूर रह़मते कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए और दो बार इरशाद फ़रमाया : "आज से उ़स्मान जो कुछ करे इस पर मुवाख़ज़ा नहीं।"[4]

---

1 . . . تہذیب الاسماء واللغات، ۲/۵۲۔

2 . . . معجم کبیر، ۱۷/۱۸۴، حدیث: ۴۹۰۔ اسد الغابۃ، ۳/۲۰۷۔

3 . . . مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عثمان بن عفان، ص ۱۳۰۷، حدیث: ۲۴۰۱۔

4 . . . ترمذی، کتاب المناقب، مناقب عثمان بن عفان، ۵/۳۹۱، حدیث: ۳۷۲۰۔

सुवाल हज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जामेउ़ल क़ुरआन क्यूं कहा जाता है ?

जवाब दौरे सिद्दीक़ी में क़ुरआनी सूरतें अगर्चे मुतफ़र्रिक़ मवाक़ेअ़ (जुदा गाना मक़ामात और मुख़्तलिफ़ जगहों) से एक मजमूए़ में मुज्तमअ़ हो गई थीं मगर इन जम्अ़ किये गए मुख़्तलिफ़ सहाइफ़ का एक मुस्ह़फ़ में नक़्ल होना, फिर इस मुस्ह़फ़ के नुस्ख़े को इस्लामी ममालिक के बड़े बड़े शहरों में तक़्सीम करना वग़ैरा का काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोमिनीन जामेउ़ल क़ुरआन ज़ुन्नूरैन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से लिया इस लिये सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जामेउ़ल क़ुरआन कहते हैं।(1)

सुवाल दौरे उ़स्मानी के बा'ज़ कारहाए नुमायां के मुतअ़ल्लिक़ बताइये ?

जवाब (1) जम्ए़ क़ुरआन (2) मस्जिदे ह़राम की तौसीअ़ (3) मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ और इस में मुनक़्क़श (बेल बूटे वाले) पथ्थर लगाना (4) ईरान के बहुत से शहरों का फ़त्ह़ होना (5) रूम का वसीअ़ रक़्बा फ़त्ह़ करना (6) पहला बह़री बीड़ा तय्यार कर के क़ुबरुस पर ह़म्ला करना और उसे इस्लामी ह़ुकूमत में शामिल करना। (7) अफ़्रीक़ा की फ़त्ह़ और (8) उन्दुलुस की फ़त्ह़।(2)

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कब ख़लीफ़ा बने और आप का दौरे ख़िलाफ़त कितने अ़र्से रहा ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यकुम मुह़र्रम 24 सिने हिजरी को ख़लीफ़ा बने और आप का दौरे ख़िलाफ़त 12 साल है।(3)

1.....फ़तावा रज़विय्या, 26 / 450-452 माख़ूज़न।

2...تاریخ الخلفاء، ص۱۵۴-۱۵۵۔

3...تہذیب الاسماء واللغات، ۱/۲۹۸۔

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब और कैसे हुई ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को 18 जुल हि़ज्जतुल ह़राम 35 सिने हिजरी को तिलावते कुरआन की ह़ालत में शहीद किया गया।(1) आप के मुबारक ख़ून के क़त़रे कुरआने पाक की इस आयते मुबारका पर पड़े : ﴿فَسَیَكْفِیْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴾(پ۱، البقرۃ:۱۳۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ मह़बूब अ़न क़रीब **अल्लाह** उन की त़रफ़ से तुम्हें किफ़ायत करेगा और वोही है सुनता जानता।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई और आप का मज़ारे पाक कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नमाज़े जनाज़ा हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़ाई और आप का मज़ारे पाक "जन्नतुल बक़ीअ़" में "ह़श्शे कौकब" के हिस्से में है।(3)

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم

सुवाल शाने मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم में नाज़िल होने वाली कोई आयत बताएं ?

जवाब कुरआने पाक में इरशाद होता है : ﴿وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا ۝۸﴾(پ۲۹، الدھر:۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और

1 ...طبقات ابن سعد، عثمان بن عفان، ۳/۲۲، رقم: ۱۴-
2 ...طبقات ابن سعد، عثمان بن عفان، ۳/۵۴، رقم: ۱۴-
3 ...طبقات ابن سعد، عثمان بن عفان، ۳/۵۷، رقم: ۱۴-

यतीम और असीर को।" सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : येह आयत हज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और हज़रते फ़ातिमा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا और इन की कनीज़ फ़िज़्ज़ा के ह़क़ में नाज़िल हुई।[1]

सुवाल आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शान में कुछ फ़रामीने मुस्त़फ़ा बयान करें ?

जवाब शाने मुर्तज़वी में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं।[2] (2) मैं इ़ल्म का शहर हूं अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।[3] (3) अ़ली को देखना इ़बादत है।[4]

सुवाल आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का नाम, कुन्यत और लक़ब बयान फ़रमाएं नीज़ आप की विलादत कब और कहां हुई ?

जवाब आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की वालिदा ने आप का नाम "ह़ैदर" रखा।[5] और वालिद ने आप का नाम "अ़ली" रखा।[6], कुन्यत "अबुल ह़सन और अबू तुराब"[7] और "असदुल्लाह", "मुर्तज़ा", "कर्रार", "शेरे ख़ुदा" और "मौला मुश्किल कुशा" अल्क़ाबात

---

1 .....ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 29, अद्दहर, तह़्तुल आयत : 8, स. 1073।

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۳۹۸، حدیث: ۳۷۳۳۔

3 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب انا مدینۃ العلم وعلی بابھا، ۴/۹۶، حدیث: ۴۶۹۳۔

4 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب النظر الی علی عبادۃ، ۴/۱۱۸، حدیث: ۴۷۳۷۔

5 ...مسلم، کتاب الجھاد والسیر، باب غزوۃ ذی قرد وغیرھا، ص۱۰۰۵، حدیث: ۱۸۰۷۔

6 ...المجالسۃ وجواھر العلم، الجزء السابع، ۱/۳۵۰، رقم: ۹۰۴۔

7 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ۵/۳۹۷۔

हैं। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم आमुल फ़ील के 30 साल बा'द 13 रजबुल मुरज्जब बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक मक्कतुल मुकर्रमा में पैदा हुवे।(1)

सुवाल हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के वालिदैन का नाम बताएं ?

जवाब आप के वालिद का नाम अबू त़ालिब अ़ब्दे मनाफ़ बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब और वालिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा बिन्ते असद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا है।(2)

सुवाल वोह कौन से सह़ाबी हैं जिन्हों ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ेरे कफ़ालत तरबिय्यत पाई ?

जवाब ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم।(3)

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को "शेरे ख़ुदा" और "मौलाए काइनात" कहे जाने की वज्ह बयान फ़रमाएं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को "शेरे ख़ुदा" कहने की वज्ह येह है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को "शेरे ख़ुदा" का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया है जब कि "मौलाए काइनात" कहने की वज्ह येह है कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के मुतअ़ल्लिक़ फरमाया : "जिस का मैं मौला हूं अ़ली भी उस के मौला हैं।"(4)

सुवाल वोह कौन से सह़ाबी हैं जिन को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी तल्वार ज़ुल फ़िक़ार अ़त़ा फ़रमाई ?

---

1 ... الاصابة في تمييز الصحابة، ۴/ ۴۶۵ करामाते शेरे ख़ुदा, स. 11-12

2 ... طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة...الخ، علي بن ابي طالب، ۳/ ۱۳-۱۴۔

3 ... رياض النضرة، جزء:۳، ۲/ ۱۰۹۔

4 ... رياض النضرة، جزء:۱، ۱/ ۵۰_ ترمذی، کتاب المناقب، مناقب علی بن ابی طالب، ۵/ ۳۹۸، حدیث:۳۷۳۳۔

जवाब हज़रते मौलाए काइनात मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।[1]

सुवाल वोह कौन से ख़लीफ़ए राशिद हैं जिन की वालिदा और ज़ौजा का नाम एक ही है ।

जवाब हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ।[2]

सुवाल जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का निकाह़ शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा उस वक़्त आप की उ़म्र मुबारक क्या थी ?

जवाब 21 साल पांच माह ।[3]

सुवाल शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की तीनों ख़ुलफ़ाए राशिदीन से मह़ब्बत की कोई मिसाल बयान फ़रमाएं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तीनों ख़ुलफ़ाए राशिदीन से मह़ब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि आप ने अपने 3 साह़िब ज़ादों के नाम इन के नामों पर "अबू बक्र, उ़मर और उ़स्मान" रखे ।[4]

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कब ख़लीफ़ा बने और आप की ख़िलाफ़त कितने अ़र्से रही ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 19 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 35 सिने हिजरी को ख़लीफ़ा बने और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुद्दते ख़िलाफ़त 4 साल 8 माह 9 दिन है ।[5]

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۴۲/ ۱۷۔

2 ...طبقات ابن سعد، الطبقۃ الاولي علي السابقۃ...الخ، علي بن ابي طالب، ۳/ ۱۴۔

3 ...الاستیعاب، باب النساء وکناھن، فاطمۃ بنت رسول اللہ، ۴/ ۴۴۸۔

4 ...طبقات ابن سعد، الطبقۃ الاولي علي السابقۃ...الخ، علي بن ابي طالب، ۳/ ۱۴۔

5 ...طبقات ابن سعد، الطبقۃ الاولي علي السابقۃ...الخ، علي بن ابي طالب، ۳/ ۲۲۔ خلفائے راشدین، ص ۳۱۳۔

सुवाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत कब और किस त़रह़ हुई नीज़ आप की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत 19 रमज़ान 40 सिने हिजरी में अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जम के क़ातिलाना ह़म्ले की वज्ह से हुई और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।(1)

अ़शरए मुबश्शरा

सुवाल अ़शरए मुबश्शरा किन को कहते हैं ?

जवाब वोह दस सह़ाबी जिन के क़त़ई जन्नती होने की बिशारत व ख़ुश ख़बरी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ज़िन्दगी ही में सुना दी थी। इरशाद फ़रमाया : अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान जन्नती हैं, अ़ली जन्नती हैं, त़ल्ह़ा जन्नती हैं, ज़ुबैर जन्नती हैं, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ जन्नती हैं, सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं, सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जन्नती हैं।(2)

सुवाल किस सह़ाबी ने अपने अक्सर बेटों के नाम ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के नामों पर रखे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अक्सर बेटों के नाम ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के नामों पर हैं।(3)

---

1 . . . طبقات ابن سعد، الطبقة الاولي علي السابقة . . . الخ، علي بن ابي طالب، ۳/۲۷۔

2 . . . ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن . . . الخ، ۵/۴۱۶، حدیث: ۳۷۶۸۔ .....दस अ़क़ीदे, स. 100

3 . . . طبقات لابن سعد، الرقم: ۴۷، طلحه بن عبید الله، ۳/۱۲۰۔

सुवाल हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कितने बेटे थे ? इन के नाम बताइये ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग्यारह बेटे थे : (1) मुह़म्मद (2) इमरान (3) मूसा (4) या'कूब (5) इस्माईल (6) इस्ह़ाक़ (7) ज़करिय्या (8) यूसुफ़ (9) ई़सा (10) यह़्या (11) सालेह़ (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)[1]

सुवाल सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्या रिश्ता है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहनशाहे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद भाई हैं ।[2]

सुवाल सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बद्र के दिन किस रंग का इमामा शरीफ़ बांध रखा था ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पीले रंग का इमामा शरीफ़ बांध रखा था ।[3]

सुवाल किस सह़ाबी ने बारगाहे रिसालत से ''अमीनुल उम्मत'' का लक़ब पाया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ।[4]

सुवाल हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुकम्मल नामो नसब बताइये ?

---

1 ...طبقات ابن سعد، الرقم: ۴۷، طلحہ بن عبید اللہ، ۳/۱۲۰۔

2 ...بخاری، کتاب المساقات، باب شرب الاعلی قبل الاسفل، ۲/۹۲، حدیث: ۲۳۶۱۔

3 ...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، اول غزوۃ فی الاسلام بدر، ۴/۲۳۸، حدیث: ۵۶۰۸۔

4 ...بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب ابی عبیدۃ... الخ، ۲/۵۴۵، حدیث: ۳۷۴۴۔

जवाब आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जर्राह़ बिन हिलाल बिन वुहैब बिन ज़ब्बा बिन फ़िह्र बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना।(1)

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तआ़रुफ़ किस त़रह़ करवाया ?

जवाब ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे नुबुव्वत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं कौन हूं ? हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम सा'द बिन मालिक बिन उहैब बिन अ़ब्दे मनाफ़ हो और जो इस के इलावा कोई और नसब तुम्हारी त़रफ़ मन्सूब करे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत हो।(2)

सुवाल ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ज़बाने रिसालत से क्या दुआ़ निकली ?

जवाब इमामुल अम्बिया व मुर्सलीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये यूं दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सा'द जब भी तुझ से दुआ़ करे तू उस की दुआ़ क़बूल फ़रमा।(3)

फ़ाएदा : इस दुआ़ए नबवी की बरकत से ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्तजाबुद्दा'वात बन गए और उन की हर दुआ़ क़बूल होती थी, इस से मुतअ़ल्लिक़ वाक़िआ़त जामेअ़ करामाते औलिया में मज़्कूर हैं।(4)

---

1 . . . مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مناقب ابی عبیدۃ بن الجراح رضی اللہ عنہ، ۴/۲۹۵، حدیث: ۵۱۹۱۔

2 . . . مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر مناقب ابی اسحاق بن ابی وقاص، ۴/۲۲۸، حدیث: ۶۱۴۲۔

3 . . . ترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب ابی اسحاق سعد... الخ، ۵/۴۱۸، حدیث: ۳۷۷۲۔

4 . . . جامع کرامات الاولیاء، سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ، ۱/۱۳۷۔

सुवाल सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुन्यत क्या है ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुबारक कुन्यत "अबुल आ'वर" है ।(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने किस किस ग़ज़्वे में शिर्कत फ़रमाई ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़ज़्वए बद्र के इ़लावा उहुद, ख़न्दक़ वग़ैरा तमाम ग़ज़्वात में शरीक हुवे ।(2)

सुवाल कौन से सह़ाबी के सर पर रह़मते आ़लमिय्यां, सरदारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इ़मामा शरीफ़ का ताज सजाया था ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ।(3)

सुवाल हु़ज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस नमाज़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इक़्तिदा फ़रमाई थी ?

जवाब नमाज़े फ़ज्र में ।(4)

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن

सुवाल सह़ाबी किसे कहते हैं ?

जवाब सह़ाबी से मुराद जिन्नो इन्स में से हर वोह फ़र्द है जिस ने ईमान की ह़ालत में हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात की और इस्लाम की ह़ालत में ही उसे मौत आई ।(5)

---

1 . . . ترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف رضی اللہ عنہ، ۵/۴۱۶، حدیث: ۳۷۶۹۔

2 . . . مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب ذکر مناقب سعید بن زید رضی اللہ عنہ، ۴/۵۴۶، حدیث: ۵۹۰۷۔

3 . . . ابوداود، کتاب اللباس، باب فی العمائم، ۴/۷۷، حدیث: ۴۰۷۹۔

4 . . . مسلم، کتاب الطھارۃ، باب المسح علی الناصیۃ والعمامۃ، ص ۱۶۰، حدیث: ۲۷۴۔

5 . . . حدیقۃ ندیہ، شرح مقدمۃ الکتاب، ۱/۱۳۔

सुवाल कुरआने पाक में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की क्या सिफ़ात बयान फ़रमाई गई हैं ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا٘ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ﴾ (پ۲۶، الفتح:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तो उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सजदे में गिरते **अल्लाह** का फ़ज़्ल व रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सजदों के निशान से।

सुवाल कुरआने पाक में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को क्या खुश ख़बरी सुनाई गई है ?

जवाब सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को रिज़ाए इलाही और जन्नत की खुश ख़बरी सुनाई गई है, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ﴾ (پ۱۱، التوبة:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।

सुवाल हुज़ूर रहमते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने अस्हाबे किराम के मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई मवाक़ेअ़ पर ह़ज़राते सह़ाबए किराम की अहम्मिय्यत व शान बयान फ़रमाई, चन्द फ़रामीने मुक़द्दसा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : (1) "मेरे सह़ाबा की इ़ज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे नेक तरीन लोग हैं।"(1) (2) "मेरे सह़ाबा सितारों की मानिन्द हैं तुम उन में से जिस की भी पैरवी करोगे हिदायत पा जाओगे।"(2) (3) "अगर तुम में कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़ैरात करे तो इस का सवाब मेरे किसी सह़ाबी के एक मुद (थोड़ी मिक़्दार) बल्कि आधा मुद ख़ैरात करने के बराबर भी नहीं हो सकता।"(3)

सुवाल ह़दीसे मुबारका में दुश्मनाने सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ क्या वईद आई है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में ऐसे शख़्स को ला'नते ख़ुदावन्दी का मुस्तह़िक़ क़रार दिया गया।(4) और एक ह़दीसे पाक में सह़ाबए किराम को अज़िय्यत देने वाले को अ़ज़ाब की वईद सुनाई गई है।(5)

सुवाल ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मुतअ़ल्लिक़ हमारा क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब तमाम सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां निसार, सच्चे ग़ुलाम और जन्नती हैं, इन का ज़िक्र अ़क़ीदत व मह़ब्बत के साथ करना फ़र्ज़ है, इन के मुतअ़ल्लिक़

1 ... مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة، ۲/۴۱۳، حديث: ۶۰۱۲۔

2 ... مشكاة المصابيح، كتاب المناقب، باب مناقب الصحابة، ۲/۴۱۴، حديث: ۶۰۱۸۔

3 ... بخارى، كتاب فضائل اصحاب النبى، باب قول النبى "لو كنت متخذا خليلا"، ۲/۵۲۲، حديث: ۳۶۷۳۔

4 ... معجم اوسط، من اسمه عبد الرحمن، ۳/۳۳۶، حديث: ۴۷۷۱۔

5 ... ترمذى، كتاب المناقب، باب فى من سبَّ أصحاب النبى، ۵/۴۶۳، حديث: ۳۸۸۸۔

बुरा ख़याल रखने वाला बद मज़्हब, गुमराह और अ़ज़ाबे नार का हक़दार है कि जो उन पर ज़बान दराज़ करे गोया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हिक्मत व क़ुदरत और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिफ़्अ़त व वजाहत और शाने मह़बूबी पर ए'तिराज़ करता है, ताबेईन से क़ियामत तक कोई भी उम्मती किसी सह़ाबी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता ।(1)

सुवाल सब से पहले सह़ाबिये रसूल कौन हैं ?

जवाब सब से पहले सह़ाबिये रसूल बनने का शरफ़ आज़ाद मर्दों में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, बच्चों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ग़ुलामों में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा और औ़रतों में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) को ह़ासिल है ।(2)

सुवाल वोह पहले शहीद कौन हैं जिन की नमाज़े जनाज़ा हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ाई ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ।(3)

सुवाल राहे ख़ुदा में शहीद होने वाली सब से पहली सह़ाबिया का नाम बताइये ?

जवाब उम्मे अ़म्मार ह़ज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ।(4)

1.....बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 1, 1 / 252-254 । दस अ़क़ीदे, पांचवां अ़क़ीदा, स. 77-78, 87, मुलख़्ख़सन ।

2.....ख़ाज़िन, पारह 11 अत्तौबह, तह़्तुल आयत : 100, 2 / 274 ।

3...اسد الغابۃ، حمزۃ بن عبد المطلب، ۲/۷۰۔

4...اسد الغابۃ، سمیۃ ام عمار، ۷/۱۶۷۔

सुवाल "ग़सीलुल मलाइका' कौन से सहाबी का लक़ब है और इस की वज्ह क्या है ?

जवाब वोह हज़रते सय्यिदुना हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इस लक़ब की वज्ह येह है कि जंग में शहादत के बा'द आप को फ़िरिश्तों ने गुस्ल दिया था।[1]

सुवाल हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम और "अबू हुरैरा" से मश्हूर होने की वज्ह बताइये ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अस्ल नाम "अ़ब्दुल्लाह" या "अ़ब्दुर्रह़मान"।[2] एक दिन हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की आस्तीन में एक बिल्ली देखी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें **या अबा हुरैरा** "या'नी ऐ बिल्ली वाले !" कह कर पुकारा, इसी दिन से आप का येह लक़ब मश्हूर हो गया।[3]

सुवाल हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस की कुन्यत "अबू हम्ज़ा" रखी थी ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत "अबू हम्ज़ा" रखी थी।[4]

सुवाल कौन से सहाबी एक ही रक्अ़त में पूरा क़ुरआने करीम तिलावत फ़रमा लेते थे ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।[5]

---

1 ...الاصابة، حنظلة بن ابی عامر، ۲/۱۱۹۔

2 ...الاکمال فی اسماء الرجال، حرف الھاء، فصل فی الصحابة، ص ۲۲۲

3 ...اسد الغابة، ابو ھریرة، ۶/۳۳۷ ملخصاً۔

4 ...الاستیعاب، انس بن مالک، ۱/۱۹۹۔

5 ...الاکمال فی اسماء الرجال، حرف التاء، فصل فی الصحابة، ص ۵۸۸۔

उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ

सुवाल अज़्वाजे मुत़ह्हरात को "उम्महातुल मोमिनीन" क्यूं कहा जाता है ?

जवाब आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात को "उम्महातुल मोमिनीन" इस लिये कहा जाता है कि क़ुरआने मजीद ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात को मोमिनों की मां क़रार दिया है, फ़रमाने बारी तआ़ला है : ﴿وَ اَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ﴾(پ۲۲،الاحزاب:۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और उस की बीबियां उन की माएं हैं।

सुवाल उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की ता'दाद कितनी है ?

जवाब उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की ता'दाद में इख़्तिलाफ़ है मगर जिन ग्यारह पर सब का इत्तिफ़ाक़ है, उन में से 6 क़बीलए क़ुरैश से और 4 अ़रब के दीगर क़बीलों से और 1 बनी इसराईल के क़बीलए बनू नज़ीर से तअ़ल्लुक़ रखती हैं जिन के अस्माए गिरामी बित्तरतीब येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद (2) आ़इशा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (3) ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर फ़ारूक़ (4) उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान (5) उम्मे सलमा बिन्ते अबू उमय्या (6) सौदह बिन्ते ज़मआ़ (7) ज़ैनब बिन्ते जह़्श (8) मैमूना बिन्ते ह़ारिस (9) ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा (10) जुवैरिया बिन्ते ह़ारिस और (11) सफ़िय्या बिन्ते हुयैय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ ।[1]

सुवाल कौन सी अज़्वाजे मुत़ह्हरात हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी ही में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं थीं ?

---

1 ...مواہب لدنیۃ، المقصد الثانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجہ... الخ، ۱/۴۰۱-۴۰۲، ملتقطاً۔

जवाब हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा ।[1] और हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)[2]

सुवाल सब से आख़िर में इन्तिक़ाल फ़रमाने वाली ज़ौजए मोहतरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम बताएं ?

जवाब उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ में सब से आख़िर में हज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इन्तिक़ाल फ़रमाया ।[3]

सुवाल जन्नती औरतों में सब से अफ़्ज़ल कौन हैं ?

जवाब उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा, हज़रते सय्यिदतुना मरयम और हज़रते सय्यिदतुना आसिया बिन्ते मुज़ाहिम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ)[4]

सुवाल हुज़ूर ख़ातमुल अम्बिया वल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली वह्य नाज़िल होने की ख़बर सब से पहले किस को दी ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली वह्य के मुतअ़ल्लिक़ सब से पहले हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बताया ।[5]

सुवाल हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इल्मी फ़ज़ीलत बयान करें ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने किसी को कुरआने करीम के मआ़नी, ह़लाल व ह़राम के अह़काम,

1 ... بخاری، کتاب مناقب الانصار، باب تزویج النبی عائشة، ۲/۵۸۹، حدیث: ۳۸۹۶۔

2 ... مستدرک، کتاب معرفة الصحابة، ذکر ام المؤمنین زینب بنت خزیمة العامریة، ۵/۴۴، حدیث: ۶۸۸۴۔

3 ... الاصابة، کتاب النساء، ام سلمة بنت ابی امیة، ۸/۴۰۷۔

4 ... مسند احمد، مسند عبد اللہ ابن عباس، ۱/۶۷۸، حدیث: ۲۹۰۳۔

5 ... بخاری، کتاب بدء الوحی، باب: ۳، ۱/۷، حدیث: ۳۔

अहले अ़रब के अश्आ़र और नसबों के इल्म में ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ज़ियादा इल्म वाला नहीं देखा।[1]

सुवाल "उम्मुल मसाकीन" के लक़ब से कौन सी ज़ौजए मोहतरमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا मश्हूर थीं ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ।[2]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम क्या है ?

जवाब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "हिन्द" है।[3]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम पहले क्या था ?

जवाब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "बर्रह" था जिसे हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर "ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا" रखा।[4]

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अदबे रसूल कैसा था ?

जवाब सुल्ह़े हुदैबिय्या के ह़वाले से (क़बूले इस्लाम से पहले) ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीनए मुनव्वरा आए तो अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर पहुंच कर चाहा कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिस्तर पर बैठें तो उम्मुल मोमिनीन ने उन्हें बिस्तर पर बैठने से मन्अ़ कर दिया और

1 . . . حلیۃ الاولیاء، عائشۃ زوج رسول اللہ، ۲/ ۶۰، رقم: ۱۴۸۲۔

2 . . . مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر ام المؤمنین زینب بنت خزیمۃ العامریۃ، ۵/ ۴۴، حدیث: ۶۸۸۴۔

3 . . . الاصابۃ، کتاب النساء، ام سلمۃ بنت ابی امیۃ، ۸/ ۴۰۴۔

4 . . . مسلم، کتاب الاداب، باب استحباب تغییر الاسم القبیح الی حسن. . . الخ، ص ۱۱۸۲، حدیث: ۲۱۴۲۔

फ़रमाया : येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पाकीज़ा बिस्तर है और आप नजासते शिर्क से आलूदा हो लिहाज़ा मुझे आप का इस मुक़द्दस बिस्तर पर बैठना पसन्द नहीं।(1)

सुवाल उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते हुयैय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا किस क़ौम से हैं ?

जवाब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बनी इसराईल से हज़रते सय्यिदुना हारून عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद से हैं।(2)

अहले बैत رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن

सुवाल कुरआने पाक में अहले बैत की फ़ज़ीलत में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब ﴿اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَ يُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तो येही चाहता है ऐ नबी के घरवालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के खूब सुथरा कर दे।

सुवाल अहले बैते किराम की मुक़द्दस जमाअ़त किन अफ़राद पर मुश्तमिल है ?

जवाब अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा और अ़लिय्ये मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِین) सब दाख़िल हैं, आयात व अह़ादीस को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है।(3)

---

1 . . . دلائل النبوۃ للبیہقی، جماع ابواب فتح مکۃ حرسہا اللّٰہ تعالٰی، باب نقص قریش . . . الخ، ۵/۸۔

2 . . . ترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل ازواج النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم، ۵/۴۷۴، حدیث:۳۹۱۸۔

3 .....ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22, अल अह़ज़ाब, तह़्तुल आयत : 33, स. 780।

सुवाल अह्ले बैत की महब्बत के ह़वाले से हमें क्या ता'लीम दी गई है ?

जवाब फ़ैज़े गंजीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ (1) अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत (2) अह्ले बैत رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की महब्बत और (3) तिलावते क़ुरआन।(1)

सुवाल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अह्ले बैत की ता'ज़ीम व हुरमत के बारे में क्या इरशाद फ़रमाया ?

जवाब हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तीन हुरमतें हैं जो इन की ह़िफ़ाज़त करे **अल्लाह** तआ़ला उस के दीन व दुन्या मह़फ़ूज़ रखे और जो इन की ह़िफ़ाज़त न करे **अल्लाह** तआ़ला उस की किसी चीज़ की ह़िफ़ाज़त न फ़रमाए, अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह तीन हुरमतें कौन सी हैं ? इरशाद फ़रमाया : एक इस्लाम की हुरमत, दूसरी मेरी हुरमत, तीसरी मेरी क़राबत की हुरमत।(2)

सुवाल अह्ले बैते किराम से बद सुलूकी करने वाले के लिये क्या वई़द आई है ?

जवाब फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जिसे पसन्द हो कि उस की उ़म्र में बरकत हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी दी हुई ने'मत से बहरामन्द करे तो उसे लाज़िम है कि मेरे बा'द मेरे अह्ले बैत से अच्छा सुलूक करे, जो ऐसा न करे उस की उ़म्र की बरकत उड़ जाए और क़ियामत में मेरे सामने काला मुंह ले कर आए।(3)

---

1 ...جامع صغیر، حرف الہمزۃ، ص ۲۵، حدیث: ۳۱۱۔

2 ...معجم اوسط، باب الالف، من اسمہ احمد، ۱/۷۳، حدیث: ۲۰۳۔

3 ...کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل اہل البیت، الفصل الاول، جزء ۱۲، ۶/۴۶، حدیث: ۳۴۱۶۶۔

सुवाल क़राबते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकत बयान कीजिये ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरसरे मिम्बर फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है कि जो येह कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत रोज़े क़ियामत उन की क़ौम को नफ़्अ़ न देगी ख़ुदा की क़सम मेरी क़राबत दुन्या व आख़िरत में पैवस्ता है।(1)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले बैत से ह़ुस्ने सुलूक के मुतअ़ल्लिक़ क्या फ़रमाया ?

जवाब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अपनी क़राबत (रिश्तेदारों) से अच्छा सुलूक करने के मुक़ाबले में मुझे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत से अच्छा सुलूक करना ज़ियादा पसन्द है। नीज़ फ़रमाया : ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी आप के अहले बैत से मह़ब्बत में है।(2)

सुवाल ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "फ़ात़िमा" रखे जाने की ह़िक्मत बयान करें ?

जवाब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने अपनी बेटी का नाम फ़ात़िमा इस लिये रखा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस को और इस के साथ मह़ब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से ख़लासी अ़त़ा फ़रमाई।(3)

---

1 . . . مسنداحمد، مسندابی سعیدالخدری، ۴/۳۸، حدیث:۱۱۱۳۸۔

2 . . . بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب قرابة رسول الله . . . الخ، ۲/۵۳۸، حدیث:۳۷۱۲-۳۷۱۳۔

3 . . . کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضل اہل البیت، ۶/۵۰، جزء ۱۲، حدیث:۳۴۲۲۲۔

सुवाल शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उम्मुल मोमिनीन सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से महब्बत रखने की तरग़ीब किस अन्दाज़ से दी गई ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! जिस से मैं महब्बत करता हूं तुम भी उस से महब्बत करोगी ? अ़र्ज़ की : ज़रूर या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं महब्बत रखूंगी। इस पर इरशाद फ़रमाया : तो आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से महब्बत रखो।(1)

सुवाल हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन सी बेटी सब से ज़ियादा प्यारी थी ?

जवाब ख़ातूने जन्नत हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا।(2)

सुवाल नबिय्ये रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किन को अपने दुन्यावी फूल फ़रमाया ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन और हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को।(3)

सुवाल अहले बैत में से सब से ज़ियादा हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबहत कौन रखते थे ?

जवाब हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सब से ज़ियादा मुशाबेह हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे।(4)

---

1 ... مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب فی فضل عائشۃ رضی اللہ تعالی عنہا، ص ۱۳۲۵، حدیث: ۲۴۴۲۔

2 ... ترمذی، ابواب المناقب، باب مناقب اسامہ بن زید رضی اللہ عنہ، ۵/۴۴۷، حدیث: ۳۸۴۵۔

3 ... بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنہما، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۷۵۳۔

4 ... بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب الحسن والحسین رضی اللہ عنہما، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۷۵۲۔

उ़लमा व मुज्तहिदीन رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی

सुवाल मुज्तहिद किसे कहते हैं ?

जवाब मुज्तहिद वोह है जिस में इस क़दर इल्मी लियाक़त और क़ाबिलिय्यत हो कि क़ुरआनी इशारात व रुमूज़ को समझ सके और कलाम के मक़्सद को पहचान सके और उस से मसाइल निकाल सके, नासिख़ व मन्सूख़ का पूरा इल्म रखता हो । इल्मे सरफ़ व नह़्व, बलाग़त वग़ैरा में उस को पूरी महारत ह़ासिल हो, अह़्काम की तमाम आयतों और ह़दीसों पर उस की नज़र हो ।(1)

सुवाल आ़लिम किसे कहते हैं ?

जवाब आ़लिम की ता'रीफ़ येह है कि अ़क़ाइद से पूरे तौर पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरियात (ह़ाजत के मसाइल) को किताब से निकाल सके बिग़ैर किसी की मदद के ।(2)

सुवाल क़ुरआने करीम में आ़लिम की शान किस त़रह़ बयान हुई ?

जवाब क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर इल्म वालों की शानो अ़ज़मत को बयान किया गया है । चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ﴾(پ۲۸، المجادلۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा ।

सुवाल ह़दीस शरीफ़ में आ़लिम का क्या मर्तबा बयान किया गया है ?

जवाब अह़ादीसे करीमा में उ़लमा के कसीर फ़ज़ाइल व मरातिब बयान हुवे हैं जिन में से एक येह भी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम

---

1 .....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब, स. 44 ।

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा अव्वल, स. 58 ।

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अ़ता फ़रमा देता है और बेशक मैं तक़्सीम करने वाला हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ता फ़रमाता है।(1)

सुवाल फ़िक़्ह के मश्हूर मज़ाहिब कितने हैं और उन के पेश्वाओं के नाम क्या हैं ?

जवाब फ़िक़्ह के मश्हूर मज़ाहिब चार हैं : (1) ह़नफ़ी (2) शाफ़ेई (3) मालिकी (4) ह़म्बली। **फ़िक़्हे ह़नफ़ी** के पेश्वा इमामुल अइम्मा काशिफ़ुल ग़ुम्मा इमामे आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं। **फ़िक़्हे शाफ़ेई** के पेश्वा आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं। **फ़िक़्हे मालिकी** के पेश्वा आ़लिमे मदीना इमामे दारुल हिजरत ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं और **फ़िक़्हे ह़म्बली** के पेश्वा इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं।

सुवाल दुन्या में किस फ़िक़्ही मज़हब के पैरूकार सब से ज़ियादा हैं ?

जवाब दुन्या में ह़नफ़ी मज़हब के पैरूकार सब से ज़ियादा हैं।(2)

सुवाल इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कब पैदा हुवे और विसाल मुबारक कब हुवा ?

जवाब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का सिने विलादत 70 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 150 हिजरी है।(3)

---

1 . . . بخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ . . . الخ، ۱ / ۴۲، حدیث: ۷۱۔

2.....मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 48 माख़ूज़न।

3.....नुज़्हतुल क़ारी, 1 / 169।

सुवाल इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का सिने विलादत और सिने वफ़ात क्या है ?

जवाब आप का सिने विलादत 150 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 204 हिजरी है।(1)

सुवाल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की विलादत और वफ़ात कब हुई ?

जवाब आप का सिने विलादत 164 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 241 हिजरी है।(2)

सुवाल इमाम मालिक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का सिने विलादत व वफ़ात क्या है ?

जवाब आप का सिने विलादत 93 हिजरी जब कि सिने वफ़ात 179 हिजरी है।(3)

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का नाम क्या है ?

जवाब आप का इस्मे गिरामी या'क़ूब बिन इब्राहीम है।(4)

सुवाल इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی पर फ़िक़्ह में सब से ज़ियादा एह़सान किस का है ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : फ़िक़्ह में मुझ पर सब से ज़ियादा एह़सान इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का है।(5)

---

1 ... سیر اعلام النبلاء، الامام الشافعی، ۸/۳۷۹، मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 13

2 .....मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 13 ।

3 ... سیر اعلام النبلاء، مالک الامام، ۷/۳۸۳-۳۳۴۔

4 ... لسان المیزان، باب الکنی حرف الیاء، من کنیتہ ابویعلی وابویوسف، ۸/۱۲، رقم: ۱۰۹۰۴۔

5 ... تاریخ بغداد، محمد بن حسن، ۲/۱۷۳۔

औलिया व सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى

सुवाल वलियों के सरदार से मश्हूर हस्ती का नाम क्या है और इन का मज़ार कहां है ?

जवाब वोह मुक़द्दस हस्ती महबूबे सुब्हानी, क़ुत़बे रब्बानी, ग़ौसे समदानी हुज़ूरे ग़ौसे पाक अबू मुहम्मद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی हैं और आप का मज़ारे पुर अन्वार इराक़ के शहर बग़दाद में है।(1)

सुवाल हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत और विसाल कब हुवा ?

जवाब हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه यकुम रमज़ानुल मुबारक 471 हिजरी को पैदा हुवे और आप ने 561 हिजरी में विसाल फ़रमाया।(2)

सुवाल "कश्फ़ुल महजूब" किस बुज़ुर्ग की किताब है और येह किस मौज़ूअ़ पर है ?

जवाब येह किताब ह़ज़रते दाता गंज बख़्श सय्यिद अबुल ह़सन अ़ली बिन उ़स्मान हिजवेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की है और इस का मौज़ूअ़ तसव्वुफ़ है।

सुवाल ह़ज़रते इमाम रब्बानी, मुजद्दिदे अल्फ़े सानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی का अस्ल नाम क्या है ?

जवाब ह़ज़रते मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अबुल बरकात नक़्शबन्दी सरहिन्दी का अस्ल नाम शैख़ अह़मद फ़ारूक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی है।(3)

सुवाल फ़ितनए क़ादियानिय्यत के ख़िलाफ़ किस पीर साह़िब ने क़ाइदाना व मुजाहिदाना किरदार अदा किया ?

---

1 . . . طبقات کبری، ابو صالح سیدی عبد القادر الجیلی، ۱/ ۱۷۸۔

2 . . . بهجة الاسرار، ذکر نسبه و صفته رضی الله تعالٰی عنه، ص ۱۷۱ ۔
طبقات کبری للشعرانی، ابو صالح سیدی عبد القادر الجیلی، ۱/ ۱۷۸۔

3 .....तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी, स. 1।

जवाब वोह पीर साहिब माहे शरीअत, महरे त़रीक़त, ताजदारे गोलड़ा ह़ज़रत पीर सय्यिद मेहर अ़ली शाह गीलानी चिश्ती निज़ामी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی हैं।(1)

सुवाल कौन से बुज़ुर्ग को 30 साल तक हंसते नहीं देखा गया ?

जवाब ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को 30 साल तक किसी ने हंसते हुवे नहीं देखा मगर आप अपने बेटे के विसाल पर मुस्कुरा दिये थे।(2)

सुवाल ह़ज़रते साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوۡرَانِی की क़ब्र से क्या आवाज़ आती थी ?

जवाब लोगों का बयान है कि जब हम ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوۡرَانِی की क़ब्र के पास से गुज़रते हैं तो हमें क़ुरआने करीम पढ़ने की आवाज़ आती है।(3)

सुवाल ह़ज़रते ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی किस के मुरीद थे ?

जवाब आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی के मुरीद व ख़लीफ़ा थे।(4)

सुवाल वोह कौन से बुज़ुर्ग हैं जो नंगे पाउं रहा करते थे ?

जवाब ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی जूते नहीं पहना करते थे। किसी ने अ़र्ज़ की : आप जूते क्यूं नहीं पहनते ? इरशाद

1.....मेहरे मुनीर, स. 140। फ़ैज़ाने पीर मेहर अ़ली शाह, स. 30।

2.....تذکرۃ الاولیاء فارسی، ۱/۸۲، ملخصاً۔

3.....حلیۃ الاولیا، ثابت البنانی، ۲/۳۶۵، رقم: ۲۵۸۳۔ شرح الصدور، باب احوال الموتی فی... الخ، ص ۱۸۸۔

4.....سیر الاولیاء، ص ۱۰۵۔

फ़रमाया : जिस वक़्त मैं ने अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ से सुल्ह़ (या'नी तौबा) की तो मेरे पाउं में जूता नहीं था लिहाज़ा अब मैं मरते वक़्त तक जूता नहीं पहनूंगा ।(1)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی की क़ब्रे अन्वर की क्या बरकत है ?

जवाब हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिदे माजिद को फ़रमाते सुना है कि हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی की क़ब्रे अन्वर पर तमाम ह़ाजात पूरी होती हैं ।(2)

सुवाल हज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی किस के शागिर्द थे ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इमामुल अइम्मा, काशिफ़ुल ग़ुम्मा हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के शागिर्द थे और 20 साल तक उन की ख़िदमत में रहे ।(3)

सुवाल "तम्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं" येह किस का फ़रमान है ?

जवाब ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाया करते थे : "तम्अ़ नहीं, मन्अ़ नहीं और जम्अ़ नहीं" या'नी लालच मत करो कि कोई दे और अगर कोई बिग़ैर मांगे दे तो मन्अ़ मत करो और जब ले लो तो जम्अ़ मत करो ।(4)

---

1 . . . روض الریاحین، الفصل الثانی فی اثبات کرامات الاولیاء، ص ۲۱۸۔

2 . . . روض الفائق، المجلس الرابع والثلاثون فی مناقب معروف الکرخی، ص ۱۸۸۔

3 . . . تذکرۃ الاولیاء، ذکر ابی سلیمان داود الطائی، ص ۲۴۹۔

4 .....सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना, स. 7 ।

इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

सुवाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत कब हुई और आप का तारीख़ी नाम क्या है ?

जवाब 10 शव्वालुल मुकर्रम 1272 हिजरी रोज़े शम्बा (या'नी हफ़्ते के दिन) वक़्ते ज़ोहर मुताबिक़ 14 जून 1856 ईसवी को हुई। और आप का तारीख़ी नाम "अल मुख़्तार" है।(1)

सुवाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आबाओ अज्दाद कहां से तअ़ल्लुक़ रखते थे ?

जवाब इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के आबाओ अज्दाद क़न्धार (अफ़ग़ानिस्तान) के बा अ़ज़मत क़बीले बड़हैच के पठान थे।(2)

सुवाल इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कितने उ़लूमो फ़ुनून पर महारत हासिल थी ?

जवाब 100 से ज़ाइद क़दीमो जदीद, दीनी, अदबी और साइन्सी उ़लूम पर इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को दस्त्रस हासिल थी।(3)

सुवाल इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की तस्नीफ़ात की ता'दाद बयान कीजिये ?

जवाब इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कमो बेश 1000 किताबें तह़रीर फ़रमाईं।(4)

सुवाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शोहरए आफ़ाक़ किताबों में से कुछ के नाम बताएं।

---

1 .....सवानेहे इमाम अहमद रज़ा, आ'ला हज़रत का नसब नामा, स. 95।
2 .....सवानेहे इमाम अहमद रज़ा, आ'ला हज़रत का नसब नामा, स. 93।
3 .....अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत, स. 159।
4 .....फ़ैज़ाने आ'ला हज़रत, स. 566।

जवाब (1) कुरआने करीम का तर्जमा बनाम "**कन्ज़ुल ईमान फ़ी तर्जमतिल कुरआन**" (2) फ़िक़्हे ह़नफ़ी का एन्साईक्लो पीडिया ब नाम "**अल अ़तायन्नबविय्या फ़िल फ़तावर्रिज़विय्या**" जो 33 जिल्दों पर मुश्तमिल है। (3) फ़िक़्हे ह़नफ़ी की मश्हूर किताब फ़तावा शामी पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़वाशी बनाम "**जद्दुल मुमतार अ़ला रद्दिल मुह़तार**" जो मक्तबतुल मदीना से 7 जिल्दों में शाएअ़ हो चुके हैं। (4) शोहरए आफ़ाक़ ना'तिया कलाम का मजमूआ़ "ह़दाइक़े बख़्शिश"।

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी मश्हूर किताब "अद्दौलतुल मक्किय्या" कितने घन्टों में तस्नीफ़ फ़रमाई ?

जवाब आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने येह किताब अपनी खुदादाद याददाश्त के बल पर तफ़ासीर, अह़ादीस और कुतुबे अइम्मा की अस्ल इ़बारतों के ह़वाला जात नक़्ल फ़रमाते हुवे सिर्फ़ साढ़े आठ घन्टे के क़लील वक़्त में तस्नीफ़ फ़रमाई।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शान में डॉक्टर इक़्बाल ने क्या कहा था ?

जवाब शाइ़रे मशरिक़ डॉक्टर इक़्बाल ने कहा : हिन्दुस्तान के दौरे आख़िर में इन जैसा त़ब्बाअ़ व ज़हीन फ़क़ीह पैदा नहीं हुवा। मैं ने इन के फ़तावा के मुत़ालए़ से येह राए क़ाइम की है और इन के फ़तावा इन की ज़हानत, फ़त़ानत, जूदते त़ब्अ़, कमाले फ़क़ाहत और उ़लूमे दीनिया में तबह़्हुरे इ़ल्मी के शाहिदे अ़द्ल हैं।[2]

सुवाल इमामे अह्ले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की सीरत की कुछ झल्कियां बयान करें ?

---

1 .....सवानेहे इमाम अह़मद रज़ा, स. 305।

2 .....इमाम अह़मद रज़ा और रद्दे बिदआ़त व मुन्किरात, स. 370।

जवाब आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर फ़िराके मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में ग़मगीन रहते और सर्द आहें भरा करते। ग़ुरबा को कभी ख़ाली हाथ नहीं लौटाते थे, बल्कि आख़िरी वक़्त भी अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को वसिय्यत की, कि ग़ुरबा का ख़ास ख़याल रखना। आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अक्सर तस्नीफ़ो तालीफ़ में लगे रहते। पांचों नमाज़ों के वक़्त मस्जिद में ह़ाज़िर होते और हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमाया करते, आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़ूराक बहुत कम थी।[(1)]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कोई करामत बयान कीजिये ?

जवाब जनाबे सय्यिद अय्यूब अ़ली शाह साह़िब رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बार पीलीभीत से बरेली शरीफ़ ब ज़रीअ़ए रेल जा रहे थे। रास्ते में नवाब गंज के स्टेशन पर जहां गाड़ी सिर्फ़ दो मिनट के लिये ठहरती है, मग़रिब का वक़्त हो चुका था, आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने गाड़ी ठहरते ही तक्बीरे इक़ामत फ़रमा कर गाड़ी के अन्दर ही निय्यत बांध ली, ग़ालिबन पांच शख़्सों ने इक़्तिदा की उन में मैं भी था लेकिन अभी शरीके जमाअ़त नहीं होने पाया था कि मेरी नज़र ग़ैर मुस्लिम गार्ड पर पड़ी जो प्लेटफ़ॉर्म पर खड़ा सब्ज़ झन्डी हिला रहा था, मैं ने खिड़की से झांक कर देखा कि लाइन क्लियर थी और गाड़ी छूट रही थी, मगर गाड़ी न चली और हुज़ूर आ'ला ह़ज़रत ने ब इत़मीनाने तमाम बिला किसी इज़्तिराब के तीनों फ़र्ज़ रक्अ़तें अदा कीं और जिस वक़्त दाईं जानिब सलाम फेरा था गाड़ी चल दी। मुक़्तदियों की ज़बान से बे साख़्ता سُبْحٰنَ اللّٰہ سُبْحٰنَ اللّٰہ سُبْحٰنَ اللّٰہ निकल गया। इस करामत में क़ाबिले ग़ौर येह बात थी कि अगर जमाअ़त प्लेटफ़ॉर्म

1.....तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा, स. 13–14, मुल्तक़त़न।

पर खड़ी होती तो येह कहा जा सकता था कि गार्ड ने एक बुज़ुर्ग हस्ती को देख कर गाड़ी रोक ली होगी ऐसा न था बल्कि नमाज़ गाड़ी के अन्दर पढ़ी थी। इस थोड़े वक़्त में गार्ड को क्या ख़बर हो सकती थी कि एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बन्दा फ़रीज़ए नमाज़ गाड़ी में अदा करता है।(1)

सुवाल वोह कौन सी चीज़ थी जिस का इज़्हार आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के हर क़ौलो फ़े'ल से हुवा करता था ?

जवाब इश्क़े मुस्तफ़ा और हिमायते मज़्हब।

सुवाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पीरो मुर्शिद का नाम बताएं नीज़ आप को ख़लीफ़ा बनाते वक़्त आप के पीरो मुर्शिद ने क्या इरशाद फ़रमाया था ?

जवाब आप के पीरो मुर्शिद हज़रते शाह आले रसूल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه हैं और आप ने इरशाद फ़रमाया : मैं मुतफ़क्किर था कि अगर क़ियामत के दिन रब्बुल इज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया कि आले रसूल ! तू दुन्या से मेरे लिये क्या लाया ? तो मैं क्या जवाब दूंगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज वोह फ़िक्र दूर हो गई मुझ से रब तआला जब येह पूछेगा कि आले रसूल ! तू दुन्या से मेरे लिये क्या लाया है ? तो मैं **मौलाना अहमद रज़ा** को पेश कर दूंगा !!!(2)

सुवाल आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का विसाल कब हुवा था ?

जवाब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 25 सफ़र 1340 हिजरी मुताबिक़ 28 अक्तूबर 1921 ईसवी को जुमुअतुल मुबारक के दिन 2 बज कर 38 मिनट पर ऐन अज़ाने जुमुआ के वक़्त विसाल फ़रमाया।(3)

1.....तज़्किरए इमाम अहमद रज़ा, स. 15-16।
2.....फ़ैज़ाने आ'ला हज़रत, स. 317।
3.....सवानेहे इमाम अहमद रज़ा, स. 388।

अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की विलादत किस सिने हिजरी में हुई ?

जवाब आप 26 रमज़ानुल मुबारक 1369 हिजरी मुताबिक़ 1950 ईसवी को पैदा हुवे ।(1)

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इस्मे गिरामी और उ़र्फ़ी नाम क्या है ?

जवाब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इस्मे गिरामी "मुह़म्मद" और उ़र्फ़ी नाम "इल्यास" है ।(2)

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के नाम के साथ ज़ियाई निस्बत क्यूं लगाई जाती है ?

जवाब ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, क़ुत़्बे मदीना ह़ज़रते मौलाना ज़ियाउद्दीन मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के मुरीद होने की निस्बत से "ज़ियाई" कहलाते हैं ।(3)

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّهُ الْعَالِى कितना अ़र्सा मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की सोह़बते बा बरकत से मुस्तफ़ीज़ होते रहे ?

जवाब मुसलसल 22 साल ।(4)

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को किन बुज़ुर्गों से ख़िलाफ़त ह़ासिल है ?

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत स. 10 ।
2.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 2, स. 6 ।
3.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 2, स. 6 ।
4.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, अमीरे अह्ले सुन्नत का शौक़े इल्म, स. 18 ।

जवाब आप دامت برکاتہم العالیہ को मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान मुफ़्ती वक़ारुद्दीन رحمۃ اللہ تعالی علیہ, शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी رحمۃ اللہ تعالی علیہ, जा नशीने कुत़्बे मदीना मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान साहिब अशरफ़ी رحمۃ اللہ تعالی علیہ और दुन्याए इस्लाम के कई अकाबिर उ़लमा से ख़िलाफ़त हासिल है।(1)

सुवाल जिस दिन अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का निकाह़ हुवा उस दिन के कुछ मुआ़मलात बताएं ?

जवाब उस दिन अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने नूर मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ अदा फ़रमाई, क़ब्रिस्तान भी गए, खारादर में वाक़ेअ़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद शाह दूल्हा رحمۃ اللہ تعالی علیہ के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी की सआ़दत भी ह़ासिल की और हस्पताल जा कर अपने एक दोस्त की इ़यादत भी की।(2)

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का बा जमाअ़त नमाज़ की पाबन्दी का कोई वाक़िआ़ बताएं ?

जवाब (अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ फ़रमाते हैं) रब عزوجل के करम से शुरूअ़ से ही बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का ज़ेह्न था, जमाअ़त तर्क कर देना मेरी लुग़त में ही नहीं था। यहां तक कि जब मेरी वालिदए मोह़तरमा का इन्तिक़ाल हुवा तो उस वक़्त घर में दूसरा कोई मर्द न था मैं अकेला था मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل मां की मय्यित छोड़ कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की सआ़दत पाई। मां के ग़म में दौराने नमाज़ मेरे आंसू ज़रूर बह रहे थे मगर इस सूरते ह़ाल में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل जमाअ़त न छोड़ी।(3)

1.....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, स. 73।
2.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 3, स. 17 मुलख़्ख़सन।
3.....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत, क़िस्त़ 3, स. 19।

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی सुनहरी जालियों के रू बरू क्या दुआएं करते हैं ?

जवाब अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی फ़रमाते हैं : मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं ने आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दरबार से कभी दुन्या की ज़लील दौलत का मुत़ालबा किया हो बल्कि मैं ने तो आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की याद में तड़पने वाला दिल, आप के ग़म में रोने वाली आंखें और ईमानो आ़फ़ियत पर मदीने शरीफ़ में मौत नसीब होने की दुआ़ की है ।[1]

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बैनल अक़्वामी शोहरत याफ़्ता किताब का नाम बताएं ?

जवाब फ़ैज़ाने सुन्नत ।

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने ईमानियात और कुफ़्रिय्यात के मौज़ूअ़ पर कौन सी किताब तस्नीफ़ फ़रमाई है ?

जवाब आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने ईमानियात और कुफ़्रिय्यात के मौज़ूअ़ पर उर्दू ज़बान में इन्तिहाई ज़ख़ीम किताब बनाम "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" तस्नीफ़ फ़रमाई है ।

सुवाल मुआ़शरे को अम्न का गहवारा बनाने और बाहमी इ़ज़्ज़तो एह़तिराम की फ़ज़ा हमवार करने के लिये अमीरे अह्ले सुन्नत ने कौन से रसाइल तह़रीर फ़रमाए हैं ?

जवाब एह़तिरामे मुस्लिम, हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली, नाचाक़ियों का इलाज, ग़ुस्से का इलाज ।

सुवाल शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत के "मदनी मुज़ाकरों" से

---

1 .....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत, माल की मह़ब्बत से परहेज़, स. 52 माख़ूज़न ।

मुसलमानों की इनफ़िरादी और इजतिमाई ज़िन्दगी पर क्या असरात मुरत्तब हो रहे हैं ?

जवाब मदनी मुज़ाकरे की बरकत से लोग गुनाहों से ताइब हो कर न सिर्फ़ फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी करने लग जाते हैं बल्कि मुस्तहब आ'माल के भी आदी हो जाते हैं।

ज़िक्रो अज़कार

सुवाल अज़कारे मासूरा किसे कहते हैं ?

जवाब ऐसे कलिमात और दुआएं हैं जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्कूल हैं कि उन को खुद हुज़ूर ने पढ़ा, या उन के पढ़ने का हुक्म दिया या उन को पढ़ने की फ़ज़ीलत या फ़ाएदा और सवाब बताया, ऐसे कलिमात और दुआओं को "अज़कारे मासूरा" कहते हैं।(1)

सुवाल अल्लाह तआला के 99 नाम याद करने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब हदीसे पाक में है : बेशक अल्लाह तआला के निनानवे नाम हैं या'नी एक कम सौ, जिस ने इन्हें याद कर लिया वोह जन्नत में दाख़िल हुवा।(2)

सुवाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा महबूब चार कलिमात कौन से हैं ?

जवाब वोह कलिमात येह हैं : "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ"।(3)

सुवाल अफ़्ज़ल ज़िक्र और अफ़्ज़ल दुआ क्या है ?

जवाब अफ़्ज़ल ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه है और अफ़्ज़ल दुआ اَلْحَمْدُ لِلّٰه है।(4)

1.....बिहिश्त की कुन्जियां, स. 157।

2...بخاری، کتاب الشروط، باب مایجوز من الاشتراط والثنیا فی الاقرار...الخ، ۲/۲۲۹، حدیث:۲۷۳٦۔

3...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح...الخ، ۱/۴۲۹، حدیث:۲۲۹۴۔

4...مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح...الخ، ۱/۴۳۱، حدیث:۲۳۰٦۔

सुवाल दिन भर में 100 मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जो शख़्स दिन भर में 100 मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ेगा उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे अगर्चे समन्दर की झाग के बराबर हों।(1)

सुवाल ह़दीसे पाक में किस कलिमे को 99 बीमारियों की दवा कहा गया ?

जवाब ग़म गुसारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस फ़रमान है : "لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ" 99 बीमारियों की दवा है जिस में सब से कम दवा येह है कि उस के पढ़ने वाले को कोई रंजो ग़म नहीं होता।(2)

सुवाल वोह कौन सी तस्बीह़ है जो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बताई थी ?

जवाब हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : सोते वक़्त 33 बार "سُبْحٰنَ اللّٰہ" 33 बार "اَلْحَمْدُلِلّٰہ" और 34 बार "اَللّٰہُ اَکْبَر" पढ़ लिया करो।(3) इसे तस्बीह़े फ़ातिमा कहते हैं।

सुवाल गुस्सा आने, कुत्ते के भोंकने और गधे के रेंकने पर कौन सी दुआ़ पढ़नी चाहिये ?

जवाब اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم या'नी मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगता हूं शैत़ान मर्दूद से।(4)

सुवाल पढ़ा हुवा याद रखने का कोई वज़ीफ़ा बताइये ?

जवाब मन्क़ूल है कि अगर तुम चाहते हो कि एक ह़र्फ़ भी न भूलो तो पढ़ने से पहले येह कह लिया करो :

---

1 ... مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح... الخ، ۱/۴۳۰، حدیث: ۲۲۹۶۔

2 ... مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب ثواب التسبیح... الخ، ۱/۴۳۴، حدیث: ۲۳۲۰۔

3 ... بخاری، کتاب النفقات، باب خادم المراۃ، ۳/۵۱۶، حدیث: ۵۳۶۲۔

4 ... بخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، ۴/۱۳۰، حدیث: ۶۱۱۵۔

مسند احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۵/۳۴، حدیث: ۱۴۲۸۷، ملتقطاً۔

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! ऐ अज़मत व बुज़ुर्गी वाले ! हम पर अपनी हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ।(1)

सुवाल मुसीबत ज़दा को देख कर कौन सी दुआ पढ़ी जाए ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे इस मुसीबत से बचाया जिस में तुझे मुब्तला किया और उस ने मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी ।(2)

सुवाल शिआ़रे कुफ़्फ़ार (गिरजा / मन्दर वग़ैरा) को देखे या आवाज़ सुने तो कौन सी दुआ पढ़े ?

जवाब اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا لَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं वोह अकेला इ़बादत के लाइक़ है हम उसी की इ़बादत करते हैं ।(3)

सुवाल मजलिस के इख़्तिताम पर क्या पढ़ा जाए ?

जवाब سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है और तेरे ही लिये ह़म्द है, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, मैं तुझ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं ।(4)

---

1 . . . مستطرف، الباب الرابع فی العلم والادب . . . الخ، ١/٤٠۔

2 . . . ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا رأی مبتلی، ۵/۲۷۲، حدیث: ۳۴۴۲۔

3 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, हिस्सा दुवुम, स. 312 ।

4 . . . ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارة المجلس، ۴/۳۴۸، حدیث: ۴۸۵۹۔

दुरूदे पाक

सुवाल : दुरूदे पाक से मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में क्या इरशादे खुदावन्दी है ?

जवाब : दुरूदे पाक से मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىِٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا(۵۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

सुवाल : दुरूदे पाक पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे मुबारका में क्या इरशाद हुवा ?

जवाब : ह़दीसे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस पर दस रह़मतें भेजता है।"[(1)]

सुवाल : दुरूदे पाक न पढ़ने वाले के लिये क्या वईद आई है ?

जवाब : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के सामने मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तो वोह सब से बड़ा बख़ील है।[(2)]

सुवाल : सुब्ह़ो शाम कितने कितने हज़ार फ़िरिश्ते दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर दुरूदो सलाम पेश करते हैं ?

---

1 . . . مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی، ص ۲۱۶، حدیث: ۴۰۹۔

2 . . . الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعا، باب الترغیب فی اکثار الصلاۃ . . . الخ، ۲/۳۲۲، حدیث: ۲۱۳۴۔

जवाब रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में 70 हज़ार फ़िरिश्ते सुब्ह़ उतरते हैं और शाम तक रहते हैं यूंही 70 हज़ार शाम में उतरते हैं जो अगली सुब्ह़ तक रहते हैं और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करते रहते हैं।(1)

सुवाल नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे नामी इस्मे गिरामी के साथ दुरूदो सलाम लिखने की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब जिस ने किताब में हु़ज़ूरे अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक लिखा जब तक आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक नाम किताब में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते और सुब्ह़ो शाम उस पर दुरूद भेजते रहेंगे।(2)

सुवाल अगर नामे अक़्दस लिया या सुना मगर उस वक़्त दुरूद न पढ़ा तो अब क्या करे ?

जवाब अगर उस वक़्त न पढ़ा तो किसी और वक़्त में इस के बदले का पढ़ ले।(3)

सुवाल आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक के साथ पूरा दुरूद लिखने की बजाए सिर्फ़ "صلعم" लिखना कैसा ?

जवाब येह सख़्त नाजाइज़ व ह़राम है।(4)

सुवाल दुरूदे पाक का इख़्तिसार (Shortcut) ईजाद करने वाले के साथ क्या किया गया ?

---

1 . . . مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال القیامۃ وبدء الخلق، باب الکرامات، ۲/۴۰۱، حدیث: ۵۹۵۵۔

2 . . . القول البدیع، الباب الخامس فی الصلاۃ علیہ فی اوقات مخصوصۃ، ص ۴۲۰۔۴۲۱۔

3 . . . درمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب: ھل نفع الصلاۃ . . . الخ، ۲/۲۷۹۔

4 .....फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 50 । बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 3, 1 / 534 ।

जवाब दुरूद शरीफ़ का इख़्तिसार ईजाद करने वाले शख़्स का हाथ काट दिया गया था।[1]

सुवाल किस दुरूद शरीफ़ की बरकत से रह़मत के 70 दरवाज़े खुलते हैं ?

जवाब जो शख़्स येह दुरूदे पाक "صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد" पढ़ता है उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।[2]

सुवाल वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं ?

जवाब اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّم[3]

सुवाल वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिसे एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है ?

जवाब اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ[4]

सुवाल वोह कौन सा दुरूद शरीफ़ है जिस के पढ़ने से सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब नसीब होता है ?

जवाब اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ[5]

बैअ़त व त़रीक़त

सुवाल तसव्वुफ़ व त़रीक़त किसे कहते हैं ?

जवाब तसव्वुफ़ व त़रीक़त येह है कि बन्दा नफ़्स की बजाए रब عَزَّوَجَلَّ के

---

1 ...تدریب الراوی، النوع الخامس والعشرون، الترضی علی الصحابة...الخ، ص۲۸۴۔

2 ...القول البدیع، الباب الثانی، ص۲۷۷، جذب القلوب، ص۲۳۵۔

3 ...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاة الحادیة عشر، ص۶۵۔

4 ...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاة الثانیة والخمسون، ص۱۴۹۔

5 ...القول البدیع، الباب الاول، ص۱۲۵۔

लिये ज़िन्दा हो और अपने तमाम औक़ात में रूह़ व क़ल्ब के साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह रहे ।(1)

सुवाल सूफ़िया का क्या मर्तबा व मक़ाम है ?

जवाब इमाम अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अल्लाह तआ़ला ने इस गुरौह को अपने हां नुमायां हैसिय्यत दी है, इन्हें अपने रसूलों और नबियों के इ़लावा तमाम मख़्लूक़ पर बरतरी दे रखी है, पूरी उम्मत में से सिर्फ़ इन के हां नूरे इस्लाम उतरता रहता है ।(2)

सुवाल तसव्वुफ़ का इन्कार करना कैसा ?

जवाब ह़ज़रते दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अगर इस के मआ़नी व ह़क़ाइक़ से इन्कार है तो येह इन्कार कुल शरीअ़ते इस्लामी का इन्कार बन जाएगा सिर्फ़ येही नहीं बल्कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़मीदा और ख़साइले जमीला और उस्वए ह़सना का इन्कार भी कहलाएगा ।(3)

सुवाल शैख़ व पीर बनाने का फ़ाएदा बयान करें ?

जवाब शैख़ मुरीद को तज़्कियए नफ़्स पर चलाता है जिस का नतीजा येह होता है कि बन्दा अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने लगता है ।(4)

सुवाल बैअ़त से पीर और मुरीद में क्या तअ़ल्लुक़ क़ाइम होता है ?

जवाब बैअ़त के सबब पीर और मुरीद में रूह़ानी रिश्ता क़ाइम हो जाता है कि शैख़ रूह़ानी और मा'नवी बाप की हैसिय्यत रखता है ।(5)

1.....आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 119 ।

2...رسالة قشيرية، ص ٨۔

3...كشف المحجوب، باب التصوف، ص ٤٢۔

4...عوارف المعارف، الباب العاشر، ص ٥٣ ملخصاً۔

5...عوارف المعارف، الباب العاشر، ص ٥٦ ملخصاً۔

सुवाल मशाइख़ और पीराने ड़ज़्ज़ाम की ख़िलाफ़त से क्या मुराद है ?

जवाब मुरीद अपने शैख़ से ड़लूम व अह़वाल ह़ासिल करते हैं, फिर उसे दूसरे की अमानत में दे देते हैं और वोह लोग दूसरों को उसी त़रह़ फ़ैज़ पहुंचाते हैं जिस त़रह़ उन को अपने मशाइख़ के ज़रीए़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ासिल हुवा है, इसी अ़मल का नाम ख़िलाफ़ते मशाइख़ है ।[1]

सुवाल त़रीक़त के चार मश्हूर सिलसिले कौन से हैं ?

जवाब चार मश्हूर सिलसिले येह हैं :

(1) सिलसिलए क़ादिरिय्या (2) सिलसिलए नक़्शबन्दिया

(3) सिलसिलए चिश्तिया (4) सिलसिलए सोहरवर्दिया ।[2]

सुवाल सिलसिलए क़ादिरिय्या के पेश्वा कौन हैं ?

जवाब सिलसिलए क़ादिरिय्या के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى हैं ।[3]

सुवाल सिलसिलए चिश्तिया के पेश्वा कौन हैं ?

जवाब बर्रे सग़ीर में सिलसिलए चिश्तिया के पेश्वा ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى हैं ।

सुवाल सिलसिलए नक़्शबन्दिया के पेश्वा कौन हैं ?

जवाब सिलसिलए नक़्शबन्दिया के पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा मुह़म्मद बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हैं ।[4]

सुवाल सिलसिलए सोहरवर्दिया के पेश्वा कौन हैं ?

---

1 ...عوارف المعارف، الباب العاشر، ص ٥٥ – الباب الثاني عشر، ص ٦١ ملخصاً۔

2 ...تاریخ مشائخ نقشبندیہ، ص ١٢۔

3 ...مرآۃ الاسرار، ص ٧٨۔ اقتباس الانوار، ص ٥٧۔

4 ...مرآۃ الاسرار، ص ٧٩۔ اقتباس الانوار، ص ٥٨۔

जवाब हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिहाबुद्दीन अबू हफ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद सोहरवर्दी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ।[1]

सुवाल आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने पीर की कौन सी शराइत़ बयान की हैं ?

जवाब मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ऐसे शख़्स से बैअ़त का हुक्म है जो कम अज़ कम येह चारों शर्तें रखता हो : (1) सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो (2) इल्मे दीन रखता हो (3) फ़ासिक़ न हो (4) उस का सिलसिला रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो । अगर इन में से एक बात भी कम है तो उस के हाथ पर बैअ़त की इजाज़त नहीं ।[2] وَاللہُ تَعَالٰی اَعْلَم

मुक़द्दस मक़ामात

सुवाल ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मक्कए मुकर्रमा के लिये मांगी गई क़ुरआनी दुआ़ बताइये ?

जवाब ﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ﴾ (پ۱، البقرۃ ۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने कि ऐ रब मेरे इस शहर को अमान वाला कर दे और इस के रहने वालों को त़रह़ त़रह़ के फलों से रोज़ी दे जो इन में से **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाएं ।" और सूरए इब्राहीम में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की येह दुआ़ मज़कूर है :

﴿وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّ اجْنُبْنِیْ وَ بَنِیَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ؕ۳۵﴾ (پ۱، البقرۃ ۱۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और याद करो जब इब्राहीम ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब इस शहर को अमान वाला कर दे और मुझे और मेरे बेटों को बुतों के पूजने से बचा ।"

---

1 ...عوارف المعارف مترجم، مقدمہ، ص۷ س۳ फ़तावा रज़विय्या, 21 / 389, 545 माख़ूज़न

2 .....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 603 ।

सुवाल प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा के लिये क्या दुआ़ फ़रमाई ?

जवाब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! जिस त़रह़ तू ने मक्कए मुकर्रमा को हमारा मह़बूब बनाया इसी त़रह़ मदीनए मुनव्वरा को भी हमारा मह़बूब बना दे ।(1)

सुवाल ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद किस जगह पर रखी थी ?

जवाब मुल्के शाम में जिस जगह ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का ख़ैमा गाड़ा गया था उस जगह ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद रखी ।(2)

सुवाल ह़दीसे पाक में जबले उहुद के मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद फ़रमाया गया है ?

जवाब हुज़ूर जाने आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اُحُدٌ ھٰذَا جَبَلٌ یُّحِبُّنَا وَ نُحِبُّہٗ या'नी येह उहुद पहाड़ हम से मह़ब्बत करता है और हम इस से मह़ब्बत करते हैं ।(3)

सुवाल मस्जिदे क़िब्लतैन में कौन सा मश्हूर वाक़िआ़ रू नुमा हुवा था ?

जवाब इसी मस्जिद शरीफ़ में तह़वीले क़िब्ला की आयत नाज़िल हुई और बैतुल मुक़द्दस की बजाए बैतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म हुवा ।(4)

---

1 . . . مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی قتادۃ الانصاری رضی اللہ عنہ، ۸/۳۸۴، حدیث: ۲۲۶۹۳۔

2 . . . تفسیر مدارک، پ ۲۲، سبا، تحت الآیۃ: ۱۴، ص ۹۵۹۔

3 . . . معجم اوسط، ۵/۳۷، حدیث: ۶۵۰۵۔

4 . . . تفسیر بغوی، پ ۲، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۴۴، ۱/۸۵۔

सुवाल सरवरे अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल वदाअ़ तशरीफ़ ले जाते वक़्त किस मक़ाम पर दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई ?

जवाब "ज़ुल हुलैफ़ा" पहुंचे तो वहां मस्जिद में दो रक्अ़त पढ़ीं।[1]

सुवाल "मस्जिदे इजाबा" के मक़ाम पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कौन सी तीन दुआ़एं मांगी थीं ?

जवाब वोह दुआ़एं येह थीं : (1) या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत क़हत़ साली के सबब हलाक न हो। (2) या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत पानी में डूब कर हलाक न हो और (3) या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत आपस में न लड़े (पहली दो दुआ़एं क़बूल हुई और तीसरी से रोक दिया गया)।[2]

सुवाल मस्जिदे बनी ह़िराम को क्या खुसूसिय्यत हासिल है ?

जवाब येह वोही मस्जिद है जहां आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तीन मो'जिज़ात ज़ाहिर हुवे : (1) एक बकरी में बहुत सारे सहाबए किराम का पेट भर गया।[3] (2) बकरी की हड्डियों पर दस्ते मुबारक रख कर कुछ पढ़ा तो बकरी ज़िन्दा हो गई।[4] (3) हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ौतशुदा दो मदनी मुन्ने इमामुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ से ज़िन्दा हो गए।[5]

---

1 . . . مسلم، کتاب الحج، باب الصلاۃ فی مسجد ذی الحلیفۃ، ص ۶۰۲، حدیث: ۱۱۸۸۔ تاریخ مدینہ منورہ، ص ۵۰۱-۵۰۲۔

2 . . . مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعۃ، باب ھلاک ھذہ الامۃ بعضھم ببعض، ص ۱۵۴۴، حدیث: ۲۸۹۰۔

3 . . . خصائص کبری، باب آیاتہ فی احیاء الموتی و کلامھم، ۲/۱۱۲۔

4 . . . خصائص کبری، باب آیاتہ فی احیاء الموتی و کلامھم، ۲/۱۱۲۔

5 . . . شواھد النبوۃ، ص ۱۰۵۔ مدراج النبوت، ۱/۱۹۹۔

सुवाल मस्जिदे मुस्तराह़ को इस नाम से क्यूं पुकारा जाता है ?

जवाब सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए उहुद के मौक़अ़ पर यहां पर आराम फ़रमाया था इसी लिये इसे मस्जिदे मुस्तराह़ कहते हैं।[1]

सुवाल ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे पुर अन्वार कहां वाक़ेअ़ है ?

जवाब आप عَلَيْهِ السَّلَام का मज़ारे मुबारक जबले उहुद पर वाक़ेअ़ है (लेकिन अब इस की ज़ियारत बेह़द मुश्किल है) ।[2]

सुवाल सफ़ा व मरवा पहाड़ों को इतनी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत क्यूं मिली ?

जवाब इन पहाड़ों पर ह़ज़रते हाजरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पानी की तलाश में सात बार चढ़ीं और उतरीं। इस अल्लाह वाली के क़दम पड़ जाने की बरकत से येह दोनों पहाड़ शआ़इरुल्लाह (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियां) बन गए और ता क़ियामत ह़ाजियों पर इस पाक बीबी की पैरवी में इन पर चढ़ना और उतरना सात बार लाज़िम हो गया।[3]

सुवाल जहां "मस्जिदे ज़ुल हुलैफ़ा" क़ाइम है वोह मक़ाम आज कल किस नाम से मश्हूर है ?

जवाब उस मक़ाम को आज कल "बीरे अ़ली" या "अबयारे अ़ली" के नाम से याद किया जाता है।[4]

---

1 ...وفاء الوفاء، الباب الخامس فی مصلی النبی فی الاعیاد...الخ، الفصل الرابع فی المساجد التی...الخ، ۲/۸۲۵۔

2 .....आ़शिक़ाने रसूल की 130 ह़िकायात, स. 322।

3 .....इ़ल्मुल क़ुरआन, तक़्वा, स. 48, मुलख़्ख़सन।

4 ...ردالمحتار، کتاب الحج، مطلب فی المواقیت، ۳/۵۴۹۔ बहारे शरीअ़त, हिस्सा, 6,1 / 1067

दा'वते इस्लामी का तआरुफ़

सुवाल दा'वते इस्लामी के बानी कौन हैं ?

जवाब तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" के बानी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ हैं।

सुवाल अमीरे अह्ले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने दा'वते इस्लामी का मदनी काम किस सिन में शुरूअ़ फ़रमाया ?

जवाब 1401 हिजरी मुत़ाबिक़ 1981 ईसवी।[1]

सुवाल दा'वते इस्लामी का पैग़ाम अब तक कितने ममालिक में पहुंच चुका है ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तक़रीबन 200 से ज़ाइद ममालिक में।

सुवाल दा'वते इस्लामी का मदनी मक़्सद क्या है ?

जवाब "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**" اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

सुवाल दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा कितने अराकीन पर मुश्तमिल है ?

जवाब दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा फ़िल वक़्त 26 अराकीन पर मुश्तमिल है।

सुवाल मदनी इन्आमात व मदनी क़ाफ़िला से क्या मुराद है ?

जवाब मदनी इन्आमात से मुराद अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّہُ الْعَالِی की जानिब से इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों, जामिअ़तुल मदीना व मदारिसुल

1.....दा'वते इस्लामी का तआरुफ़, स. 4।

मदीना के तलबा व तालिबात और मदनी मुन्नों को अताकर्दा सुवालात पर मुश्तमिल वोह रसाइल हैं जिन के मुताबिक़ अमल कर के नेकियों में इज़ाफ़ा और गुनाहों से बचा जा सकता है जब कि मदनी क़ाफ़िले से मुराद आशिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत और इल्मे दीन के हुसूल के लिये मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर सफ़र करना है।

सुवाल मदनी हुल्या किसे कहते हैं ?

जवाब दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो) कली वाला सफ़ेद कुर्ता सुन्नत के मुताबिक़ आधी पिन्डली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शल्वार टख़्नों से ऊपर। (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल करते हुवे कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना)[1]

सुवाल दा'वते इस्लामी का अव्वलीन मदनी मर्कज़ कहां था ?

जवाब जामेअ मस्जिद गुलज़ारे हबीब, गुलिस्ताने औकाड़वी, सोलजर बाज़ार, बाबुल मदीना (कराची)।

सुवाल दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे का नाम क्या है ?

जवाब मक्तबतुल मदीना, जो अब तक 527 से ज़ाइद कुतुबो रसाइल शाएअ कर चुका है।

1.....163 मदनी फूल, स. 23।

सुवाल दा'वते इस्लामी कितने शो'बाजात में काम कर रही है ? सात के नाम बताइये ?

जवाब तादमे तह़रीर दा'वते इस्लामी 102 शो'बाजात में मदनी काम कर रही है, जिन में से सात येह हैं : (1) दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (2) अल मदीनतुल इल्मिय्या (3) जामिअ़तुल मदीना (4) मजलिसे तराजिम (5) मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइय्या (6) मदनी चैनल (7) मजलिसे आई टी ।

सुवाल मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद किस मक़्सद के तह़्त क़ाइम की गई ?

जवाब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तमन्ना है कि हमारी मसाजिद आबाद हो जाएं, उन की रौनक़ें पलट आएं और पुरानी मसाजिद आबाद करने की कोशिश के साथ साथ नई मसाजिद भी ता'मीर की जाएं, इस ज़िम्न में "मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद" क़ाइम की गई ।[1]

सुवाल मदनी तरबिय्यती कोर्स कितने दिन का होता है और इस का मक़्सद क्या है ?

जवाब येह कोर्स 63 दिन का होता है जिस का मक़्सद मुबल्लिग़ीन की तय्यारी और उन की तरबिय्यत है ।[2]

1.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 11 ।
2.....दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़, स. 39 माख़ूज़न ।

"इख़्लास का नूर" के दस (10) हुरूफ़ की निस्बत से दस मदनी फूल

(1) येह सिलसिला 6 मराहिल (Segments) पर मुश्तमिल होगा।

(2) दो टीमें (टीम मक्की और टीम मदनी) होंगी।

(3) हर टीम में कुल तीन इस्लामी भाई होंगे इस त़रह़ कुल छे इस्लामी भाई होंगे।

(4) हर सुवाल का जवाब 25 सेकन्ड के अन्दर देना होगा 25 सेकन्ड के बा'द जवाब देने पर नम्बर नहीं मिलेंगे। जब कि "समझाइये मगर इशारों से" में 41 सेकन्ड दिये जाएंगे।

(5) हर सुवाल के दो (2) नम्बर हैं।

(6) **"समझाइये मगर इशारों से"**। इस मर्ह़ले में जो इशारे हैं वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के नाम या मुक़द्दस अश्या या कोई ह़िकायत होंगी लेकिन इन तमाम इशारों में इस बात का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखा जाए कि इस का इशारा भी बन सकता हो।

(7) हर मर्ह़ले में टीम के इस्लामी भाई आपस में मश्वरा कर के जवाब दे सकते हैं सिवाए **"सफ़र है मगर अकेले"** मर्ह़ले के कि इस मर्ह़ले में बिग़ैर मश्वरा किये ही जवाब देना होगा और इस में टीम मक्की का एक इस्लामी भाई टीम मदनी के इस्लामी भाइयों के साथ या'नी दरमियान में खड़ा रहेगा इसी त़रह़ टीम मदनी का एक इस्लामी भाई टीम मक्की के इस्लामी भाइयों के दरमियान में।

(8) तमाम सुवालात निसाब से किये जाएंगे सिवाए "**सफ़र है मगर अकेले**" मर्हले के। इस मर्हले में पूछे जाने वाले सुवालात वोह होंगे जो आ़म तौ़र पर मदनी मुज़ाकरे या मदनी माह़ोल वाले या कसरत से मुत़ालआ़ करने वाले इस्लामी भाई जानते हैं।

(9) "**जोश के साथ मगर होश से**" के मर्हले में बज़र (Buzzer) लगाया जाएगा और इस में जिस इस्लामी भाई ने पहले बज़र (Buzzer) दबाया उसी को जवाब देने का मौक़अ़ दिया जाए और ग़लत़ जवाब पर दो (2) नम्बर मिन्हा (कम) कर दिये जाएंगे।

(10) सिलसिले में दिलचस्पी पैदा करने के लिये नाज़िरीन या ह़ाज़िरीन से भी सुवालात किये जाएंगे।

मराह़िल की तफ़्सील

(1) **इल्म नूर है :** इस मर्हले में टीम मक्की और टीम मदनी दोनों से पांच पांच सुवालात किये जाएंगे।

(2) **इश्क़ के बोल :** इस मर्हले में टीम मक्की और टीम मदनी दोनों से पांच पांच अश्आ़र पूछे जाएंगे।

(3) **कुरआनी मा'लूमात :** इस मर्हले में टीम मक्की और टीम मदनी दोनों से तीन तीन सुवालात किये जाएंगे।

(4) **समझाइये मगर इशारों से :** इस मर्हले में दोनों टीमों के तीन तीन इशारे होंगे या'नी टीम का एक इस्लामी भाई आ कर अपनी टीम के इस्लामी भाइयों को इस का इशारा कर के बताएगा और टीम को इशारे की मदद से उस नाम तक पहुंचना होगा।

(5) **सफ़र है मगर अकेले :** इस मर्हले में हर इस्लामी भाई से एक एक सुवाल होगा ।

(6) **जोश के साथ मगर होश से :** इस मर्हले में 5 अश्आर और 5 सुवालात होंगे ।

(1) इल्म नूर है । (टीम मक्की)

सुवाल ज़ब्ह में काटी जाने वाली चार रगों के नाम बताइये ?

जवाब वोह चार रगें येह हैं : (1) हुल्क़ूम, (2) मुरी और (3-4) वदजैन ।

सुवाल निकाह़ में कौन से उमूर का लिह़ाज़ रखना मुस्तह़ब है ?

जवाब निकाह़ में येह उमूर मुस्तह़ब हैं (1) अ़लानिय्या होना (2) निकाह़ से पहले खुत़बा पढ़ना (3) मस्जिद में होना (4) जुमुआ़ के दिन (5) गवाहाने आ़दिल के सामने (6) औ़रत उ़म्र, ह़सब (ख़ानदानी शरफ़), माल, इ़ज़्ज़त में मर्द से कम हो और (7) चाल चलन और अख़्लाक़ व तक़्वा व जमाल में बेश (या'नी ज़ियादा) हो ।

सुवाल यमीन या'नी क़सम की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब क़सम की तीन क़िस्में हैं : (1) ग़मूस (2) लग़्व (3) मुन्अ़क़िदा ।

सुवाल लुक़त़ा किसे कहते हैं ?

जवाब लुक़त़ा उस माल को कहते हैं जो कहीं पड़ा हुवा मिल जाए ।

सुवाल कौन सी इमारत शैत़ान से बचाव के लिये क़ल्आ़ है ?

जवाब मरवी है कि اَلْمَسْجِدُ حِصْنٌ حَصِيْنٌ مِّنَ الشَّيْطٰن "या'नी मस्जिद शैत़ान से बचने के लिये एक मज़बूत़ क़ल्आ़ है ।"

(1) इल्म नूर है। (टीम मदनी)

सुवाल मस्जिद में कौन सी बदबूदार चीज़ों की मुमानअ़त है ?

जवाब (1) कच्चा लहसन (2) कच्ची प्याज़ (3) गन्दना (येह लहसन से मिलती जुलती तरकारी है) (4) मूली (5) कच्चा गोश्त (6) मिट्टी का तेल (7) वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो (8) रियाह़ ख़ारिज करना (9) बदबूदार ज़ख़्म (10) कोई बदबूदार दवा लगाना।

सुवाल सब से बेहतर कमाई कौन सी है ?

जवाब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से बेहतर गिज़ा वोह है जो इन्सान अपने हाथों की कमाई से खाए। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام भी अपनी कमाई से खाते थे।

सुवाल सूद से बचने के कोई दो इलाज बयान कीजिये ?

जवाब (1) इन्सान क़नाअ़त इख़्तियार करे, इस त़रह़ वोह माल की ह़िर्स से बचेगा और ह़राम ज़राएअ़ इख़्तियार नहीं करेगा। (2) हर दम मौत को याद रखा जाए, जब येह सोच बन जाएगी कि मरना है और मौत का कोई भरोसा नहीं कब आ जाए तो ह़राम रोज़ी की त़रफ़ बढ़ने से रुकना नसीब हो जाएगा। (اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

सुवाल पेट का क़ुफ़्ले मदीना किसे कहते हैं ?

जवाब अपने पेट को ह़राम गिज़ा से बचाना और ह़लाल ख़ूराक भी भूक से कम खाना "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" लगाना है।

सुवाल ह़दीसे पाक में मेहमान के इकराम की अहम्मिय्यत किस त़रह़ बयान हुई है ?

जवाब रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि (1) वोह मेहमान का इकराम करे (2) अपने पड़ोसी को ईज़ा न दे और (3) वोह भली बात बोले या चुप रहे।

(2) शे'र मुकम्मल कीजिये (टीम मक्की)

काश ! तैबा में शहादत का अ़ता हो जाए जाम
जल्वए महबूब में अन्जाम मेरा हो बख़ैर (वसाइले बख़्शिश, स. 233)

उम्मते महबूब का या रब बना दे ख़ैरख़्वाह
नफ़्स की ख़ातिर किसी से दिल में मेरे हो न बैर (वसाइले बख़्शिश, स. 233)

अक्सर मेरे होंटों पे रहे ज़िक्रे मुहम्मद
अल्लाह ज़बां का हो अ़ता कुफ़्ले मदीना (वसाइले बख़्शिश, स. 93)

आक़ा की ह़या से झुकी रहती नज़र अक्सर
आंखों पे मेरे भाई लगा कुफ़्ले मदीना (वसाइले बख़्शिश, स. 94)

अल्लाह करम इतना गुनहगार पे फ़रमा
जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे (वसाइले बख़्शिश, स. 112)

(2) शे'र मुकम्मल कीजिये (टीम मदनी)

अल्लाह मिले ह़ज की इसी साल सआ़दत
बदकार को फिर रौज़ए महबूब दिखा दे (वसाइले बख़्शिश, स. 112)

बाएं रस्ते न जा मुसाफ़िर सुन
माल है राह मार फिरते हैं (हदाइके़ बख़्शिश, स. 100)

रखिये जैसे हैं ख़ाना ज़ाद हैं हम
मौल के ऐबदार फिरते हैं (हदाइके़ बख़्शिश, स. 100)

वरदियां बोलते हैं हर कारे
पहरा देते सुवार फिरते हैं (हदाइके़ बख़्शिश, स. 100)

आह कल ऐश तो किये हम ने
आज वोह बे क़रार फिरते हैं (हदाइके़ बख़्शिश, स. 99)

(3) क़ुरआनी मा'लूमात (टीम मक्की)

सुवाल किस आयत में उम्मते मुहम्मदिय्या को सब से बेहतर उम्मत फ़रमाया गया है ?

जवाब ﴿كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ﴾ (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो।

सुवाल रात के वक़्त सूरए मुल्क की तिलावत की क्या फ़ज़ीलत है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका का खुलासा है कि जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों, सीने, पेट या फिर उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो येह सब आ'ज़ा कहेंगे तेरे लिये हमारी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था।

सुवाल वोह कौन सा खुश नसीब है जो अपने घर के दस अफ़राद की शफ़ाअ़त करेगा ?

जवाब जिस ने क़ुरआन पढ़ा और उस को याद कर लिया, उस के ह़लाल

को ह़लाल समझा और ह़राम को ह़राम जाना। उस के घरवालों में से दस शख़्सों के बारे में अल्लाह तआ़ला उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका था।

(3) क़ुरआनी मा'लूमात (टीम मदनी)

सुवाल कुरआने पाक की कौन सी आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ?

जवाब सब से आख़िर में सूरतुल बक़रह की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

﴿وَاتَّقُوۡا يَوۡمًا تُرۡجَعُوۡنَ فِيۡهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفۡسٍ مَّا كَسَبَتۡ وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُوۡنَ ﴿۲۸۱﴾﴾ (پ۳، البقرۃ: ۲۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में अल्लाह की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा।

सुवाल किस सूरत की तिलावत करने की फ़ज़ीलत चौथाई कुरआन के बराबर है ?

जवाब ह़दीसे पाक में है : जिस ने सूरत قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ पढ़ी तो गोया कि उस ने कुरआने मजीद के चौथाई ह़िस्से की तिलावत की।

सुवाल हर बुरी चीज़ से ह़िफ़ाज़त के लिये कौन सी सूरतों की ता'लीम फ़रमाई गई है ?

जवाब नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सुब्ह़ शाम तीन तीन बार قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ, قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ और قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़ो ! इन की तिलावत करना तुम्हें हर बुरी चीज़ से बचाएगा।

(4) समझाइये मगर इशारों से (टीम मक्की)

(1) ख़ाके मदीना

(2) ख़ौफ़नाक जादूगर

(3) तीन उंगलियों से खाना

(4) समझाइये मगर इशारों से (टीम मदनी)

(1) बकरी की खाल

(2) पतला जिन्न

(3) अनार का दरख़्त

(5) सफ़र है मगर अकेले (टीम मक्की)

सुवाल सब से आख़िर में किस को मौत आएगी ?

जवाब सब से आख़िर में हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को मौत आएगी।

सुवाल दारोग़ए जन्नत का नाम बताएं ?

जवाब हज़रते रिज़्वान عَلَيْهِ السَّلَام।

सुवाल मछली, मच्छर या मख्खी वग़ैरा का ख़ून अगर कपड़ों पर लग जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और ख़च्चर और गधे का लुआ़ब और पसीना पाक है।

(5) सफ़र है मगर अकेले (टीम मदनी)

सुवाल हाथ वग़ैरा से ख़ून निकलने के बा वुजूद कब वुज़ू नहीं टूटता ?

जवाब ख़ून निकला लेकिन बहा नहीं तो येह वुज़ू को नहीं तोड़ता।

सुवाल नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ है या वाजिब या फिर सुन्नत ?

जवाब नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है।

सुवाल हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितने ऊंट नह़्र फ़रमाए ?

जवाब इस मौक़अ़ पर हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुक़द्दस हाथ से 63 ऊंट नह़्र फ़रमाए।

(6) जोश के साथ मगर होश से (सुवालात)

सुवाल किस नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से उन के भाई को नुबुव्वत मिली ?

जवाब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने दुआ़ की, कि या रब मेरे घरवालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना, अल्लाह तआ़ला ने अपने करम से येह दुआ़ क़बूल फ़रमाई और ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को आप की दुआ़ से नबी किया।

सुवाल किन बातों को दुन्या व आख़िरत के बेहतर अख़्लाक़ फ़रमाया गया है ?

जवाब ह़दीसे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के अच्छे अख़्लाक़ न बताऊं ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ज़रूर बताइये। इरशाद फ़रमाया : "जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़ता करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो।"

सुवाल खौ़फे़ खुदा का मत़लब क्या है ?

जवाब **अल्लाह** तआ़ला की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर इन्सान का दिल घबरा जाए तो उसे खौ़फे़ खुदा कहते हैं।

सुवाल कुरआने करीम में सिलए रेहमी से मुतअ़ल्लिक़ क्या इरशाद हुवा ?

जवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ﴾ (پ۴، النساء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो।

सुवाल सब्र किसे कहते हैं ?

जवाब नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अ़क्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से रुकने का अ़क्ल और शरीअ़त तक़ाज़ा कर रही हो सब्र कहलाता है।

(6) जोश के साथ मगर होश से (अश्आ़र)

चल पड़े हैं क़ाफ़िलों पर क़ाफ़िले सूए ह़िजाज़
मैं रहा जाता हूं हाए ! जाने रह़मत या रसूलल्लाह (वसाइले बख़्शिश, स. 240)

शरफ़ हर बरस ह़ज का पाऊं खु़दाया
चले त़यबा फिर क़ाफ़िला या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स. 100)

मुझे औलिया की महब्बत अ़ता कर
तू दीवाना कर ग़ौस का या इलाही (वसाइले बख़्शिश, स. 106)
फ़रमाते हैं येह दोनों हैं सरदारे दो जहां
ऐ मुर्तज़ा ! अ़तीक़ो उ़मर को ख़बर न हो (वसाइले बख़्शिश, स. 130)
जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 176)

नाज़िरीन के लिये सुवालात

सुवाल सब से पहले झूटी क़सम किस ने खाई ?

जवाब पहला झूटी क़सम खाने वाला इब्लीस ही है।

सुवाल वोह कौन सा अ़मल है जिस से मुसलमानों में बाहमी महब्बत पैदा होती है ?

जवाब वोह सलाम है।

सुवाल छींक आने के बा'द ह़म्द करने का क्या हुक्म है ?

जवाब छींक आने के बा'द ह़म्द करना सुन्नत है।

सुवाल सब से पहले ज़िरह किस नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनाई ?

जवाब ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने।

सुवाल ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र मुबारक कितनी थी ?

जवाब ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की उ़म्र शरीफ़ एक हज़ार साल थी।

स्कोरिंग शीट

नम्बर शुमार	मराहिल	टीम मक्की	टोटल स्कोर
1	इल्म नूर है		
2	इश्क़ के बोल		
3	कुरआनी मा'लूमात		
4	समझाइये मगर इशारों से		
5	सफ़र है मगर अकेले		
6	जोश के साथ मगर होश से		

नम्बर शुमार	मराहिल	टीम मदनी	टोटल स्कोर
1	इल्म नूर है		
2	इश्क़ के बोल		
3	कुरआनी मा'लूमात		
4	समझाइये मगर इशारों से		
5	सफ़र है मगर अकेले		
6	जोश के साथ मगर होश से		

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن پاک	***************	سنن ابن ماجہ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
ترجمہ کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ	سنن ابی داود	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ
کتب التفسیر وعلوم القرآن		سنن النسائی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
تفسیر الطبری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ	المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
تفسیر البغوی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۴ھ	مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
التفسیر الکبیر	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۰ھ	مصنف ابن ابی شیبۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
تفسیر القرطبی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ	المسند	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
تفسیر المدارک	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	سنن الدارمی	دار الکتاب العربی، ۱۴۰۷ھ
تفسیر الخازن	مطبعہ میمنیہ، مصر ۱۳۱۷ھ	مسند الحارث	مرکز خدمۃ السنۃ والسیرۃ النبویۃ، ۱۴۱۳ھ
الدر المنثور	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ	مسند ابی یعلی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
الاتقان	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۳ھ	مسند الشہاب	مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۵ھ
روح البیان	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۰۵ھ	مسند الشامیین	مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۹ھ
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ	شعب الایمان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
تفسیر نعیمی	مکتبہ اسلامیہ، لاہور	السنن الکبری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
نور العرفان	پیر بھائی کمپنی، لاہور	المعجم الاوسط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ
علم القرآن	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ	المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۲ھ
صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ	الجامع الصغیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ
کتب الحدیث		الاوائل للطبرانی	مؤسسۃ الرسالہ، ۱۴۰۳ھ
صحیح البخاری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	مشکاۃ المصابیح	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۴ھ
صحیح مسلم	دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ	فردوس الاخبار	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
سنن الترمذی	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ

مجمع الزوائد	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ	مرآۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلیکیشنز، لاہور
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	نزہۃ القاری	باب المدینہ کراچی
کنز العمال	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	نزہۃ القاری	فرید بک سٹال، لاہور ۱۴۲۱ھ
جمع الجوامع	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	**کتب العقائد**	
معرفۃ السنن والآثار	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	الفقہ الاکبر	باب المدینہ کراچی
المجالسۃ وجواہر العلم	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	شرح اصول اعتقاد اہل السنۃ والجماعۃ	دار البصیرۃ، مصر
نوادر الاصول	مکتبۃ الامام بخاری، قاہرہ	شرح العقائد النسفیۃ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
الادب المفرد	مدینۃ الاولیاء، ملتان	المسامرۃ	مطبعۃ السعادۃ، مصر
تاریخ دمشق لابن عساکر	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ	الیواقیت والجواہر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ	منح الروض الازہر	باب المدینہ، کراچی
المقاصد الحسنۃ	دار الکتاب العربی، ۱۴۲۵ھ	النبراس	مدینۃ الاولیاء، ملتان
کشف الخفاء	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	المعتقد المنتقد	برکاتی پبلشرز، کراچی ۱۴۲۰ھ
کتاب العظمۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۴ھ	دس عقیدے	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۷ھ
مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	الدولۃ المکیۃ	مؤسسہ رضا، لاہور ۱۴۲۲ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ	عقیدۂ ختم نبوت	الادارۃ لتحفظ العقائد الاسلامیہ ۱۴۲۶ھ
کتب شروح الحدیث		**کتب الرجال والطبقات**	
شرح النووی علی المسلم	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۱ھ	الطبقات الکبری لابن سعد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
فتح الباری	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۵ھ	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ
عمدۃ القاری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	صفۃ الصفوۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ
ارشاد الساری	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ	الاکمال فی اسماء الرجال	باب المدینہ، کراچی
مرقاۃ المفاتیح	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ	سیر اعلام النبلاء	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ
فیض القدیر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ
اشعۃ اللمعات	کوئٹہ	اسد الغابۃ	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۷ھ

تدریب الراوی	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
الطبقات الکبری	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
کتب التاریخ	
تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ
تاریخ الخلفاء	باب المدینہ، کراچی
سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
سوانح امام احمد رضا	مکتبۂ نوریہ رضویہ، ۱۴۰۷ھ
تاریخ مشائخ نقشبندیہ	مونال پبلیکیشنز، راولپنڈی
کتب الفقہ و الفتاوی	
الفقیہ والمتفقہ	دار ابن جوزی، دمام ۱۴۲۸ھ
المبسوط	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ
بدائع الصنائع	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۲۱ھ
الفتاوی الخانیۃ	پشاور
الھدایۃ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
المدخل	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۵ھ
تبیین الحقائق	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ
شرح الوقایۃ	باب المدینہ، کراچی
الفتاوی التاتارخانیہ	باب المدینہ کراچی
الجوھرۃ النیرۃ	باب المدینہ کراچی
الفتاوی البزازیۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
غنیۃ المتملی	سہیل اکیڈمی، لاہور
الاشباہ والنظائر	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
البحر الرائق	کوئٹہ

الفتاوی الحدیثیۃ	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۹ھ
تنویر الابصار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
نور الایضاح	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی
الدر المختار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
الفتاوی الھندیۃ	دار الفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی
رد المحتار	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
مجموعۃ رسائل اللکنوی	انتشارات شیخ الاسلام احمد جام، ۱۳۸۲ھ
عمدۃ الرعایۃ	باب المدینہ، کراچی
الفتاوی الرضویۃ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور
جد الممتار	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
فتاوی افریقہ	نوری کتب خانہ، ۲۰۰۳ء
بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
فتاوی امجدیہ	مکتبہ رضویہ، کراچی ۱۴۱۹ھ
نماز کے احکام	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۴ء
رفیق المعتمرین	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
رفیق الحرمین	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
اسلامی بہنوں کی نماز	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۸ء
فیضان اذان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
فتاوی اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
فیضان زکوۃ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
فیضان رمضان	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۷ھ

چندے کے بارے میں سوال جواب	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ	تذکرۂ مجدد الف ثانی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۸ھ
وقف کے شرعی مسائل	مکتبہ اہلسنّت، فیصل آباد ۲۰۰۹ء	امام احمد رضا اور رد بدعات و منکرات	فرید بک سٹال، لاہور ۲۰۰۰ء
کتب السیرۃ		تذکرۂ امام احمد رضا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۳۹۳ھ
دلائل النبوۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ	فیضان اعلیٰ حضرت	شبیر برادرز، لاہور ۱۴۳۴ھ
الشفا بتعریف حقوق المصطفیٰ	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند	فیضان صدیق اکبر	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
تذکرۃ الاولیاء (فارسی)	انتشارات گنجینہ، ۱۳۷۹ھ	فیضان فاروق اعظم	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
تذکرۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، ۲۰۱۰ء	فیضان پیر مہر علی شاہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ	سیدی قطب مدینہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۱ھ
بہجۃ الاسرار	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۳ھ	تعارف امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ
شواہد النبوت	مکتبہ حقیقیہ، استنبول ۱۴۱۵ھ	تذکرہ امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
الخصائص الکبریٰ	دار الکتب العلمیہ، بیروت	قوم جنات اور امیر اہلسنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۸ھ
وفاء الوفاء	دار احیاء التراث العربی، بیروت	**کتب التصوف**	
المواھب اللدنیۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	کتاب الزھد لابن مبارک	دار الکتب العلمیہ، بیروت
شرح الشفا	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	قوت القلوب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
السیرۃ الحلبیۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۲ھ	التوبیخ والتنبیہ	مکتبۃ التوعیۃ الاسلامیۃ، ۱۴۰۸ھ
جذب القلوب	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی، ۱۴۳۱ھ	تنبیہ الغافلین	دار الکتاب العربی، ۱۴۲۰ھ
شرح المواھب	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۷ھ	الرسالۃ القشیریۃ	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۸ھ
جامع کرامات الاولیاء	مرکز اہلسنت برکات رضا، ۱۴۲۲ھ	کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹرز، لاہور
سیرت مصطفیٰ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ	احیاء علوم الدین	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
سیرت سید الانبیا (مترجم)	مظہر علم، لاہور ۱۴۲۴ھ	کیمیائے سعادت	انتشارات گنجینہ، تہران
سیر اولیاء (مترجم)	مشتاق بک کارنر، لاہور	عوارف المعارف	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۶ھ
مرآۃ الاسرار (مترجم)	الفیصل ناشران و تاجران کتب ۲۰۰۶ء	عوارف المعارف (مترجم)	پروگریسو بکس، لاہور ۱۹۹۸ء
اقتباس الانوار (مترجم)	الفیصل ناشران و تاجران کتب ۲۰۰۹ء	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا، ہند

تنبیہ المغترین	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۵ھ	اولاد کے حقوق	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
الزواجر	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ	بہشت کی کنجیاں	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
الطریقۃ المحمدیۃ	دار الطباعۃ العامرہ، مصر	جنتی زیور	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۷ھ
الحدیقۃ الندیۃ	دار الطباعۃ العامرہ، مصر	مہر منیر	کتب خانہ درگاہ غوثیہ مہریہ، ۱۴۲۳ھ
البریقۃ المحمودیۃ	مطبعہ شرکت صحافیہ عثمانیہ ۱۳۱۸ھ	نیکی کی دعوت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
الکتب المتفرقۃ		فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۲۰۰۶ء
ادب الدنیا والدین	دار ابن کثیر، بیروت ۱۴۳۳ھ	غیبت کی تباہ کاریاں	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر	دار الکتب العلمیہ، ۲۰۱۱ء	باطنی بیماریوں کی معلومات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الاذکار للنووی	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۰ھ	خوف خدا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
تہذیب الاسماء واللغات	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۶ھ	بغض وکینہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
روض الریاحین	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۲۱ھ	غصے کا علاج	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
الروض الفائق	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۶ھ	ابلق گھوڑے سوار	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۲ھ
التعریفات للجرجانی	دار المنار	آداب مرشد کامل	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۶ھ
المستطرف فی کل فن مستظرف	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ	عاشقان رسول کی 130 حکایات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
لسان المیزان	دار احیاء التراث العربی، ۱۴۱۶ھ	ضیائے صدقات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
القول البدیع	مؤسسۃ الریان، ۱۴۲۲ھ	حرص	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
البدور السافرۃ فی امور الآخرۃ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، ۱۴۲۵ھ	163 مدنی پھول	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
الحبائک فی اخبار الملائک	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۸ھ	پھوپھی سے ہاتھوں ہاتھ صلح کرلی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۶ھ
لقط المرجان فی احکام الجان	دار الکتب العلمیہ، ۱۴۰۶ھ	دعوت اسلامی کا تعارف	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۹ھ
افضل الصلوات علی سید السادات	دار النشر، ۲۰۰۰ء	مزارات اولیاء کی حکایات	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
اعلیٰ حضرت سے سوال جواب	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۲۵ھ	مدنی وصیت نامہ	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۳ھ
ملفوظات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ	بدشگونی	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۵ھ
فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ، کراچی ۱۴۳۰ھ	••••••••••••••	••••••••••••••

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ



MC 1286

ISBN
0133010

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ ह़ैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, ह़ैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net